श्रीः ।

भक्तमाल सटीककी

अनुक्रमणिका ।



इति श्रीभक्तमालसटीककीअनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगणेशायनमः ।

अथ भक्तमाल सटीक ।

टीकाकर्त्ताका मङ्गलाचरण प्रारम्भः

श्रीमन्निम्बाचार्य्याय नमः ॥ तहां अर्थ भक्तमाल में लिख्यो है भक्त भक्ति भगवन्त गुरु चार रूप लिखे हैं तहां हरिको स्वरूप नहीं लिख्यो-जाय तापै राजा को चित्रकारको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ लिखन बैठि जाकी छवी, गहि गहि गर्वगरूर ॥ भये न केते जगत के, चतुर चितेरे क्रूर ॥ १ ॥ चित्र चितेरो जो लिखै, रचिपचि मूरतिवाल ॥ वह चितवनि वह मुरि चलनि कैसे लिखै जमाल ॥ २ ॥ दृग पुतरीलौं श्याम वह, लिख्यो कौन पै जाय ॥ जग उजियारी श्यामता, देखो जीय लगाय ॥ ३ ॥ कोटि भानु जो ऊगवै, तऊ उजास न होय ॥ तनक श्यामकी श्यामता, जो दृगलगी न होय ॥ ४ ॥ मोहन जग व्यवहार तजि, वणिज करो यहिहाट । पीव पदारथ पाइये, जिय कौड़ी के साट ॥ ५ ॥ छवि निरखत अति थकित ह्वै, दृग पुतरी ब्रज बाम ॥ फिरन उठी बैठी चुहट, कियो गौरतनु श्याम ॥ ६ ॥ पद ॥ मैया दाऊजी मोहिं बहुत खिझायो । मोसों कहत मोल को लीयो तू यशुदा नहिं जायो ॥ नन्दहु गोरो यशुदहु गोरी तू कित श्याम शरीर । तारी दै दै ग्वाल नचावैं सिखवत हैं बलवीर ॥ सिखवन दै बलबीर चवाई मिथ्यावादी धूत । सूरदास मोहिं गोधनकी सौं मैं जननी तू पूत ॥ ७ ॥ संमोहनीतंत्रे ॥ फुल्लेन्दीवरकांतिमिन्दुवदनंबर्हावतंसप्रियं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् । गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं गोविन्दंकलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषंभजे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रेम चितेरे की सुमति, कापैवरणीजाय ॥ मोहन मूरति श्यामकी, हियपट लिखी बनाय ॥ ९ ॥ तीक्षण बहनी बाण सों बेध्यो हियो दुसार ॥ जालरंध्र कीन्हों मनों, प्रेमीघट अँधियार ॥ १० ॥ लिखि स्वरूप चित को दियो, लियो हिये सों लाइ ॥ चित्रकार पर वारितन

रह्यो पाइलपटाइ ॥ ११ ॥ कबित्त ॥ श्यामता उज्यारी मुख मुरली अधरधारी रूपमतवारी आंखैं रूपताकि रही है । केश खैंचि बांध्यो जूड़ा वेसमनमांझ चूड़ा प्रेमछवि पूरा द्युति चन्द्रिका सुवही है ॥ अलकैं कपोलनिपै छुटिआईं पुटमानों घटलेत हिये कछु वैसियेबहीहै । श्रीगोविन्दचन्द जूको चित्र लिखि चित्र दियो बड़ेई विचित्रनिकी मति अति गही है ॥ १ ॥ पद ॥ नमो नमो श्रीभक्ति सुमाल । जाके सुनत महा तम नाशत उर झलकत राधा नँदलाल । गद्गद सुर पुलकत अँग अंगन लोचन बरषत अँशुवनजाल । उतारिजात अभिमान व्यालविष लेत जिवाइ सुरसातिहि काल॥ २॥ होत प्रीति हरिभक्त जननसों लेत शीतहठि चरण प्रछाल । तजत कुसंग लेत सतसंगति भाग जगत कोउ अद्भुतभाल । निशि वासर सोवत अरु जागत रोम रोमह्वै करत निहाल । श्री अग्रनरायण दासप्रिया प्रिय प्रगटी जीवनि रसिक रसाल ॥ ३ ॥ हरिको स्वरूप प्रेम रूपी चित्रकार सों लिख्योजाय और सों नहीं महाप्रभु विशेष काहेते जीव हरिसों विमुख सम्मुख आवै जाय प्राप्तहोइ ॥ १ ॥ गीतायाम् दैवीह्येषागुणमयीममदुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यंते मायामेतांतरंतिते ॥ २ ॥ चैतन्यभागवते ॥ एतेचांशकलाःपुंसःकृष्णस्तुभगवान्स्वयम् ॥ इन्द्रारिव्याकुलंलोकं मृड़यंति युगेयुगे ॥ ४ ॥ मनहरन अक्षर सो कामधेनुहै ॥ राधाचरणदीपिकायां ॥ दृष्टःक्वापिचकेशवोव्रजवधूमादायकांचिद्गतः सर्वाएवविमोचिताःसखिवयं सोन्वेषणीयोयदि ॥ द्वौद्वौगच्छतमित्युदीर्यसहसाराधांगृहीत्वाकरे गोपीवेषधरोनिकुंजभवनंप्राप्तोहरिःपातुवः ॥ ३ ॥ सखीकोउदाहरण ॥ कबित्त ॥ आजु मनमोहनसों मोसों ऐसी होड़ परी और इन आलिनसों कहाधौं विशेषिये । दर्पण निहारि कान्ह कही मेरे वडेनैन हांकही इनहुँ तब बोलीहोंहू तेषिये ॥ दीरघ दरारे दृग मेरी राधा कुँवरिके हैं कैसो कारि जानोंचलौ ढिगलाइ पेखिये । आये हैं हरावो इन्हैं अहो येहो वालिगई एकबार आंखिन सों आँखे माँहिं देखिये॥ ४ ॥ जैसीनित

रहतिहै तैसी अँखियांहैं मेरी इनकी अनैसी अरुनई भये तेषिये । चित्तजे चढी हैं प्यारी दीसत न उजियारी ताहीके बल अहोमांहिं अवरेषिये ॥ होंहूं जानति हौं दोऊ सम कैसे ह्वैहैं द्वैते चारि किये प्रेमसों विशेषिये । जित घट ह्वैहै तित जोर है सुजान कान्ह कैसे ऐसी आंखिनसों आंखैं माहिं देखिये॥५॥ मीनसम थरथरात उघर दुरकछुपात वामन मनहरिवेतैं निश्चयकेहेरेहैं। नेकुन निहारे हिय फारे बाराहसम अरिवेतैं परशुराम फिरत न फेरे हैं ॥ तीक्ष्ण नृसिंह नख बोधक अबोलिबेतैं तारिबेतैं राघव गुलाब चित्तनेरे हैं । मोहिबेते मोहन अकलंकबिन निहकलंक दशौ अवतार किधौं प्यारी नैने तरे हैं॥ १॥ वृन्दावन मनहरणपै॥ श्लोक॥ कृष्णोन्या यदिसंभूतो यस्तुगोपेन्द्रनंदनम् । वृंदावनंपारित्यज्य पादमेकंनगच्छति ॥ २॥ बर्हापीडंनटवरवपुः कर्णयोःकर्णिकारं बिभ्रद्वासःकनककपिशंवैजयंतींचमालाम् ॥ रंध्रान्वेणोरधरसुधयापूरयन्गोपवृंदैर्वृन्दारण्यं स्वपदरमणंप्राविशद्गीतकीर्तिः॥ ३ ॥ व्रजबासी मनहरणपै ॥ भागवते ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् ॥ यन्मित्रंपरमानंदं पूर्णब्रह्मसनातनम् ॥ ४ ॥ साधमनहरणपै ॥ भागवते ॥ निरपेक्षं मुनिं शांतं निर्वैरंसमदर्शनम् ॥ अनुव्रजन्तिये र्नित्यं तेपूयंत्यंघ्रिरेणुभिः ॥ ५ ॥

अज्ञानरूपनकवित्त ॥ महाप्रभुकृष्णचैतन्यमनहरणजूके चरण को ध्यान मेरे नाम मुखगाइये । ताही समय नाभा जीने आज्ञादई लईधारि टीका विस्तारि भक्तमालकी सुनाइये ॥ कीजिये कवित्त बंद छंद अतिप्यारो लगै जगै जगमांहिं कहि वाणी बिरमाइये।जानों निजमति येपै सुनो भागवतशुकद्रुमनप्रवेशकियोऐसेईकहाइये॥१॥

टीका को नाम स्वरूप वर्णन ॥

भगवान्‌कह्यो मैं भक्तनको ऋणियांहौं याते इनकी चरण रेणु मैं शिरपरधारोंहौं क्योंकि मेरो अपराध मिटै ॥ ६ ॥ गीतायाम् ॥ येयथामांप्रपद्यन्ते तांस्तथैवभजाम्यहम् ॥ येदारागारपुत्राप्तान् ॥ ७ ॥ सो कही पै

बनीनहीं क्योंकि इन्होंने घर बार पति पुत्रादि कुल धर्म सब छोडे अरु मोते कछू न छूट्यो याते हौं इनको ऋणियांहौं याते विचारो इनहीं की चरण रेणु शिरपरधारों तब मेरो अपराध मिटैगो सो याते धारोहौं ॥ ८ ॥ ध्यान-मेरे नाममुख गाइये ॥ ९ ॥ तहां दोऊ कैसे बनैं ॥ श्लोक ॥ इंद्रियाणां लयोध्यानम् ॥ तापैदृष्टांतसिद्धके द्वैरूप इन्द्रि नको ॥ १० ॥ ताही समय ॥ ॥ दोहा ॥ पायलपायँलगीरहैं, लगेअमोलक लाल ॥ भोडरहूकी भासि है, बेंदीभामिनिभाल ॥ १ ॥ सुनाइये ॥ सनत्कुमारवाक्ये ॥ सर्वाप-राधकृदपि मुच्यतेहरिसंश्रयः ॥ हरेरप्यपराधान्यः कुर्याद्विपदपांसलः॥ २ ॥ आगमे ॥ यानैर्वापादुकाभिर्वागमनंभगवद्गृहे ॥ देवोत्सवाद्यसेवाच अन्य नामतदग्रतः ॥ ३ ॥ उच्छिष्टेवाप्यशौचेवा भगवच्चन्दनादिकम् ॥ एक-हस्तप्रणामश्च तत्पुरश्चाप्रदक्षिणम् ॥ ४ ॥ पादप्रसारणंचाग्रे तथापर्यंकबं-धनम् ॥ शयनंभक्षणंचापिमिथ्याभाषणमेवच ॥ ५ ॥ उच्चैर्भाषामिथोजल्पो रोदनानिचविग्रहः ॥ निग्रहानुग्रहौचैव नृपुचक्रूरभाषणम् ॥ ६ ॥ कंब-लावरणंचैव परनिंदापरस्तुतिः ॥ अश्लीलभाषणंचैवअधोवायोर्विमोक्षणम् ॥ ७ ॥ शक्तौ गौणोपचारश्च अनिवेदितभक्षणम् ॥ तत्तत्कालोद्भवानांचफ लादीनामतर्प्पणम् ॥ ८ ॥ विनियुक्तावशिष्टस्य प्रदानंव्यजनादिकम् ॥ पृष्ठीकृत्वासनंचैव परेषामभिवादनम् ॥ ९ ॥ गुरौमौनंनिजस्तोत्रं देवता निंदनं तथा ॥ अपराधास्तथाविष्णोर्द्वात्रिंशत्परिकीर्तिताः ॥ १० ॥ नामा श्रयः कदाचित्स्यात्तरत्येवसनामतः ॥ नाम्नोपिसर्वसुहृदोह्यपराधात्पत त्यधः ॥ ११ ॥ नाभाछप्पय ॥ गुरूअवज्ञाकरै साधु निंदाविस्तारै । शि-वकी निंदाकरै ब्रह्ममें भेद विचारै ॥ नाम बल कारि अपराध नाम परता-प न जानै । वेदनिशास्त्रउलंघि आप मनको मतठानै ॥ विनश्रद्धा उपदेश और ठगिआयो पोषै । निजइंद्रिनके हेत चेत परि पिएडह सोषै ॥ ये दश अपराध तजिदेहते साधु संगति सेरलि मिलै । तत्त्ववेत्तातिहुँ लोकमें राम नाम तोको फलै ॥ १२ ॥ गीतायाम् ॥ मूकंकरोतिवाचालं पंगुलंघयते

गिरिम् ॥ यत्कृपातमहंवंदे परमानंदमाधवम् ॥ १ ॥ कहाइयेपै ॥ दोहा ॥ संत कृपा रवि उदयते, मिटै तिमिर अज्ञान ॥ हृदय सरोवर विमलह्वै फूलेहित बुधज्ञान ॥ २ ॥ श्रीभागवतकी सुबुधि, कही कीरकलगान ॥ भक्तमाल अभिप्राय जो, जानैं संत सुजान ॥ ३ ॥

रचिकविताईसुखदाईलगैनिपटसुहाई औसचाईपुनरुक्तिलैमिटाई है । अक्षरमधुरताईअनुप्रासजमकाईअतिछबिछाईमोदझरीसीलगाई है । काव्यकीबड़ाईनिजमुखनभलाईहोतिनाभाजूकहाई यातेप्रौढ़कै सुनाईहै । हृदयसरसाई जोपैसुनियेसदाईयह भक्तिरसबोधिनीसोनामटीकागाईहै ॥

रचिकविताईपै ॥ श्लोक ॥ तद्ब्रह्ममातृवधपातकमन्मथारिक्षत्रांतकारिकरसंगमपापभीत्या । ऐशंधनुर्निजपुरश्चरणायनूनंदेहंमुमोचरघुनंदनपाणितीर्थे ॥ ४ ॥ दोहा ॥ पियलखि सियकी माधुरी, तृणतोरनके चाइ ॥ भोरैंधनुष उठाइकै, तोरयो सहज सुभाइ ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ कमठपृष्ठकठोरमिदंधनुर्मधुरमूर्तिरसौरघुनंदनः ॥ कथमधिज्यमनेनविधीयतामहहतातपणस्तवदारुणः ॥ ६ ॥ रचिवोनामरंगकोहै कविताकोकहारंगिवोचीज काढ़िलैवो यही कविताको रँगिवोहै ॥ ७ ॥ सुखदाई सुहाई पुनरुक्ति भई नाहीं सो कविता तीनि प्रकारकी शब्दचित्र अर्थचित्र शब्दार्थचित्र ॥ सवैया ॥ हटके नरहैं भटके पलओट भटू मेरे नैननि मों बसिके । अटके उतही सटके मनलैनटके सेबटा टटकेरसके ॥ लटकेलट छोरनि सों लटके षटके नकटाक्षनके कसके । मटके न घटा छबिके झलकैं न लगे इन चाहनके चसके ॥ ८ ॥ पीसौं झुकी रसना विन काज लखे गुणनाम समान तिहारे । नयनचले अति रूखेरहे तुम ताहीतेनैन ये नाम धरारे ॥ संत विरुद्ध बढ़्यो अतिही जिय ते दुख नेकु टरै नहिं टारे । पाइ सुलक्षण राग अरे करकाहे को नंदलला झिझकारे ॥ १ ॥ दगहो तुम दाई अदाई बड़े अरु घूंघट माहिं रहे फँसिकै । रसना रस जानति तू न कछू मुखबैन कहेनहिं तै हँसिकै ॥

भुजहौ तुम भूलकरी इतनी प्रिय प्यारेसों क्योंन मिले गँसिकै । मन तू न मिल्यो मनमोहन सों सबहीके सयान गये नँसिकै ॥ २ ॥ दोहा ॥ चष उपमा कमलासन, आसन निज तन कीन ॥ विमलज हृदय कमल को, धूरि कमल मुखदीन ॥ ३ ॥ वारों बलि तो दृगनि पर, अलि खंजन मृग मीन ॥ आधी दृष्टि चितौन जिमि, किये लाल आधीन ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ कारे झपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ढरारे मनमथ मतवारेहैं । लाज भरि भारे जो चपल अनियारे तारे सांचेकेसे ढारे प्यारेरूपके उज्यारे हैं ॥ आधी चितवनिही में आधीन कियेते हारि टोनेसे बसीकरके लोने पनियारे हैं । कमल कुरंग मीन खंजन भँवर बृषभानुकी कुँवरि तेरे दृगनिपैवारे हैं ॥ ५ ॥ सचाई श्लोक ॥ हरोहिमालयेशेते हरिश्शेतेच वारिधौ ॥ आकाशेभ्रमतेसूर्यो जानेमत्कुणशंकया ॥ वायसाः किन्नभक्षंतिकवयोनवदंतिकिम् ॥ मद्यपाःकिन्नजल्पंति किन्नकुर्वंतियोषितः ॥ ६ ॥ मृषागिरस्ताह्यसतीरसत्कथानकथ्यते यद्भगवानधोक्षजः ॥ तदेवसत्यंतदुहैव मंगलं तदेवपुण्यंभगवद्गुणोदयम् ॥ ७ ॥ पुनरुक्ति दोहा ॥ दोषनहीं पुनरुक्तिकी, एक कहत कविराज ॥ अर्थगहे पुनि अर्थको, ये कविगणके साज ॥ बारणको तारण अहो, बार न लागी तोहिं ॥ बार न कीजेहे प्रभो, वा रण भटकन मोहिं ॥ ८ ॥ मनकी सचाई पाइकै उठिआये प्रभु पास ॥ मनवांछितफलपाइके, हियमें अधिकहुलास ॥ ९ ॥ शुद्धघटमें तौहरि सदा, बासकरैहैं ताको चिंता कौन शत्रुकी है मधुरताईपै ॥ कवित्त ॥ करत कवित्त तुक दौरै मन दौरै जहां औरे औरे औरे जहां रसुठसांकरैं ॥ सोनेकीसी सांकरे ये मिश्रीकीसी कांकरे ये आकरसआकरैं सुहाकरैं निसाकरैं ॥ सोंठिकीसीं गांठैं तुकगांठैं तेऊगाठिकीन सांठेसों लैआनी काहू आकानिकेराकरैं । दोऊते समान ऐसी जहानको जमानोदेख्यो भोरभये जीत्यो षटपद पदमाकरैं ॥ ३ ॥ अंग अंग औघटन घाटहै मनावोको लालको तृषाहै याअधर रसपानकी । भौंहेकी मरोरनिमें भौरसे परतजात त्योंरी की तरं-

गनि में निठुरता निदानकी ॥ जगन गहर मौन उत्तर न थाहहैकिंहूं ऐसीगरबीली हठीली वृषभानकी । रिसके प्रवाह रसकूलन बिदारैंजात नदीसी उमड़ि चली मानिनीके मानकी ॥ २ ॥ अनुप्रास ॥ मदनतुकासी किधौंराजैंकुंदकासी मानों कंजकलिकासीकुच जोरिहू विकासीहै । गांसी-भरी हांसी मुखभासी मोहफांसीमद यौवन उजासी नेहदियेकी शिखासी है ॥ जाकी रतिदासी रसरासी है रमासी को कहै तिलोत्तमासी रूपस-रनप्रकासी है । काम की कलासी चपलासी कविनाथ किधौं चंपलतिकासी चारुचंद्र चंद्रिकासी है ॥ ३ ॥ सोई मेरो वीर जो लैआवै वलबीर ताहि देहौं दोऊ चीर मेरो विरहबँटाइले । भंजन छपाके पीर छपै न छपायेपीर छपाकरि छपैतो छपाकर छपाइले ॥ मदनलग्योहैधाइधाइसो कहौरी धाइ येरी मेरी धाइ नेक मोहूतन धाइले । देहरी थरथराइदेहरी चल्यो न जाइ देहरीतनकहाथ देहरी लघाइले ॥ ४ ॥ काव्यकी बड़ाई ॥ कवित्त ॥ यहै कविताई जामें भरी सरसाई मृदु पदसुखदाई अंकरचना सुहाई है । जाके ढूंढिवे को वडेरसिकप्रवीन मन लीन भये रसमांझ जवैजाइपाई है ॥ जैसेतीरगरडर निपट एकाग्रकरि आधिआंखि मूंदि लखै तीरकु-टिलाई है । ऐसे वह बकाई निज प्रगट दिखाई देति ताकी न बड़ाई वा बकाई की बड़ाईहै ॥ १ ॥

भक्तिस्वरूप ॥ श्रद्धाईफुलेलऔउबटनोंश्रवणकथामैलअभि-मानअंगअंगनिछुटाइये । मननसुनीरअन्हवायअँगुछायदयानवनव सनपनसौंधौलैलगाइये ॥ आभरणनामहरिसाधुसेवाकरणफूल मानसीसुनथसंगअंजनबनाइये । भक्तिमहारानीकोश्रृंगारचारुबी-रीचाहरहै जोनिहारिलहैलालप्यारीगाइये ॥

श्रद्धाई फुलेल ॥ भक्ति महारानी को श्रृंगार आगमे ॥ हरिभक्तिर्महा-दिव्या सर्वामुक्त्यादिसिद्धयः । भुक्तयश्चाद्भुतास्तस्या चेटिकाहदनुव्रताः ॥ ॥ २ ॥ भागवते ॥ तत्सर्वंभक्तियोगेन मद्भक्तोलभतेऽजसा ॥ स्वर्गाप

वर्गौमद्धाम कथंविघातिवांछति ॥ ३ ॥ तापैदृष्टांतरांकाबांकाको ॥ ॥ आगमे ॥ आदौश्रद्धाततः साधुसंगोथ भजनक्रिया ॥ ततोनर्थनिवृत्तिश्च ततोनिष्ठारुचिस्ततः ॥ ३ ॥ अथासक्तिस्तथाभावस्ततः प्रेमाभ्युदंचति ॥ साधकानामिदं प्रेम प्रादुर्भावोभवेत्क्रमात् ॥ ४ ॥ मैलअभिमान ॥ जातिर्विद्यामहत्वं च रूपयौवनमेवच ॥ यत्नेनपरितस्त्याज्याः पंचैतेभक्तिकंटकाः ॥ ५ ॥ पांचकांटे सोई पांचौमैल ॥ भागवते ॥ नालंद्विजत्वंदेवत्वमृषित्वंवासुरात्मजाः ॥ प्रीणनायमुकुंदस्य नव्रतंनबहुज्ञता॥ ६ ॥नदानंनतपोनेज्या नशौचंनव्रतानिच । प्रीयतेमलयाभक्त्याहरिरन्यद्विडंबनम् ॥ ७ ॥ मननसुनीर न्हायवेमें आनंदजैसेही मननमें अंगोछा दयामें तीनगुण तेलछुटावै उबटनो अरु मैल श्रद्धाकथामनन ॥ नारदपंचरात्रे ॥ वैष्णवानांत्रयंकर्मदयाजीवेषुनारद ॥ श्रीगोविंदेपराभक्तिस्तदीयानांसमर्चनम् ॥ कर्णफूल पांचजातिके जडाऊसोनेके रूपेके रांगके काठके पै सुहाग पांचोहीमें रहैं याते करैतो दोऊकरै साधसेवा न बनिआवे तो प्रभुकीभी उठाइ धरै ॥ पाद्मे ॥ अर्चयित्वातुगोविन्दं तदीयान्नार्चयंतिये ॥ नतेविष्णुप्रसादस्य भाजनंदांभिकाजनाः ॥ १ ॥ २ ॥ सतसंगपैभागवते ॥ नरोधयातिमांयोगो न सांख्यंधर्मएवज ॥ नस्वाध्यायस्तपस्त्यागा नेष्टापूर्त्तनदक्षिणा॥ ३ ॥व्रतानियज्ञच्छंदांसितीर्थानिनियमायमाः । यथावरुंधतेभक्तिःसत्संगोपार्जिताहिमाम्॥ ४ ॥ अथवा भक्तिके अंग भक्तिमालहीमें हैं श्रद्धा सेवामें गदाधरभट कथामेंपरीक्षित मननसुचोर चतुर्भुजदासकी कथा सुनी ॥ ५ ॥ दया केवल रामसाटोपीटिमें उपड्यो ॥ ॥ ६ ॥ नवनगोपालदास जोवनेरी पनराजा आशकरन नाम आभरण अन्तरनिष्ट ॥ ७ ॥ हरिसेवारत्नावतीरानी ॥ ८ ॥ साधुसेवा सदावृती मानसी रघुनाथगुसांई सत्संगग्वालभक्त ॥९॥ चाहवारी मधुगोसांई १०॥

भक्तिपंचरस ॥ शांतदास्यसख्यवात्सल्यऔशृँगारुचारुपांचौ रससार विस्तारनीके गाये हैं । टीकाको चमत्कार जानौगे विचा-

रिमन इनके स्वरूप में अनूपलै दिखाये हैं ॥ जिनकेनअश्रुपात-पुलकितगातकहूंतिनहूं को भावसिद्धबोरेसोछकायेहैं। जौलौंरहैदू-रिरहै विमुखतापूरिहियोहोयचूरिचूरिनेकुश्रवणलगायेहैं ॥ ४ ॥ पंचरससोईपंचरंगफूलथाकिनीके पीकेपहराइबेकोरचिकैबनाईहै। वैजयंतीदामभाववतीअलिनाभानामलाई अभिरामश्यामभतिलल-चाईहै ॥ धारीउरप्यारीकिहूंकरतमन्यारीअहोदेखौगतिन्यारीढरि-यानिनिकौआईहै। भक्तिछविभारतातेनमितशृंगारहोतहोतबश लखैजोईयातेजानिपाईहै ॥ ५ ॥

भक्तिपंचरसपै ॥ सोभक्तिको स्वरूप क्रियात्मकहै सो क्रिया हीते जानीजाइ है ॥ भागवते ॥ देवानांगुणलिंगानामानुश्रविककर्मणाम् ॥ सत्त्वएवैकमनसोवृत्तिःस्वाभाविकीतुया ॥ १ ॥ अनिमित्ताभागवतीभक्तिः सिद्धेर्गरीयसी ॥ जरयत्याशुयाकोशं निगीर्णमनलोयथा ॥ २ ॥ जैसे रसनमें इंद्री स्वाभाविकीही चलैहै ऐसेही समस्त इंद्रिय भक्तिमें स्वाभावि की लगैं या क्रियाते भक्ति जानीजाइ है सो भक्ति पंचप्रकार की जैसे ईपको रस खांड़ बुरा मिश्री कंद ओरा स्वाद न्यारे न्यारे तत्त्व एक ॥ ॥ ३ ॥ शांतसर ॥ दोहा ॥ यमकरि मुहतरहाठिपरचो, यह धरि हरि चितलाइ ॥ विषयतृषा परिहरि अजौं, नरहरिके गुणगाइ ॥ ४ ॥ दास्य रस ॥ दासनदास तिहारो ऋणी प्रभु मोते नहीं कछुवै बनिआई। तेदुख-ठावनि मोदबढ़ावनि मोहित भोगकी नींमादिवाई ॥ आपुही मैं बिसरचो तिनमें पगिताते तहां तुम्हरीको चलाई। पैआपअपनो जानिगहो नहिं जातिअहो तुम्हरी ये बड़ाई ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ गुणनगहेहौं मन व्यारमैं वहैहौं तेरी ढीलनदैहौं पंचरंगको पतंगमें। जितहीकन्यावतहौ तितही मैं आवतहौं ऐंचैझुकिधावतहौं पवनके संगमें ॥ गयोभारिवाय हरि उषर नरह्यो आइ ताते थिनथांभथँभ्यो थिरकनिके रंगमें। हरे हरे ऐंचिनाथ कीजियेजू अपनी घानातरु अनाथ जात अनंगकी तरंगमें ॥ ६ ॥ सख्य

रस करुणाभर नाटके॥ एककहै अस यत्नहिं कीजै। कृष्ण द्वारका जान न दीजै॥ एककहैं हों लेहोंदांव। कहा भयो है आयोराव॥ ७ ॥ एककहैं आवनतौ देहु। तब तुम दांव आपनो लेहु॥ वात्सल्य पद॥ जोपैरा खतहौ पहिंचानि। तौ वै बालक मोहन मूरति मोहिं मिलावो आनि। भली करी कंसादिक मारे सुर मुनि काजकियो। अब इन गाइन कौन चरावै भरि भरि लेत हियो॥ तुम रानी बसुदेव गेहनी हम अहीर ब्रजवासी। पठैदेहु मेरे लाल लड़ैते जारौं ऐसी हांसी॥ खान पान परधान विविधसुख जो कोउ लाललड़ावै। तदपि सूर मेरो कुँवर कन्हैया गोरसही सुखपावै॥ ॥१॥ शृंगार रसकबित्त॥ सीखेरसरीति सखि प्रीतिके प्रकार सब सीखे केशवराइ मन मनको मिलाइबो। सीखे सोहै खान नटिजान मुसकान सीखे सीखे सैनबैनानि में हँसिबो हँसाइबो॥ सीखेचाह चाहसों जु चाह उपजाइबेकी जैसी कोऊ चाहै चाह तैसी चाह चाहिबो। जहां जहां सीखे ऐसी बातैं घातैं तातैं तब तहां क्यों न सीखे नेकु नेहको निबाहिबो॥ ॥ २ ॥ ऊधौकहा कहिये जियकी तिय कौनसी जो न सँभारति हैं। परतासभलौ नहीं या जगमें हमतो अपने दिन टारति हैं॥ मुखमीठो महाहिरदै कपटी बतियां छतियां नित जारति हैं। हौं दासनिदास तिहारो ऋणी येई बोल गुपालके शालति हैं॥ ३ ॥ गहिबो आकाश पुनि लहिबो अथाह थाह अति विकराल काल व्यालहि खिलाइबो। शेल शमशेर धार सहिबो प्रहारवान गज मृगराज लै हथेरिनि लराइबो॥ गिरिते गिरनपंथ अगिनिमें जरनि काशीमें करवटतन चरफलौंगराइबो। पीबो विष विषम कबुल कबि नागरजू कठिन कराल एकनेह को निबाहिबो॥ ४ ॥ दोहा॥ नैन मूंदि मुख मूंदिको, धरौत्रिकुटि मधिध्यान॥ तब आपाहिमें देखि हौ, पूरणआतमराम॥ ५ ॥ कबित्त॥ ओढिबेको कंथा और माइबेको भस्म अंग काननिमें मुद्रा शिरटोपियां धरावैंगी। करमें कमंडलुकर खप्पर भराइबेको आदेश आदेशकरि शृंगीहू बजावैंगी॥

कुबिजाको ऋद्धिदई गोपिनको सिद्धिदई फिरैंगी मशाननि में गोरखै जगावैंगी। एकबार ऊधवजू फेरि समझाइ कहौ एती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावैंगी ॥ १ ॥ योगी जग तजैं हम योग जग दोऊ तजैं योगीभषैं पौन हम पौनहूंते हट हैं। योगी करसींगीहम सींगी भई श्याम बिन योगी लावैं धूरि हम धूरिहू तेलरि हैं ॥ योगीछेदैं कान हमछेदैं हियोवेधें प्राण योगी ढूंढैदंड हमहरिदंडठटि हैं। आवनकी आश सुधि बीतिगई ऊधोजोतौ योगी कीजुगतिते वियोगी कहा घटिहैं ॥ २ ॥ सुखाइ शरीर अधीन करे-दृगनीरकी बूंदसौं माल फिरावै। नेहकी सेली वियोग जटालिये आहकी सींगी सपूर वजावै ॥ प्रेमकी आंवमें ठाढीजरै सुधि आराले आपनी देह चिरावै। सुजानकहैं कलाकोटिकरौपै वियोगीके भेदको योगी न पावै॥ ३॥ श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन आठौयाम ऊधौ यहां श्यामही सों कामहै। श्यामहिय श्यामाजिय श्यामाविन नाहिंतिय आंवरेकी लाकरी अधार नामश्याम है ॥ श्यामगति श्यामहीं प्रतापपति श्याम सुखदायी सोभु लाये घरधाम हैं।तुमभये बौरे यहां पाती आये दौरे योग कहां राखैं हमरोम रोम श्यामहैं ॥ ४ ॥ रूसिरहौ हमसों तौ हमें नितही परि पाइँ नपाँइमनावो। बोलो नबोलो हमैं नित बोलिवो चाहकरौ नकरो हमैं चाहिवो ॥ देखे न देखे दयाकरिप्यारे हमैं नितनैननि तैं दरशाइवो। मानो न मानो हमैं यह नेम नयो-नित नेहको नातो निवाहिवो॥ ५॥ विचारा सन ॥ तापैं दृष्टान्त चित्र-की पुतरीको अरु खानखानाको ॥ १ ॥ होइ चूरचूर॥ कवित्त ॥ बेले ते बिछुरिपान पर पाटिल ह्वै कै कसन कसाइ अंग हाथनि नचतु है। बेशुमार दागिल ह्वै परम कतरनीमें पाइकै मरोरी बहुबिकनि बिकतुहै ॥ सरस मसाले अनुमानके लै दियेबीच धरिकै चितौनि रस सजिकै पजतु है। एते पर सखी सुखरासिक हाथ आये कहा चूरचूर भये विनारंग क्यों रचतु है ॥ १ ॥

सतसंगप्रभाव। भक्तितरुपोधाताहिबिघ्नडरछेरीहूकोबारदेवि-चारबारसींचोसतसंगसों। लाग्योईबढ़नगोदाचहुँ दिशिकढनसों

चढ़नअकाशयशफैल्योबहुरंगसों ॥ संतउरआलवालशोभितविशा-
लछाया जियेजीवजालतापगयेयोंप्रसंगसों । देखौबढ़वारिजाहिअज-
हूकीशंकाहुतीताहीपैंडवांधेझूलैहार्थीजीतेजंगसों ॥ ६ ॥

सतसंग ॥ भागवते ॥ सतांप्रसंगान्ममवीर्यसंविदो भवंतिहृत्कर्णरसा-
यनाः कथाः । तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धारतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति
॥ १ ॥ दोहा ॥ इष्टमिलै अरु मनमिलै, मिलै भजन रसरीति ॥ मिलिये तहां
निशंक ह्वै, कीजै तिनसों प्रीति ॥ १ ॥ एककहे जागे लोचन घूम घुमारे
दूसरौ कहै एक निरंजन है अविनाशी ॥ दोहा ॥ वहता पानी निर्मला
बँधा गँधीला होइ ॥ साधू जन रमता भला, दाग न लागै कोइ ॥ २ ॥
वृन्दावनशतके॥ मिलंतुचिन्तामणिकोटिकोटयः स्वयंचहरिर्दृष्टिमुपैतुमेनहिं ॥
॥ कवित्त ॥ वचन विलास में मिठास आइ वासकरै हरै हृदय रोगजोग
मानैं जे जियारीके । नयेई जे जातजाति वातन सुहात नेकु पुलकत
गात दृग धाराजल न्यारीके ॥ रूपगुण मातेदेह नाते जितेहातें
होत सोतज्यों सलिल मन मिलत जियारीके । और सब संग
हम संगकेसमान किये सोईसतसंग रंग बोरै लाल प्यारीके ॥ ३ ॥ ४ ॥
सबहींतेबड़ी क्षिति क्षितिहूते बड़े सिंधु सिंधुहूते बड़े मुनि वारिधि अचैरहे
तिनहूते बड़े नभ तामें मुनिसे अनेक तारा अरु दारा येन सबयन छ्वैरहे
तिनहूंते बड़े पग वावन बढ़ाये जब ताहीकी उँचाई देखि तीनोंलोक नैरहे ।
तिनहूंमें बडे संत साहिब अगमसेंगम ऐसे हरि बड़े ताके हृदय घर कैरहे ५॥

नाभाजूकोवर्णनम् ॥ जाकोजोस्वरूपसोअनूपलैदिखाइदियोकि
योयोंकवित्तपटामिहीमध्यलालहै । गुणपैअपारसाधुकहैंआंकचारि
हीमेंअर्थविस्तारिकबिराजटकसारहै ॥ सुनिसंतसभाझूमिरहीअलि
श्रेणीमानौं घूमिरहीकहैं यहकहाधौंरसालहै सुनहेअगरअबजानेमैं
अगरसही चोवाभयेनाभासोसुगंधभक्तिमालहै ॥ ७ ॥

चारहीमें ॥ छप्पय ॥ कहा न सज्जन नवत कहा मुनि गोपी मोहित ।
कहा दासको नाम कवित में कहियत कोहित ॥ को प्यारो जगमाहिं

कहा क्षिति लागैआवै। को बासरही करै कहा संसारहि भावै ॥ कहि काहि देखि कायर कँपत आदि अंतको है शरन ॥ यह उत्तर केशवदास दिय सबै जगत शोभाधरन ॥ १ ॥ कवित्त ॥ चतुर बिहारीजू पै मिलि आईं बालासात मांगति हैं आजु कछु हमको दिवाइयै। गोदलै हौफूलदै हौ नाकहिपहिराइ मोती पाननकी पातरि हुताशनहूं लाइये ॥ ऊंचेसे अवासके झरोखा वैठाइ येजू मेरीसेज श्यामआजु रतिपति ध्याइये ग्वालसमुझाइवेको उत्तर सब दीन्ह्योंएक उक्त विशेषभांति वारी नहीं आइ ये ॥ २ ॥ श्लोक ॥ कोदुराग्रहमोहाय कामियामुरविद्विषः ॥ पदंप्रश्न वितर्केकिं कोदंतश्छदभूषणम् ॥ जसवंतसिंहको रानीनेसिंगरफको सालिख्यौ ॥ तामें लालसावांच्यो जैसे ब्रजसुंदरीने पातीलिखी ॥ दोहा ॥ तर झुरसी ऊपर गरी, कज्जलजल छिरकाइ। पिय पाती बिनही लिखी वांची बिरह बलाइ ॥ ३ ॥ दृष्टांत गुलाबको औ गुलालाको ॥ ४ ॥

भक्तमालस्वरूप ॥ बड़ेभक्तमाननिशिदिन गुणगानकरैं हरैंजग पापजाप हियो परिपूरहै। जानिसुखमानिहरिसंतसनमानसचैं बचे ऊजगतरीतिप्रीतिजानीमूरहै ॥ तऊदुराराध्यकोऊकैरोकैअराध्य सकैसमझो नजातमनकंपभयोचूरहै । शोभिततिलकभालमालउ रराजैऐपैविनाभक्तिमालभक्तिरूपअतिदूरहै ॥

मूलमंगलाचरण ॥दोहा॥ भक्तभक्तिभगवंतगुरु चतुरनामबपुएक॥ इनकेपदवंदनकरै, नाशैविघ्न अनेक ॥ १ ॥

भक्तिरूप अतिदूरहै ॥ भागवते ॥ तत्कथ्यतांमहाभाग यदिकृष्णकथा श्रयः ॥ अथवास्यपदांभोजमकरंदलिहांसताम् ॥ १ ॥ भक्तभक्तिमंगलाच रण तीनि प्रकार वस्तु निर्देशात्मक गीतगोविन्दे ॥ मेघैर्मेदुरमम्बरंवनभु वः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तंभीरुरयंत्वमेवतदिमं राधेगृहं प्रापय ॥ इत्थंनन्द निदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयंतियमुनाकूलेरहः

केलयः ॥ नमस्कारात्मकं ॥ किरातहूणांध्रपुलिंदपुष्कसा आभीरकंकायवनाःखसादयः । येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाच्छुद्ध्यंतितस्मैप्रभविष्णवेनमः॥ ॥ २ ॥ आशीर्वादात्मकं ॥ नृसिंहपुराणे ॥ यःरंतभाद्रजमानो गगडगडगडडुभालचंद्रार्द्धदंष्ट्रोव्योमोद्भूर्व्याप्यमानो जजडजड्जडत्साध्यमानःसटाभिः॥ दंष्ट्राभिःखादमानः ककटकटकटत्तर्जमानोसुरेंद्र निष्क्रांतोहास्ययुक्तो गगहगहगहत्पातुवः श्रीनृसिंहः ॥ ३ ॥ वपुएक श्लोक ॥ वैष्णवोममदेहस्तु तस्मात्पूज्योमहामुने ॥ अन्ययत्नंपरित्यज्य वैष्णवान्भजसुव्रत ॥ ४ ॥ भक्ति कैसे तैसे फूलमें सुगंध ॥

टीकाविशेषलक्षण ॥ हरिगुरुदासनिसोंसांचोसोई भक्तसहीगही एकटेकफेरिउरतेनटरीहै । भक्तिरसरूपकोस्वरूपयहैछविसारचारुहरिनामलेतअँशुवनझरीहै ॥ वहीभगवंतसंतप्रीतिकोविचारकरै धरै दूरिईशताहू पांडवनसोंकरीहै । गुरुगुरुताईकीसचाईलैदिखाईजहां गाईश्रीपैहारीजूकीरीतिरंगभरीहै ॥ २ ॥

मूल ॥ मंगलआदिविचारिरह्योवस्तुनऔरअनूप । हरिजनको यशगावतहैं, हरिजनमंगलरूप ॥ २ ॥ सबसंतनिर्णयकियोमाथि, श्रुतिपुराणइतिहास । भजिबेकोदोऊसुघर,कैहरिकैहरिदास ॥ श्रीगुरुअग्रदेवआज्ञादई, भक्तनिकोयशगाइ ॥ भवसागरकेतरनको, नाहिनऔरुउपाइ ॥ ४ ॥

हरिगुरु दासनिसों सांचो । पटनाकी वाईसे रगटको आमिल लाहौर को सुदर्शन खत्री को दृष्टांत ॥ कबित्त ॥ शोचरूप सागरमें सने रघुराई कहैं लंक यह देन को न लगै कछुघात है ॥ कौन या विभीषणको राखै रोंकि रावण सों जीवजाल माछरी लौं परचो पछितात है ॥ लक्ष्मणपाछैं मैंहूंमरन परन लीनों जसराम बुरेभ्यौंत बूड़ी बुधिजात है । जीवको न लालच वचनको विशेष उर जीव गये वचन बचैतो बड़ी बात है ॥ १ ॥ भक्त रसरूप को एकादशे॥ वाग्गद्गदा द्रवते यस्य चित्तं हसत्यभीक्ष्णं रुदति क्वचिच्च॥विलज्य उद्गायति नृत्यतेच मद्भक्ति युक्तो भुवनं पुनाति ॥२॥

निमज्ज्योन्मज्जतांघोरे भवाब्धौ परमायणम् ॥ संतोब्रह्मविदः शांता नौर्दृढाविनिमज्जताम् ॥ ६ ॥

टीकाआज्ञासमयकी ॥ मानसीस्वरूपमेंलगेहैंअग्रदासजबैकरत-बयारनाभामधुरसँभारसों । चढ़्यौहोजहाजपैजुशिष्यएकआपदामें करेउध्यानखिच्यौमनछुट्योरूपसारसों ॥ कहतसमरथगयोवोहित-बहुतदूरि आवो छबिपूरि फिरिढेरेताहीढारसों ॥ लोचनउघारिकै निहारिकह्यो बोल्यौकोनवही जौनपाल्योसीतदैदैसुकुबारसों ॥१७॥

मानसी स्वरूप में ॥ तापै भूतको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ यह मन भूत समान है, दौरै दांत पसारि ॥ बांशगांठि उतरै चढ़ै, सब बलजावै हारि ॥ १ ॥ चल दल पत्र पताक पट, दामिनि कच्छप माथ ॥ भूत दीप दीपक शिखा यों मन वृत्य अनाथ ॥ २ ॥ सवैया ॥ चंचल जो मनकी गतिहै अलि-रूप सुबन वनमें फिरियै । कुण्डल लोल कपोलन में अलकनि झलकनि चितमें धरियै ॥ बरवेंदी भाल रसाल दिये अधरनि में मोती थरहरियै । अलबेली लाल विहारिनिको दिन रैन निहारनिही करियै ॥ ३ ॥ मन है तौ भली थिरकै रहितू हरिके पद पंजक में गिरितू । कवि सुन्दर जौन सुभाव तजे फिरिवोई करै तौ इहां फिरितू ॥ मुरलीपर मोरपखा परह्वै लकुटी परह्वै भृकुटी भ्रमितू । इन कुण्डल लोल कपोलनि में घनसे तनमें घिरिकै रहितू ॥ ३ ॥ करत बयारि नाभा जूने विचारी यह सुख कैसे मिलै ॥ टहलते मिलै दृष्टांत मरजिया को ॥ ४ ॥ सभार सौ क्योंकि मानसी ऐसी कोमल है सो बयारि की चोट लगै ॥ ५ ॥ सारसौं ॥ कवित्त ॥ कंचन जटित भूमि सुरतरु रह्यो भूमि तापर सिंहासन सुखा-सन विछायो है । अष्टदल कमल अमल रघुनाथ तहां अंग अंग मानो कोऊ रंग झरलायो है ॥ कुण्डल करणकर कंकण मुकुट कटि किंकिणी कि धुनि सुनि मन भरमायो है । चंपके चमेलीके अरु कुंद मंदार के सुहा-रनि में हारिके विचारि विसरायो है ॥ ६ ॥

अचरजदयोनयोयहांलौंप्रवेशभयो मनसुखछयोजान्योसंतनप्र-

भावको। आज्ञातबदईयहभईतौपैसाधकृपाउनहींकोरूपगुणकहोहि-
येभावको ॥ बोल्योकरजोरियाकोपावतनओरछोरगाऊंरामकृपानहीं
पाऊंभक्तिदावको । कहीसमुझाइबोईहृदयआइकहैंसब जिन लैदि-
खाइदईसागरमेंनावको॥११॥श्रीनाभाजीकीआदिअवस्था॥ हनूमा
नवंशहीमेंजनमप्रसिद्धिजाको भयो दृगहीनंदीनसोनबीनवातधारिये।
उमरिवरषपांचमानिकैअकालआंचमाता बनछोडिगईविपतिविचा-
रिये ॥ कील्हाऔअगरताहीडगरदरशदियो लियोयोंअनाथजानि
पूंछीसोउचारिये ॥ बड़ेसिद्धजललैकमण्डलसों सींचेनैनचैनभयो
खुलेचषजोरीकोनिहारिये ॥ १२ ॥

रूप गुण ॥ श्लोक ॥ येकंठलग्नतुलसीनलिनाक्षमाला येबाहुदंडपरि-
चिह्नितशंखचक्राः॥ तृतीयो॥ तितिक्षवःकारुणिकाःसुहृदःसर्वदेहिनाम्।अजा-
तशत्रवःशांताःसाधवःसाधुभूषणाः ॥ १ ॥ माता ॥ सवैया ॥ वारिध
तातहुते विधिसे सुत आदित सोम सहोदर दोऊ । रंभा रमा तिनकी
भगिनी मघवा मधुसूदन से बहनेऊ॥ तुच्छ तुसार इतौ परिवार भयो शरमध्य
सहाय न कोऊ । सूखिसरोज रह्यो जल में सुखसंपतिमें सबको सब कोऊ
॥ २ ॥ पिता कोऊ कहे अरु कोऊ कहे सुत कोऊ कहे नाना बाबा
तन तीनि तापतयोहै । प्रभु कोऊ कहै जन कोऊ कहै मोल लयो तुम
अब कहौ ये जू काहि काहि दयोहै ॥ ब्रह्मभने जित तित चालि चालि होइ
रही सुख नहीं कहूं बहु हाथ गेंदभयो है । कियो हू तिहारो अरु
पाल्योहू तिहारो ही हौं इन बीच लोगन ने बांटो बांटलियो है ॥ सींचे
नैन ॥ एकादशे ॥ संतोदिशंतिचक्षूंषि बहिरर्कःसमुत्स्थितः । देवताबां-
धवाःसंतः संतआत्माहमेवच ॥ १ ॥

पाईंपरिआंशूआयेकृपाकरिसंगलाये कील्हआज्ञापाइमंत्रअगर
सुनायोहै। गलतेप्रगटसाधुसेवासोंविराजमान जानिउनमानताही
टहललगायोहै ॥ चरणप्रछालिसंतशीतसोंअनंतप्रीतिजानीरसरीति

तातेह्रदय रंगछायोहै॥ भईबढ़वार ताकोपावैकौनपारावार जैसोभक्तिरूप सोअनूपगिरागायोहै ॥ १३ ॥

मंत्र अगर आगमे ॥तापःपौंड्रंयथानाम मंत्रोयागश्चपंचमः॥ एते च पंचसंस्काराःपुण्यस्यैकांतहेतवः ॥ २ ॥ जन्मनाजायतेशूद्रः संस्काराद्द्विजउच्यते । वेदाभ्याद्भवेद्विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ॥ ३ ॥ संतशीत नारद वाक्यम् ॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदितोद्विजैः ॥ ४ ॥ छायो है ॥ कवित्त ॥ कोऊ यह कहै संस्कारहीसों भक्तहोत विना संस्कार भक्ति कैसे करि पाइये । जान्यो हम सार सब ग्रंथ अनुसार पुनि एपैहै विचार गूढ कहिकै सुनाइये ॥ महिमा अगाध साधु रसिक प्रवीननि की नेकु चितवत काम वन्धु उलटाइये । अंग अंग रंग सतसंग को प्रभाव अहो जैसे दत्तात्रेय चारमुखीहित छाइये ॥ ५ ॥ भई बढ़वारि ॥ दोहा ॥ मृतक चीर जूंठनि वचन, काग विष्ठजन मित्र॥शिव निरमायल आदिदै, येसब वस्तु पवित्र ॥ ६ ॥ शुकवाक्यम् ॥ किरातहूणान्ध्रपुलिंदपुल्कसाआभीरकंकायवनाः खशादयः ॥ येन्येचपापाःयदुपाश्रयाश्रयाच्छुशुध्यंतितस्मै प्रभविष्णवेनमः ॥ ७ ॥

मूल—जयजयमीनवराहकमठनरहरिबलवावन। परशुरामरघुबीर कृष्णकीरतिजगपावन । बुद्धकलंकीव्यासपृथूहरिहंसमन्वंतर । यज्ञऋषभहयग्रीवध्रुववरदैनधन्वंतर । बद्रीपतिदत्तकपिलदेवसनकादिककरुणाकरो। चौवीसरूपलीलारुचिर श्रीअग्रदासपदउरधरो॥ ८॥ टीका ॥ जितेअवतारसुखसागरनपारावार करैविस्तारलीलाजीवनउधारको। जाहीरूपमांझमनलागैजाकोपागैतहीं जागैहियेभाववहीपावैकौनपारको ॥ सबहीहैनित्यध्यानकरतप्रकाशैचित्त जैसेरंकपावैवित्त जोपैजानैसारको । केशनकुटिलता ईऐसेमीनसुखदाई अगरसुरीतिभाई बसौउरहारको॥ १४ ॥ मूल ॥ चरणचिह्नरघुवीरके संतनसदासहाइका ॥ अंकुश अंबर कुलिश कमल यवधुजा धेनुपद। शंखचक्रस्वस्तिकजंबूफल

कलशसुधाह्रद ॥ अर्द्धचंद्रषटकोनमीनबिंदुऊर्ध्वरेखा । अष्टको नत्रैकोन इंद्रधनुपुरुषविशेषा ॥ सीतापतिपदनितबसत एतेमंगल दायका । चरणचिह्न रघुवीरके॰ ॥ ६ ॥

जैजै मीन वराह ॥ मीन वराह क्यों गाये रामकृष्ण छोंडिकै सब जातिके साधु गाये जाहिंगे कोऊ नीक चढावै याते पहिले हरिहीकी जातिकहों हौं क्योंकिकोऊ नाकचढावै सो अबहीं चढावो कृष्ण कीरति को विषयाहि सुनै ॥ १ ॥ तिते अवतार कोऊ कहै गुरुनने आज्ञादई संतनिकी इन्होंने प्रथम अवतार क्यों धरे । बटुआ पहिले आवे साधुपाछे आवै ॥ २ ॥ जाहीरूप जापै फकीर कों औ लरिकाको दृष्टांत कोऊ कहै मीन बाराह कैसे सुखदाई सुंदर के संग ते सुंदर होइ केशन के संगते कुटिलता ॥ ३ ॥

टीका॥संतनिसहाइकाजधारेनृपराजरामचरणसरोजनिमें चिह्नसुखदाइये । मनहींमतंगमतवारोहाथआवैनाहीं ताकेलियेअंकुशलेधारेउहियेधाइये ॥ ऐसेहीकुलिशपापपर्वतकेफोरिवेको भक्तिनिधिजोरिबेकोकंजमनलाइये । जोपैवुधवंतरसवंतरूपसंपातिमें करिलेविचारसबनिशिदिनगाइये ॥ १९ ॥

मनमतंगचतुर्थे।अयंत्वत्कथामृष्टपीयूषनद्यांमनोवारणः क्लेशदावाग्निदग्धः॥ तृषार्तोवगाढंनसस्मारदावंननिष्कामति ब्रह्मसंपन्नवन्नः ॥ १ ॥ सदा रहत नवरंगमें मन मतंग बिचन्योबुरो छप्पय ॥ धरना धर्म उखारि सरम साकरगहि तोरत । तरुणि करावल लखत शील सालहि गहि मोरत । विनय वाण नहिं वदत ज्ञानअंकुश नहिं मानत । गुरू महावत ताहि चाहि डारन उर आनत । लखिलेइवो व वारुण विषय कुन्दन मद यौवनजुन्यो । सदा रहत नवरंग में मनमतंग विचन्यो बुरो ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जनम जनम तोहिं जहाँ तहाँ घेरे फिन्यो मन मुट मरद गनीम तेरी पागीहै । कलह प्रसंगी पंचरंगी जंगी जोरावर अलख अनंगी सुउपाधि अनुरागीहै ॥ कैदकारि पायो मनी राम नरकाया बीच अबकै जो चूकैगो तो बडो तू अभागी है । सुमिरि

कोऊ सारपांच भूतनिको सरदार मारिऐसी मारतेरी भलीघात लागीहै ॥ ३ ॥ जबको हेतसुनो सदा दाता सब विद्या की सुमतिको संपतिको सुखकोनिवासहै । क्षणमें सभीतहोतकलिकी कुचालिदेखि ध्वजासों विशेष जानो अभयकोविश्वासहै ॥ गोपदसुहै है भवसागर सुनागर जन जोपै नेकु हियेको लगावै मिटै त्रास है । कपट कुचालि मायाजाल सब जीतिवेको अंबर को दरश कियो जोपै अनायासहै ॥ १ ॥ कामहू निशाचरके मारिवेको चक्रधऱ्यो मंगलकल्याण हेत स्वस्तिकहूमानिये । मंगलीक जंबूफल फलचारुहूकोफल मनकामनाअनेक पूरणहोध्यानिये ॥ कलशऔसुधाकोसरस हरिभक्तिभऱ्यो नैनपुट पानकीजै जीजै मनआनिये । भक्तिकोबढावैऔघटावैतीनितापनिको अर्द्धचंद्रधारणयेकारणहूं जानिये ॥ २ ॥ विषयभुवंगवलमीकतनमाहिं वसै दासको नडसैतातेयत्नअनुसऱ्योहै । मीनबिंदुरामचंद्रकीनोंवशीकरण भाय ताहीते निकाय जनमनजातहऱ्यो है ॥ अष्टकोन त्रैकोन यंत्र किये जीतिवेको जियेजोईजानै जाके ध्यानउरभऱ्यो है । संसार सागरकोपारावारपावैनाहिंऊर्ध्वरेखादासनिकोसेतबंधकऱ्योहै ॥ ३ ॥ धनुपपदमाहिंधऱ्योहऱ्योशोकध्याननिको माननिकोमाऱ्यो मान रावणादिशापिये ।पुरुप जो विशेपपद कमलवसायोराम हेत अभिरामसुनौंश्याम अभिलापिये ॥सूधेमनसूधेवैनसूधीकरतूतिसब ऐसो जनहोइ मेरोयाहीतेजुराखिये । जोपैत्रुधवंतरसवंतरूपसंपतिमें करि लै विचार सब निशि दिन भाषिये ॥ ४ ॥ दोहा॥दुखमेंतो सब कोउ भजै, सुखमें भजै नकोइ ॥ जो सुखमें हरिको भजै, तो दुखकाहेकोहोइ ॥ ५ ॥ कबहुं न सुखमें हरिभजे, दुखमें कीने यादि ॥ कहिकबीरवाजीवकी, कैसे लगै फिरादि ॥ ६ ॥ जो साहिबसों तू मिलै साहिब मिलें तो तोहिं ॥ विनाभजन मिलतोनहीं, सुखकाहेकेहोहिं ॥ ७ ॥ वसति हृदय जाके दया, रामहिं जानत जोइ । दयाराम पावैतबै, दया राम की होइ ॥ ८ ॥

मूल ॥ विधिनारदशंकरसनकादिककपिलदेवमुनिभूप । नर हरिदासजनकभीपमबलिशुकमुनिधर्मस्वरूप ॥ अंतरंगअनुचरह

रिजूके जोइनकोयशगावै । आदिअंतलौंमंगलतिनकोश्रोतावक्तापावै ॥ अजामीलप्रसंगयहनिर्णयपरमधर्मकेजान । इनकीकृपाऔर पुनिसमझै द्वादशभक्तप्रधान ॥ टीका ॥ द्वादशप्रसिद्धभक्तराज कथाभागवत अतिसुखदाई नानाविधिकरिगायेहैं । शिवजूकोबात एकबहुधानजानैकोऊसुनिरससानैंहियोभावउरझायेहैं। सीताकेवियोगरामबिकलविपिनदेखि शंकरनिपुणसतीवचनसुनायेहैं । कैसेये प्रवीणईशकौतिकनवीनदेखो मनैहूंकरतअंगवैसेहूबनाये हैं॥ १६॥ सीताहीसोरूपवेषलेशहूनफेरफाररामजूनिहारिनेकमनमेंनआईहै ॥ तबंफिरिआईकैसुनाइदईशंकरको अतिदुखपाइबहुविधिसमुझाईहै । इष्टकोस्वरूपधारयोतातेतनुपरिहरयो परयोबड़ोशोचमतिअतिभरमाईहै । ऐसेप्रभुभावपगेपोथिनमेंजगमगे लगेमोकोप्यारे यहबातरीझिगाई है ॥ १७ ॥

अनतरंग ॥ बाणासुरके युद्धमें महादेव कृष्णसोंलरे ॥ भागवते ॥ स्वयंभूर्नारदःशंभुःकुमारःकपिलोमनुः । प्रह्लादो जनकोभीष्मोबलिर्वैयासकिर्वयम् ॥ २॥ निपुणपरमेश्वरका प्रेमकोस्वादनहीं जैसे पादशाहको फकीरीको नहीं ॥ नाटके ॥ यूयंकेवदनाथनाथकिमिदंदासोस्मिते लक्ष्मणः कोहंवत्सनुआर्यएवभगवान् आर्यश्चकोराघवः।किंकुर्मोविजनेवने तत इतोदेवी भृशं वीक्ष्यते कादेवीजनकाधिराजतनयाहाहाप्रिये जानकि ॥४॥ मनेहूं करत ॥ दोहा—ज्यों जगके राजानिको, भेद न जानै कोइ ॥ तासुअन्त क्यों पाइये, सबको दातासोइ ॥ ५ ॥

चलेजातमगउभैपरेशिपदीठिपरेकरै परनाममहिंपभक्तिलागीप्यारिये । पारवतीपूंछैकियेकौनकोजूकहौमोसों दीसतनजनकोऊतव सोउचारिये । बरषहजारदशबीततहां भक्तभयो नयोऔरहैहैदूजीठौरबीतेधारिये । सुनिकैप्रभावहरिदासनिसोंभावबढ्यो रढ्यो कैसेजातचढ्योरंग अतिभारिये ॥ १८ ॥

टीका अजामीलकी ॥ धरयोपितुमातनामअजामीलसांचभये

अजामलरह्योछुटी तियाशुभजातकी । कियोमदपानसोसमानगहि दूरडारचो गारचोतनवाही सोंजोकीन्होलैकैपातकी ॥ करिपरि हासकाहूदुषनैपठायेसाधु आयेवरदेखिबुद्धिआइगईसातुकी । सेवा करिसावधानसंतानिरिझाइलियोनारायणनामधरचोगभंबालवातकी

बरष हजार बाबा नानक अरु मरदाने चेलाको दृष्टांत भागवते ॥ मुक्तानामपिसिद्धानांनारायणपरायणः । सुदुर्लभःप्रशांतात्मा कोटिष्वपि महा मुने ॥ १ ॥ नीतौ ॥ गिरौगिरौनमाणिक्यंमौक्तिकंनगजेगजे । साधवोन हिसर्वत्र चंदनंनवनेवने ॥ २ ॥ रंगचढ़चो भागवते ॥ वरमेकंवृणेथापि पूर्णात्कामाभिवर्षणात् । भगवत्युत्तमांभक्तिंतत्परेषुतथात्वयि ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सयान ॥तनक नरहै विरक्तिता, लगै दृगनिकी थाप। कहुंपूजा माला कहूं, कहुं बटुवा कहुं आप ॥ ४ ॥ करि परिहास तापै शिवजीको दृष्टांत ॥ ५ ॥ सातुकीभागवते । नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः॥ तेपुनंत्युरुकालेनदर्शनादेवसाधवः ॥ ६ ॥ सावधाननीते ॥ आत्मनो मुखदोषेण बध्यंते शुकसारिकाः । बकास्तत्र नबध्यते मौनं सर्वार्थसा धकम्॥ ७ ॥ मोहजाल ॥ श्लोक ॥ अंगंगलितंपलितं मुंडंदशनविहीनं जातं तुंडम्॥ वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥ १ ॥

आइगयोकालमोहजालमेंलपटिरह्यो महाविकरालयमदूतदीदि वाइये ।वहीसुतनारायणनामजोकृपाकैदियो लियोसोपुकारिसुरआरतसुनाइये ॥ सुनतहीपारषदआयेताहीठौरदौरितोरिडारेपाशकह्यो धर्मसमुझाइये । हारेलैबिडारेजोइपातिपैपुकारेकहीसुनोंबजमारे मति जावोहरिगाइये ॥ २० ॥ मूल ॥ मोचितवृत्तनित्ततहांरहौं जहांनारायणपदपारषद ॥ विष्वक्सेनजयविजयप्रबलबलमंगलकारी । नंदसुनंदसुभद्रभद्रजगआमैहारी ॥ चंडप्रचंडबिनीतप्रणीतकुमुदकुमुदाक्षकरुणालय । शीलसुशीलसुसेनभावभक्तनप्रतिपालय ॥ लक्ष्मीपतिप्रीननप्रवीनभजनानंदभक्तानिहद । मोचितवृत्तानिततहांरहो जहांनारायणपदपारषद ॥ ८ ॥

आरतभागवते ॥ सांकेत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव च ॥ वैकुंठनाम-ग्रहणमशेषाघहरं विदुः ॥ १ ॥ धर्मसमुझाइपै । एतेनैवेह्यघोनोस्यकृतंस्या-दघनिष्कृतिः ॥ यदानारायणायेतिजगादचतुरक्षरम् ॥ २ ॥ स्तेनःसुरापो मित्रध्रुब्रह्मगृहागुरुतल्पगः॥स्त्रीराजपितृगोहंतायेचपातकिनोपरे ॥ ३ ॥ सर्वे-षामप्यघवतामिदमेवसुनिष्कृतम् ॥ नामव्याहरणंविष्णोर्यतस्तद्विषयामतिः॥ ४ ॥ अहोबतश्वपचोतोगरीयान्यज्जिह्वाग्रेवर्ततेनामतुल्यम् । तेपुस्तप-स्तेजुहुवुःसस्नुरार्याब्रह्मन्नूचुर्नामतुभ्यंहियेते ॥५॥ छप्पय ॥ कहा व्रत नेम गजेंद्र कियो कहा वेद पुराणपढी गणिका । अजामील ने कौन अचार कियो निशि वासर पान पुरापपिका ॥ कहा जप जाप वधिक्क कियो सोहुतो घनजीवनकोहनिका । तुलसी अघ पर्वत कोटिजरे हरिनाम हुताशनको कनिका ॥ ६ ॥ हरिगाइयै दूतनि प्रति । नामोच्चारणमाहात्म्यं हरेः पश्यत पुत्रकाः । अजामिलोपि येनैव मृत्युपाशादमुच्यत ॥ ७ ॥

टीका ॥ पार्षदमुख्यकहसोरहसुभावसिद्धिसेवाहीकीऋद्धिहिये-राखीबहुजोरिकै । श्रीपतिनरायणकेप्रीननप्रवीणमहाध्यानकरैजन-पालैभावदृगकोरिकै ॥ सनकादिकदियोशापप्रेरिकैदिवायोआपप्र-गटह्वैकह्यो पियौसुधाजिमिघोरिकै । गहीप्रातिकूलताईजोपैयहैमन-भाई यातरीतिहदगाईधरीरंगबोरिकै ॥ २१ ॥ मूल ॥ हरिवल्लभस बप्राथौंजिनचरणरेणुआशाधरी ॥ कमलागरुड़सुनंदआदि पोड़श-प्रभुपदराति । हनूमंतजाम्ववंतसुग्रीवविभीषणशवरीखगपति ॥ ध्रुव उद्धवअंबरीषविदुर अक्रूरसुदामा । चंद्रहासचित्रकेतुग्राहगजपांडव-नामा ॥ कौषारवकुंतीवधूपटऐंचतलज्जाहरी । हरिवल्लभसवप्राथौं जिनचरणरेणुआशाधरी ॥ ९ ॥

प्रेरिकै दिवायो ॥ नीते ॥ लक्ष्मीवन्तो न जानंति प्रायेण परवेदनाम् । शेषे धराभराक्रांते शेते लक्ष्मीपतिस्स्वयम् ॥ १ ॥ पियोसुधाजिमि दोहा ॥ तुम मति भूल्यो, भूलनो सुनि मनमोहन मित्त ॥ भूलेपर भूलों नहीं, तोहीं-सुमिरों नित्त ॥ २ ॥ प्रतिकूल ताई ॥ कवित्त ॥ मरक जो देहि तौन

निदरि विमुख हूजै स्वर्ग जो देहि तौन हर्ष सराहिये । रद्दकरिडारैतौन कीजिये कलेश जिय करै जो कबूल तौन फूलिकै उमाहिये ॥ जिहीअंग रंगहोइ तिही अंग रंग हूजै येदिल सनेही नेही नीकेकै निबाहिये । चित्त क्योंन चाहमरो आप चाह चूल्हे परो प्रीतम जो चाहै चाह सोई चाह चाहिये ॥ ३ ॥ दोहा ॥ दियो सुशीश चढाइलै, अच्छी भांति अपेर ॥ जासों सुख चाहत लयो, ताके दुखहि न फेर ॥ ४ ॥ चरणरेणु ॥ श्लोक ॥ रहूगणोतत्तपसा नयाति नचेज्ययानिर्वपणाद्गृहाद्वा ॥ नच्छंदसानैवजलाग्निसूर्योद्विनामहत्पादरजोभिषेकम् ॥५॥ लज्जाहारि ॥ दोहा ॥पटऐंचत मटकी नहीं, भुजबल भई अनाथ॥ तुलसी कीन्हों ग्यारहों, बसन रूप रघुनाथ॥६॥

॥ टीका ॥ हरिकेजेवल्लभहैंदुर्लभभवनमांझ तिनहींकी पदरेणुआशाजियकरीहै । योगीयतीतपीतासोंमेरोकछुकाजनाहिं प्रीति परतीतिरीतिमेरीमतिहरीहै । कमला गरुड़जाम्बवानसुग्रीवआदि सबैस्वादरूपकथापोथिनमें धरी है । प्रभुसोसचाईजगकीरतिचलाईअतिमेरेमनभाई सुखदाईरसभरीहै ॥ २२ ॥ टीकाहनूमानजूकी ॥ रतनअपारक्षीरसागरउधाराकिये लिये हितचायकैबनाइमालाकरीहै । सबसुखसाजरघुनाथमहाराजजूके भक्तसोंविभीषणजूआनिभेंटधरीहै । सभाहीकीचाहअवगाहहनूमानगरे डारिदईसुधिभईमतिअरबरीहै । रामबिनकामकौनफोरिमणिदीनोडारिखोलितुचानामहौंदिखायोबुद्धिहरीहै ॥ २३ ॥

डारिदई ॥ रामायणे ॥ कंकणे नैव जानामि नैवजानामि कुण्डले ॥ नूपुरावेव जानामि सदा पादाभिवंदनात्॥ १ ॥छप्पय॥ राम चरणतजि आन रति गजताजि मनु गद है चढ़ौ ॥ वहै नीच वहै पोच वहै आतम बड़ पापी । वहै अविद्या मूल वहै गुरुद्रोहि सुरापी । वहै दीन मतिहीन वहै नरकनि में नामी । वहै कृतघ्नी कुटिल वहै बड़ लोन हरामी । अगर कहैं ताहिगति नहीं तीनि तापसो हियदढ़ौ । रामचरण तजि ॥ २ ॥ फोरि मणि दीनी । कि कंठभूषणं ३ खोलित्वचा ॥ कवित्त ॥ न्यारी न्यारी

दीसैं जैसे कागजकी चीरीपर मसी की डँडीरी ऐसी मजूनकी पांसुरी । गरि गयो गात येरी पात सो पुरानो हैके पान पान रही परयो लेतहै उसासुरी । तेरी ये तलब तेरे तालवदिवानौको है देखत हवाल वाको आवत है आंसुरी । लेरी अब लैलै उरलाइ लेरी अपनी सों फेरिप छिते है जब माटी मिलै मांसुरी ॥ ४ ॥

टीकाविभीषणजूकी ॥ भक्तिसोंविभीषणकीकहैऐसो कौन जनऐपैकछुकहीजातिसुनो चितलाइकै । चलतजहाजपरअटकिविचारिकियोकोऊअंगहीननरादियो लैबहाइकै । जाइलग्योटापूताहि राक्षसिनिगोदलियो मोदभरिराजापासगयेकिलकाइकै । देखतसिंहासनतेकूदिपरेनैनभरे याहीकेअकाररामदेखैभागपाइकै ॥ २४ ॥ रचिसोंसिंहासनबैठाये ताहीक्षणराक्षसनरीझिदेतमानी शुभघरीहै॥ चाहतमुखारविंदअतिहीअनंदभरि ढरकतनैन नीरटेकिठाढ़ो छरीहै । तऊनप्रसन्नहोतक्षणक्षणक्षणज्योतिन्हजियेकृपालमतिमेरी अतिहरीहै ॥ करोसिंधुपारमेरेयहीसुखसारदियेरतनअपारलाये वाहीठौरफरीहै ॥२५॥ रामनामलखिशीशमध्यधरिदियोयाकोयही जलपारकरैभावसांचोपायोहै । ताहीठौरबढ़्योमानोनयोऔररूपभयोगयोजोजहाजसोईफेरिकरिआयोहै ।लियोपहिंचानिपूंछेउसवसोवखानकियोहियोहुलशायोसुनिबिनयकेचढ़ायो है ॥पर्योनीरकूदिनेकुमायानेप्रवेशकियो हर्योमनदेखिरघुनाथनामभायो है ॥ २६ ॥

दियो लैबहाइ । नीते । वनानि दहतोवह्नेः सखा भवति मारुतः ॥ स एव दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ॥ १ ॥ अश्वं नैव गजं नैव सिंहं नैव च नैव च । अजापुत्रं बलिं दद्याद्देवोदुर्बलघातकः ॥ २ ॥ जाइ लग्यो ॥ दोहा ॥ कबिरातेरेनामपद, कियो सुराई लीन ॥ जिन्हैंचलायो पंथतुम, तिन्हैं भुलावै कौन ॥ ३ ॥ राम नाम श्लोक ॥ राम त्वत्तोधिकं नाम इति मे निश्चिता मतिः ॥ त्वया तु तारिताऽयोद्ध्या नाम्ना च भुवनत्रयम् ॥ ४ ॥ रामनामके-

लिखे तरेपाषाणरे । दुष्टअजामिलतऱ्यो नामते जानरे । सबतजिभजिहरि नाम सुनो सब जंतरे । नामबिना है नरक सुनो भाई संतरे ॥ ५ ॥

शवरीजीकीटीका ॥ बनमेंरहतिनामशवरीकहतसबचाहतटहल साधुतनन्यूनताईहै । रजनीकेशेषऋषिआश्रमप्रवेशकियोलकरीन बोझधरिआवे मनभाईहै । न्हाइवेकोमगझारिकांकरनिबीनिडारि वेगिउठिजाइकोऊजातनलखाईहै । उठतसबारेंकहेकौनधोंबहारिगयो भयोहियेशोचकोऊबडोसुखदाईहै ॥ २७ ॥ बडेईअसंगवे मातंगरस रंगभरेधरेदेखिबोझकह्योकौनचोरआयोहै । करैनितचोरीअहोगहो वाहिएकदिनाबिनायापैप्रीतिवाकीमनभरमायोहै । वैठेनिशिचौकीदेत शिष्यसबसावधान आइगईगहिलईकांपै तननायोहै । देखतहीऋ षिजलधारावहीनैनानिते वैनानिसोंकह्योजातकहाकछुपायोहै ॥२८॥

बनमें रहत दोहा ॥ लाल पनन सों जेभरे, उघरे डांक लगाइ ॥ कर्णफूल झूलतरहैं काननहीं में आइ ॥ १ ॥ सवैया ॥ जाइये न जहां तहां संगतिकु संगतिहै कायरके संगशूरभागिहैपै भागिहै । फूलनिके बास वश फूलनि की वासहोति कामिनीके संग काम जागिहै पै जागिहै । घरबसेघरबसेघरमें वैरागकहा मायामोहममतामें पागिहै पैपागिहै । काजर की कोठरीमें के- सोहू सयानो वैठे काजर की एकरेख लागिहै पै लागिहै ॥ २ ॥ निशि वासर वस्तु विचारि करै सुख सांचहिये करुणाधनहै । अघनिग्रहसे ग्रह धर्म कथा सुपरिग्रहसाधनको गन है । कहि केशव भीतरयोगजगै अति ऊपर भोगनि में तनहै । मन हाथसदा जिनके तिनको बनही घरुहै घरुही बनहै ॥ ३ ॥ रसरंगभरे ॥ रसो वै स रसं ह्येवायं लब्ध्वानंदी भवति इति श्रु- तेः । कोइकहै विरक्तहैकै रसरंगमें कैसेभरे जैसे शुकदेवजी चीरहरणकी लीलादुलराइ कै गाई ॥ ४ ॥

डीबिहूनसोंहींहोतिमानितनगोतछोतपरी जायशोचसोतकैसेकै निकारिये । भक्तिकोप्रतापऋषिजानतनिपटनीकेकैऊकोटिबिप्रता ईयापैवारिडारिये । दियोवासआश्रममेंश्रवणमैनामदियो कियोसु-

निरोषसवैकीनीपांतिन्यारिये । शवरीसोंकह्योतुमरामदरशरनकरौ मैंतौपरलोकजातआज्ञाप्रभुपारिये ॥ २९ ॥ गुरुकोवियोगहियेदारुणलैशोकदियोजियोनहींजाततऊरामआशलागीहै । न्हाइवेकोघाटनिशिजातिहीवुहारिसव भईयों अवारऋषिदेखिव्यथापागीहै । छुयेगयोनेककहूंखीजतअनेकभांतिकरिकै विवेकगयोन्हानयहभागीहै । जलसोंरुधिरभयोनामाक्रमभरिगयोनयोपायोशोचतौहूजानैनअभागीहै ॥ ३० ॥ लावेवनवेरलागीरामकीऔसेरभल चाखैधरिराखैफिरमर्ठिउनयोगहैं। मारगमेंरहैजाइलोचनविछाइकभूंआवैंरघुराइहगपावैंनिजभोगहैं ॥ ऐसेहीवहुतदिनवीतिमगजोवतही आइगयेऔचकसुमिटेसवशोगहैं । ऐयैतन नूनताईआई सुधिछिपीजाइ पूछै आप शवरीकहांठाढेसवलोगहैं ॥ ३१ ॥

भक्तिकोप्रतापइतिहास ॥ शिवलिंगसहस्राणि शालग्रामशतानि च ॥ द्वादश कोटयो विप्राः श्वपचंत्वेकवैष्णवम् ॥ १ ॥ हरिभक्तिलतिकायाम् ॥ व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेंद्रस्य का। कुब्जायाःकिमु नाम रूपमधिकं किं तत्सुदाम्नो धनं ॥ वंशः को विदुरस्य यादवपतेरुग्रस्य किं पौरुषं भक्त्या तुष्यति केवलं न तु गुणैर्भक्तिप्रियो माधवः ॥ २ ॥ नामदियो॥ पंचरात्रे । यावद्गुरुर्न क्रियते सिद्धिस्तावन्न लभ्यते ॥ तस्माद्गुरुर्हि कर्त्तव्यो नैव सिद्धिर्गुरुं विना ॥ ३ ॥ अभागी है ॥ छप्पय ॥ मत्सर क्रोध मिलि रह्यो गर्व गिरिपरयो जुगाजै ॥ क्रोध गोद हिय मध्य वृन्द मद मदन विराजै॥ लोभ भँवर हृदकमलकोश भीतर तिहि आसन । कपट झूंठ झिलि मिलै शिष न मानत विश्वासन ॥ मन मोह कोह कंदर परयो अपरस ह्वै भीटन डरै । भनि लाल वाल हरिवंशहित विन प्रसाद तमको हरै ॥

पूंछिपूंछिआयेतहांशवरीस्थानजहांकहां वहभागवतीदेखौंहगप्यासेहैं । आइगईआश्रममेंजानिकैपधारेआपदूरहीतेसाष्टांगकरीचषभासेहैं । रवकिउठाइलईव्यथातनदूरगईनईजैननरिझरीपरेप्रेमपासेहैं । वैठेसुखपाइफलखाइकैसराहेवेइकह्यौकहाकहौंमेरेमगदु

खनाशे हैं ॥ ३२ ॥ करतहैंशोचसबबैठेऋषिआश्रममें जलकोबिगा रसोसुधारिकैसेकीजिये । आवतसुनेहैंबनपथरघुनाथकहूंआवैंजबक हैंयाकोभेदकहिदीजिये । इतनेहींमांझसुनीशबरीकेविराजेआनिगयो अभिमानचलोपगगहिलीजिये । आयेखुनसाइकहीनीरकोउपाइक हौ गहौपगभीलिनीकेछुवौस्वच्छभीजिये ॥ ३३ ॥

इतनेही ॥ नीते ॥ राज्यहीना नराः सर्वे बुद्धिहीना भवंति हि ॥ बुद्धिहीना नराः सर्वे राज्यहीना भवंति हि ॥ १ ॥ खाइके ॥ पद ॥ मीठेमीठेचाखि चाखि बेरलाई भीलनी । कौनसी अचारवती नहीं रूप रंग रती जातिहू में कुलही न बड़ी है कुचीलनी ॥ जूठे फल खाये राम सकुचे न भावजा नि तुमतौ प्रभु ऐसी कीनी रसकी शीलनी । कौनसी तपस्या कीनी बैकुंठ पदवी दीनी विमानमें चढ़ीजात ऐसी है सुशीलनी ॥ सांची प्रीति करै कोई अमरदास तरैसोई प्रीतिहीसो तीरगई गोकुल अहीरनी ॥ २ ॥ कही नीर नीर॥ नीते । शठं प्रति शठं कुर्यादादरं प्रति चादरम्॥त्वया च लुविते पक्षे मया ते मुण्डितं शिरः ॥ ३॥ तापै तोताको अरु वेश्याको दृष्टांत ॥ ४ ॥ स्वच्छ भीजियै ॥ दोहा ॥ अधिक बढ़ावत आपतें, जन महिमा रघुवीर ॥ शबरी पद रज परशते, शुध भयो सरिता नीर ॥ ५ ॥ हरि भगतनिको मिलत हैं, भगवतकें यशहाथ ॥ हृदय बीचको फलत है, समुझो आपहि आप ॥ ६ ॥ अभिमानी ऋषिछोंडि शबरीके गये ॥

जटायुकीटीका ॥ जानकीहरणकियोरावणमरणकाजशुनिसीता वाणीखगराजदौरेउआयोहै । बड़ीपैलड़ाईलीनीदेहवारिफेरिदीनी राखेप्राणराममुखदेखिबोसुहायोहै ॥ आयेआपगोदशीशधारिहंग धारसीच्यो दईसुधिलईगतितनहूंजरायोहै । दशरथवतनानाकियो जलदानयहअतिसनमाननिजरूपधामपायोहै ॥ ३४ ॥ अंबरीषजू कीटीका ॥ अंबरीपभक्तकीजुरीसकोऊकरैऔर बड़ोमतिबौरकिहूं जातनहिंमाषिये । दुर्वासाऋषिशिषसुनीनहींकहूंसाधुमानिअपरा धशिरजटाखैंचिनाखिये ॥ लईउपजाइकालकृत्याबिकरालरूपभूप

महाधीरस्ह्योठाढ़ोअभिलाषिये । चक्रदुखमानिलैक्कृशानु तेजरास्व करीपरीभीरब्रह्मणकोभागवतसाखिये ॥ ३५ ॥

गोद शीश ॥ सवैया ॥ श्री रघुनाथजू लै खग हाथ निहारैं औ नैननि ते जलडारैं। टूकह्वै जात हैं सीता विथाके सोयाकी सनेह कथाके विचारैं ॥ तजि मोहिं चले लगि नीको तुम्हैं हमैं सौंह तिहारी है संग तिहारैं। योंकहि राम गरो भरिफेरि जटायुकी धूरि जटान सों झारैं॥ १॥ लईगति दोहा ॥ मुये मरत मरिहैं सकल, घरी पहरके बीच॥ लही न काहू आजुलौं, गीधराजकी मीच ॥ २ ॥ दई सुधि ॥ रघुबर विकल विहंग लखि सो विलोकि दोउवीर ॥ सियसुधि कहि सिय राम कहि, देह तजी मतिधीर ॥ ३ ॥ घरीजनावत हीरहैं, घरीजजे नहिंराम। घरीभई सब पुण्यकी, खरी सुमति वेकाम ॥ ४ ॥ रीखकोऊ ॥ नवमे ॥ स वै मनः कृष्णपदारविंदयोर्वचांसि वैकुंठगुणानुवर्णने । करौ हरेर्मंदिरमार्जनादिषु श्रुतिं चकाराच्युत सत्कथोदये ॥ ५॥ मुकुंदलिंगालयदर्शने दृशौ तद्भृत्यगात्रस्पर्शेंगसंगमम् । घ्राणंचतत्पादसरोजसौरभेश्रीमत्तुलस्यारसनातदर्प्यते ॥ ६ ॥ पादौहरेःक्षेत्रपदानुसर्प्पणेशिरोहृषीकेशपदाभिवंदने॥कामंचदास्येनतुकामकाम्ययायथोत्तमश्लोकगुणाश्रयारतिः ॥ ७ ॥

भाज्योदिशादिशासबलोकलोकपालपासगयो नयोतेजचक्रचून कियेडारेहैं। ब्रह्माशिवकहीयहगहीतुमटेवबुरीदासनिकोभेदनहींजान्योवेदधारेहैं। पहुँचेवैकुंठजाइकह्योदुखअकुलाइ हायहायराखौप्रभु खरौतनजारे हैं । मैंतो हौंअधीनतीनिगुणकोनमानमेरे भक्तवात्सल्यगुणसबहीकोढारे हैं ॥ ३६ ॥ मोकोअतिप्यारेसाधुउनकीअगाधमतिकरौअपराधतुमसह्योकैसेजातहै । धामधनवामसुतप्राणतनत्याग करेढरे मेरीओरनिशिभोरमोसोंबातहै । मेरेउनसंतविनुऔरु कछुसांचीकहौंजाओवाहीठौर यातेमिटैउतपातहै । बड़ेईदयालसदादीनप्रतिपालकरैं न्यूनतानधरैंकहूंभक्तिगातगातहै ॥ ३७ ॥

ब्रह्मावाक्य ॥ लक्ष्मीःप्राणाधिकाशश्वन्नास्तिकापिततोधिका ॥ भक्ता-

मृद्धेष्टिस्वयंसाचेत् तूर्णंत्यजतितांविभुः ॥ १ ॥ शिववाक्य ॥ महतिप्र-
लयेब्रह्मन्ब्रह्मांडेपिजलप्लुते ॥ नतत्रनाशोभक्तानांसर्वेषांचविशिष्यते ॥
॥ २ ॥ हाय हाय ॥ पद ॥ हरि भक्तनिसों गर्व न करिबो । यह अप-
राध परम पदहूते उतारि नरक में परिबो ॥ गजसिंहासन अश्वऊंट चढि
भवसागर नहिंतरिबो । हमकुलवंत धनीये भिक्षुक नीचनमनमें धरिबो ॥
यहमत भली नहीं आपुन बड नर कूकर अनुसरिबो । हरिसेबीजसगाइक
कोलघु मानत नेकुनडारिबो । अपनेदोष निपटआधेपर दोषकुतर्कनि जरि-
बो ॥ वृथा चातुरीवाद जनम ते भले गर्भमें गरिबो । खानपान ऐडान
भले जो वदन पसारि न मरिबो ॥ श्री कृष्णदास हित धरि विवेक चित
साधन संग उबरिबो ॥ ३ ॥ आधीन नवमें ॥ अहं भक्तपराधीनोह्यस्वतंत्र
इवद्विजः ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥ ४ ॥ धामधन भाग-
वते॥ येदारागारपुत्राप्तान्प्राणान्वित्तमिदंपरम् ॥ हित्वामांशरणं याताःकथं
तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥ ५॥ नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैःसाधुभिर्विना॥श्रियंचा-
त्यंतिकींब्रह्मन् येषांगतिरहंपरा ॥ ६ ॥ तीननामशरणागतपालक आरत-
नाशन ब्रह्मण्यदेव ॥ भलोगर्भमें गरिबो ॥ ७ ॥

ह्वैकरिनिराशऋषिआयोनृपपासचल्योगर्वसोंउदासपग गहेदीन
भाख्योहै । राजालाजमानिमृदुकहिसनमानकरचोढरचोचक्रऔर
करजोरिअभिलाष्योहै । भक्तिनिशिकामकहूंकामनानचाहत है
चाहत है विप्रदूरिकरो दुखचारुयोहै । देखिकैविकलताईसदासंत-
सुखदाईआई मनमांझसबैतेजढांपिराख्योहै ॥ ३८ ॥ एकनृपसुता-
सुनिअंबरीपभक्तिभावभरचोहियभावऐसोबरकरिलीजिये। पितासों
निशंकह्वैकेकहीपतिकियोमैंहीं विनय मानिमेरी वेगिचिट्ठीलिखिदी-
जिये । पातीलैकैचल्योविप्रछिप्रवहिपुरी गयोनयोचावजान्योऐपैकै
सेतियाधीजिये । कहो तुमजाइरानीबैठीसत आइमोको बोल्योनस-
हाइप्रभुसेवामांझभीजिये ॥ ३९ ॥

गर्भसोंउदास॥ पद ॥ हमभक्तनिसोंभूलिबिगारी । जान्योंनहीं

इतोबलैं इनको ये हरिके अधिकारी । कमल पराग भँवरभल जानैं वहै बासना बिहारी । निपट नालके निकट मेडुका भयो कीचकोचारी । काम क्रोध मद अतिशय जड़मति तप बल बढ़्यो बिकारी । अंगीकारकिये हरि इनको यह कछु हम न बिचारी । दुर्वासा अम्बरीष आगे करी दीनताभारी । अग्रदास अभिमानपोटरी ऋपिशिरते तवडारी ॥ १ ॥ निशंक ह्वैकै ॥ सवैया ॥ चन्दन पंक गुलाबको नीर सरोजकी सेज उठाइधरौरी । तूलभयो तनजात जरेउ यह बैरी दुकूल उतारि धरौरी । शंभुजू झूंठेसबै उपचारयो माह तुषारके भारपरौरी । लाजकेऊपर गाज परै ब्रजराज मिलैं स्वइलाजकरौरी ॥ २ ॥ जरिजाहु जोलाज सो काजबिगारे ॥ ३ ॥ तियाधीजियेतियाधीजियेके सरानी की लौंडी पण्डितको दृष्टान्त चोरसाहूकारको दृष्टान्त ॥ दो व्याहाकान्याय ॥ नखीनांचनदीनांचशृंगिणांशस्त्रपाणिनाम् । विश्वासोनैवकर्त्तव्यः स्त्रीषुराजकुलेषुच ४ दृष्टांतनानकशाहको ॥ ४ ॥

कहीनृपसुतासोंजोकीजियेयतनकौनपौनाजिमिगयो आयोकामनाहींबियाको । फेरिकैपठायोसुखपायोमैंतौजान्यो वहबड़ोधर्मज्ञवाकेलोभनहींतियाको। बोलीअकुलाइमनभक्तिहीरिझाइलियो कियोपतिसुखनहींदेखो औरपियाको । जाइकैनिशंकयहबात तुममेरी कहौचेरीजोनकरौतौपैलेवौपायजियाको ॥४० ॥ कहीविप्रजाइसुनि चाइभहराइगयोदयौलैखड़गयासोंफेरिफेरिलीजिये। भयोजूविवाहउतसाहकहूंमातनाहींआइपुरअंबरीष देखिछविभीजिये । कह्योनवमंदिरमेंझारिकैबसेरादेवोदेहुरावभोग बिभवनानासुखकीजिये । पूरबजनमकोऊमेरेभक्तिगंधहुतियातेसनबंधपायो यहैमानधीजिये ॥ ॥४१॥रजनीकशेषपतिभवनमेंप्रवेश कियो लियोप्रेमसाथढिगमांदिरकेआइये।बाहरीटहलपात्रचौकाकरिरीझिरहीगही कौन जाइजामे होतनलखाइये । आवतहीराजादेखिलगैनानिमेषकहूंकौनचोरआयो

मेरीसेवालैचुराइये । देखीदिनतीनिफिरिचीह्निकै प्रवीनकही ऐसो मनजोपैप्रभुमाथेपधराइये ॥ ४३ ॥

बाली अकुलाई ॥ ऋषभदेववाक्यम् ॥ गुरुर्न सःस्यात् स्वजनो नसस्यात् पिता न स स्यात् जननी न सा स्यात् ॥ देवो न स स्यात् न पतिश्चस स्यान्न मोचयेद्यः समुपेतमृत्युम् ॥ १ ॥ पतिभवनमें ॥ लक्ष्मीवाक्य ॥ सवैपतिःस्यादकुतोभयः स्वयं समंततः पाति यातुरंजनम् । सएकएवेतरथ मिथोभयं नैवात्मलाभादधि मन्यतेपरम् ॥ २ ॥ विनाटहल तौ भक्ति प्राप्ति नहीं होइहै अनेक उपायकरौ विनाहरिकी कृपाकहौ कहांते आवै जैसे रसयनीकी रसायनि विना टहल नहीं पावै जब टहल करिकै प्रसन्न करे तब मिलै ॥ ३ ॥

लईबातमानिमानोमंत्रलैसुनायोकान होतहीविहानसेवानीकीपधराईहै । करतिशृंगारफिरिआपहीनिहारिरहै लहैनहींपारदृगझरीसीलगाईहै । भईबढ़वारिरागभोगसों अपारभावभक्तिविस्ताररीतिपुरीसबछाईहै । नृपहूसुनतअबलागीचोपदेखिबेकी आयोततकालमतिअतिअकुलाईहै ॥ हरैंहरैंपावधरैंपौरियानमनेकरैखरैंअरबरैंकबदेखोंभागभारीको ।मयेचालिमंदिरलौंसुंदरनसुधिअंगरंगभीजरहीदृगलाइरहेझारीको ॥ वीणलैबजावैगावैलालनरिझावै त्योंत्यों अतिसनीभावैकहैधन्ययहघरीको । द्वारपैनरह्योजाइगयेललचाइढिग भईउठिठाढ़ीदेखिराजागुरुहरीको ॥ ४४ ॥ वैसहीबजाओवीनतानानिनवीनलैकैझीनसुरकानपरैजातमतिखोइये । जैसे रंगभीजिरहीकहीसोनजातिमोपैऐयेमननैनचैनकैसेकरिगोइये ॥ करिकैअलापचारोफरिकैसँभारितानआइगयो ध्यानरूपताहीमांझभोइये । प्रीतिरसरूपभई रातिसबबीतिगईनईकछूरीतिअहोजामेंनहींसोइये ॥ ४५ ॥

लईबातमानि ॥ गीतायाम् ॥ जन्मांतरसहस्रेषुतपोध्यानसमाधिभिः ॥ नाराणांक्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥ रीझिये ॥ पंचरात्रे ॥ नाहं-

हूसामिवैकुण्ठे योगिनांहृदयेनच ॥ मद्भक्तायत्रगायन्ति तत्रतिष्ठामिनारद ॥ २ ॥ भईउठिठाढी न्याये ॥ नराणांचनराधिपः ॥ ३ ॥ एकउपदेश कर्तागुरु ॥ एक पति परमेश्वर सो तीन नाते जानिकै उठी नहीं सोइये रोगी भोगी योगिया वपु जेही पर काज ॥ शमन इनके हगन में नींदै आवै लाज ॥ नासकेत ॥ एकाक्षरप्रदातारं यो गुरुंनैव मन्यते । श्वानजन्मशतंगत्वाचांडालेष्वभिजायते ॥ ४ ॥

बातसुनोरानीऔरराजागयेनईठौर भईशिरमौरअवकौनवाकीसरिहै । हमहूंलैसेवाकरैंपातिमतिवशकरैंधरैंनितध्यानविषयबुद्धिराखी धरिहै ॥ सुनिकैप्रसन्नभये अतिअंबरीषईशलागीचौफूफैलगईभक्ति घरघरहै । बढैदिनदिनचावऐसोईप्रभावकोईपलटैसुभावहोतआनंद कोभरहै ॥ ४६ ॥ टीकाबिदुरजीकी ॥ न्हातिहीविदुरनारिअंगनि पखारिकरिआइगयेद्वारकृष्णबोलिकै सुनायोहै । सुनतहीसुरसुधि डारीलैनिदरिमानों राख्योमदभरिदौरिआनिकै चितायोहै । डारि दियोपीतपटकटिलपटाइलियोहियोसकुचायो वेसवेगिही बनायोहै । बैठीढिगआय केराछीलिछीलकाखवायआयोपतिखिज्योदुखकोटि गुनोंपायोहै ॥ ४७ ॥

पलटै ॥ तापै दृष्टांत राजाकी बेटीको अरु फकीरको ॥ १ ॥ बीस इहु रशिकह्वैजैहैं ॥ पालपरैं ज्यों आव मिटै हैं ॥ १ ॥ आइगये ॥ श्लोक ॥ इंद्रप्रस्थं वृकप्रस्थं जयंतं वारणावतम् ॥ देहिनश्चतुरोग्रामान् पंचमं कंचिदेवतु ॥ २ ॥ विनायुद्धेनदातव्यंसूच्यग्रं नैवकेशव ॥ ३ ॥ यद्वाह्ययंमंत्रकृद्वोभगवानखिलेश्वरः ॥ पौरवेंद्रगृहंहित्वाप्रविवेशात्मसात्कृतम् ॥ ४ ॥ ॥ कवित्त ॥ नाहीं नाहीं करैं थोरो मांगै सब देनकहैं मंगनको देखि पटदेत बारबार हैं । जिनके मिलेते भली प्रापतिकी घरीहोति ऐसे करतार किये ऐसे निरधारहैं ॥ भोगी ह्वैरहत बिलसत अवनीके मध्य कनकन जोरैंदान पाढ परिवारहैं । सेनापति समझि विचारिदेखौ चारदाता अरु सूम दोनों कियेंएकसारहैं ॥ ५ ॥ दुर्योधनघर त्यागतभये ॥ अपनोमानि बिदुरकेगये ॥ ६ ॥

बोलिकै ॥ ॥ दोहा ॥ सुधि सुरताल अरु तानकी, रह्यो न सुर ठहराइ॥ येरी राग बिगारिगयो, बैरी बोल सुनाइ ॥७ ॥ रही दहेंड़ी ढिग धरी, भरी मथनियां वारि । फेरतकर उलटी रई, नई बिलोवनहारि ॥ ८॥ कवित्त ॥ सोवतसमाधितेजगाइ दिये मुनिगण पशुहू चकितचित्त करै नाचरनको । गाइनते बछरा छुटायेजे पिवतक्षीर अद्भुत कथा तेरी कहां लौं बरनकों ॥ आन हथकरी गोपी सबै हैं डरनि डरी तेऊ तहां परीते गई धरा धरनको । बांसुरी मैंतोहिं पूछौं बारबार तूहे लागी लालकेअधर में अधर मैं करनको ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ फूली सांझके शृंगार सूही सारी जुहीहार सोने सों लपटी गोरी गौने कीसी आईहै । आलम न फेरफंद जानेकछू चंद्रमुखी दीपक बरावनकोनंदभवन लाईहै । ज्योतिके जुरतही में जुरैनैनादुरेजाइ चातुरी अचेतभई चितयो कन्हाई है । बाती रही हाती छवि छाती रस माती पूर पागुरी भई है मति आंगुरीलगाई है ॥ १ ॥ गीतायाम् ॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं योमेभक्त्या प्रयच्छति । तदहं भक्त्युपहृत-मश्नामि प्रयतात्मनः॥ २॥ सवैया ॥ सूहीसीसारीसुहाईहैसांझमेंनैननमांझमि जाजमईहै । कोहै कहांकीहै कौनकीहैघर कौनकेआई नवेली नई है । ठौरठगे उमँगेसे ममारष रीझिरहे आलीभेंटभई है । कोबालि या गलियामें गई सुदिया लेगई सो जिया लैगईहै ॥ ३ ॥ प्रेमको विचार ॥ तत्सुख स्यसुख ॥ दोहा ॥ पूजि भवानी भाइसों, मांगत यह वरदेहु ॥ ब्रजमें सुं-दर साँवरो, हमसोंकरैसनेहु ॥ ४ ॥ सवैया ॥ हमकूं तुमएक अनेक तुम्हैं उनहींके विवेक बनाइ बहौ । इतचाह तिहारी तिहारी उतै घर बाहर प्रेम सदा निबहौ । मनभावै ममारष सोई करौ अनुराग लता जिन वोयद-हौ । घनश्यामसुखीरहौ आनँदमें रहौ नीकेरहौ उनहींकेरहौ ॥ ५ ॥ नाकचढै सीबीकरैं, जितैछबीलो छैल॥ फिरि फिरि भूल वहै गहै, पियकक-रीली गैल ॥ ६ ॥ सतवेत्तातिहुँलोकमें, भोजन किये अपार ॥ कैस-बरी, कै विदुरघर, रुचिमानीहै बार ॥ १ ॥

प्रेमकोविचारिआपलागेफलसारदैनचैनपायोहियेनारिबड़ी दुख दाईहै । बोलेरीझिश्यामतुमकीनोबडोकामएपै स्वादअभिराम

वैसीवस्तुमेंनपाईहै । तियासकुचाइकरकाटिडारौंहाइप्राण प्यारे कोखवायछीलिछीलकानभाईहै ॥ हितहीकीबातदोऊकोऊपारपावै नाहिं नीकेलैलड़ावैसोइजानैयहगाईहै ॥ ४८ ॥ टीका ॥ सुदामा जूकी ॥ बडोनिशिकामसेरचूनहूंनधामढिगआई निजवामप्रीतिह रिसोंजनाईहै । सुनिशोचपरेउहियोखरोअरबरेउमन गाढ़ौलैकैकरेउ बोल्योहांजुसरसाईहै ।जावोएकवारवहवदननिहारिआवो जोपैकछु पावोलावोमोकोसुखदाई है । कहीभलीबात सबलोकमेंकलंकह्वैहै जानीपाति याहीलियेकीनो मित्रताईहै ॥ ४९ ॥

मित्रताई (कवित्त) बोल्योमुसिकाइ नारि बावरी कहांधौं आई मोतानिपैमांगे सो कपूतनिको रावहे । गिरिहूंतेभारे ऐसे दारिद हमारे भाग दई फिटकारे तिन्हें कहौ कहांठामहे । खैबेको नरोटी ऐसी आपदाहे मोटी सात थेगरीकछोटी सो सुदामा मेरो नामहे । जौलौंगावैंश्यामधन मांगिपावैं भीखकन तौलौं मानिलीजे शिरछत्रनकी छामहे ॥ २ ॥ आवतिहे लाज भारीजातब्रजराजजूपै बसनसमाजदेखिखरोमरिजाइये । एकहीपिछौरीसोतो ठौरठौरफाटिरही ओढ़ियेनिशाको जासों प्रातउठि न्हाइये । भेंटऐसी नाहीं जोलैजाइये भगवंतजूपै अंतकभईहैनारि कौलौंसमुझाइये । देहपरमांस जौलौंनासिकामेंश्वास तौलौं बडोउपहासमांगि मीत ना सताइये ॥ ३ ॥

तियासुनिकहेकृष्णरूपक्योंनचहेजाहिदहेदुखआपहीसोंवचनसु- नायेहैं । आईसुधिप्यारेकीविचारैमतिटारैतनधारेपगमगझूमिद्वा रावतीआयेहैं । देखिकैविभूतिसुखउपज्योअभूतकोऊ चल्योमुख माधुरीकेलोचनतिसायेहैं । डरपात हियो ड्योढ़ी लांघिमनगाढ़ो कियोलियो करचाहतबतहांपहुँचायेहैं ॥५० ॥ देख्यो श्याम आयो मित्र चित्र तरहेनेकु हितकोचरित्र दौरि रोयगरेलागे हैं । मानोएकत नभयो लयोऐसे लाइ छाती नयोयहप्रेम छुटै नाहिंअंगपागेहैं।आईदु बराईसुधिमिलनिछुटाई ताते आनै जलरानीपगधोये भागजागेहैं।सेज पधराइगुरुचरचाचलाइसुखसागरबड़ाइआइअतिअनुरागेहैं ॥ ५१ ॥

आईसुधि ॥ सवैया ॥ हेकरतारहौं तोसोंकहों कबहूं जनिदीजिये काहूकेटोटो । और लिखो जिनि काहूके भागमें मालके काजे मही पनि मोटो। तूहू तोजानतहे अपनेजिय मांगिबेते कछु और न खोटो। जोगयोमांगन तूबलि द्वारतो याहीते ह्वै गयो बावनछोटो ॥ १ ॥ मति मांगि मतिमांगि जाको नाम मांगना २ मनगाढोकियो ॥ दोहा ॥ मोमरने को नेमहै, मरौंतौ हरिकेद्वार ॥ कबहूंतो हरिबूझिहैं, कौन मऱ्यो दरबार ॥ ३ ॥ सवैया ॥ कैसे बिहाल बिवाइन सों पगकंटक जाल गडे पुनिजोये। हाय महादुख पायो सखा तुम आयेइतै न कितैदिनखोये। देखि सुदामाकी दीनदशा करुणा करिकै करुणानिधि रोये। पानीपरातकोहाथ छुयो नहीं नयननके जलसों पगधोये ॥ ३ ॥

चिरवाछिपायेकांखपूछैंकहालायेमोको अतिसकुचायेभूमितकैं दृगभीजेहैं। खैंचिलईगांठिमुठीएकमुखमांझदई दूसरीहूलेतस्वाद-पायोआपरीझेहैं। गह्योकररानीसुखसानीप्यारीवस्तुयहै खावोबां-टिमानौश्रीसुदामाप्रेमधीजेहैं । श्यामजूविचारिदीनीसंपतिअपार बिदाभयेपैनजानीसारविछुरनछीजेहैं ॥ ८२ ॥

दियोसुखमांझ ॥ कवित्त ॥ हूलहियरामें काम कामिन परीहैरौर भेंटतसुदामैं श्यामैं बनैना अघातही। शिरोमणि ऋद्धिन में सिद्धिनमें शोर परेउ काहिधौं बकसि ठाढ़ी कांपै कमलातही। नरलोक नाग लोक नगलोक नागलोक थोकथोक कांपैहरि देखिमुसकातही । हालो परेउ हालन में लालो लोकपालन में चालो परेउ चक्रनिमें चिरवा चबा-तही १ रमाकर पकरेउ हो याहीते सुदामा कहै कहां तुच्छतंदुल कहँ जगत गुसाईं हैं। यहू न जानै दीन क्षीण तीनि पैसा दैकै मुखतीनिलोक विभव मिलिकि करिपाई है। हरि सकुचाइकछु द्विजको मैं दियो नाँहि ताते यासों कहैं मेरी बड़ी हीनताई है । दीनोहौं गुदानताको ब्राह्मणी बिना न जानै जाके धन यौवन पुलोमजा लजाई है २ बिदाभये कवित्त ॥ बिदाकरि दीनो द्विज प्रकट न कीनो कछु भेंटि भुज चल्यो

मनमें विषाद भायोहै । याहीते उदास प्रभु पास न रहनपायो याहीते सुखीहौं मोहिं कछु न दिवायोहै । एक दुखभारी मेरी ब्राह्मणी है खुटसारी ताहूको तौ उत्तरु मैं सरस बनायो है । मैं जुनिधिपाईही सोराह में छिनाई काहू मोबिना हमारो सब कुटुँब बुलायो है ॥ ४ ॥

आयनिजग्रामवहैअतिअभिरामभयो नयोपुरद्वारकासोदेखिमतिगईहै । तियारंगभीनीसंगतरुनसहेलीलीनी कीनीमनहारियोंप्रतीतिउरभईहै । करैहरिध्यानरूपमाधुरीको पानवहै राखे निज प्राणजाके प्रीतिनितनई है । भोगकीनचाहऐसे तननिरवाहकरैढरे सोईचालसुखजालरसमईहै ॥ ८३ ॥

मतिगई है ॥ कवित्त ॥ याही ते जनम भरिगयो नहीं श्यामजूपे मेरोकह्यो वचन पँडाइनि नहिंमानै हो । जाहुजाहु लै रहौ न मानति अनाजखाइ ऐंड़ी मैंड़ी बातैं तौ गोविंद की न जानैं हो । द्रौपदी को चीर दये गोपिनके छीनिलये ग्राहते बचायो गजरंगभूमि भानैहो । ब्राह्मणी समेत कहूं खेतते उखार्‍यो घर यातहूं बचायो वाको कह्यो मैं न मान्यो है ॥ १ ॥ चौतरा उजारि काहू चामीकर धामकीन्हों छानितौ छवाय डारी छाई चित्रसारीजू। जौहूं होतो घर तोपै काहेको बननदेतो होन हार ऐसी खोटी दशाही हमारीजू । हौंतो होतो काहल हलाहल दिखाय करि जाहल उठाइ देतो देइ मुखगारीजू । लोभकी सवारी दुखभूखकी दलनहारी भैयाबनवारी काहू सोऊ मारि डारीजू ॥ २ ॥ तियारंगभीनी । आलिनके यूथ ज्यों ज्यों आदरसों बोलैं आइ त्यों त्यों डरपाइ पग आगेको नदेतहै । पंडित न ज्योतिषी न वेदवा न कौतुकी हौं रानी जू बुलावति है कहौ कौन हेतहै । द्वारकाके राजाते मिलेते घर छीनो गयो रानी कहा छीनैगी फल्यो न मेरो खेतहै । मोसों कहा नातो तुम जाइ कहौ वाते मोहिं भूलि ना सुहातो कोऊ ऐसे पर लेतहै ॥ ३ ॥ नईहै ॥ दोहा ॥ जे गरीब सों हितकरैं, धनि रहीम वे लोग । कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मित्रता योग ॥ ४ ॥ भोगकी न चाह ॥ गीतायां ॥ युक्ताहारविहारस्य

युक्तचेष्टस्य कर्मसु ॥ युक्तस्वमावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ ५ ॥

टीका चन्द्रहासकी ॥ हुतोनृपएकताकोसुत चन्द्रहासभयोपरी योंविपतिधाइलाईऔरपुरहै। राजाकोदिवानताके रहीवरआनि-बाल आपनोसमानसंगखेलेरसटरहै। भयोब्रह्मभोजकोई ऐसोईसंयोगवन्यो आयेवैकुमारजहां विप्रनिकोसुरहै । बोलिउठेसवै तेरी सुताकोजुपतिहै यहुबोलचाहैजानीसुनिगयोलाजघुरहै ॥ ८४ ॥ पर्योशोचभारीकहाकरोयोंविचारीअहोसुतजोहमारीताकोपतिऐसो चाहिये। डारोंयाहिमारियाकोयहैहैविचारतववोलेनीचजनकह्यो मारोहियेदाहिये । लैकैगयेदूरिदेखिवालछबिपूरहमजौनपरोधूरि दुखऐसोअवगाहिये । बोलेअकुलाइतोहिंमारैंगेसहाइकौनमांगोएक बातजबकहौंतबचाहिये ॥ ८५ ॥

कवित्तआदिपुराणे ॥यस्य तुष्टो ह्यहं पार्थवित्तं तस्य हराम्यहम्। करोमि बंधुविच्छेदं सर्वकष्टेन जीवितम् ॥ १ ॥ तस्यापि संतुष्टो येन ददामि अव्ययं पदम् ॥ २ ॥ दोहा ॥ तुलसी जो होतव्यता, प्रगटै तैसी तौन । करशायलके सींगको, कहो उमेठै कौन ॥ ३ ॥ वाहिपै आदिपुराणे ॥ यदिवातादिदोषेण मद्भक्तोमांचविस्मरेत् ॥ तर्हिस्मराम्यहंभक्तंसयातिपरमांगतिं ॥ ४ ॥ गीतायां ॥ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ ५ ॥ अंतकाले च मामेव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम् ॥ यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ ६ ॥ यंयं चापि स्मरन् भावं त्यजत्यंते कलेवरम् ॥ तंतमेवेति कौंतेय सदा तद्भावभावितः ॥ ७ ॥ सहाय ॥ छप्पय ॥ जिन राखो ऋषि यज्ञ जनक नृपको पनराखो । जिनराखो पितबोल काक कपटि जिनराखो । जिनराखे ऋषि सकल विकल दंडक वन वासी । जिनराखो सुग्रीव बसत गिरि त्रसत उदासी । अनुज विभीषण पगपरत लंकदई सनमानिकै ॥ सुप्रेम सखापति राखिहैं दीनबंधु जन जानिकै ॥

मानिलीन्हींबोलिसोकपोलमध्यगोलएकगंडकीकोसुतकाटिसेवा नीकीकीनीहै। भयोतदाकारयोंनिहारिसुखभारभारैनैनानिकोकोरही

सोंआज्ञाबधदीनीहै। गिरेसुरझाइदयाआइकछूभाइभरेढरेप्रभुओरम- ति आनँदसों भीनीहै। हुतीछठीआँगुरीसुकाटिलईदुखनहीं भूषणही- भयोजाइकहीसांचचीन्हीहै ॥ ५६ ॥ वहैदेशभूमिमेंरहतलघुभूप औरऔरसुखसबैएकसुतचाहभारीहै । निकस्योविपिनआनिदेखि पाहिमोदमानिकीनीखगछांहघिरी मृगीपांतिसारीहै । दौरिकैनिशं कलियोपाइनिधिरंकाजियो कियोमनभायोसोवधायोश्रीवारीहै।कोऊ दिनबीतेभयेनृपचितचीतिदियोराजकोतिलकभावभक्तिविस्तारीहै ॥ ॥ ५७ ॥ रहेजाकेदेशसोनरेशकछुपावैनाहिं बांहवलजोरिदियोस- चिवपठाइकै। आयोघरजानिकियो अतिसनमानसोंपिछानि लियो वहैबालमाऱ्योछलछाइकै । दईलिखिचिट्ठीजाहुमेरेसुतहाथदीजै कीजैवहीबातजाकोआयोलैलिखाइकै । गयेपुरपासवागसेवामति पगकरी भरीदृगनींदनेकुसोयोसुखपाइकै ॥ ५८ ॥

आज्ञावध ॥ दोहा ॥ तुलसीतेरहसैवरष, यद्यपिलगीसमाधि ॥ तदपि- भांडकी नागई, दुष्टबासनाव्याधि ॥ १ ॥ बाहुबल ॥ नीते ॥ उ- त्खातान् प्रतिरोपयन्कुसुमितांश्चिन्वन् लघून्वर्द्धयन् उत्तुंगान्नमयन्नतान् समुदयन् विश्लेषयन् संहतान् । क्षुद्रान् कंटकिनो वाहिर्निरसयन् म्लानान् समुत्सेचयन्मालाकार इव प्रयोगनिपुणो राजा चिरं नंदति ॥ २ ॥ कवित्त ॥ छोटेछोटेगुलनि को शूरनिकी वारिकरो पातरेसे योधातिन्हैं पानींदैदैपालि- बो ॥ नीचेगिरिगये तिन्हैं दैदैटेक ऊँचेकरौ ऊंचेबढिजाइँ ते जरूरकाटिडा- रिबो। फूलेफूलेफूल सबबीनिइकठौरेकरो घनेघनेरूख एक ठौरते उखारिबो। राजनिको मालनीको नितप्रतिदेवीदास चारिवरीरातिरहे इतनों विचारिबो ॥ ३ ॥ तापै राजाको अरु गांडेको दृष्टांत ॥ ४ ॥ माथोकाटिवेते अंगुली कटी ॥ ५ ॥ चिट्ठी ॥ श्लोक ॥ विषमस्मै प्रदातव्यं त्वया मंदनशात्रवे ॥ कार्याकार्य न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं किल मेत्प्रियम् ॥ १ ॥

खेलतिसहेलिनिसोंआइवाहीवागमांझ करिअनुरागभईन्यारीदेखि रीझिये । पागमतिपातीछाबिमातीझुकिखैंचलईवांचीखोलिलिख्यो

विषदैनापिताखीझिये । विषयासुनामअभिरामदृगअंजनसो विषया-
बनाइमनभाइरसभीजिये । आइमिलीआलिनमें लालनकोध्यानहिये
खियेमदमानोगृहआइतबधीजिये ॥ ५९ ॥

नामअभिराम ॥ मैंजानोंमेरोनाम सबतेबुरोहै क्योंकि काहूको कन-
कमंजरी काहूको रूपलतापरिसैं अबजाती बिषयाही अभिराम हैं याते यह
बात बनीघरी एक ॥ कुण्डलिया ॥ हरिसन्मुखसुख पाइये बिमुख भये
दुख होय । विमुख भये दुख होइ देखि दशग्रीव विभीषण। देखीसुरुचि-
सुनीति देखिप्रह्लादपितातन । देखिदक्षको यज्ञ देखि पृथु वेणु बिनीता।
कंसजनकसुतअंध देखि पांडव जगजीता । अगर मुकर प्रतिबिम्बमें अपनो
आननजाइ । हरि सन्मुख सुख पाइये ॥ १॥ श्लोक ॥ यस्यास्ति भक्ति-
र्भगवत्यकिंचना सर्वे गुणास्तत्र समासते सुराः॥ हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा
मनोरथेनाप्यतिधावतोबहिः ॥ २ ॥ तापैदृष्टांत हपसीके दर्पणको ॥ ३ ॥

उव्योचंद्रहासजिहिपासलिख्योलायोजायो देखिमनभायोगाढ़ेग-
रेसोंलगायोहै । दईकरपातीबातलिखीमोंसुहातीबोलिविप्र घरीएक-
मांझव्याहउघरायोहै ॥ करीऐसीरीतिडारेबड़ेनृपजीति श्रीदेतगई-
बीतिचावपारपैनपायोहै । आयोपितानीचसुनिघूमिआईमीचमानों-
बानोलखिदूलहकोशूलसरसायोहै ॥ ६० ॥ बेव्योलैइकांतसुतकरी-
कहाभ्रांतयहकरेउसो नितांतकरपातीलैदिखाईहै ॥ बांचिआंचला-
गीमैंतोवड़ोईअभागी येयेमारौमतिपागीबेटीरांड़हूसुहाईहै ।बोलिनी-
चजातिवातकहीतुमजावोमठआवैतहांकोऊमारिडारौमोहिंभाईहै ।
चंद्रहासजूसोंभाष्योदेवीपूजिआवोआजु मेरीकुलपूजिसदारीतिचलि-
आईहै ॥ ६१ ॥ चलेईकरनपूजादेशपतिराजाकहीमेरेसुतनाहिंरा-
जवाहीकोलैदीजिये । सचिवसुवनसोंजुकह्योतुमलावोजावोपावोनहीं
फेरिसमयअबकामकीजिये ॥ दौरेउसुखपाइचाइमगहीमोंलियोजाइ-
दियोसोपठाइनृप रंगमाहिंभीजिये । देवीअपमानतेनडरोसनमान-
करोजातमारिडारेउयासोंभाष्योभूपलीजिये ॥ ६२ ॥

शूलसरसायो ॥ कवित्त ॥ भावनि बनाये जे बधाये ते सुनाये मुनि अतिही रिसाये दुख सागर बुड़ायोहै । नगर नगारे नगहुते गूंजे भारेसुनि याके शिर मानों काहू आरासो फिरायो है ॥ आंगनमें जातिहि सुअंगनि में आगि लागी अंगना के करसों सुकंकना खुलायोहै । पाती लेत हाथही सुमारीशिर माथही सुक्विपयाके बांचे विपयाके लपटायो है ॥ १ ॥

काहूआनिकही सुतमारेउतेरोनीचनिने सींचनशरीरजलदृगझरीलागीहै । चल्योततकालदेखिगिरचो ह्वैविहालशीशपाथरसोंफोरिमरचोऐसोहीअभागीहै । सुनिचंद्रहासचलिवेगिमठपासआयो ध्यायेपगदेवताकेकाटेअंगरागीहै । कह्योतेरोदोपीयाहिक्रोधकरिमारेउमैंहींउठैदोऊदीजैदानाजियैबड़भागीहै ॥ ६२ ॥ करचोऐसोराजसबदेशभक्तराजकरेउ ढिगकोसमाजताकीबातकहाभाषिये । हरिहरिनामअभिरामधामधामसुनै औरकामनाहिंसेवाअतिअभिलाषिये ॥ कामक्रोधलोभमदआदिदैकैदूरिकरीजियैनृपपाइऐसोनैननिमेंराखिये । कहीजितीबातआदिअंतलौंसुहातिहिये पढ़ैउठिप्रातफलजैसुनिमैंसाखिये ॥ ६४ ॥ टीकासमुदाइकी ॥ कोपारवनाससोबखानकियोनाभाजूनैमैत्रेअभिरामऋपिजानिलीजैबातमें । आज्ञाप्रभुदईजाहुविदुरहैभक्तमेरोकरौउपदेशरूपगुणज्ञातगातमें ॥चित्रकेतुप्रेमकेतुभागवतख्यातजातेपलट्योजनमप्रतिकूलफलघातमें । अक्रूरआदिध्रुवभयेसबभक्तभूपउद्धवसेप्यारेनकोख्यातपातपातमें ॥ ६५ ॥

वेदीरांडहू सुहाइ ॥ दोहा ॥ अगर दुष्टताजीवकी, शिर दजि अपयश लेइ ॥ सनतन स्वाल कढ़ाइकै, परतन बंधन देइ ॥ २ ॥ बड़भागी है दोहा ॥ दुष्ट न छांडै दुष्टता सज्जन तजै न हेत ॥ कज्जल तजै न श्यामता, मोती तजै न श्वेत ॥ १ ॥ सज्जन ऐसो कीजिये, जैसो आको दूध ॥ अवगुण ऊपर गुण करै, तौ जानै कुल शुद्ध ॥ २ ॥ भक्तराज ॥ राजनीति अश्वायांजायते वत्सः मिथ्यावदतिभूपतिः ॥ वत्रंजलाग्निनादग्धंयथाराजा तथाप्रजा ॥ ३ ॥ पलट्योजन्म ॥ दोहा ॥ जामरने सों जग डरै, सोमेरे

आनंद ॥ कब मरिहौं कब भेंटिहौं, पूरबपरमानंद ॥ ४ ॥ वृत्रासुरवधोपेतंयदि भागवतमिष्याति ॥ ५ ॥

कुन्तीकरतूतिऐसीकरैकौनभूतप्राणी मांगतविपतिजासोंभाजैंसब जनहैं ॥ देख्योमुखचाहौंलालदेखेविनाहियेशाल ह्वजियेकृपालनहीं दीजैवासवनहैं। देखिविकलाईप्रभुआंखिभरिआई फेरिघरहीकोलाई कृष्णप्राणतनधनहैं । श्रवणवियोगसुनितनकनरह्योगयो भयोवपुन्यारो अहोयहीसांचोपनैहै ॥ ६६ ॥

मांगतविपति ॥ भागवते। विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्रतत्र जगद्गुरो । भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ॥ १ ॥ जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेधमानमदःपुमान् ॥ नैवार्हत्यभिधातुं वै त्वामकिंचनगोचरम् ॥ २ ॥ दोहा ॥ प्रीतमनहीं बजारमें, सोइय जारउजार ॥ प्रीतम मिलै उजारि में, सोई उजारिबजार ॥ ३ ॥ कहाकरौंवैकुंठलै, कल्पवृक्षकी छांह ॥ अहमदढांकसुहावने जो प्रीतमगलबाँह ॥ ४ ॥ घरहीकोलाइये ॥ गमनसमयअंचलगह्यो छांडनकह्यो सुजान ॥ प्राणपियारे प्रथमहीं अंचलतजौं किप्रान ॥ ५ ॥ वपुन्यारा ॥ जासों मिलिसुखझिलिरहे दीनों दुख बिसराइ । फिरि जो जाके बिछुरतै फट्यो न उर कहि हाइ ॥ ६ ॥ मन बँदूक तन जामगी हियरंजक जियसाज ॥ प्रेमपलीतादागिगई, निकसी आहि अवाज ॥

द्रौपदीसतीकीवातकहैऐसोकौनपटुखैंचतहीपटपटकोटिगुनेभयेहैं । द्वारकाकेनाथजबबोलीतबसाथहुतेद्वारकासोंफेरिआयेभक्तवाणिनयेहैं । गयेदुर्वासाऋषिवनमेंपठायेनीचधर्मपुत्रबोलेविनयआवैपनलयेहैं ॥भोजनानिवारित्रियाआइकहीशोचपर्‍यो चाहैतनुत्याग्योकह्योकृष्णकहूंगयेहैं ॥ ६७ ॥ सुन्योभागवतीकोवचनभक्तिभावभर्‍योकर्‍योमनआयेश्यामपूजेहियेकामहैं। आवतहीकहीमोहिंभूखलागीदेवोकछूमहासकुचायेमांगैंप्यारोनहींधामहै । विश्वकेभरणहारधरेहैंअहारअजू हमसोंदुरावोकहीवाणीअभिरामहैं । लग्योशाकपत्रपत्र जलसंगपाइगयेपूरणत्रिलोकीविप्रगनैकौननामहैं ॥ ६८ ॥

पटकोटिगुणैं ॥ वसंतऋतुयाचकभई, रीझिदियेद्रुमपात ॥ यातेनवपल्लवभये, दियोदूरिनहिंजात ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ दुश्शासनदुमनदुकूलगह्यो दीनबन्धु दीनह्वैके द्रुपददुलारीयोंपुकारी है । छांडे पुरुपारथकोठाढ़ेपिय पारथसे भीममहाभीमग्रीवानीचेकोनिहारीहै । अंवरजो अम्बर अमरकिये वंशीधर भीषमकरणद्रोणशोभा यों निहारीहै । सारीमध्यनारीहै किनारी मध्यसारीहै किसारी है किनारीहै किसारिहीकीनारीहै ॥ ९ ॥ नये हैं ॥ भारते ॥ यदि गोविंदेति चुक्रोश कृष्णा मां दूरवासिनम् ॥ ऋणमेतत्प्रवृद्धं मे हृदयान्नापसर्पति ॥ १ ॥ आयेश्याम ॥ पद ॥ तौहूंपावनविरदलजाऊं ॥ जो जनके संकट में राजा सुमिरणसमयनआऊं॥ सुनौअजातशत्रुकरुणामय करुणासिंधुकहाऊं ।अनवअनाथनि दीनजानिकै गरुडासनबिसराऊं।शीघ्र सुकाजभक्तअपनेके जहांतहां उठिधाऊं । लघुभगवानप्रतिज्ञामेरे यशत्रैलोकबढ़ाऊं ॥ १ ॥ कौननामहै ॥ षष्ठे ॥ यथा हि स्कंधशाखानां तरोर्मूलनिषेचनम् ॥ एवमाराधनं विष्णोः सर्वेषामात्मनश्च हि ॥ यथातरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यंति तत्स्कन्धभुजोपशाखाः ॥ प्राणोपहाराच्चयथेंद्रियाणां तथैव सर्वार्हणमच्युतेज्या ॥ ४ ॥ कोऊअगस्तको मंत्रउचारै । कोउचूरणको हाथपसारै ॥ कोऊअमलवेतको यांचै । कोऊपेटपीटिकैनांचै ॥ ५ ॥ एक भगवतनाम औषधविना रोग नहीं कटै कोटियतन करौ ॥ ६ ॥

मूल ॥ पदपङ्कजवंदौंसदा जिनकेहरिनितउरवसैं । योगेश्वरश्रुतिदेवअंगसुचुकुंदप्रियव्रतजेता । पृथुपरीक्षितशेपसूतशौनकपरचेता । शतरूपात्रयसुतासुनीतिसतीसवहीमंदालश । यज्ञपत्नी व्रजनारिकियेकेशवअपनेवश । ऐसेनरनारीजितेतिनहींकेगाऊंयसैं । पदपङ्कजवंदौंसदाजिनकेहरिनित उरवसैं ॥ ११ ॥ टीकासमुदायकी । जिनहींके हरिउरनितवसैं जिनहींकेपदरेणुचैनदैनआभरणकीजिये । योगेश्वरआदिरसस्वादमेंप्रवीणमहावीणश्रुतिदेव ताकीबातकहिदीजिये । आयेहरिघरदेखिगयोप्रेमभरिहियोऊंचोकरकरिपटफेरिमतभीजिये । जितेसाधुसंगतिन्हैंविनयनप्रसंगाकियो कियो-

उपदेशमोसोंबाढ़िपांवलीजिये ॥ ७० ॥ मूल ॥ अंघ्रीअंबुजपांशु-
कोजनमजनमहौंयाचिहौं । प्राचीनबर्हिसत्यव्रतरघुगणसगरभागी-
रथ। वालमीकिमिथिलेशगयेजेजेगोविंदपथ । रुकमांगदहरिचंद-
भरतदधीचिउद्धारा । सुरथसुधन्वाशिवसुमतिअतिबलिकीदारा।
नीलमोरध्वजताम्रध्वजअलरककीरतिराचिहौं। अंघ्रीअंबुजपांशुको-
जन्मजन्महौंयांचिहौं ॥ १२ ॥

प्रेमभारि दशमे ॥ धन्यो हं कृतकृत्योहं पुण्योहं पुरुषोत्तम ॥ अद्य मे-
सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे ॥ १ ॥ ऋषि संगऋषी श्लोक ॥ दाराः
पुत्रो नराणां स्वजनपरिकरो बन्धुवर्गः प्रियो वा माता भ्राता पिता वा श्वशुर-
बुधजनौ ज्ञातिरैश्वर्य्यवित्तम् । विद्या नीतिर्विपुलसुहृदो यौवनं मानगर्वं
मिथ्याभूतं मरणसमये धर्ममेकः सहायः ॥ १ ॥ कुंडलिया ॥ कोऊकाहूको
नहीं देखो ठोंकि बजाइ । देख्यो ठोंकि बजाइ नारिपट भूषण चाहै ।
सुतसोंपे नित प्राण सुता प्रत्यक्ष अवगाहै ॥ तात मातकरें घेरुबधूनित
चित्तविगारी । स्वारथताके सजन दास दासी देगारी ॥ अगरकामहरि-
नामसों संकट होतसहाइ । कोऊ काहूको नहीं देखो ठोंकि बजाइ ॥ २॥

टीका—उभयवाल्मीकिकी ॥ जनमपुनिजनमको नमेरेकछुशो-
चअहोसंतपदकंजरेणुशीशपरधारिये । प्राचीनबर्हिआदिकथाप्रसि-
द्धिजगदभै वालमीकिऋषिबातजियतेनटारिये । भयेभील संगभी-
लऋषिसंगऋषिभयेभयेरामदरशनलीलाविस्तारिये । जिन्हैंजगगा-
इकहूंसकैनअघाइचाइभाइभरिहियोभरिनैनभरिढारिये ॥ ७१ ॥
टीका ॥ सुपचवाल्मीकिकी ॥ हुतोबालमीकिएकसुपचसुनामताको
श्यामलैप्रगटकियोभारतमेंगाइये । पांडवनिमध्यमुख्यधर्मपुत्रराजा-
आपकीनोयज्ञभारीऋषिआयेभूमिछाइये । ताकोअनुभावशुभ-
शङ्खसोप्रभावकहैजोपैनहींबाजैतौ अपूरणताआइये । सोईबातभईब-
हुवाज्योनाहिंशोचपरचोपूछें प्रभुपासयाकीन्यूनता बताइये॥ ७२ ॥
तिन्हैंजगगाइ ॥ छप्पय ॥ मुक्तिसुवनिताश्रवणआभरणअक्षयद्वैकाहि॥

मुनिमनपक्षीपक्षिदासजै रामतासगहि । जगतसमुद्र अपारतीरभुवनैन वेद-भल। कलिपातकतमप्रवलहरणको रवि शशि मंडल । विपरीति नाम उच्चार किय वाल्मीक ऋषि भये तदा। जिहि तिहि प्रकार सब काम तजि रामनाम सुमिरौं सदा ॥ १ ॥ रामायणे ॥ चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् । एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ २ ॥ वाल्मीक बुधवंतसदासीतापतिगावैं । रामायणशतकोटि राम राघव मन भावैं । तेंतीसकोटि तेंतीसलाख तेंतीस हजारा । तीनशत बहुरि और श्लोक तेंतीस विचारा । दश दश अक्षर और भक्ति भजिवेको कीना ॥ रामनाम दोउ अंक मांगि शंकर तब लीना । ततवेता तिहुंलोकमें रामचरित विस्तरि रह्यो ॥ एकनाम सुमिरतसदा महापाप परलै गयो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ तुलसी रघुवर नामको, रीझि भजो कै खीज । उलटा सुलटा जामिहै, परे खेतमें बीज ॥

बोलेकृष्णदेवयाकोसुनौसवभेव ऐपै नीकेमानिलेवोवातदुरीसम-झाइये । भागवतसंतरसवंतकोऊजैयौनाहिंकृपिनसमूहभूमिचहूंदि-शिछाइये ॥ जोपैकहौंभक्तिनाहींनाहींकैसेकहौंगहों गासएकऔरकु-लजातिसोवहाइये । दासनिकोदासअभिमानकीनवासकहूं पूरणकी-आशतोपैऐसोलैजिमाइये ॥ ७३ ॥ ऐसोहरिदासपुरआसपासदेखे नाहिं वासविनकोऊलोकलोकनिमेंपाइये । तेरेईनगरमांझनिशिदिन भोरसांझ आवैजाइऐपैकाहूवातनलखाइये ॥ सुनिसवशोचपरेभाव-अचरजभरे हरेमननैनअजूवेगिहीजताइये । कहानामकहांठामजहां-हमजाइदेखैंलेखैंकरिभागधाइपाइलपटाइये ॥ ७४ ॥ जितेमेरेसाधु-कभूचहैंनप्रकाशभयो करौंजोप्रकाशमानैमहादुखदाइये । मोकोप-रयोशोचयज्ञपूरणकीलोचाहिये लियेवाकोनामाजीनेगामतजिजाइ-ये ॥ ऐसेतुमकहौजामेरहौन्यारेप्यारेसदाहमहौंलिवाइलावैंनीकेकैजि माइये । जावोवाल्मीकिघरवड़ोअवलीकसाधुकियोअपराधहमादि-योजोवताइये ॥ ७५ ॥

बासबिन ॥ सवैया ॥ नखबिन कटादेखे योगी कनफटा देखे शीश भारी जटा देखे छारलाये तनमें । मौनी अनबोल देखे जैनी शिरछोल देखे करत कलोल देखे बनखंडी बनमें। गुणी अरु कूरदेखे कायर औ शूरदेखे मायाके अपूर देखे पूरिरहे धनमें । आदि अंत सुखी देखे जनमके दुखीदेखे ऐसे नहींदेखे जिन्हें लोभ नाहिं मनमें ॥ १ ॥ जावो बाल्मीकि घर ॥ भागवते ॥ न मे प्रियश्चतुर्वेदी मद्भक्त श्वपच प्रियः । तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा ह्यहम् ॥ १२ ॥ अवलीक ॥ दोहा ॥ पेट कपट जिह्वा कपट, नैना कपट निराट । तुलसी हरि कैसे मिलैं, घटमें औघट घाट ॥ ॥ ४ ॥ अहमद या मन सदन में, हरि आवैं किहि बाट । बिकट जुरैं जौलौं निपट, खुटै न कपट कपाट ॥ ५ ॥ भक्त्याऽहमेकया ग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सताम् । भक्तिः पुनाति मन्निष्ठा श्वपाकानपिसंभवान् ॥ ६ ॥

अर्जुनऔभीमसेनचलेईनिमंत्रणको अंतरउघारिकहीभक्तिभावदूरिहै । पहुँचेभवनजाइचहुँदिशिफिरिआइपरेभूमिझूमिघरदेख्योछविपूरिहै ॥ आयेनृपराजानिकोदेखितजेकाजानिकोलाजानिसोंकांपिकांपिभयोमनचूरिहै । पावनकोधारियेजूजूंठनिकोडारियेजू पापग्रहटारियेजू कीजैभागभूरिहै ॥ ७६ ॥ जूंठनिलैडारौंसदाद्वारकोबुहारौंनहींऔरकोनिहारौंअजूयहीसांचोपनहै । कहौकहाजैवोकछूपाछेलैजिमाओहमजानिगयेरीतिभक्तिभावतुमतनहै ॥ तबतोलजानोंहियकृष्णपैरिसानोनृप चाहौसोईठानौमेरेसंगकोऊजनहै । भ्रोरहीपधारौअवयहीउरधारौऔरभूलिनविचारौकहीभलोजोपैमनहै ॥ ७७ ॥ कहीसवरीतिसुनिधर्मपुत्रप्रीतिभईकरीलैरसोईकृष्णद्रौपदीसिखाईहै। जेतिकप्रकारसबव्यंजनसुधारिकरो आजुतेरेहाथनिकीहोतिसफलाईहै ॥ लायेजालिवाइकैवाहिरजिमाइ देवोकहीप्रभूआपलावोअंकभरिभाईहै । आनिकैवैठायोपाकशालामेंरसालग्रासलेतबाज्योशंखहरि दंडकीलगाईहै ॥ ७८ ॥

पापग्रहटारिये ॥ प्रथमे ॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यंतिवैग्रह ।

किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः ॥ १ ॥ साधुजगमें तीरथ है जा घरमें आवै सब तीर्थहीआवैं ॥ २ ॥ सफलाईहै ॥ एकादशेमद्भक्तपूज्यभ्यादिका ॥ ३ ॥ कृष्णद्रौपदीसिखाई ॥ नैवेद्यं पुरतो न्यस्तं चक्षुषा गृह्यते मया । रसं च दासजिह्वायामश्नामि कमलोद्भव ॥ ४ ॥ नष्टप्रायेष्वभद्रेषु नित्यं भागवतसेवया । भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवति नैष्ठिकी ॥ ५ ॥ अंकभरिभक्तिकोनातो दुनिया को मिलाप छोटोतुच्छजानिये व्याधि उत्पत्ति करै याते परिहरिये ॥ ६ ॥

सीतसीतप्रतिक्यौंनवाज्योकछुलाज्यो कहा भक्तिकोप्रभावनहिंजानतयोंजानिये । बोल्योअकुलाइजाइपूंछोअजूद्रौपदीको मेरोदोष नाहींयहआपमनआनिये ॥ मानिसांचिवातजातिबुद्धिआईदेखियाहिसबहीसिलाइमेरीचातुरीविहानिये । पूंछेतेकहीहैवालमीकमेंमिलायोयातेआदिप्रभुपायोपाऊंस्वादऊनमानिये ॥ ७९ ॥

सीतासतितप्रति ॥ श्लोक ॥ प्रासेग्रासेकृतेनादे कृष्णताड़निप्रष्टके । लोपितोभक्तिःप्रतापसिक्थे सिक्थे न नादितः ॥ १ ॥ जातिबुद्धि आई ॥ पाद्मे ॥ अर्चावतारोपादानवैष्णवोत्पत्त्यचिंतनः ॥ मात्रयोनिपरीक्षाय तुल्यमाहुर्मनीषिणः ॥ २ ॥ ऊनमानिये ॥ ऊंचनीचमानेनहिंकोई ॥ हरिकोभजैसोहरिकोहोई ॥ ३ ॥ आशंका इकउपजी मनमें । अर्जुन कहेउ कृष्णसों क्षणमें ॥ कोटिनयज्ञब्राह्मणजैये । पूरेउनहीं सुकौनेहेत ॥ ४ ॥ कहेश्रीकृष्ण सुनौहोपाण्डव कोउनसंतआयो तिहारेवार ताजै येजग पूरोहोतो वाजैदेवद्वार प्रभुहमऊंचऊंचकुलपूजे हम जान्यो यह निर्मल भाइ इनहूंसों कोऊ निर्मलहैहै तौ हमभूले देहु वताइ । वाल्मी कहै जातिसरगरो जाके राजा आयेधाइ । वाजै येजग पूरोहैहैमनसापूरण कार्य सँवारि । अर्जुन भीम नकुल सहदेवा राजासहितसुपहुंचेजाइ । करिदंडवत चरणगहि लीह्ने वालमीक के लागेपाइ । तुमतो ऊंचकुल जनमे हमतौ नीच महाकुल माहिं । ऊंचनीचकी शंकाआवे ताते तिहरे आवैं नाहिं ॥ ७ ॥ तुमतौ या जग सकल शिरोमणि तुम समतूल और नाहिं

कोई ॥ कृपाकरौ अरु भवन पधारौ तुम्हैं चले यज्ञ पूरण होई ॥ ८ ॥ जब बालमीक राजाके आयो प्रेमप्रीति सों लियो अहार । जितनेग्रास जे वतेलीने शंखजु बाज्योतितनीबार ॥ ९ ॥ भूधर कहैं हाथसोंभाजों खंडखंड करिहौं चकचूर । हमरोसाधु जेंवतेग्रासजुकणिकणिकोहनबाज्योकूर ॥ १० ॥ देवदेव मोहिं दोष न दीजे दोषजुकोई द्रौपदी माहिं- ऊंच नीचकी शंका आई याते कणिकणि बाज्यो नाहिं ॥ ११ ॥ परख्यासाधु पारखा आई जगमें न्योति जिमायो सोइ। जाजैयें जग पूरण हूवो नाम देव कहैं शिरोमणि सोइ ॥ १२ ॥

टीकारुक्मांगदराजाकी ॥ रुक्मांगदबागशुभगंधफूलपागिरह्योकरिअनुरागदेववधूलेनआवहीं। रहिगईएककांटाचुभ्योपगवैंगनको सुनिनृपमालीपासआयोसुखपावहीं ॥ कहोकोउपाइस्वर्गलोककोपठाइवीजैकरैएकादशीजलधारैकरजावही। ब्रतकोतौनामयहग्रामको ऊजानेनाहिंकीनोहींअजानकालिहलावोगुनगावही ॥ ८० ॥ फेरीनृपढोंढ़ीसुनिवनिककीलौंड़ीभूखीरहीहीकनौड़ी निशिजागीउनमारिय। राजाढिगआइकरिदियोब्रतदानभइतियायोंउड़ानिनिजलोककोपधारिये ॥ महिमाअपारदेखिभूपनेबिचारियाकोकोऊअन्नखाइताकोबांधिमारिडारिये । याहीकेप्रभावभावभक्तिबिस्तारभयोनयोचोजासुनौसवपुरीलैउधारिये ॥ ८१ ॥ एकादशीब्रतकीसचाईलैदिखाईराजासुताकीनिकाईसुनौनीकेचितलाइकै।पिताघरआयोपतिभूपनैंसतायोअति मांगैतियापासनहींदियोयहभाइकै॥ आजुहरिवासरसोतासरणपूजैकोऊ डरकहांमीचकोयोंमानीसुखपाइकै। तजेउनप्राणपायेवेगिभगवानवधूहियेसरसानभईकह्योपनगाइकै ॥ ८२ ॥

याहीके प्रभाव ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ सर्वपापप्रशमनं पुण्यं मात्येतिकंयया। गोविंदस्मरणंनृणांयदेकादस्यपारणम् ॥ १ ॥ सवही को कर्त्तव्यहै ॥ नीते ॥ कष्टाधिकष्टंसततंप्रवासी ततोधिकष्टं परगेहवासी ॥ ततोधिकष्टं कृपणस्यसेवा ततोधिकष्टंधनहीनसेवा ॥ २ ॥ अपनको सेवा ते भूखी

रही एकादशी के माहात्म्यसे इतिहासकी कथा है एकराजाकी स्त्री देखिकै मगनभये पूछी महाराज आपकैसे मगन भये तबकही एकादशी के प्रताप सों राज्यपायो याते मगनभये ॥ २ ॥ नृगराजा शिकार को गये देवलऋषिसों पूछी भद्रअयाखंड अगस्त्यजी गये हैं ॥ ३ ॥

टीकासमुदायको ॥ सुनौहरिचंद्रकथाव्यथाबिनद्रव्यादियो तथानहींराखीबेंचिसुततियातनहै । सुरथसुधन्वाजूसोंदोषकेकरत मरेशंखऔलिखिताबिप्रभयोमेलोमनहै ॥ इंद्रऔअगिनिगये शिवीपै परीक्षालेन काटिदियोमांसरीझिसांचोजान्योपनहै। भरतदधीचिआ दिभागवतबीचगायेसबनिसुहाये जिनादियोतनधनहै ॥ ८३ ॥ टीका बिंध्यावलीकी ॥ बिंध्यावलीतियासी न देखीकहूंतियानैन बांध्योप्रभुपियादेखिकियोमनचौगुनो । करिअभिमानदान दैन बैठ्योतुमहीको कियोअपमानमैंतोमान्योसुखसौगुनो ॥ त्रिभुवनछी निलियेदियेबैरीदेवतानि प्राणमात्ररहेहरिआन्योनाहिंऔगुनो । ऐसी भक्तिहोइजोपैजागोरहौसोइ अहो रहेभवमांझएपैलागेनहींभौगुनो ॥ ८४ ॥ टीकामोरध्वजराजाजूकी ॥ अर्जुनकेगर्बभयो कृष्णप्रभु जानिलयोदियोरसभारीयाहिरोगयोंमिटाइये ।मेरोएकभक्तआइतोकोलै दिखाऊंताहि भयेबिप्रवृद्धसंगबालचालिजाइये ॥ पहुँचतभाष्योजाइमोरध्वजराजाकहां बेगिसुधिदेवोकाहूबातयोजनाइये । सेवाप्रभु करौनेकरहौपाँवधरौजाइकहो तुमबैठौकहीआगिसीलगाइये ॥८५॥

दियोतनधन है ॥ भागवते ॥ जहौ युवैव मलवदुत्तमश्लोकलालसः ॥ १ ॥ करि अभिमान ॥ दोहा ॥ नारी काहू रंक की, अपनी कहै न कोइ ॥ हरिनारी अपनी कहें, क्यों न फजीहत होइ ॥ २ ॥ नहीं भौगुनो ॥ साधूजन जगमें रहैं, ज्यों कमला जलमाहिं । सदा सर्वदा सँग रहै, जलको परसत नाहिं ॥ गर्बभयो ॥ भागवते ॥ तपो विद्या च विप्राणां निश्श्रेयसकरे उभे । तएवदुर्विनीतस्यकल्पतेकर्तुमन्यथा ॥ ४ ॥ सेनयोरुभयोर्मध्येरथंस्थापयमेच्युत ॥ ५ ॥ दोहा ॥ तिमिरगयो रवि देखिकै,

कुमतिगई गुरुज्ञान । सुमतिगई परलोभते, भक्तिगई अभिमान ॥ ६ ॥

चलेअनखाइपाइँगहिअटकाइजाइ नृपकोसुनाइततकालबौरेआये-हैं।वडी कृपाकरी आजुफरीबेलिचाहमेरीनिपटनवेलिफलपायोयाते पायेहैं ॥ दीजैआज्ञामोहिंसोइकीजैसुखलीजैवहीपीजे वाणीरसमेरे नैनलै सिरायेहैं।सुनिक्रोधगयोमोदभयो सोपरिक्षाहियेलिये चितचाव ऐसेवचनसुनायेहैं ॥८६॥ देवकीप्रतिज्ञाकरोंकरीजूप्रतिज्ञाहमजाही भांतिसुखतुम्हैंसोईमोकोभाईहै । मिल्योमगसिंहयहबालककोखाये जातकहीखावोमोहिं नहींयहीसुखदाईहै॥काहूभांतिछांडौनृप आधो जोशरीरआवै तौहीयाहितजौंकहिबातमोजनाईहै । बोलीउठितिया अरधंगीमोहिंजायदेवोपुत्रकहैमोकोलेवोऔरसुधिआईहै ॥८७॥ सुनो एकबात सुततियालैकरौतगात चीरैं धीरैं भीरैनाहिं पीछेउनभाषिये। कीनोंवाहीभांति अहोनासालगिआयोजब ढरेउदृगनीरभीरवाकरन चापिये । चलेअनखाइगहिपाइँसोसुनायेबैन नैनजलआयो अंगकामाकि हिनाखिये।सुनिभरिआयो हियो निजतनश्यामाकियो दियोसुख रूप व्यथागईअभिलाषिये ॥ ८९ ॥

कीन्हों वाही भांति ॥ दोहा ॥ कांचकथीर अधीर नर, कसेन उपजे प्रेम ॥ परमा कसनी साधु सहैं, कै हीरा कै हेम ॥ १ ॥ कबित्त ॥ अगिनि कनक जारे चन्दन खंडित आरे शिलाघसे शीतल तो बासना वढातिहै । क्षीरमथे माखन वढुरि आवै येदिलहै मुकुर मलिन माजै मूरति दिखात है ॥ तोरेहूं सरस अरु मोरेहू सरस रस छीलैं छाटैं काटैं ओटैं अधिक मिठातिहै । रचिबेकी कहा कहौ बिरचैं सहस गुनो सज्जन सनेह कहूं बातनि सिठातु है ॥ १ ॥ सुनायेबैन ॥ नाटके ॥ गृह्णात्येष रिपोः शिरः प्रतिपदं गृह्णात्यसौ वाजिनं नीत्वा चर्म धनुश्च याति पुरतः संग्रामभूमावपि ॥ द्यूतं चौर्य्यपरास्त्रियश्च शपथं जानाति नायंकरो दानानुद्यमतां निरीक्ष्य विधिना शौचाधिकारी कृतः ॥ १ ॥

मोपैतौनदियोजाइनिपटरिझाइलियो तऊरीझिदियेबिना मेरे

हियेशालहै । मांगौवरकोटिचोट वदलोनदूकतहै सूकतहैमुखसुधि आयेवहांहालहै ॥ बोल्योभक्तराजतुमवड़ेमहाराजकोऊथोरोईकरत काजमानोकृतजालहै । एकमोको दीजै दाव दीयोजूबखानोंवेगि साधुपैपरिक्षाजिनिकरौकलिकालहै ॥ ९० ॥

कलिकालहै ॥ दोहा ॥ चारिसवेरी चारि अवेरी, इतनी देगोपाला। इतनी मेते एकघटै तौ, यहले अपनी माला ॥ २॥ जब अर्जुन को गर्वगयो तबबोले ॥ पद ॥ कहाँ कहांलौं कृपा तिहारी । कुलकलंक सबमेटि हमारे किये जगत यशपावनकारी । द्विजकानीन हमारो आजा गोलक पिता बंशकोगारी । हमतौ कुंड सबै जग जानैं ताहूमें औरैग तिन्यारी । महाकष्टकरि ब्याहजुकीनों ह्वै गइ तियापंचभर्तारी । बड़े ब्यसन दूषण युत राजा हमते अधिकजु अग्रजुवारी। याकुकर्मकी अवधि कहालौं जोतिय राजसभामें हारी। हते पितामह बंधु विप्र गुरु लोभी नीच स्वारथीभारी । समझत नहीं कौन विधिरीझे हम तौ ऐसे अधम बिकारी । अति आतुरह्वै रक्षाकीनी अशन बसनकी सबै सँभारी । यह तौ साधनको फलनाहीं बार बार हम यहै विचारी । वीरभद्र केवल कृपाते बिगरतिगई सो सबै सुधारी ॥ ३ ॥

टीका अलरककी ॥ अलरककीकीरतिमेंराच्योनितसांचोहिये कियेउपदेशहूनछूटैविषयवासना । माता मंदालसाकीवड़ीयेप्रतिज्ञासुनौ आवैजोउदरमांझ फेरिगर्भआसना । पतिकोनिहोरोताते रह्योछोटैकोरोताकोलै गयेनिकासिमिलि काशीनृपशासना मुद्रिकाउघारिऔनिहारिदत्तात्रेयजूको भयेभवभावकरीप्रभुकीउपासना ॥ ९१ ॥ मूल ॥ तिनचरणधूरिमोभूरि शिर जेजेहरीमाया तरे ॥ रिभुइक्ष्वाकुअरुऐलगाधि रघुरैगेशुचिशतधन्वा। अमूरति अरुरंतिदेवउतंकभूरिदेवलैववस्वतमन्वा । नहुषययातिदिलीपपूरि यदुगुहमानधाता । पिप्पलनिमिभरद्वाज दक्षसभार्गवैसंघाता ॥

संजयसमीकउत्तानपादयाज्ञवल्क्ययशजगभरे।तिनचरणधूरिमोभूरिशिरजेजेहरिमायातरे ॥ ९२ ॥ टीकारंतिदेवकी ॥ अहोरंतिदेवनृपसंतदुसकंतवंशअतिहीप्रशंससोअकाशवृत्तलईहै । भूखेकोनदेखिसकैआमैसोउठाइदेत नेतनहींकरैभूखेदेहक्षीणभईहै । चालीसऔआठदिनपाछेजलअन्नआयो दियोविप्रशूद्रनीचश्वानयहनईहै । हरिहीनिहारेउनमांझतबआयेप्रभुभायेजगदुखजितेभोगोंभक्तिछईहै

मुद्रकानि ॥ मदालसावाक्यं ॥ संगः सर्वात्मना त्याज्यः यदि त्यक्तुं न शक्यते । सद्भिरेव प्रकर्त्तव्यःसत्संगो भवभंजनः ॥ १ ॥ हरिही निहारे ॥ गीतायाम् ॥ विद्याविनयसंपन्नेब्राह्मणेगविहस्तिनि । शुनिचैवश्वपाकेच पंडिताःसमदर्शिनः ॥ सवैया ॥ अहौसौरहजारमें लाखकरोरमेंएकघटैटिकै नौहीसही । इहांऐसेहीदृश्यप्रपंचकेमाहिं गहैअविवेकरहैसुवही । पुनिनोनमें एकमिलाइलिखै होइऔरकीऔरसुजाइचही । यहीब्रह्मसबैसुअबोधहिपाइ भयो भवशोधकबोधयही ॥ ३ ॥ दुर्लभावैष्णवीनारीदुर्लभोविप्रवैष्णवः । दुर्लभोवैष्णवोराजाअतिदुर्लभदुर्लभः ॥ ४ ॥

राजागुहकीटीका ॥ भिल्लनिकोराजागुहरामअभिरामप्रीति भयोवनवासमिल्योमारगमेंआइकै । करौयहराजजूविराजिसुखदीजेमोको बोलेचैनसाजितज्योआज्ञापितुपाइकै । दारुणवियोगअकुलाइदृगअश्रुपात पाछेलोहूजाततबसकैकोनगाइकै । रहैनैनमूंदिरघुनाथबिनदेखैकहाअहा प्रेमरीतिमेरेहियेरहीछाइकै ॥ ९३ ॥

भयो वनवास ॥ रामचन्द्रिका ॥ पढौंविरंचि वेद मौन जीवसोर छंडिरे । कुबेर बेरकै कही न यक्षभीर मंडिरे । दिनेश दूरिजाइ बैठु नारदादि संगही । न बोल चंद मंदबुद्धि इंद्रकी सभानहीं ॥ १ ॥ दोहा ॥ नाममंथरा मंदमति, चेरि कैकयीकेरि । अयशपिटारी ताहिकरि, गईगिरा मतिफेरि ॥ ३ ॥ इन्द्रके युद्धके द्वैवर ॥ कुंडलिया॥ पुत्र प्राण सबते बडे, चारों युग परमान । ते राजा दोऊ तजे, वचन न दीनेजान । वचन न दीनेजान बड़ेनकी यहै बडाई । वचन रहे सो कार्य और सर्वसकिनजाई ।

कहि गिरिधर कबिराय भये दशरथ नृप ऐसे। प्राण पुत्र परिहरे वचन परिहरे न तैसे ॥ ३ ॥ रही न रानी कैकयी, अमर भई यहवात। काहू पूरब योगते, बन पठये जगतात ॥ बन पठये जगतात पिता परलोक सिधारे। जिहिहित सुतके कार्य फेरि नाहिं वदन निहारे। कहि गिरिधर कबिराय लोकमें चली कहानी। अपकीरतिरहिगई कैकयी रही न रानी ॥ ३ ॥ सवैया ॥ अहोपूत कहां चलिहौ अबहीं तुम सांची कहौ किन मोसों लला। सुनि नयननमें जलसोंभरिकै जैसे वोझपरे नइजात पला ॥ सियके मुखकीछवि यों नघटै मनोंद्विजसोंलै द्विजराजकला। सुधिराखनहेत सियाबरकी पलट्यौ कनकी अँगुरीको छला ॥ ४ ॥ जानकी तिहारे संग जानत न एकौ दुख याके लाइ बेटा तुम वनहू में सहियो। पायँनको चलिबो है जौलौं पांय चलो जाइ आगे जानिचलौ याहि संगलै निवहियो ॥ लक्ष्मणको मनरूखो भूखो जानिदेखि सको आवे कोऊ उतते संदेशोताहि कहियो। उतरत जाहु काहू ग्रामन के बीचपूत मेरे बनबासी मेरी सुधिलेत रहियो ॥ ५ ॥ हनुमान नाटके ॥ सद्यः पुनःपरिसरेपि शिरीषमृद्वी सीताजवात्त्रिचतुराणिपादानि गत्वा गंतव्यमस्ति कियदित्यसकृद्ब्रुवाणा रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारम् ॥ १ ॥ पुरते निकसी रघुबीरबधू करिसाहस धीर दई डगद्वै। झरिभाल कनी निकसीश्रमकी पटसूकिगये अधरामृतद्वै। पुनि पूछत यों चलनों व कितौ कहै पर्णकुटी करिहौ कितवै। तुलसी सियकी लखि आतुरता पियके युगनयनचले जलच्वै॥ २॥ भोरहीके भूखे ह्वैहैं प्यास मुख सूखे ह्वैहैं चलैंपग दूखे ह्वैहैं फिरैं मग रातको। रविकी किरणिलागे लालकुम्हिलाने ह्वैहैं झार लपटाने झँगाफाटेह्वैहैं गात के। अबतौ भई है सांझ वेहैं बनमांझ हम रही क्यों न बांझ हियेफटे क्यों न मात के। मेरेरी वेछौना गये तजिकै घरौना होंगे तरुके तरौना सो बिछौना किये पातके ॥ ३ ॥ मगयें परतपग सुंदर भरत डग कोमल बिमलभूमि छोड़तहैं धनको। जिहि ठौर कांटेकाठ कांकर परत आइ तिहि ठौर धरत हैं आपने चरणको। जिते छांह

सीरी तितै कीजत हैं प्यारी नीरी जितै घाम तितै कीजै नीरद से तन को। गहे रघुनाथ निजहाथन सों हाथ ऐसे जानकी को लियेसाथ चलेजात बनको॥ ४ ॥ मुख सूखि गये रसनाधर मंजुल कंजसे लोचन चारुचितै। करुणानिधि कंत तुरंत कहेउ कि दुरंत महावन भूरिअवै। सरसीरुह लोचन नीर चितै रघुनाथकही सियसोंजुतलै॥ अबहीं बनभामिनी पूंछतिहो तजि कौशलराज पुरी दिनद्वै॥ ५॥ जासुके नाम अजामिलसे खल कोटि नदी भव छंडतकाढ़े। जो सुमिरैं गिरि मेरु शिला कन होत अजाखुर बारिध बाढ़े। तुलसी जिहिके पद पंकजसों प्रगटी तटनी जुहरैअघगाढ़े। ते प्रभुहैं सरिता तरिबेकहँ मांगत नाव करारेपैठाढ़े॥ २ ॥ इहि घाटते थोरिकदूरि अहो कटिलों जलथाह बताइहोंजू। परसैंपगधूरि तरै तरणी घरणी घर क्यों समुझाइहों जू। बरुमारिये मोहिं बिनापगधोये हौंनाथ न नाव चढ़ाइहोंजू। तुलसी अवलम्ब न और कछू लरिका किहिभांति जिवाइहोंजू॥ ४ ॥ रावरेदोषनि पाँयनि को पगधूरि को भूरि प्रभावमहाहै। पाहनतेबलवान न काठकी कोमल है जलखाइरहाहै। तुलसी सुनि केवटके वरबैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहाहै। पावन पांव पखारिकै नाव चढ़ाइहौं आयसु होत कहाहै॥ ५ ॥ प्रभु रुखपाइकै बुलाइबाल घरणि कूं बंदिकै चरण चहुँदिशिबैठे घेरिघेरि। छोटोसो कठौताभरि आन्यो पानी गंगाजूको धोइपाइँ पीवतपुनीतवारि फेरिफेरि। तुलसी सराहैं ताको भागसानुराग सुर बरषैं सुमनजयजय कहैं टेरिटेरि। बिबुधसनेहसानी बानी सुसयानी सुनि हँसे रामजानकी लषण तनहेरिहेरि॥ ६ ॥ लक्ष्मणसों हमसों इकसाथ सिया पुनि साथहि छांडि न दैहैं। बानर ऋक्ष जितेकहि केशव ते सब कंदरखोह समै हैं। छोड़िकै आनि मिल्यो हमसों तिनको यह संग कहा करि ऐहैं। औरसबै घरके बन के कहु कौनके भौन विभीपण जैहैं॥ ७ ॥

चौदहबरपपाछेआये रघुनाथनाथ साथकेजेभीलकहैंआयेप्रभु देखिये। बोल्योअबपाऊंकहांहोतनप्रतीतक्योंहू प्रीतिकारिमिलेराम

कहींमोकोपेखिये। परसपिछानेलपटानेसुखसागर समानेप्राणपाये- मानो भालभागलेखिये। प्रेमकीजुबातक्योंहूबानीमेंसमातनाहिं अ- तिअकुलातकहौंकैसेकैविशेषिये॥ ९४॥ मूल॥ निमिअरुनवयोगे- श्वरा पादत्राणकीहौंशरण॥ कविहरिकरिभाजनभक्तरत्नाकरभारी। अंतरिक्षअरुचमस अनन्यतापधतउधारी॥ प्रबुधप्रेमकीराशि भूरिदाआविरहोता। पिप्पलद्रुमलप्रसिद्धभवाब्धिपारकेपोता॥ जयंतीनंदनजगतिके त्रिविधतापआमयहरण।निमिअरुनवयोगेश्वरा पादत्राणकीहौंशरण॥ १३॥ पदपरागकरुणकरौ जेनियंतानवधा भक्तिके॥ श्रवणपरीक्षितसुमति व्याससावककीरतन। सुठिसुमिर णप्रह्लादपृथुपूजाकमलाचरन। नाभनवंदकसुफलकसुवन दासदी पति कपीश्वर। सख्यत्वेपार्थसमर्पनआत्मावलिधर॥ उपजीवी इननामकेराते त्राताअगतिके, पदपरागकरुणाकरौ जेनियंतानवधा- भक्तिके॥ १४॥

दोहा॥ यान पुष्पमय एकलिय, चढ़े लषण सिय श्याम॥ करतस्तुति सबदेवमुनि, चलेअवधपुरराम॥ १॥ रघुवर आगम सुनि अवध, घरघरबु- रतनिशान॥ मिले भरतपरिजनप्रजा, प्रथमहिं गुरुसनमान॥ १॥ पादत्रा- णकीहौं शरण॥ वेदाचार्य्यवाक्यं॥ कर्मावलंवकाः केचित् केचिद् ज्ञानावलम्बकाः। वयं तु हरिदासानां पादत्राणावलम्बकाः॥ २॥ भक्ति के भागवते॥ श्रीविष्णोः श्रवणे परीक्षिदभवद्वैयासकिः कीर्तने। प्रह्लादःस्मरणे तदंघ्रिभजने लक्ष्मी पृथुः पूजने॥ अक्रूरस्त्वभिवंदने कपिपतिर्दास्ये च सख्येऽर्जुनः॥ सर्वस्वात्मनिवेदने बलिरभूत्कृष्णाप्तिपारंपरा॥ ५॥

श्रवणरसिककहूंसुनेनपरीक्षितसे पानहूंकरतलागैकोटिगुनीप्या- सहैं। मुनिमनमांझक्योंहूंआवतनध्यावतहू वहीगर्भमध्य देखिआ- योरूपरासहै। कहीशुकदेवजूसोंटेवमेरीलीजैजानिप्राणलागैकथा- नहींतक्षककात्रासहै।कीजियेपरीक्षाउरआनीमतिसानीअहो वानीवि- रमानीजहांजीवनानिरासहै॥ ९५॥ शुकदेवकीशंका॥ गर्भतेनि क-

सचलेवनहींमेंकीनों बास व्याससे पिताको नहीं उत्तरहूदियोहै । दशमश्लोकसुनिगुणमतिहरिगई नईभईरीतिपढ़िभागवतालियोहै । रूपगुणभरसंह्योजातकैसेकरिआये सभानृपढरिभज्योप्रेमरसाहियोहै । पूछैंभक्तभूपठौरठौरपरैंभौरजाइ गाइउठैंजबैमानोरंगझरिकियोहै ॥ ९६ ॥

प्यासहै ॥ पारनो ॥ प्रवराख्यातको हंसः शुको मीनादयस्तथा । अवरा वृक भूरण्डवृपोष्ट्राद्याःप्रकीर्तिताः ॥ १ ॥ छप्पय ॥ अन्य मनादृगलोलपदछेदक असमंजस । स्थित अधीर श्रुति मंद पलक झपैकेनिद्रावस । प्रश्न प्रसंगति मिलै मधुर अनुमोदन अक्रिय । बादर सिरसकछहर अभिनज्ञ अलापत प्रियाप्रिय । रसिक अनन्य विशालमति बातकहत अनुभवसुकत । दश दोपरहित श्रोतामिलैं तौ उज्ज्वल रस बरषै अमृत ॥ २ ॥ दशमश्लोक ॥ दशमे ॥ अहो बकीयं स्तनकालकूटं जिघांसयापाययदप्यसाध्वी । लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं कं वा दयालुं शरणं व्रजेम ॥ ३ ॥ परिनिष्ठितोपि नैर्गुण्येउत्तमश्लोकलीलया ॥ गृहीतचेता राजर्षे आख्यानंतदधीतवान् ॥ ४ ॥ परैंभवरजाइ ॥ कवित्त ॥ सूझत न वारापार लिख्यो प्रेमहै अपार मिलनै अथाह देखि धीरज हिरातुहै । पातीको अधारपाइ पैरत सनेह सिंधु बिरह की लहरि मांझ हियरा हिरात है । नवल गुनबंधीबूडि ढूंढ़तरतन औधी मूरति मरजियाकी नेकन थिरात है । एक वेरबांचि पुनि फेरि खोलि फेरि बांचि बांचि बांचि प्राणप्यारी बूड़ि बूड़िजातिहै ॥ ५ ॥

प्रह्लादकीटीका ॥ सुमिरणसांचोकियोलियोदेखिसवहींमें एकभगवानकैसेकाटैंतरवारहै । काटिबोखड़गजलबोरिबोसकतिजाकी ताहीकोनिहारैचहुँओरसोअपारहै । पूछतेवतायोखंभतहांहींदिखायोरूप प्रगटअनूपभक्तवाणीहींसोप्यारहै । दुष्टडारचोमारिगरऔतैंलईडारितऊक्रोधको न पारकहाकियोयोंविचारहै ॥ ९७ ॥

पूंछेते ॥ श्लोक ॥ तत्साधु मन्ये सुरवर्य देहिनां सदा समुद्विग्नधियामसद्ग्रहात् । हित्वात्मपातं गृहमंधकूपं वनंगतो यद्धरिमाश्रयेत ॥ १ ॥ श्रवण की-

र्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ॥ अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ कवित्त ॥ पानिसों बांधिकै अगाध जलबोरि राखे तीर तरवारनि सों मारि मारि हारे हैं । गिरिते गिराय दिये डरपे न नेकु तब मतवारे परवत से हाथीतरडारे हैं ॥ फेरे शिर आरा लै अग्निमांझ जारे पुनि पूंछि मीडिगातनु लगाये नागकारे हैं । भावते के प्रेममें मगन कछू जानै नहिं ऐसे प्रह्लाद पूरे प्रेम मतवारे हैं ॥ ३ ॥ व्याल कराल महा विषपावक मत्त गयन्दनिके रद तोरे । ताते निशङ्क चले डरपे नहीं किंकरते करनी मुख मोरे । नेक विषाद नहीं प्रह्लादहि कारण केहरि केवल होरे । कौनकी त्रास सहै तुलसी जोपै राखिहै राम तौ मारिहै कोरे ॥ ४ ॥ छप्पय ॥ गगन गूंज गुंजरत शोर दशहूं दिशि पूरण । हरत धरति कलमलत शेष शंकर विषचूरण । उसरसंक सकपकत धीर धंपकत धमक सुनि । भगत भीर भहराइ खंभ फहराइफटितपुनि ॥ अति विकट दंत कट कट करत चट पटाइ नख करत तप । लफ लफतजीभ दुर्ज्जन दलन सुजय जय श्रीनृसिंह वपु ॥ ५ ॥ अति भक्तिके काज सुधारनको अद्भुत अवतार मुरारि धरे ॥ ६ ॥

डरेशिवआदिकहुँदेख्योनहींक्रोधऐसो आवत न ढिगकोऊलक्ष्मीहूंत्रासहै । तबतौपठायोप्रह्लादअह्लादमहा अहाभक्तिभावपग्योआयोप्रभुपासहै । गोदमेंउठाइलियोशीशपरहाथदियो हियोहुलशायोकहीवाणीविनयराशहै । आईजगदयालगिपरेउश्रीनृसिंहजूकोअरच्योयोंछुटावोकरौमायाज्ञाननाशहै ॥ ९८ ॥

वाणी विनयराशिहै ॥ पाद्मे ॥ कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुंधरा सा वसती च धन्या । स्वर्गे स्थितास्तत्पितरोपि धन्या येषां कुले वैष्णवनामधेयम् ॥ १ ॥ छप्पय ॥ मनोरथ मनके भाव असत्त कहत अधिकारीसों हम निपट असत्य न आतहि दोखे सुपनैतिय संगमः सोऊ झूठ जो होय तऊ नाहिं कामसतावै । जो मनके अनुभाव जासु तिहि जगत डरावै ॥ सुपनोंहूं है सांच पुन जगतमिटै पहिचानिये । योंहीं

विषय निवेशता गये सांचसो जानिये ॥ २ ॥ श्लोक ॥ विषयान् ध्याय-तश्चित्तं विषयेषु विसज्जते ॥ मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येव प्रविलीयते ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ उबटि अन्हाइ लालधोती झमकाइ पट पीताम्बर छोरन झु-राई झमकाइकै । मेलिकै अतरु वह चतुर किशोर बर बांध्यो केशजूरा कर चूरा चमकाइ कै । पहिरिखराऊं मणि रचित खचित तान बानमुसकान पानखात उठ्यो गाइकै । ठाढ़ोसिंह पौरिकर चन्दनकी खौरि चितै कऱ्यो मनकोरतन शिऱ्यो भौंरखाइकै ॥ ४ ॥

अक्रूरकीटीका ॥ चलेअक्रूरमधुपुरीतेविसूरनैनचलीजलधारा-कबदेखौंछविपूरको । शकुनमनावै एकदेखिबोईभावै देहसुधिबिसरा वैलोव्योलखिपगधूरिको ।वंदनप्रवीनचाह निपटनवीन भईदईशुक देव कहिजीवनकी मूरिको । मिलेरामकृष्णाझिलेपाइकैमनोरथको हिलेदृगरूपकिये चूरिचूरिचूरिको ॥ ९९ ॥ टीकाबलिजूकी ॥ दियो सर्वसुकारि अतिअनुरागबलि पागिगयोहियो प्रह्लाद सुधिआईहै । गुरुभरमावैं नीतिकहिसमुझावैंबोलउरमें नआवैं किती भीतउपजाईहै ॥कह्योजोईकियोसांचोभावपनलियोअहो दियोडर-हरिहूनेमातिनचलाईहै । रीझिप्रभुरहेद्वारभयेवशहारिमानी श्रीशुक-बखानीप्रीतिरीतिसोईगाई है ॥ १०० ॥ मूल ॥ हरिप्रसादरसस्वा दकेभक्तइतेपरवान ॥ शङ्करशुकसनकादि कपिलनारदहनुमाना । विष्वक्सेनप्रहलाद बलिरु भीषमजगजाना ॥ अर्जुन ध्रुव अम्बरीष विभीषणमहिमाभारी । अनुरागीअक्रूरसदाउद्धवअधिकारी ॥ भगवन्तभक्तअवशिष्टकी कीरतिकहनसुजान । हरिप्रसादरसस्वाद-के भक्तइतेपरवान ॥ १८ ॥

चूरिचूरि चूरिको॥कवित्त॥बांधिकै मुकेसी चीरा कलंगी जटित हीरा तुर्राढिगगोचपेंचललितही सँवाऱ्योहै । झुंगा एकलमकासकंचन बदरंग होत एक छोर पटकाको छैलतासों ढाऱ्योहै । धुकधुकी कंठ मध्य हीरा नग मोती जरे शोभित गलमाल आजु लालमैं निहाऱ्यो है । पहुँचनिमें

पहुँची सुन्दर रतन जरी अमैट करे नने अमैटि मनडान्यो है ॥ १ ॥ कह्यो जोई ॥ श्लोक ॥ असंतुष्टा द्विजा नष्टाः संतुष्टश्च महीपतिः ॥ सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जा च कुलांगना ॥ २ ॥ हरिप्रसाद ॥ पाद्मे॥ बलिर्विभीषणो भीष्मः कपिलो नारदोऽर्ज्जुनः ॥ प्रह्लादो जनको व्यासो अम्बरीषः पृथुस्तथा ॥ ३ ॥ विष्वक्सेनो ध्रुवोऽक्रूरो सनकाद्याः शुकादयः॥ वासुदेवप्रसादान्नं सर्वे गृह्णन्तु वैष्णवाः ॥ ४ ॥

ध्यानचतुर्भुज चितधर्यो तिन्हैं शरणहौं अनुसरौं।अगस्त्यपुलस्त्यपुलह चमनवशिष्टसौभरऋषि । कर्दमअत्रिरिचीकगर्गगौतमव्यासाशिपि ॥ लोमशभृगुदालभ्यअंगिराशृङ्गीप्रकाशी । मांडवविश्वामित्र दुर्वासासहसअठासी ॥ यावलियामदग्निमयादर्शकश्यपपरचतपाराशरपदरजधरौं। ध्यानचतुर्भुजचितधरचो तिन्हैंशरण हौं अनुसरौं ॥ १६ ॥

चतुर्भुज ॥ छप्पय ॥ कीट मुकुट अरु तिलकभाल राजतछवि छाजत । पीतवसन तनुश्याम कामकोटिक लखिलाजत ॥ कंठत्रिवली श्रीवत्ससुभग शोभित मनमोहत । वैजंतीबनमाल कौनउपमा कवि टोहत॥ कर शंख चक्र गदा पद्मधर रूपअमितगुण गरुड़ध्वज । गोविंद चरण वंदत सदा जय जय जय श्रीचतुर्भुज ॥ १ ॥

साधनसाध्यसत्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ ब्रह्माविष्णुशिवलिंगपदमस्कंधविस्तारा । वावनमीनवराहअग्निकूरमऊदारा ॥ गरुड़नारदीभविष्य ब्रह्मवैवर्त्तश्रवणशुचि । मार्कंडब्रह्मांडकथानानाउपजैरुचि ॥ परमधर्मश्रीमुखकथितचतुरश्लोकीनिगमसत । साधनसाधिसत्रापुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ १७ ॥ दशआठस्मृतिजिनउच्चारी तिनपदसरसिजभालभो ॥ मनुस्मृतिआत्रैवैष्णवीहार्तिकजामी । याज्ञवल्क्यअंगिराशनैश्चरसाम्तकनामी ॥ कात्यायनिसांखिल्यगौतमीवाशिष्ठीदाखी । सुरगुरुआशाताप पराशरकृतमुनिशाखी । आसापासउदारधी परलोकलोकसाधनसो । दश-

आठस्मृतिजिनउच्चरीतिनपदसरसिजभालभो ॥ १८ ॥ मूल ॥ पावैंभक्तिअनपायनीजेरामसचिवसुमिरणकरैं । सृष्टिविजयीजयंत नीतिपरशुचिरविनीता । राष्ट्रविवर्द्धननिपुणसुराष्ट्रपरमपुनीता ॥ अशोकसदाआनन्दधर्मपालकतत्त्ववेता । मंत्रीवरज्यसुमंतचतुर्जग-मंत्रीजेता ॥ अनायासरघुपतिप्रसन्नभवसागरदुस्तरतरैं । पावैंभ-क्तिअनपायनीजेरामसचिवसुमिरणकरैं ॥ १९ ॥

फलरूपी श्रीभागवत ॥ मंगल रूप अनूप निगम कल्पद्रुमको फल। बीजवकुलतैं रहित मधुररस सहित विमल कल ॥ कहत सुनत सुख देत अधिक हरि भक्ति बढ़ावत । सब सारनिको सार व्याससुत शुक मुख गावत ॥ तिमिर हरणको सूरसम श्रीगुविंद जगजगमगत । पूरन पुराणपति प्रगट नित जय जय जय श्रीभागवत ॥ २ ॥ प्रथमे ॥ निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिबत भागवतं रसमा-लयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ एकवेदके चारि सह-सशाखा विस्तारी । साठि लाख इतिहास महाभारत कियो भारी ॥ चारिलाख अरु अर्द्ध व्यास वेदांत बखान्यो । अष्टादश किये पुराण हृदय हरिनाम न जान्यो ॥ कहत पढ़त सीखत सुनत दाह न हिरदय-को गयो । तत्त्ववेत्तानारद मिले तब व्यास हृदय शीतल भयो ॥ ४ ॥ दशहजार ब्रह्म पुराण, इकतालीस हजार विष्णु पुराण, छिहत्तरि हजार शिव पुराण, ग्यारह हजार लिङ्गपुराण, पचपन हजार पद्मपुराण, एकसौ इक्यासी हजार स्कंद पुराण, दश हजार बावन पुराण, चौदह हजार मीन पुराण चौवीस वाराह पुराण, पंद्रह अग्नि पुराण, सत्रह कूर्म्म पुराण उनईस गरुड पुराण, पचीस नारद पुराण, चौदह भविष्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त अठारह पुराण, नवमारकंडेय पुराण, बारह ब्रह्मांडपुराण अठारह हजार श्रीभागवत श्लोक एवं पुराण संदोहाश्चतुर्लक्षउदाहृता ॥ १ ॥ कृष्णतन छप्पय ॥ प्रथम द्वितिय दोऊ चरण तृतिय चतुर्थदोऊ उरु । पंचमनाभि गंभीर हृदय षष्टम सुख पुरु ॥ सप्तम अष्टम भुजा नवम कंठ बिराजै ।

दशम बदन सुखसदन भाल एकादशराजै ॥ द्वादश शिर शोभित सदा मंपल रूपी सुमिरनमन । तत्त्ववेत्ता तिहुंलोकमें कीर्तिरूपी कृष्ण तन ॥ २ ॥ नवमे ३॥ मात्रास्वस्रा दुहित्रावा नविविक्तासनोभवेत् । बलवानिंद्रियग्रामो विद्वांसमपकर्षति ॥ ३ ॥ तापै संन्यासीको दृष्टांत ॥

शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके ॥ दिनकरसुतहरिराजवालिवच्छकेशरीऔरस ॥ दधिमुखद्विविदमयंदऋच्छपतिसमकोपौरस ॥ उल्कासुभटसुसेनदरीमुखकुमुदनीलनल ॥ सरभांगवैगवाछपनस गँधमादन अतिवल॥पद्मअठारहयूथपाल रामकाजभद्रभीरके । शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके ॥२०॥ मूल॥ ब्रजवड़ेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंद ॥ धरानंद ध्रुवनंद तृतियउपनंद सुनागर । चतुर्थतहां अभिनंदनंदसुख सिंधुउजागर ॥ सुठिसुनंदपशुपालनिर्मलानिश्चयअभिनंदन । करमाधरमानंद अनुज विदितवल्लभजगवंदन ॥ आसपास वा वगरके जहांविहरतपशुपक्षु छंद । ब्रजवडेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंद ॥ २१ ॥

बालवच्छ ॥ कवित्त ॥ हरगिरि हाल हद मेरुगिरि हाल पुनि उदगिरि हाल और रुद्रगिरि हालवी । सप्तपाताल हाल दशों दिग्पाल हाल पलपल हाल ऊपर उझालवी । केशवदास लंकको विपुल दल वलहाल दशशीश हाल उख्यो भुजवीश हालवी । लोक हाल और भूलोक हाल एकबालि बलवंत सुतपग नहीं हालवी ॥ १ ॥ पादरज भागवते ॥ तद्भूरि भाग्यमिह जन्म किमप्यटव्यामिह गोकुलेपि कतमांघ्रिरजोभिषेकम् । यज्जीवितंतु निखिलं भगवान् मुकुंदस्त्वद्यापि यत्पदरजः श्रुतिमृग्यमेव ॥ अहो भाग्यमहो भाग्यं नंदगोपव्रजौकसाम् । यन्मित्रं परमानंदं पूर्णब्रह्म सनातनम् ॥ आशामहो चरणरेणुजुपमहं स्याम् वृन्दावने किमपिगुल्मलतौषधीनाम् । या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा भेजुर्मुकुंदपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥ ३ ॥ या दोहने वहनने मथनोपलेपप्रेंखेंखनाभरुदितेक्षणमार्जनादौ ॥ गायंतिचैनमनुरक्तधियोऽश्रुकं

क्यो धन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तपानाः ॥ ४ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि मया तप्तं तपः पुरा ॥ नन्दगोपव्रजस्त्रीणां पादरेणूपलब्धये ॥ ५ ॥

बालवृद्धनरनारिगोप होंअरथीउनपादरज ॥ नंदगोपउपनंदध्रुवधरानंदमहरियशोदा कीरतदावृषभानकुँवरि सहचरिबिहरतमनमोदा ॥ मधुमंगलसुबलसुबाहुभोजअर्जुनश्रीदामा। मंडलग्वालअनेकश्यामसंगीबहुनामा ॥ घोषनिवासनकीकृपा सुरनरवांछितआदिअज। बालवृद्धनरनारिगोप होंअर्थीउनपादरज॥२२॥ मूल ॥ व्रजराजसुवनसँगसदनवनअनुगसदातत्पररहैं ॥ रक्तकपत्रकऔर पत्रिसवहीमनभावैं। मधुकंठौवमधुवर्त्तरसालबिशालसुहावैं। प्रेमकंदमकरंदआनंदसदाचंद्रहासा । यादवकुलरसदानशारदाबुद्धिप्रकासा ॥ सेवासमयविचारिकै चारुचतुरवितकीलहैं । व्रजराजसुवनसंगसदनवनअनुगसदातत्पर रहैं ॥ २३ ॥ मूल ॥ सप्तद्वीपमेंदासजेतेमेरेशिरताज । जंबूऔरपलछिशालमलिबहुतराजऋषि।कुशपवित्रपुनिक्रौंचकौनमहिमाजानैंलखि ॥ शाकविपुलविस्तारप्रसिद्धनामीअतिपुहकर। पर्वतलोकालोक ओकटापूकञ्चनधर।हरिभृत्यवसतजेजेजहांतिनसोंनितप्रतिकाज। सप्तद्वीपमेंदासजे ते मेरेशिरताज ॥२४॥

मनमोदा ॥ कवित्त ॥ कहा इतरात जाइ अहो आवो कहैं बात सुनेमनकंठ सुखगात न समाइगो । थोरे बैस भोरे भाइ चोरे लेत लकचित्त कुंडल झलकहेरि हियराहिराइगो ॥ तुमकान्हसाँवरे पधारि देखौ एकवार मेरो गोरोकान्ह लखै मनललचाइगो । ग्रीवकी लटक मुरि भौंहकी मटकबीच बीराकी चटकमें अटकि मन जाइगो ॥ १ ॥ दोहा ॥ राधा हरि हरि राधिका, बनिआये संकेत । दंपति रति विपरीति रस सहज सुरति सुखलेत ॥ २ ॥

मध्यद्वीपनवखण्डमें भक्तजितेमम भूप। इलावर्त्तआधीशसङ्कर्षणअनुगसदाशिव । रमनकमलमनुदासाहिरण्यकूरमअर्जुनइव। कुरुवराहभूभृत्यवरिपहरिसिंहप्रह्लादा । किंपुरुषरामकपिभरतनारायण

वीनानादा ॥ भद्रासुग्रीवहयभद्रस्रवकेतुकामकमलाअनूप । मध्य-द्वीपनवखंडमेंभक्तजितेमम भूप ॥ २६ ॥ मूल ॥ श्वेतदीपमेंदासजे-श्रवणसुनौंतिनकीकथा । श्रीनारायणकोवदनानिरंतरताहीदेखें । पलकपरैजोबीचकोटियमजातनलेखें ॥ तिनकेदरशनकाजगयेजहँ-वीणाधारी । श्यामदईतहँसेनउलटिअबनाहिंअधिकारी । नारायणी-अख्यानदृढ़तहांप्रसंगनाहिंनतथा । श्वेतद्वीपमेंदासजेश्रवणसुनोंति-नकीकथा ॥ २७ ॥ टीका ॥ श्वेतद्वीपवासीसदारूपकेउपासी गये-नारदविलासीउपदेशआशलागीहै । दईप्रभुसेनजिनिआवोइहिऐन-दृगदेखेसदाचैनमतिगतिअनुरागीहै । फिरेदुखपाइजाइकहीश्रीवैकु-ण्ठनाथसाथलियेचलेलखोभक्तिअंगपागीहै । देख्योएकसरखगरह्यो-ध्यानधरिऋषि पूंछैंहरिकहोकह्योवड़ोवड़भागीहै ॥ १०१ ॥

पलक परै जो बीच ॥ कवित्त ॥ मंजु मोर मुकुट लटकि घुँघवारी लटैं झूमिझूमि कुण्डल कपोलनिमें झलकैं । वारिज वदन रस रूपको सदन लखि दमकै रदन भरिभारि छबि छलकैं । कानन छुवतकोपे ऐन मैन कोटि मोहे शोभा सर लखिलखि मन मीन ललकैं । देखिवेको श्याम शोभा देतो दृग रोम रोम सोन करो विधि औ अविधि करी पलकैं ॥ १ ॥ दोहा॥ बड़ो मन्द अरविंद सुत, जिहि न प्रेम पहिंचानि ॥ पियमुख निरखनि दृगनिको, पलकरची बिच आनि ॥ २ ॥

वरषहजारबीतेनहींचितचीते प्यासोईरहत ऐपैपानी नहींपीजिये पावैजोप्रसादजबजीभसोंसवादलेतलेतनहींऔरयाकीमतिरसभीजि-ये । लीजैबातमानिजलपानकरिडारिदियोचोंचभारिदृगभरबुधिमति धीजिये। अचरजदेखिचपलगैननिमेषकहूं चहूंदिशिफिरचोअवसेवा याकीकीजिये ॥ १०२ ॥ चलोआगेदेखेकोऊरहैनपरेखोभावभ-क्तकरिलेखोगयेद्वीपहरिगाइये । आयोएकजनधायआरतीसमयावि-हायखैंचिलियेप्राणफेरिवधूयाकीआइये ॥ वहीइनकहीपातिदेखोनहीं महीपरचोचरचोयाकोजीवतनागिरचोमनभाइये । ऐसेपुत्रआदिआ-

येसांचेहितसेंदिखाये फेरिकैजिवायेऋषिगायेचितलाइये ॥ १०३ ॥
मूल ॥ उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानहरिधामथिति ॥ इलापत्रमु-
खअनन्तअनन्तकीरतिविस्तारत । पद्मसंकुपनप्रगटध्यानउरतेनहिं
टारत ॥ अंशुकमलबासुकीअजितआज्ञाअनुवर्ती । करकोटकतक्ष-
कसुभटसेवाशिरधरती ॥ आगमोक्तशिवसंहिताअगरएकरसभजन-
रत । उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानहरिधामथिति ॥ १७ ॥

उरग अष्ट ॥ दोहा ॥ दोइ जीभ तनु श्याम हैं, वाक्चलन विष खानि ॥ तुलसी गुरुके मंत्रपै, शीश समर्पत आनि ॥ १ ॥ अनंत कीर्त्ति ॥ कवित्त ॥ दीननिको है दयाल दासनिको रक्षपाल सबको शिरोमणि है सदा अविकार है । धन धनहीन को है गुनिनि गुनीन को है रूपहै विरूप को अनूप है उदारहै । आनंद को कंद भवसिंधु को पगार दुख द्वंदकी हरण हार महिमा अपारहै ॥ श्रीगुविंद हरिजूके नामको उचार चारु सारन को सार निरधारको अधार है ॥ २ ॥ दोहा ॥ मैं मानस सौं चित्तते, मनदीनो रवि सो ॥ मैं आवा जावा नित्त मैं तू नजरिन आवदा ॥ २ ॥

चौबीसप्रथमहरिवपुधरे त्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट । श्रीरामानु
जउदारसुधानिधिअवनिकलपतरु । विष्णुस्वामिबोहित्यसिंधुसंसा-
रपारकरु ॥ माध्वाचारजमेधभक्तिसरऊसरभरिया । निंबादित्यआ-
दित्य कुहरअज्ञानजुहरिया॥ जनमकरमभागवतधरमसंप्रदायथापी-
अघटाचौबीसप्रथमहरिवपुधरेत्योंचतुरव्यूहकलियुगप्रगट ॥ २९ ॥

चौबीस ॥ एकादशे ॥ कृतादिषु प्रजा राजन् कलाविच्छन्ति संभवम् । कलौ खलु भविष्यंति नारायणपरायणाः ॥ १ ॥ गीतायां ॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ २ ॥ ननु भागवता लोके लोकतत्त्वविचक्षणाः । व्रजन्ति सर्वे संदिष्टा हृदि स्थितेन महात्मना ॥ ३ ॥ भगवानेव भूतानां सर्वत्र कृपया हरिः । रक्षणाय चरेल्लोकान्भक्तरूपेण नारद ॥ ४ ॥ आदि-

पुराणे ॥ भक्तानने वसेद्ब्रह्मा शिरस्येव वसाम्यहम् ॥ नाभौ च शंकरो देवः पदे गंधर्वकिन्नराः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ दंभ सहित कलिधर्म लखि, छलहि सहित व्यवहार ॥ स्वारथ सहित सनेह सव, सबैरुचित आचार ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्वधर्मविवर्जिते ॥ वासुदेवपरा भक्तास्ते कृतार्था न संशयः ॥ ७ ॥ कलियुगप्रगट ॥ छप्पय ॥ दया स्वर्ग उठि गई धर्म धँसिगयो धरणिमें। पुण्य गयो पाताल पाप भयो वरण वरण में। प्रीति रीति सव गई वैर भयो घर घर भारी। आप आपनी परी जिते जगमें नर नारी। कविराज कहत सांचो सबै निपट पलटि समयो गयो ॥ रैनर निरंध सुन कानदै अव प्रतक्ष कलियुग भयो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कलियुग कालकरालकी, वरणि न जाइ अनीति। वैर बढ्यो चार्‍यो वरन, आप समय भय भीति ॥ २ ॥

निंबादित्यनामजातेभयोअभिरामकथाआयोएकदंडग्रामन्योतोकरिआयेहैं ॥ पाककोअबारभई संध्यामानिलईयतीरतीहूनपाऊवेदवचनसुनायेहैं । आंगनमेंनीमतापैआदित्यदिखायोवाहिभोजनकरायो पाछेनिशिचिह्नपायेहैं । प्रगटप्रभावदेखिजान्योभक्तिभावजग दावयाव नामपर्‍योहर्‍योमनगायेहैं १०५ दोहा॥ रमापद्धितरामनुज राजैविष्णुस्वामित्रिपुरारि ॥ निम्बादित्यसनकादिकामधुकर गुरुमुखचारि ॥ ३० ॥ मूल ॥ संप्रदायशिरोमणिसिंधुजारच्योभक्तवित्तान । विष्वक्सेनमुनिवर्य्यसपुनषटकोपपुनीता । चोपदेवभागवतलुप्तउद्धर्‍योनवनीता । मंगलमुनिश्रीनाथपुंडरीकाक्षपरमयश । राममिश्ररसरासप्रगटपरतापपरांकुश । यामुनिमुनिरामानुजातिमिरहरणउदयभान । संप्रदायाशिरोमणिसिन्धुजारच्योभक्तवित्तान ॥ ३१ ॥ मूल ॥ सहस्रआस्यउपदेशकरिजगतउद्धरणयत्नाकियो । गोपुरह्वै आरूढ़उच्चसुरमंत्रउचार्‍यो । सूतेनरपरेजागबहत्तरश्रवणानिधार्‍यो । तिननेईगुरुदेवपद्धतिभइन्यारन्यारी । कुरत्तारकशिष्यप्रथमभक्ति वपुमं

गलकारी । कृपणपालकरुणासमुद्ररामनुजसमनहिंवियोसह ॥३२॥

वेदवचन ॥ भागवते ॥ संध्याकाले च संप्राप्ते चतुष्कर्माणि वर्जयेत् ॥ आहारं मैथुनं निद्रां स्वाध्यायं च विशेषतः ॥ १ ॥ आहारे जायते व्याधिः गर्भदुष्टिश्च मैथुने ॥ निद्रायां हरते लक्ष्मीं स्वाध्याये मरणं ध्रुवम् ॥ ॥ २ ॥ आदित्य दिखायो ॥ समये ॥ यस्यास्ति भक्तिर्भगवत्यकिंचना सर्वे गुणास्तत्र समासते सुराः ॥ हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा मनोरथे नासति धावतो बहिः ॥ ३ ॥ रमा पद्धति ॥ पाद्मे ॥ कलौखलुभविष्यंतिचत्वारःसंप्रदायकाः ॥ श्रीब्रह्मरुद्रसनकावैष्णवाःक्षितिपावनाः॥ ४ ॥

टीका ॥ आस्यसोवदननामसहसहजारमुखशेषअवतारजानोवहीसुधिआईहै । गुरुउपदेशमंत्रकह्योनीकेराखोअंत्रजपतहीश्यामजूनेमूरतिदिखाईहै । करुणानिधानकहीसबभगवानपावै चढ़िदरवाजेसोपुकारचोधुनिछाईहै । सुनिसीखिलियोयों बहत्तरिहीसिद्धभये नयेभक्तिचौजयहरीतिलैहैगाईहै ॥ १०६ ॥ गयेनीलाचलजगन्नाथजूकेदेखिवेको देख्योअनाचारसबपंडादूरिकियेहैं । संगलैहजारशिष्यरंगभरिसेवाकरैं धरैहियेभावगूढ़मतदरशायेहैं । बोलेप्रभुवेईआवैंकरैंअंगीकारमैंतो प्यारहीकोलेतकभूँअवगुणनलियेहैं । तऊदृढ़कीनीफिरकहीनहींकानकीनीलीनींवेदवाणीविधिकैसेजाताछियेहैं ॥ ॥ १०७ ॥ जोरावरभक्तसोंवसाइनहींकहीकितीरतीहूनलावैमनचोजदरशायोहै । गरुड़कोआज्ञादईसोईमानिलईउनाशिष्यनिसमेत निजदेशछोड़िआयोहै । जागिकैनिहारैठौरऔरहीमगनभरोदययोंप्रगटकरगूढ़भावपायोहै । वेईसबसेवाकरैंश्याममनहरैंसदाधरैं सांचो प्रेमहियेप्रभुजूदिखायोहै ॥ १०८ ॥

मूरति दिखाई है ॥ यह तो बड़ो आश्चर्य्य है ततकाल मूर्ति कैसे देखी तीन वस्तु शुद्धहोहिं तौ खेत में बीज ऊगै बीज घुनौं भूंजो न होइ खेतकर बंजर न होइ, किसान को भाग होइ चेला निर्वासक होइ यह खेत शुद्ध गुरु निर्वासक यह बीजशुद्धः गुरु के भाग ॥ दोहा ॥ गुरु

लोभी शिष्य लालची दोऊखेलैं दाव ॥ दोऊबूड़ें वापुरे, चढ़ि पाथरकी नाव १ पाथरकी नाव पै मल्लाहू बूड़ै चढ़न हारहू बूड़ै सब भगवान् पावै तापै कठारीजू वाको दृष्टांत ॥ श्लोक ॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामनन्य भाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ २ ॥

मूल ॥ चतुरमहंतदिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं। श्रुतिप्रतापश्रुतिदेवऋषे वपुहकरइभऐसे । श्रुतिधामाश्रुतिउदधिपराजितवामन जैसे । श्रीरामानुजगुरुबंधुविदितजगमंगलकारी । शिवसंहिताप्रणीतज्ञानसनकादिकसारी ॥ इंद्रापद्धितउदारधीसभासापिसारगकहैं । चतुरमहंतदिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं ॥ ३२ ॥ आचारजजामातकीकथासुनतहारिहोइराति । कोऊमालाधारीमृतकबह्योसरितामें आयो । दाहकृत्यज्योंबंधुन्योतिसबकुटुंबबुलायो॥ नाकसकोंचैंविप्र तब हरिपुरतेहरिजनआये । जेंवतदेखेसबनितबकोहूनहिंपाये । लालाचारजलक्षुधाप्रचुरभईमहिमाजगत । श्रीआचारजजामातकीकथासुनतहरिहोइरत ॥ ३३ ॥ टीका ॥ आचारजकोजामातबाततताकी सुनौंनीकेपायोउपदेशसंतबंधुकरमानिये । कीजैकोटगुणीप्रीतऐपैनबनतरीतितातेइतिकरौयातेघटतौनआनिये । मालाधारीतनसाधुसरितामेंबह्योआयोलायोघरफेरके विमानसबजानिये । गावत बजावतलैनीरतीरदाहकियो हियोदुखपायोसुखपायोसमाधानिये ॥

चतुरमहंत ॥ श्लोक ॥ अद्यापिनोऽझतिहरः किलकालकूटं कूर्म्मोबिभर्तिधरणींखलुपृष्ठभागे ॥ अंभोनिधिर्वहतिदुःसहवाडवाग्निमंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयंति ॥ १ ॥ लालाचार्य्यपैस्कंधे ॥ तुलसीकाष्ठजांमालांकंठस्थां वहतेतुयः ॥ अशौचश्चाप्यनाचारोमामेवैतिन संशयः ॥ १ ॥ केशारि कश्मीरमोंहोइ है सो राजा जैसिंहसवाई ने अजमेर में लगाई सो नहीं भई तब पूंछी काहेते न भई महाराज जल आवै तौ होइ जहां जलहू मँगायो तऊ न भई महाराज माटी आवै-

तौ होइ माटीहू आई तऊना भई महाराज हवाआवै तौ होइ जैसेही प्रेम हृदयते उपजे खैंचेते न आवै ॥ ३ ॥

कियोसोमहोछ्छोज्ञातिविप्रनिकोन्योतोदियोलियोआयेनाहिंआनी शंकादुखदाहिये । भयेइकठौरेमायाकीनेसबबौरेकछूकहैबातऔरे मरोदेहवहीआहिहै । यातेनहींखातवाकी जानतनजातिपांति बड़ो उतपातघरलाइजाइदाहिये । मगअवलोकउतपत्योसुनशोचहिये जियेआइपूंछैगुरुकैसेकैनिबाहिये ॥ १२० ॥ चलेश्रीआचार्य्यजूपै- वारिजवदनदेखिकरीसाष्टांगबातकहीसोजनाइये । जावोजूनिशंकवे प्रसादकोनजानेरंक जानैंजेप्रभावआवैवेगिसुखदाइये । देखनभभूमि द्वारऐहैनिरधारजन वैकुंठनिवासीपांतिढिगह्वैकैआइये । इन्हेंअब जानदेवोजिनकछूकहौअहोकरौ हांसिजबैघरजाइनिजपाइये १२१॥

आयेनहिं ॥ आगमे ॥ माला धारक मात्रोपि वैष्णवो भक्ति वर्जि- ताः ॥ पूजनीय प्रयत्नेन ब्राह्मणा किंतु मानुषैः ॥ १ ॥ प्रसाद कोन जानैरंक ॥ स्कांदे ॥ महाप्रसादे गोविंदनाम्नि ब्राह्मण वैष्णवे ॥ स्वल्प पुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते ॥ २ ॥ घरजाइ खाइये ॥ प्रतिमामंत्रतीर्थेषु भेषजे वैष्णवेगुरौ ॥ यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ मल्ल जानै कुलिश नरेश नरजानैं पुनि नारी- जानैं मीनकेत मूरति रसालहै । गोपजानैं स्वजन महीप जानैं दंडदेन यादव यों जानैं इष्ट देवता कृपालहै । अज्ञानी विराट जानैं गोपी परत- त्त्व जानैं रंगभूमि रामकृष्ण गये ऐसे हालहैं । नंद जानैं बालक गुविंद प्रतिपाल जानैं शाल शत्रु वंश जानैं कंस जानैं कालहै ॥ २ ॥

आयेदेखिपारषदगयोगिरिभूमिसद हदकरीकृपायह जानिनिज जनको । पायोलैप्रसादस्वादकहिअहलाददयो नयोलयोमोदजान्यो सांचोसंतपनको।विदाह्वैपधारेनभमगमेंसिधारेविप्र देखतविचारेद्वार व्यथाभईमनको । गयोअभिमानआतमंदिरमगनभये नयेहगलाज वीनवीनिलेतकनको ॥ १२२ ॥ पाइलपटाइअंगधूरिमेंलुटाये कहैं

करौमनभायोऔरदीनवहुभाष्योहै। कहीभक्तराजतुम कृपामेंसमा जपायोगायो जोपुराणनमेंरूपनैनचाष्योहै। छांड़ोउपहासअबकरौ निजदासहमैं पूजीजिय आश मन अतिअभिलाष्योहै। कियेयेप्रशं समानौहंसयेपरमकोऊ ऐसेसेजसलाखभांतिघरघरराख्योहैं॥१२३॥

मूल ॥ श्रीमारगउपदेशकृतिश्रवणसुनौ अख्यानशुचि गुरुगमन कियोपरदेशशिष्यसुरधुनीदृढ़ाई। इकमंजनइकपानएकहृदयवंद नाकराई। गुरुगंगामेंप्रवेशशिष्यकोवेगिवुलायो। विष्णुपदीभयजा निकमलपत्रनपरधायो। पादपदमतादिनप्रगटसवप्रसन्नमनपरम रुचि। श्रीमारगउपदेशकृतिश्रवणसुनौआख्यानशुचि ॥ ३९ ॥

गयोगिरिभूमि ॥ पद ॥ संत चरण परशीश धन्यो। राखिलियो बहुभांति कृपाकरि मनते संशय शूल हन्यो। हमरे अवगुण मेटि दूरि घट मैं हरिरस अमृत भन्यो। कीटभृंग ज्यों मृतकजिवायो जीवकागते हंस कन्यो ॥ दूरि कियो अज्ञान अँधेरो ज्ञान रतन जव दीप वन्यो। हरिहि दियाइ कियो हरिहीसो इहि सुखमायादुरिततन्यो। प्रभुवश भये साधुकी सेवा साधु संगते काजसन्यो। राम राइके हित भगवानैं साधु-संगको अमल पन्यो ॥ १ ॥

टीका ॥ देवधुनीतीरसोंकुटीरवहुसाधुरहैं रहैगुरुभक्तएकन्यारो-नहींह्वैसकै। चलेप्रभुगांवजिनितजोवालिजांवकही करौदाससेवागं-गामेंहींकैसेह्वैसकै। क्रियासबकूपकरैविष्णुपदीध्यानधरै रोषभरेसंत श्रेणीभावनाहिंभैसकै। आयेईशजानिदुखमानिसोवखानाकियो आनि-मंनजानिवातअंगकैसेध्वैसकै ॥११४॥ चलेलैकेन्हानसंगगंगमेंप्रवेश कियो रंगभरिबोलेसोअँगोछावेगिलाइये। करतविचार शोचसागर-नवारापार गंगाजूप्रगटकह्योकंजनपरआइये। चलेईअधरपगधरैसोम धुरजाइ प्रभुहाथदियोलियोतीरभीरछाइये। निकसतधाइचाइपाइल पटाइगये वड़ोपरतापयहनिशिदिनगाइये ॥ ११५ ॥

देवधुनीकैसी है॥तृतीये॥यावै सच्छ्रीतुलसीविमिश्रा कृष्णांघ्रिरेण्वभ्य

धिकांत्रुनेत्री ॥ पुनाति लोकानुभयत्र शेषान्कस्मान्न सेवेत मरिष्यमाणः ॥ ॥ १ ॥ आदिपुराणे ॥ दृष्ट्वा जन्मशतं पापं स्पृष्ट्वा जन्मशतद्वयम् ॥ स्नात्वा पीत्वा सहस्राणि हंति गंगा कलौ युगे ॥ २ ॥ तापै दृष्टांत भूतको अरुसिद्धको॥भो दरिद्र नमस्तुभ्यं सिद्धोहं तव दर्शनात् ॥पश्याम्यहं जगत्सर्वं न मां पश्यति कश्चन ॥ कवित्त ॥ कारौकुलकंटक डरारो बोलभारो जाको तीरथके तीरपगकवहूं न लैगयो । कहैंकविगंगकारेकागहूते सरस आप आनियमप्रेरयो तबखाटमें कुपैगयो । गंगाजीकी धोई चादरि बकुचामें धरी करी ताके अंग लागतही तारागणलैगयो । चाहचौर-ठौरै सबदेवता निहारै वा गंगाजीकी चादरि सोंचत्रभुजह्वैगयो ॥ ४ ॥ ऐसो गंगाको प्रताप ताको क्यों न उठिधाइये ॥ ५ ॥

मूल ॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापअवनिअमृतह्वैअनुसर्‌यो ॥ देवाचारजद्वितीयमहामहिमाहरियानँद । तस्यराघवानंदभयेभक्तनकोमानद ॥ पत्रावलंवपृथिवीकरिवकाशीअस्थाई । चारिबरण आश्रमसवहीकोभक्तिदृढ़ाई ॥ तिनकेरामानंदप्रगटविश्वमंगलजिह-वपुधर्‌यो। श्रीरामानुजपद्धतिप्रताप अवनिअमृतह्वैअनुसर्‌यो॥३६॥ श्रीरामानंदरघुनाथज्योंद्वितीयसेतजगतरनकियो।अनंतानंदकवीरसुखासुरसुरापद्मावतनरहरि।पीयाभावानदरैदासधनासेनसुरसुरकीधर हरि॥औरौशिष्यप्रशिष्यएकतेएकउजागर।विश्वमंगलआधारभक्तिद शधाकेआगर॥वहुतकालवपुधारिकैप्रणतजननिकोपारादियो। श्रीरामानंदरघुनाथज्योंद्वितियसेतजगतरणकियो३७अनंतानंदपदपरशकै लोकपालसेतेभये।योगानंदगयेशकरमचंदअल्हपैहारीसारी।रामदास श्रीरंगअवधिगुणमहिमाभारी॥तिनकेनरहरिउदित मुदितमोहामंगल तन।रघुवरयदुवरगायाविमलकीरतिसंच्योधन॥हरिभक्तिसिंधुवेलार-चैपानिपद्मजाशिरदये।अनंतानंदपदपरशकैलोकपालसेतेभये३८॥

चारिवरण एकादशे॥मुखबाहूरुपादेभ्यः पुरुषाः स्वाश्रमैः सह ।चत्वारो जज्ञिरे वर्णा गुणैर्विप्रादयः पृथक् ॥ परावपुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरम् ।

न भजंत्यवजानंति स्थानभ्रष्टाः पतंत्यधः ॥ २ ॥ वारिसिपयेवारिहीसेत रूपीहोतभयै ॥ छप्पय ॥ जगत समुद्र अपार तासके जेनममरनतट । काम क्रोध मद लोभ तासमेलहरि मैं महाभट ॥ मोहग्राहतम प्रबल निगलि ज़ावै सीसारा । तामें गोताखातनाहिंकोउतनक अधारा ॥ दुखपाये बूड़क लत हैं सुखपाये उछरत जानि।दीनानाथ रघुनाथ विन कौनछुटावैआनि ॥

टीका ॥ घोसाएकगांवतहां श्रीरंगसुनामरहैवनिकसरावगीकी-कथालैबखानिये । रहतोगुलामगयोधर्मराजधामवहां भयोवड़ो-दूतकहींयेरेसुनिवानिये । आयेवनिजारेलेखितूदिखावैचैन वैलशृङ्ग-मध्यपैठिमारयोपहिचानिये । विनहरिभक्तिसबजगतकीयहीरीति-भयोहरिभक्तिश्रीअनंतपदध्यानिये ॥ १२६ ॥ सुतकोदिखाईदेत-भूतनितसूक्योजातपूछैंकहीबाततनवाहीठौरस्वायोहै । आयोनि-शिमारवेकोधायोयहरोषभरयो देवोगतिमोको उनवोलिकैसुना-योहै । जातकोसुनारपरिनारलगप्रेतभयो लयोतेरोशरणमैं ढूंढ़जग-पायोहै । दीनोंचरणामृतलैकियोदिव्यरूपवाकोअतिहीअनूपसुनो भक्तिभावगायोहै ॥ १२७ ॥ मूल ॥ निर्वेदअवधिकलिकृष्णदास-अन्नपरिहरियपयानकियो । जाकेशिरकरधरयोतासुकरतरनहिं-आड्यो । अप्योंपदनिर्वाणशोचनिर्भयकरिछांडयो । तेजपुंजबल-भजनमहामुनिऊरधरेता । सेवतचरणसरोजराइराणाभुविजेता । दाहिनाबंशदिनकरउदयसंतकमलहियसुखदियो । निर्वेदअवधिक-लिकृष्णदासअन्नपरहरियपयानकियो ॥ १९ ॥

धर्मराजधाम ॥ सवैया ॥ जागत के हम पाहरू हैं पुनि सोवतकै ग-ठिया सरकावैं । षटकोन करैं परकोधन चोरत दोरत चोरके शोरसु-नावैं । हमहीं शिरभूत चढाइ सुजाइके पांइधुवाइके प्याइछुड़ावैं । याहीते नाथ बरोबरिहो कहु धर्मअधर्म की बात चलावैं॥ १ ॥ चरणामृत॥ पाद्मे ॥ गंगासागरसहस्राणि द्वारकाणां शतैरपि ॥ एवं तीर्थादिकं पुण्यं सतां पादोदकं पिबेत् ॥ २ ॥ शिरकर धाऱ्यो ॥ स्वाने ॥

गुकारो ह्यंधकारस्तु रुकारोस्यै विनाशकृत् ॥ अंधकारविनाशश्च गुरुरित्यभिधीयते ॥ ३ ॥

टीका ॥ जाकेशिरकरधरचोतातरनऔडचोहाथदीनोबड़ोवरराजाकुल्हकोजुसाखियै । परवतकंदरामेंदरशनदीन्योआनिदियोभावसाधुहरिसेवाअभिलाखियै। गिरीजोजलेबीथारमांझतेउठाइबाल भयोहियेशालबिन अरापितचाखियै । लैकरिखड्गताहि मारणउपाइकियो जियोसंतओटफिरमोलकरिराखियै ॥ १८ ॥ नृपसुत भक्तवड़ोअबलौंविराजमानसाधुसनमानमेंनदूसरोबखानियै । संतवधूगर्भदेखिउभयपनवारेंदियेकहीगर्भइष्टमेरो ऐसीउरआनियै।कोऊभेषधारीसोऽन्योहारी पगदासनकोकहीकृपाकरोकहाजानेऔरप्रानियै । ऐपैतजिबोक्रियादेखिजगबुरोहोत जोतिबहुदईदामरामप्रतिसानियै ॥ ११९ ॥ मूल ॥ पैहारीपरसादते शिष्यसबैभयोपारकर । कील्हअगरकेवलचरणब्रतहठीनरायन । सूरजपुरुषापृथुतपूरहदिभक्तपरायन । पद्मनाभगोपालटेकटीलागदाधारी । देवाहेमकल्याण गंगागंगासमनारी । विष्णुदासकन्हररंगाचांदमशवरीगोविंदपर । पैहा रीपरसादते शिष्यसबैभयेपारकर ॥ ४० ॥

विनअर्पित ॥ श्लोक ॥ विनार्पितं तु गोविंदे भोजनं कुरुते यदि ॥ श्वानो विष्ठा समं चान्नं तोयं च सुरपासमम् ॥ १ ॥ भागवते ॥ येषां संस्मरणात्पुंसांसद्यः शुद्ध्यन्ति वै गृहाः ॥ किं पुनर्दर्शनस्पर्शपाद शौचासनादिभिः ॥ २ ॥ आगमे ॥ मालाधारकमात्रोपि वैष्णवो भक्तिवर्जितः ॥ पूजनीयः प्रयत्नेन ब्राह्मणाः किंतु मानुषैः ॥ ३ ॥ मालातिलकसंचिह्नैः संयुक्तो यः प्रदृश्यते ॥ चांडालोपि महीपाल पूजनीयो न संशयः ॥ ४ ॥ साधुके गुण अवगुण कछू न देखै भगवत्स्वरूपजानै॥५॥

गांगेयमृत्युगंज्योनहीं त्योंकोल्हकरणनांहिंकालवश। रामचरण चितवतरहतानिशिदिनलौलागी । सर्वभूताशिरनमितसूरभजनानँदभागी। सांख्ययोगमतिसुदृढ़कियाअनुभवहस्तामल। ब्रह्मरंध्र-

करिगोनभयेहरितनकरणीबल।सुमेरदेवसुतजगविदित भुवविस्ता-रचोविमलयश।गांगेयमृत्युगंज्योनहींत्योंकीलहकरणनहिंकालवश ॥ ४१ ॥ टीकासुमेरदेवकी ॥ श्रीसुमेरदेवपितासूवेगुजरातहुते भयेतनपातसोबिमानचढ़िचलेहैं । बैठेमधुपुरीकोमानसिंहराजाढि गदेखेनभतातउठिकहीभलेभलेहैं । पूछैनृपबोलेकासोंकैसेकैप्रका-शोंकहोंकह्योहठपरे सुनअचरजरेलेहैं । मानसपठायेसुधिलायेसांच आंचलागी करोसाष्टांगबातमानीभागफलेहैं ॥ ११९ ॥ ऐसेप्रभुली ननहींकालकेअधीनबातसुनियेनवीनचाहैरामसेवाकीजिये । धरी-हीपिटारेफूलमालहाथडाऱ्यो तहांब्यालकरकाट्यो कह्योकिरिकाढ़ि लीजिये । ऐसेहीकटायोबारतीनिहुलसायोहियो कियोनप्रभावने-कसदारस पीजिये । करिकैसमाजसाधु मध्ययोबिराजमान तजेदशेद्वारयोगीथकेसुनिजीजिये ॥ १२० ॥

चितवनि दशमे ॥ मर्त्यो मृत्युव्यालभीतः पलायल्लोकान्सर्वान्निर्भयंनाध्यगच्छत् ॥ त्वत्पादाब्जंप्राप्ययदृच्छयाद्यस्वस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति ॥ सप्तमे ॥ तस्माद्रजोरोगविपादमन्युर्मानस्पृहाभयदैन्याधिमूलम् ॥ हित्वागृहंसंसृतिचक्रवालंनृसिंहपादंभजताकुतोभयम् ॥ ३ ॥ ज्ञानवैराग्य युक्तेनभक्तियोगेनयोगिनः ॥ क्षेमायपादमूलंमेप्रविशंत्यकुतोभयम् ॥ ३ ॥ दोहा ॥ मारिये मरिजाइये, छूटिपरै संसार ॥ अहम दमरनोकोवदै, दिनमें सौसौबार ॥ ४ ॥ तापैदृष्टांतराजाकेगुलामनेविषकी गोलीखाईसोमरेउनहीं ॥

मूल ॥ श्रीअग्रदासहरिभजनबिन कालवृथानहिंवित्तयो । सदाचारज्योंसंतप्रीतिजैसेकरिआये । सेवासुमिरणसावधानचरणरा-घवचितलाये । प्रसिद्धबागसोंप्रीतिसुहथकृतकरतानिरंतर । रसना निर्मलनाममनोवर्षतधाराधर । श्रीकृष्णदासकृपाकरीभक्तदत्तमनव चक्रमकरिअटलदियो । श्रीअग्रदासहरिभजनबिनकालवृथानहिं वित्तयो ॥ ४२ ॥ टीकाअग्रदासजीकी ॥ दरशनकाजमहाराज-मानसिंहआयोछायोबागमाहिंबैठेद्वारद्वारपालहैं ॥ झारिकैपतौवागये

बाहिरलैडारिबेको देखीभीरभाररहैबैठियेरसालहैं ॥ आयेदेखिना भाजूनेउठिसाष्टांगकरी भरीजलऔरेंचलेअँशुवनिजालहैं । राज मगचाहहारीआनिकै निहारैनैनजानीआपजातीभयेदासनिदया-लहैं ॥ १२१ ॥

काल वृथानहिं वित्तयो ॥ कुण्डलिया ॥ आगिलगंतेझोपरा जो निकसै सोलाभ । जो निकसै सोलाभ देखिमानुष तनचोरी । जेलोषेकी श्वास जात आवत न बहोरी । ज्योंकर अंजलि माहिं घटतजल थिर न रहाई । करि आरत हर भजन साखिकायावधगाई । अगरकहांलगिथे गरीदीजैफाटेआभ । आगिलगंते झोपरा जो निकसैसो लाभ ॥ १ ॥ सो श्रीअग्रदास अष्टपहर भजनहींमें लगे रहैं सोतो काल दोनोंहींको गयो अभजनीहूं को और भजनी हूं को गयो हाथ तौ काहूके न आयो एक ब्राह्मण ने रुपैया साधुनको खवायो एक के गैलमें लूटिलिये ऐसे एक को तो माल ठिकानेगयो एकको वृथाही गयो ऐसे अग्रदासजीको माल-ठिकाने जाय जैसे नाव वहुतभरो तो बूडिही जाइ थोरीभरीहोइ तो पारलगि जाइ ऐसेही व्योहारी थोरो व्योहार करे तो हरिको भजन करि पार उतरि जाइ बहुत करे तो संसार में बूडिजाइ ॥ २ ॥

मूल ॥ कलियुगधर्मपालकप्रगटेआचारजशंकरसुभट । उतशृं षलअज्ञानजितेअनईश्वरवादी । बौधकुतर्कीजैनऔरपाखंडहैंआदी । विमुखनिकोदियो दंडऐंचिसनमारगआनैं । सदाचारकीसीवविश्वकी-रतिहिंवखानैं । ईश्वरअंशअवतारमहिमर्य्यादामाडीअघट । कलियुगधर्मपालकप्रगटआचारजशंकरसुभट ॥४३॥ टीका ॥ शं-कराचार्यकी ॥ विमुखसमूहलैकैंकियेसनमुख श्यामअतिअभिराम-लीलाजगविस्तारीहै । सेवराप्रबलवासेकेवराज्योंफैलिरहेगयेनहीं जाहिवादीशुचिबातधारीहै । तजिकैशरीरकान्ह नृपमेंप्रवेशकियो दियोकरिग्रंथमोहसुन्दरसुभारीहै । शिष्यनिसोंकह्योकभूंदेहमें अ-वेशजानों तबहींवखानोंआनिसुनिकीजैन्यारीहै ॥ १२२ ॥ जानिकै

अवेशतनशिष्यनेप्रवेशाकियो रावलेमैंदेखिसोंइलोकलैउचारयोहै । सुनतहीतज्योतननिजतनआयलियोकियोसोप्रणामदास प्रणपूरोपारयोहै । सेवराहरायेवादीआयेनृपपासऊंचीछातिपरवैठिएकमायाफन्दडारयोहै । जलचढ़िआयोनावभावलैदिखायोकहैं चढ़ोनहींबूढ़ोआपकौतुकसोंधारयोहै ॥ १२३ ॥

कलियुग धर्म ॥ एकादशे ॥ कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ॥ द्वापरे परिचर्य्यायां कलौ तद्धरिकीर्त्तनात् ॥ १ ॥ हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम् ॥ कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥ २ ॥ प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षतिडुकृञ्करणे ॥ भज गोविंदं भज गोविंदं भज गोविंदं मूढमते ॥ ३ ॥ शृंगारः शुचिरुज्ज्वल इत्यमरः ॥ ४ ॥ नलिनीदलगतजलवत्तरलं तद्वज्जीवनमतिशयचपलम् ॥ क्षणमपि सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ ५ ॥ कुण्डलिया ॥ मीयाधरानि कासियै तरकस कहाधरौं । तरकस कहांधरौं प्रथम जीवन निर्णयकरि ॥ पलकमाहिं प्रस्थान जीवपुनि चलि है परिहरि । यावत गहरी नींव सदन नोहरावगीचा । अश्व गजरथ परवान कोऊ ऊंचा अरु नीचा । अगर डरत ते मृत्युतै तिन ते अधिक डरौं । मीया धरानिकासियो तर्क० ॥

आचारजकहीयोंचढ़ावोइनसेवरानिराजानेचढ़ायेगिरिहकउड़िगयेहैं । तवतौप्रसन्ननृपपांइपरयोभावभरयोकह्योजोइकह्योधर्मभागवतलयेहैं । भक्तिहीप्रवारपाछेमायावादडारिदीनोंकीनोंप्रभुकह्योकितैविमुखहूभयेहैं । ऐसेसोगम्भीरसंतधीरवहरीतिजानैंप्रीतिहीमेंसानेहरिरूपगुणनयेहैं ॥ १२४ ॥ मूल ॥ नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्यों त्रेतानरहरिदासकी । बालदशावीठल्यपानजाकेपयपीयो । मृतकगऊजिवाइपरचोअसुरनिकोदीयो । सेजसलिलतेकाढ़िपहलेजैसीहीहोती । देवलउलटोदेखिसकुचिरहेसबहीसोती । पंडुरनाथक्रतिअ-

नुगत्योंछानिसुकरछाईदासकी । नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेतानर-
हरिदासकी ॥ ४२ ॥

कीनों प्रभु कह्यो ॥ पद ॥ द्वापरादौ युगे भूत्वा कलया मानुषादिषु । स्वागमैः कल्पितैस्त्वं हि जनान्मद्विमुखान् कुरु ॥ १ ॥ आससो गंभीर ॥ नमश्चक्रपाणे हरे वासुदेव प्रभो ते भवारे मुरारे मुकुंद ॥ नमस्तुभ्य-मित्यालपंतं मुदा मां कुरु श्रीपते त्वत्पदांभोजभृंगम् ॥ २॥ प्रतिज्ञापद॥ आये मेरे अंधेरे घरके मदनराइ । चाकी चाटैं चूपनखाइ ॥ तुरु गुरु गरूग प्रभुजूकी चालि । पूंछहलै ज्यों जौकी बालि ॥ चूल्हे माहिं जुप्रभुजू की सेज । छीकेकीनो अधिके तेज ॥ कातिक में जु प्रभु जी को भोग । लैलै लकुट खिजावैं लोग॥तीनि पाप प्रभु मेटन योग। नामदेवस्वामि बन्यो संयोग ॥ २ ॥ परजापतिके चितरहीं चढै । मंजारी के पुत्र अवां में उबारें ॥ आंचलगैनतपै तन बासन । राखिलये हरिनै विश्वासन ॥ ३ ॥

टीका नामदेवजूकी ॥ छीपावामदेवहरिदेवजूकोभक्तबड़ोताकी-एकबेटीपतिहीनभईजानिये ।द्वादशबरषमांझभयोतबकहीपितासे-वासावधानमननीकेकरिआनिये । तेरेजेमनोरथहैंपूरणकरनयेईजो-पैदत्तचित्तह्वैके मेरीबातमानिये । करतटहलप्रभुवेगिहीप्रसन्नभये कीनीकामवासनासपोषीउनमानिये ॥ १२५ ॥ बिंधवाकोगर्भताकी बातठौरठौरचलीदुष्टाशिरमौरनिकीभईमनभाइये। चलतचलतबाम देवजूकेकानपरीकरीनिरधारप्रभुआपअपनाइये । भयोजूप्रगटबाल नामनामदेवधर्योकर्योमनभायो सबसंपतिलुटाइये।दिनदिनबढ्यो-कछुऔररंगचढ्योभक्तिभावअंगमढ्योकढ्योरूपसुखदाइये१२६। खेलताखिलौनाप्रीतिरीतिसबसेवाहीकी पटफहरावैंपुनिभोगकोलगा वहीं । घंटालैबजावैंनीकेध्यानमनलावैं त्योंत्योंअतिसुखपावैंनैननीर आवहीं । बारबारकहैनामदेवबामदेवजूसोंदेवोमोहिंसेवामांझ अतिहीसुहावहीं । जाऊंएकगांवफिरिआवोंदिनतीनमध्यदूध-कोपिवावोमतिपीवोमोहिंभावहीं ॥ १२७ ॥

विपत्ति ॥ दोहा ॥ बड़ेबड़ेभोगैंविपाति, छोटेदुखतेदूर ॥ तारेन्यारे-ह्वैरहे, गहतचंदअरुसूर ॥ १ ॥ कामवासना ॥ द्वितीये ॥ अकामः सर्वकामो वा मोक्षकामउदारधीः । तीव्रेणभक्तियोगेन भजेत पुरुषं परम् ॥ २ ॥ प्रीतिरीति ॥ छप्पय ॥ कठिन प्रीतिकी रीति कठिन तन मन वशकरिबो । कठिनहै कर्मनिकंद कठिनभवसागर तरिवो । कठिनसंकटमें दान कठिन संभ्रमकोसमता । कठिनहै परउपकार कठिनमन मारनममता । वचननिबाहन अतिकठिन निर्धन नेहपालनकठिन । मुनिईश्वर सिखवत चतुर नर ज्ञान युद्ध जीतन कठिन ॥ ३ ॥

कौनवहबेरजिहिबेरदिनफेरिहोइ फेरिफेरिकहैवहोवेरनहींआइहै । आई वहबेरलैकराहीमांझहेरिदूधडार्योयुगसेरमननीकैबनाइये । चौंपनिकेढेरलागीनिपटऔसेरदृगआयोनीरवेरिजिनिगिरे घूंटिजाइये । माताकहैटेर करीवड़ीतेअबेरअबकरौमतिझेरअजू चित्तदैऔटाइये ॥ १२८ ॥ चल्यौप्रभुपासलैकटोराछबिराशितामें दूधसोसुवासमध्यमिश्री मिलाइये । हियेमेंहुलासनिजअज्ञताकोत्रासऐसे करैजोपैदासमोहिं महासुखदाइये । देख्योमृदुहासकोटिचांदनीकोभासकियो भावको प्रकाशमतिअतिसरसाइये । प्याइबेकीआशकरि ओटकछुभर्योश्वासदेखिकैनिराशकह्योपीवोजूअघाइये ॥ १२९ ॥

फेरिफेरि ॥ कवित्त ॥ दिनतोनघटत औ घटत प्राण पल पल लाल मुखचंदको बिरोधी पलनाटरै । कबकी निहारिरही रविन तजतठौर बीते युगकोटि तऊनेकहू नहींटरै ॥ तूतोरी कहत श्याम रजनी मिलाय देहौं मिलिबो न मेरेबांट मरिबोहूलैधरै । जानि पति वरनिवानाईहुती विधिने जुफेरि मनआई मेरेरात्रिदिनको करै ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कुँवरिकहै सखिया शशिराजै । राहुराड क्यों गिलिगिलिछाजै ॥ सखिकहै राहुअमृत जब पियो । तेरे कंतखंड विविकियो ॥ उदरनहीं तौनै यहपचै निकसि निकसि बिरही जनतचै ॥ कुंवरिकहै दोउखंडनि माहीं । जरा आनिकिनि लेहु जुराहीं ॥ २ ॥ दोहा ॥ कै अहरनि परधरि मुकर, सुकर

लोहघनलेहु । जबहीं आनिपरै जहां, तबहीं ता शिरदेहु ॥ ३ ॥ कौन दिवस आयो है सजनी ॥ इंदुअनलबरषैहैरजनी ॥ भलोकरै जो यादिनमाहीं । प्राण पियारो आवैनाहीं ॥ ४ ॥

ऐसेदिनबीतदोइराखीहियेबातगोइ रह्योनिशिसोइयेपैनींदन-हींआवही । भयोजूसबारौफेरिबैसेहीसुधारिलियोहियोकियोगाढ़ो जाइधर्‍योपीवोभावही । बारबारपीयोकहुँअबतुमपीवोनाहिं आवै भोरनानागरैछुरीदैदिखावही । गहिलियोकरजिनिकरिऐसीपीवोमैं तोपीवेकोलगेईनेकराखौसदापावही ॥ १२० ॥ आयेबामदेवपाछे पूछैनामदेवजूसों दूधकोप्रसंगअतिरंगभरिभाषिये । मोसोंनापिछा निदिनदोइहानिभईतब मानिडरप्राणतज्योंचाहोअभिलाषिये । पियौसुखदियोजबनेकुराखिलियो मैं तो जियोसुनिबातैंकहीप्याया कौनसाखिये । धर्‍योपैनपीवैअर्‍योप्यायोसुखपायोनाना यामेंलै दिखायोभक्तवशरसचाखिये ॥ १२१ ॥

सदापावही तब तो भगवान् ने हँसिदियो ॥ भागवते ॥ न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये । देवो हि विद्यते भावात्तस्माद्भावो हि कारणम् ॥ १ ॥ प्रतिमामंत्रतीर्थेषु भेषजे वैष्णवे गुरौ । यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥ २ ॥ जिवाइ गाइ ॥ पद ॥ बिनती सुनु जगदीश हमारी ॥ तेरोदास आशमोहिं तेरी इतकरो कान मुरारी । दीनानाथ दीनह्वै टेरत गाइहि क्यों नाहिं ज्यावो । आछे सबै अंगहैं याके मेरे यशाहि बढ़ावो । जो कहुं याके कर्मनमें नहिं जीवन लिख्यो विधाता । तो नामदेवकी आयुर्दा सों होहु तुमहिं प्रभुदाता ॥ ३ ॥ भक्त बछल भगवान्हैं दृष्टांत व्यासको ॥ शिशु शूकै जब व्यासजी लै गये तब मर्‍यो ॥ वेदशास्त्रप्रमाणं तु न करोत्यधमो नरः । अज्ञानी च मम द्रोही नरकं याति नित्यशः ॥ ४ ॥

नृपसोंमलेच्छबोलिकहीमिलसाहिबको दीजियेमिलाइकरामाति दिखराइये । होइकरामातितोपैकाहेकोकसबकरैभरैदिनऐसेबाटि संतनसोंखाइये । ताहीकेप्रतापआपइहांलोबुलाइये हमैंदीजियेजिवा

यगाइघरचलिजाइये । दैलैजिवाइगायसहजसुभावहीमें अतिसुख पाइपाइपरौमनभाइये ॥ १३२ ॥ लेवोदेशगांवयातेमेरोकछूनाम होइ चाहियेन कछूदईसेजमणिमईहै । धरिलईशीशदेउसंगदशवी सनरनाहींकरआयेजलमांझडारिदईहै ॥ भूपसुनिचौंकिपर्‍योलावो फेरिआयेकहौकहींनिकुआनिकैदिखावोकीजैनईहै । जलतेनिका सिबहुभांतिगहिडारीतट लीजियेपिछानिदेखिसुधिबुधिगईहै ॥ ॥ १३३ ॥ आनिपर्‍योपाइँप्रभुपासतेवचाइ लीजै कीजै एकबात कभूसाधुनदुखाइये। लेइयेहीमानि फेरिकीजिये नसुधिमेरी लीजिये गुणानि गाइ मंदिरलों जाइये । देखी द्वारभीर पगदासी कटिबांधी धरि करसों उछीर करिचाहैं पदगाइये।देखिलीनी वेईकाहू दीनीपांच सात चोट कीनी धकाधुकीरिसमनमेंनआइये॥१३४॥ बैठे पिछवारे जाइकीनीजुउचितयहलीजोलगाइचोटमेरेमनभाइये । कानदैकै सुनोअबचाहतनऔर कछूठौरमोकोयहीनितनेमपदगाइये । सुनत हीआनिकरिकरुणाविकलभजे फेर्‍योद्वारइतेगहिमंदिरफिराइये जेतिकबेसोतीमोती आवसीउतरिगई भईहियेप्रीति गह्योसवसुख दाइये ॥ १३५ ॥

साधुन दुखाइये ॥ दोहा ॥ साधु सताये तीन हानि अर्थ धर्म अरु बंश । टीलानीके देखिले, कौरव रावण कंस ॥ १ ॥ सुधि मेरी ॥ अति शीतलता कहकरै, कालूके डैलागि । मथत मथतही ऊपजै, चंदन हूतेआगि ॥ २ ॥ घास बासना हियेबन, ऊपरते जरि जाइ । विषयी बरषाके मिले ऊगै अंकुर पाइ ॥ ३ ॥ पदगाइये ॥ पद ॥ हीनहो जातिमेरी यादवराइ कलिमें नामा इहां काहेको पठाइयो तालप खाव जबाजै पातुरि नाचै हमरी भक्ति बोठल काहेकोराचै ॥ पंडव प्रभुजू बचन सुनीजै । नामदेव स्वामी दरशन दीजै ॥ ४ ॥ मंदिरके पिछवारे बैठिकै यह पदगायो तब प्रभुने विचारो यह भजन मेरे ऊपर कहेउ प्रसन्न हैकै तुरत आइ मिले अब तू कहै सो करौं ॥ ५ ॥ मंदिर फिरायो ॥

पद ॥ उठि भाई नाम देवपरै है जाइ यहां दुबे तिवारी बैठे आइ। ब्राह्मण बनिया उत्तमलोग यहां नहीं नाम देव तुम्हारो संयोग । नामदेव कमरी लई उठाइ। मंदिर पाछे बैठे जाइ। पायँनघुघरू हाथनि ताल। नामदेव गावैगुण गोपाल। मंदिर ऊपर ध्वजा फरहरै ॥ उलटि द्वार-नामातन करै। नामदेव नरहरि दर्शनपाये। बांहपकरि ढिग लैबैठाये। दोऊ हिलिमिलि एकै भये। दासकबीर अचंभैरहे ॥ १ ॥

औचकहीघरमांझसांझही अगिनिलागीबड़ोअनुरागीरहिगई सोऊडारिये। कहैआयोनाथसबकीजियेजूअंगीकार हँसेसुकुवारहरि मोहीकोनिहारिये। तुमरोभवनऔरुसकैकौनआइ यहां भयेयोप्रसन्नछानिछाईआपसारिये। पूंछैंआनिलोगकौनेछाइहोछवाइलीजैदीजे-जोईभावैतनमनप्राणवारिये॥ १३६ ॥ सुनौऔरपरचेजेआयेनक-वित्तमांझबांझभईमाताक्योंनजौनमतिपागीहै। हुतौएकसाहतुला-दानकोउछाहभयो दयोपुरसबैरहौनामदेवरागी है। लेवौजूबुलाइ-एकदोइतौफिराइदियेतीसरेसोंआयेकहाकहौबड़भागीहै। कीजिये-जूकछूअंगीकारमेरोभलोहोइ भयोभलोतेरोदीजैजोपैआशलागीहै ॥ ॥ १३७॥ जाकेतुलसीहैऐसेतुलसीकेपत्रमांझ लिख्योआधोरामना-मयासोंतौलिदीजिये। कहापरिहासकरौढरौहैदयालदेखिहोतकैसो-ख्यालयाकोपूरोकरौरीझिये। लायोएककांटौलैचढ़ायोपातसोनासंग भयोबड़ोरंगसमहोतनाहिंछीजिये। लईसोतराजूजासोंतुलैमनपांच-सातजातिपांतिहूंकोधनधरेउपंनधीजिये॥ १३८ ॥ परचोशोचभा-रीदुखपावैनरनारीनामदेवजूविचारीएककामऔरकीजिये । जितेब्रतदानऔअस्नानाकियेतीरथमें करियेसंकलपयापैजलडारिदी-जिये । करेहुडपाइपातपलाभूमिगाड़ेपाइ रहेवेखिसाइकह्यो-इतनोहीलीजिये । लैकैकहांधरैंसरवरहूनकरैंभक्ति भावसोंलैभरे हियेमातिअतिभीजिये ॥ १३९ ॥

कीजियेजू अंगीकार ॥ श्लोक॥ जले विष्णुस्स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्व-

तमस्तके।ज्वालामालाकुलेविष्णुः सर्वंविष्णुमयंजगत्॥पूछैं आनि लोग बैठे पादियोतजाइमाई। लोग परोसिन पूछैरे नामा किनि यह छानि छवाई। ताते अधिक मँजूरी देहौं बेगिहि देहु बताई । बैठिया प्रीति मँजूरी मांगै जो कोइ छानि छवावै। भाईबंधु संगेसों तोरे बैठिया आपहि आवै। जूठेफल शबरीके खायें ऋषिस्थान बिसरावै । दुर्योधनके मेवात्यागे शाक बिदुर घर खावै। कंचन छानि पद्मपट दीने प्रीतिकी गांठिजुराई। गोविंदके गुण भनै नामदेव जिन यह छानि छवाई ॥ जाके तुलसीहि ॥ दशमे। कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविंदचरणप्रिये ॥ १ ॥ तापैस्कंद पुराणकी कथामेंहै इंद्रलोकते पारिजात लाये नारदजी याते व्रतदानको बड़ो अभिमान हो ताके खोइबे को यतन कियो। जैसे ऊपर को ज्वर गयो भीतर को विषम ज्वर खोयो चाहै व्रतदान धरवायो सो पूरे न भये॥ श्लोक ॥ गोकोटिदानं ग्रहणेषु काशी माघप्रयागे यदि कल्पवासी। यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं गोविंदनाम्ना न भवेच्च तुल्यम् ॥ २ ॥ कवित्त ॥ मेरु सम हेमदान रतन अनेक दान गजदान भूमिदान अन्नदान करहीं। मोतिनके तुलादान मकर प्रयाग दान ग्रहणमें काशीवास चित्तमांहिं धरहीं। सेजदान कन्यादान कुरुक्षेत्रमें गोदान येते मैं पापहूं तौ नेकु नाहिं हरहीं । कृष्णके शरीरको नाम इकबार लियो भुव पापी तीन लोक केशव क्षण माहिं तरहीं ॥ ३ ॥ गऊ दान कैसो है जैसे च्यवन ऋषीश्वरको ॥ ४ ॥

कियोरूपब्राह्मणकोदूबरोनिपटअंगभरचोहियेरंगव्रतपरचैकोलीजिये । भईएकादशीअन्नमांगतबहुतभूखोआजतौनदेहौंभोरचाहैजितौलीजिये । करचोहठभारीमिलिदोऊताकोशोरपरचोसमझावैनामदेवयाकोकहाखीजिये। बीतेयामचारिमरिरहेयोंपसारिपाइंभावपैनजानैदई हत्यानहींछीजिये ॥ १४० ॥ रचिकैचिताकोविप्रगोदलैकैबैठेजाइदियोमुसुकायमैंपरीक्षालीनीतेरीहै । देखीसोसचाईसुखदाईमनभाईमेरेभयेअंतर्द्धानपरेपांइप्रीतिहेरीहै। जागरणमांझहरिभक्त

नकोप्यासलागीगयेलेनजल प्रेतआनिकीनीफेरीहै । फेंटतेनिकासि तालगायोपदततकालबड़ेईकृपालुरूपधरचोछबिहेरीहै ॥ १४१ ॥

गायोपद तत्काल ॥ पद ॥ ये आये मेरे लंबकनाथ। धरणी पाइ स्वर्गलों माथो योजन भरि भरि हाथ। शिव सनकादिक पारन पावैं तैसेइ सखा विराजत साथ। नाम देवके स्वामी अन्तर्य्यामी कीनों मोहिं सनाथ ॥ १ ॥ नवरस ॥ छप्पय ॥ श्रीवृषभानुकुंवरि हेत शृंगाररूप भय। हास्य वास्यरस हरे मात बंधनकरुणामय। केशीप्रति अति रुद्रबीर मारचो वत्सासुर। भय दावानल पान कियो बीभत्स वकीउर। अति अद्भुतवच विरंचमति शांत सुसंतति शोच चित। कहिकेशव सुमिरौं मैं सदा नवरस में व्रजराज नित ॥ २ ॥ कवित्त ॥ बीरही को कामयाते समर मनाइबेको करुणा दिखाइ दूती बिरह सुनाई है ॥ उलटि बिहा-रसो अदभुतको लखि सीखी सबर घृनिते हास्यरीतिपाई है। गुरुजनकी अहट भयानक विभत्स अंतसंतहू मनाइबो न आइबो रुदाई है।औरनिके सदन माहिं रसराज जान कैसे राजाके सदन माहिं सबकी समाई है ॥ ॥ ३ ॥ जयदेव कविबड़ो भक्तराज है ॥ ४ । ५ । ६ ॥

मूल ॥ जयदेवकविनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकवि । प्रचुर भयोतिहुंलोकगीतगोविंदउजागर । कोककाव्यनवरससरसशृंगार कोआगर। अष्टपदीअभ्यासकरैतिहिबुद्धिबढ़ावै । राधारमणप्रसन्न सुनतहांनिश्चैआवै । संतसरोरुहखंडकोपदमावतिसुखजनकनरवि । जयदेवकविनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकवि ॥ ४४ ॥ टीकाजय-देवकी ॥ किंदुबिलुग्रामतामें भयेकविराजराजभरचो रसराजहिये-मनमनचाखिये । दिनादिनप्रतिरुखरूखतरजाइरहेगहेएकगूदरी कमंडलकोराखिये । कहींदेवैविप्रसुताजगन्नाथदेवजूको भयोयाको समयचल्यो देनप्रभुभाखिये । रसिकजयदेवनाममेरोई स्वरूपता-हिदेवौ ततकालअहोमेरीकहीसाखिये ॥ १४२ ॥

सुखजन ॥ दोहा ॥ जलजमीन जलरविनदिन, खुलैं निवारण धाम॥

निशिको अमृत पीवयह, जानिमुदे अभिराम ॥ १ ॥ रूखरूख तर ॥ भागवते ॥ सत्यांक्षितौकिंकशिपोः प्रयासैर्बाहौस्वसिद्धेह्युपवर्हणैःकिम् ॥ सत्यंजलौकिंपुरुधान्नपात्र्यादिग्वल्कलादौसतिकिन्दुकूलैः ॥ २ ॥ चीराणिकिंपथिनसंति दिशंतिभिक्षांनैवांघ्रिपाः परभृतः परितोप्यशुष्यन् । रुद्धा गुहाःकिमजितोवनतोपपन्नान्कस्माद्भजंतिकवयो धनदुर्मदांधान् ॥ ३ ॥ सवैया ॥ सीतजोशीत सतावै शरीरतो चीरिलैपंथके कंथाबनाइये । प्यास लगे वह तो जल पीजिये भूखलगे फल रूखके खाइये । छांहचहै तो गुहा गिरिको गहि कानसों आनन रक्षकपाइये । क्योंधनअंधपै जाइ सुहाइ कितेहित आपनपेको दिखाइये ॥ ४ ॥ जे कोई भक्तजनहै ताको यही शिक्षाकहै उपेक्षाहै जैसे जयदेव कविको सांच प्रभू को आयो हाथ पांव कटाये पै मनमें विषाद न आयो अपने शरीरही को दोषलगावै ॥ ऐसो सांच विश्वास आवै अरु युगयुगके प्रणाम प्रतापी कहावै जयदेव कवि बड़ेभक्तहैं ॥ ५ ॥

चल्योद्विजतहांजहांबैठेकविराजराज अहोमहाराजमेरीसुतायह लीजिये। कीजियेविचारअधिकारविस्तारजाकेताहीकोनिहारिसुकुमारियहदीजिये । जगन्नाथदेवजूकीआज्ञाप्रतिपालकरौटरौमतिधरौ हियेनातोदोषभीजिये । उनकोहजारसोहैंहमको पहारएकताततफिरि जावोतुम्हैंकहाकहिखीजिये ॥ १४३ ॥ सुतासोंकहततुमबैठीरहौ याहीठौरआज्ञाशिरमौरमेरेनहींजातटारिये । चल्योअनखाइसमझाइहारेबातानिसोंमनतूसमुझिकहाकीजैशोचभारिये । बोलेद्विजबालकीसोंआपनोबिचारकरौ धरौहियेध्यानमोपैजातनसँभारिये । बोली करजोरिमेरोजोरनचलतकछूचाहोसोईहोहुयहवारिफेरिडारिये ॥ ॥ १४४ ॥ जानीजबभईतियाकियोप्रभुजोरमोपैतौपैएकझोपड़ीकी छायाकरिलीजिये । भईतबछायाश्यामसेवापधराइलई नईएकपोथी मैंबनाऊंमनकीजिये । भयोजूप्रगटगीतसरसगोविंदजूको मनमें

प्रसंगशीशमंडनकोदीजिये । यहीएकपदमुखनिकसतशोचपरचो धरचोकैसेजातलाललिख्योमतिरीझिये ॥ १४५ ॥

मनतूसमुझ कुण्डलिया ॥ बाप न मारी पोदनी बेटा तीरंदाज । बेटा तीरंदाज विषेत्यागी न तनक मन । कहा इन्द्रियनि सधे दुखनि में रधै वृथातन ॥ नफा आपनेकुसब और तौ मूल गवावै । यों मनके अनुसार चलै तनहूं सुख पावै ॥ यह विचारि चित चेतिये नातरुहोइ अकाज । बाप न मारी पोदनी बेटातीरंदाज ॥ १ ॥ छायाकरिलीजियै ॥ श्लोक ॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके शिरःशूलकरौ परौ । गृहस्थश्च निरारंभो यतिनश्च परिग्रहः ॥ २ ॥ शशिमंडलस्मरगरलखंडनं मम शिरसि मंडनं देहि पदपल्लवमुदारम्॥ ३ ॥ लिख्योमतिरीझिये जयतिपद्मावतीरमण जयदेवकविभारतीभणितमति शांतंकंयोप्रबंधः ॥ ४ ॥

नीलाचलधामतामेंपंडितनृपतिएक करीवहीनामधरिपोथीसुखदाइये । द्विजनिबुलाइकहीवहीहैप्रसिद्धकरौलिखिलिखिपठौदेशदेशनिचलाइये । बोलेमुसकाइविप्रक्षिप्रसोंदिखाइदई नईयहकोईमतिअतिभरमाइये । धरीदोउमंदिरमेंजगन्नाथदेवजूके दीनीयहडारिवहहारलपटाइये ॥ १४६ ॥ परचोशोचभारीनृपानिपटाखिसानोभयोगयोउठिसागरमेंबूड़ोंयहबातहै । अतिअपमानकियोकियोमैंवखानसोई गोइजातिकैसेआंचलागीगातगातहै । आज्ञाप्रभुदईमतिबूड़ैतूसमुद्रमांझ दूसरोनग्रंथवैसोवृथातनपातहै । द्वादशश्लोकलिखिदीजैसर्गद्वादशमें ताहीसंगचलैजाकीख्यातपातपातहै ॥ १४७ ॥ सुताएकमालीकीजुबैंगनकीवारीमांझ तोरैवनमालीगावैकथासर्गपांचकी । डोलैजगन्नाथपाछेकाछेअंगमिहीझंगा आछैं कहिवूमैंसुधिआवैविरहआंचकी । फस्योपटदेखिनृपपूछीअहोभयोकहाजानतनहमअबकहौंबातसांचकी । प्रभुहीजनाईमनभाईमेरे वहीगाथालायेवहबालकीकोपालकीमेंनाचकी ॥ १४८ ॥

बोलै मुसिकाई ॥ दोहा ॥ अकथ कहानी प्रेमकी, कहीन याने कोइ ।

कोइकाजाने खलकमें, जाशिर बीती होइ ॥ १ ॥ जैसे लैलैने मजनूको बुलायो अग्नि में तापै पोस्तीको दृष्टांत अरु पतंग माखी को ॥ २ ॥ बिरह आंचकी ॥ श्लोक ॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली । गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली । पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य सरागम् । गोपवधूरनुगायति काचिदुदंचितपंचमरागम् । कापि विलासिविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजम् ॥ ३ ॥

फेरोनृपडोंड़ीयहओड़ीबातजानीमहा कहाराजारंकपढ़ैनीकेठौरजानिकै । अक्षरमधुरऔरमधुरसुरनिहींसोंगावैजवलालप्यारीढिगहीलैमानिकै । सुनोयहरीतिएकमुगलनेधारिलई पढ़ैचढ़ेघोरे आगेश्यामरूपठानिकै । पोथीकोप्रतापस्वर्गगावतहैंदेववधू आपुहीजोरीझेलिख्योनिजकरआनिकै ॥ १४९ ॥ पोथीकीतौवातसबकहींमैंसुहातहियेसुनोऔरबातजामेंअतिअधिकाइये । गांठमेंसुहरसगचलतमेंठगमिले कहौकहांजातजहांतुमचलिजाइये । जानिलईआपखोलि द्रव्यपकराइदियोलियोचाहोजोईसोईसोईमोकोलाइये । दुष्टनिसमझिकहीकीनीइनविद्याअहो आवैजोनगरइन्हैवेगिपकराइये ॥ १५० ॥

श्यामरूपठानिकै ॥ मीर माधव लाहौरके मुगल फकीर भये सो ॥ पद ॥ दिल जानप्यारे श्याम टुकगली असाड़ी आवरे। सांवरे वदन ऊपर कोटि मदनवारे॥तेरी जुलफैं दिलदी कुलफैं दोऊ नैन हैं सितारे ॥ तेरी खूबीके देखनेको नैन तरसैं हमारे। जल जो कठोर होवै मीन क्यों जीवै विचारे। कृपा कीजै दर्शन दीजै मीरमाधव को नंदके दुलारे ॥ १ पोथी को प्रताप ॥ राजा वीर बिक्रमाजीत की सभामें देवता आये तब राजाने सभा में गीतगोविंद गवायो देवताओंने कही याको तो हमारे सदा गावैहैं याको फल सुखकी उत्पत्ति करैहैं ॥ २ ॥ द्रव्यपकरायो ॥ श्लोक ॥ लोभमूलानि पापानि रसमूलानि व्याधयः ॥ स्नेहमूलानि दुःखानि तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ ३ ॥ समझिकही दुष्ट

तीनि प्रकारके हैं । उत्तम मध्यम कनिष्ठ सज्जन तीनि प्रकारकेहैं । आगे गुणिन वेद निगुणाविंदकारि बतायेहैं ॥ ४ ॥

एककहैडारोमारिभलोहैबिचारयही एककहैमारोमतिधनहाथ आयोहै । जोपैलेपिछानिकहूंकीजियेनिदानकहाहाथपांवकाटिबड़े गाढ़पधरायोहै । आयोतहांराजाएकदेखिकैविवेकभयो छपोउजियारोऔप्रसन्नदरशायोहै । बाहिरनिकासिमानौचंद्रमाप्रकाशराशि पूछोइतिहासकह्योऐसोतनपायोहै ॥ १५१ ॥ बड़ोईप्रभावमानिसकैकोबखानिअहो मेरेकोऊभूरिभागदरशनकीजिये । पालकी विठायलियेकियेसबढूंढ़िनीकेजीकेभायेभयेकछुआज्ञामोहिंदीजिये- करौहरिसाधुसेवानानापकवानमेवा आवैजोईसंततिन्हैंदेखिदेखिभीजिये । आयेवेईठगमालातिलकबिलकिकियेकिलकिकैकहीबड़ेबंधुलखिलीजिये ॥ १५२ ॥ नृपतिबुलाइकही हियेहरिभायभरठरेतेरेभागअबसेवाफललीजिये । गयोलैमहलमांझटहललगायेलोग लागेहोनभोगजियशंकातनछीजिये । मांगैबारबारबिदाराजानाहिंजानदेत अतिअकुलायकहीस्वामीधनदीजिये । दैकैबहुभांतिसोंपठायेसंगमानसहू आवोपहुँचाइतबतुमपररीझिये ॥ १५३ ॥

हाथ पाँवकाटे ॥ भगवान् में भलो सनेह कियो तहां टीकाकार ने लिख्योहै जयदेव मेरोही रूप है सो हाथ पांव कटाइ के आपसों कियो ॥ फेरि ख्यात करिबेको आछे करिदिये कहैं नाम कौनको लीजै कोऊ काल कोऊ ईश्वर कोऊ गृह ये न जान्यो साक्षात् धर्महीहैं ऐसे परीक्षित सोंकहीही हिये हरिभाव भारेही वृहरणे धातु है ॥ हरिणी जो चोरी ताके अर्थ विषयबर्त्त हैं । ताते समझौती में समझाये हैं ॥ श्रीदामोदर नारायण वृंदावन वासुदेव मधुसूदन मुरारी ॥ १ ॥

पूंछैनृपनरकोऊतुम्हरीनसरवरिहैजितेआयेसाधुऐसीसेवानहिंभईहै । स्वामीजूसोंनातोकहाकहोहमखाहिंहाहाराखियेदुरायय़हबात अतिनईहै । हुतेइकठौरेनृपचाकरीमेंतहांइनकियोइबिगारुमारिडा-

रौआज्ञादई है । राखेहमहितजानिलेनिदानहाथपाँववाहीकेईशानह-मअबभरिलईहै ॥ १५४ ॥ फाटिगईभूमिसवठगवेसमाइगये भयेयेचकितदौरस्वामिजूपैआयेहैं । कहीजितीबातसुनिगातगातकां पिउठेहाथपांवमोडेभयेज्योंकेत्योंसुहाये हैं । अचरजदोऊनृपपास जाप्रकाशकिये जियेएकमुनिआयेवाही ठौरधायेहैं । पूँछैवारवारशी शपाँयनमेंधारि रहे काहिपै उचारि कैसे मेरेमनभाये हैं ॥ १५५ ॥

भरिलई ॥ दोहा ॥ सिंह खाल गाडर पहिरि, भेप सिंहको धारि । बोलनि बोली भेड़की, कूजनिडारी फारि ॥ १ ॥ फाटिगई भूमि तौ दंड क्यों न दियो भेषजानि दण्ड न दियो भेपमें वट्टो न लगै जैसे अपरस गुरु सपरस चेला ॥ कोऊ ने बस्तर उठाइके मारे अपरस वनोरहे राजा के प्यादे ने जान्यों प्रह्लाद या बालि होहिंगे सो इच्छाचारी सिद्ध होइँगे वै कुंठ लोक ते आये पाताल लोकको गये जैसे दण्डहू दियो उत्कर्प न रा-ख्यो ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ घटि वाढ़ि बातें भेपकी, कीजै नाहिं वनाइ । गुरुको वानो परशुराम, लीजै कंठ लगाइ ॥ साधन को घर दूरि है, समझो चित्त लगाइ ॥ ४ ॥ प्रगट अवगुण दीसैं तौ जैसे नारद सनकादिकन में भलोइ करै चेला सो कही कोऊ कैसोई बुरो कहै ये तू मति कहै ऐसे वृक्ष समयमें फल होइ ऐसे हाथ पांउ पुण्य पापको फल सम प्राप्तिहोय ॥

राजाअतिअरगहीकहीसववातखोलि निपटअमोलयहसंतनको भेसहै । कैसोअपकार करौतऊउपकारकरैंढरैंरीतिआपनीहिसिरस-सुदेशहै । साधुतानतजैकभूजैसेदुष्टदुष्टतान यहीजानिलीजैमिलैं रसिकनरेशहै । जान्योजवनामठामरहौइहांवालिजांव भयोमैंसनाथ प्रेमभक्तिभई देश है ॥ १५६ ॥ गयोजालिवाइल्याइकविराजराज तियाकियालैमिलायआपरानीढिगआईहै । मन्योएकभाईवाको भईयांभौजाईसती कोऊअंगकाढ़िकोऊकूदिपरीधाईहै । सुनतहीनृप बधूनिपटअचंभवभयो इनकोनभयोफिरिकहिसमुझाई है । प्रीतिकी नरीतियहवडीविपरीतिअहो छूटैतनजवैप्रियाप्राणछुटिजाईहै॥१५७

प्रीतिकी न रीति ॥ सोरठा ॥ मुख देखे की प्रीति, सब कोऊ ऐसी-करै ॥ वेतोन्यारे रीति जिये जियें मूये मुरै ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ सती कहैं येरी मेरी मतिहौ सुमति कहौं प्रेम हैं लजावै माति यहै पीव जोइये । साखिदै अगिनि जार हथलेवा हाथ जोरे जाके साथ दीजै ताके साथ जीव खोइये ॥ कौन आगि को न आंचबरै ताहि लिये बरै ताको कहा बरै काहु कहे काज रोइये । जाके संग घनेदिन सेज माहिं सोय खोये ताके संग एकदिना आगिहूं में सोइये ॥ कवित्त ॥ अंगराग अंगकरि मोती माल ग्रीव धरि बैठी बाल सोहै अति चांदनी विमल में। आगी अँग पहरै सुराग रंग गहरै औ बारम्बार बलकै यों यौवनके बलमें। त्योंहीं काहू आली नंदनंदन आगम कह्यो सामुही निहारी मानों वारी है अनल में। मोतिन के हार की न छार रहो उरपर अंगराग उड़ि गयो अबीर ह्वैके पलमें ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ सफल फलै मनकामना, तुलसी प्रेम प्रतीति ॥ तिरिया अपने कारणे, लिखि पूजति हैं भीति ॥ ३ ॥ साधुता न तजै॥ जैसे शिष्यपै वेगार गुरु कही गारी दै ऐसे ॥ ४ ॥

ऐसीएकआपकहिराजासोंयहीं लैकेजावोवागस्वामीनिकुदेखौंप्रीति को। निपटविचारीवुरीदेतमेरे गरेछुरी तियाहठमानकरीऐसेही प्रतीतिको। आनिकेहैंआपपायेकहीयाहीभांतिआइ बैठीढिगतियादेखिलोढिगईरीतिको । बोलीभक्तवधूअजूवेतौहौं वहुतनीके तुमकहाऔंचकहीपावतहौंभीतिको ॥ १५८ ॥ भईलाजभारी पुनिफेरिकैसँभारीदिनवीतिगयेकोऊतवतववहीकीनी है । जानिगईभक्तवधूचाहतपरीक्षालियोकहीअजूपायेसुनितजीदेहभीनीहै । भयोमुखश्वेतरानी राजाआयेजानीयह रचीचिताजरौंमतिभईमेरीहीनीहै । भईसाधिआपुकोजुआये वेगिदौरिइहांदेखीमृत्युप्रायनृपकहीमरीदीनीहै ॥ १५९ ॥ बोल्योनृपअजूमोहितरैईबनतअव सवउपदेशलैकैधूरिमेंमिलायोहै । कह्योवहुभांतिएवेआवतनशांतिकिहूं गाईअष्टपदीसुरदियोतनज्यायो है। लाजनकोमा-

रच्योराजाचाहैअपघातकियो जियोनहींजातभक्तिलेशहूनआयोहै । करिसमाधाननिजग्रामआये किंदुविल्व जैसोकछूसुन्यो यहपरचौलैगायो है ॥ १६० ॥

राजाको जयदेवजी के संगको रंग क्यों न लग्यो ॥ १ ॥ हरिविलासकाव्ये ॥ भवज्वरनिवृत्तये पतितपावन त्वत्पदं । प्रबलमिद मौषधं हृदि सकृत् सुधीर्द्धारयेत् ॥ २ ॥ अपथ्यमिहवर्जयेद्विषयवासनासंज्ञकं वसेतविजनेवने फलदलांबु सेवेदलम्॥ ३ ॥ गीतगोविन्दे ॥ वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय स्फुटति कुसुमनिकरे ॥ विरहिहृदय दलनाय तव विरहे वनमाली सखि सीदति ॥ ४ ॥ करि समाधान ॥ ॥ दोहा ॥ गई मित्रकी मित्रता, रहेउ कथा को भाव । तोहिं न बेदा भूलही, मोहिं पूछको घाव ॥ ५ ॥

देवधुनीसोतहोअठारहकोसआश्रमते सदास्नानकरैंधरैंयोगताईको । भयोतनवृद्धतऊछांड़ैनहींनित्यनेमप्रेमदेखिभारीनिशिकहीसुखदाईको । आवौजनिध्यानकरौकरौजनिहठऐसो मानीनहीं-आऊँमैंहींजानौंकैसेआईको, फूलेदेखौंकंजजबजानियोप्रतीतिमेरी-भईवाहीभांतिसेवैअबलौंसुहाईको ॥ १६१ ॥ मूल ॥ श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयाकियो । तीनिकांडएकत्वसानिकेउअज्ञवखानत । करमठज्ञानीऐंचिअर्थकोअनरथवानत । परमहंससंहिताविदितटीकाविस्तारच्यो । पटशास्त्रअविरुद्धवेदसंमतहिविचारच्यो । परमानंदप्रसादतेमाधौसुकरसुधारिदियो । श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो ॥ ४६ ॥

छांड़ैनहीं नित्यनेम ॥ दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधमनर, पाहन सिकतापानि । योंति अनुक्रम जानिये, वैर व्यतिक्रम मानि ॥ १ ॥ साचौ पनकै गंगाजी आपही पधारीं झूंठे पनवारेनको मूठी चनाहू न मिलै जैसे छप्पन भोगीको दृष्टांत घोडाके मलीदाको अरु देखन हारेको ॥ २ ॥ साईं शक्कर खोरको, शक्करहू पहुंचावै । वेविश्वासीजीव एकापर

ज्यों घिघावे ॥ ३ ॥ श्रीधरगीतायाम् ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः ॥ ४ ॥ षटशास्त्रछप्पय ॥ कर्ममिमांसाकहै देहवशकरैसुपावै । कालाधीन वैशेषन्याइ करतार बतावै ॥ नित्यानित्य विचार सांख्यमत ऐसो भावै । पातंजलि हठज्योति योग अष्टांग दिखावै । सबमें व्यापक ब्रह्म है वेदांत शास्त्र ऐसी कहै । षटशास्त्र सकल विरुद्ध ये हरि ज्ञानी दृष्टा ह्वैरहै ॥ ५ ॥ परम धर्म ॥ प्रथमे ॥ सर्वैपुंसां परोधर्मोयतोभक्तिरधोक्षजे । अहैतुक्यप्रतिहता ययात्मासंप्रसीदति ॥ ६ ॥

टीकाश्रीधरस्वामीजीकी ॥ पंडितसमाजबड़ेबड़ेभक्तराजजिते भागवतटीकाकरिआपसमेंरीझिये । भयोजूविचारकाशीपुरीअविनाशीमांझसभाअनुसारजोवसोईलिखिदीजिये । ताकोतौप्रमाणभगवानविंदुमाधव जूहैशोधोयहीबातधरिमंदिरमेंलीजिये । धरेसबजाइप्रभुसुकरवनाइदियोकियोसवौंपरिलैचल्योमतिधीजिये ॥१६१॥

मूल ॥ कृष्णाकृपाकोपरप्रगटविल्वमंगलमंगलस्वरूपकरुणामृत सुकवित्तउक्तिअनुचिष्टउचारी । रसिकजनानिजीवानिहृदय जैहारावलिधारी । हरिपकरायोहाथवहुरितहाँलियोछुटाई । कहाभयोकरछुटैं वदौंतौहियेतेजाई। चिंतामणिसँगपाइकै ब्रजवधूकेलिबरणी अनूप । कृष्णकृपाकोपरप्रगटविल्वमंगलमंगलस्वरूप ॥ ४६ ॥

कांडकरंडे कपूर कपास धरी दोऊ ॥ श्लोक ॥ वागीशा यस्यवदने लक्ष्मीर्यस्यतु वक्षसि । यस्यास्ते हृदये संवित् तं नृसिंहमहं भजे ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्रीधर स्वामी तोमनो, श्रीधर प्रगटे आन ॥ तिलक भागवत को कियो, सब तिलकन परमान ॥ २ ॥ अवनाशी ॥ सोरठा ॥ मुक्ति जन्म महिजानि, ज्ञान खानि अघहानिकर । जहँ बस शम्भु भवानि सोकाशी सेइय कसन ॥ ३ ॥ कहाभयो ॥ श्लोक ॥ हस्तमुत्सृज्यातो सि वलात्कृष्णकि मद्भुतं ॥ हृदयाद्य दिनि र्यासि पौरुषं गणयामिते ४

चिंतामणि पाइकै ॥ दोहा ॥ पण्डित पूजा पाकदिल, ये दिमाक मतिलाव ॥ लगै जरब अँखियानकी, सबै गरब उडिजाव ॥ ५ ॥ मांझ बोलनि हँसनि चलनि वानैतनि ले महबूब जुभाया । धीरज धरम सरम समझ कादरबर गाले भगाया ॥ भर भर बासा कियो अकेला इस्के लिये ठहराया । वल्लभ रसिक इन इश्क दुजागी योगी मन पकराया ॥ ६ ॥ दोहा ॥ ताने तान तरंगकी, बेधन तनगन प्रान । कला कुसुमशर शरन की, अतिअयान तनत्रान ॥ ७ ॥

टीकाविल्वमंगलकी ॥ कृष्णवेनातीरएकद्विजमतिधीररहै ह्वैग-योअधीरसंगचिंतामणिपाइकै । तजीलोकलाजहियेवाहीकोजुराज भयो निशिदिनकाजवहैरहैवरजाइकै । पिताकोसराधनेकुरह्योमन साधिदिनसेसमैअवेशचल्योअतिअकुलाइकै । नदीचढ़िरहीभारीपै-यैनअवारी नाव भाव भरचोहियोजियोजातनंविजाइकै ॥ १६२॥ करतविचारवारिधारमैंनरहैंप्राणतातेभलीधारमित्रसन्मुखको जाइ-ये । परैकूदिनीरकछूसुधिनाशरीरकीहै वहीएकपीरकबदरशनपाइ-ये । पावतनपारतनहारिभयोबूड़िवेको मृतकनिहारिमानीनाव-मनभाइये । लगेइकिनारेजायचल्योपगधाइचाइआयेपटलागेआ-धीनिशिसोविहाइये ॥ १६३ ॥ अजगरघूमिझूमिभूमिकोपरसाकि-यो लियोईसहाइचढ़ोछातपरजाइकै । ऊपरकेवारलगेपरचोकूदि-आंगनमें गिरचोयोंगरतरागीजागीशोरपाइकै । दीपकबरायजोपैदे-खैं विल्वमंगलहै बड़ोईअमंगलतूकियोकहाआइकै । जलअन्हवा-यसूखे पटपहरायहाइकैसेकरिआयो जलपारद्वारधाइकै॥ १६४॥

हिये वाहीको जुराज्य भयो ॥ कवित्त ॥ मरकतके सूत किधौं पन्नग के पूत किधौं राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं । मखतूल गुण-ग्राम शोभित सरस श्याम काम मृग कानन कुहूके ये कुवार हैं ॥ कोप की किरणि जल नीलके जराके तंत उपमा अनंत चारु चमर शृंगार हैं । कारे सटकारे भीने सोंधेते सुगंधवास ऐसे बलभद्र नव वाला तेरेवार हैं १

झूलना ॥ गुलौं बिचौं गुलचन्यो सेषु ल्यानहीं पर खुलसी। जलौं गुलकलंमतआसी बाहुहुसन तेरी घुलसी। दाने देखि दिवाने थासी अकलतिनादा भुलसी। अबजी पाकनजरिकै देखन वारे छत्रतिना शिरहुरसी ॥ २ ॥ दोहा ॥ तनक न रहै बिरक्तता, लगैं दृगनकी थाप। कहुं गीता माला कहूं, कहुं बटुवा कहुं आप ॥ ३ ॥

नौकापठाइद्वारनावलटकाईदेखि मेरेमनभाइमैंतौतबैलईजानि-कै। चलौंदेखैंअहोयहकहाधौंप्रलापकरै देख्योविषधरमहाखीजी अपमानिकै। जैसोमनमेरेहाड़चामसोंलगायोतैसोश्यामसों लगावै तोपैजानियेसयानकै। मैंतोभयेभोरभजौयुगलकिशोरअब। तेरी-तुहीजानै चाहोकरौमनमानिकै ॥ १६५ ॥ खुलिगईआंखें अभि-लाखैं रूपमाधुरीको चाखैं रसरंगऔउमंगअंगन्यारिये। बणिलैब जाईगाईविपिननिकुंजक्रीड़ा भयोसुखपुंजजापैकोटिविषैवारिये। बीतिगईरातिप्रातचलेआपआपकोजु हियेवहींजायदृगनीरभरिडा-रिये। सोमगिरिनामअभिरामगुरुकियोआनिसकैकोवखानिलाल-भुवनानिहारिये ॥ १६६ ॥

प्रलापोऽनर्थकंवचःइत्यमरः ॥ १ ॥ हाड़ चामसों ॥ कवित्त ॥ देह तौ मलीन मन बहुत बिकार भरे ताहू मांझ जरा वात पित्त कफ खांसीहै। कबहुंक पेटपीर कबहुँक शिरबाहु कबहुंक आंखि कान मुख में बिथासी है ॥ औरहू अनेक रोग मल मूत्र भरे सदा हरि तजि औरै भजै साधुकरै हांसीहै। ऐसो जो शरीर ताहि अपनो करि मानिरहै सुंदर कहत यामें कौन सुखराशीहै ॥ १ ॥ मांसकी गरैथीं कुच कंचन कलश कहै मुख कहै चंद्रजो शलेषमा को घरु है। दोऊ भुज कमल मृणालनाभ कूप कहै हाडहीके खंभा तासों कहैं रंभातरु है। हाडहीके दशन आहि हीरा मोती कहैं तासों चामको अधर तासों कहै बिम्वाफरु है। ऐसी झूठी युगति बनावैं वे कहावैं कबि तापर कहत हमैं शारदा को बरुहै ॥ २ ॥ ओस कोसो मोती और पानीको बबूला जिमि सांचोकरि मान्यो सोई

बूड्यो मंझधारहै । एकस्त्री को पुत्रगुरु पायसो साधुपै छुटायो ऐसे चिन्तामणिकही भोर मैंतौ जाहुँगी तेरी तूजानैं ॥

रहेसोवरसरससागरमगनभये नयेनयेचोजकेश्लोकपढ़िजीजिये। चलेवृन्दावनमनकहैकबदेखौंजाइआयेमगमांझएकठौरमतिभीजिये। परचोवड़ोशोरहगकोरकैनचाहैकाहूतहांसरतियान्हातदेखिआंखेंरो झिये । लगेवाकेपाछेकाछकाछेकोनसुधिकछू गईवरआछेरहेद्वार-तनछीजिये ॥ १६७ ॥ आयोवाकोपतिद्वारदेखेभागवतठाढ़ेबड़ो-भागवतआतिपूछीसोजनाइये । कहीजूपधारोपाँवधारोगृहपावनको-पाँवनिपखारेंजलधारोंशीशभाइये ॥ चले भौनमांझमनआरतामि-टाइवेको गाइवेकोजोईरीतिसोईकोवताइये । नारिसोंकह्योहोतूशृं-गारकरिसेवाकीजैलीजैयोंसुहागजामेंवेगिप्रभुपाइये ॥ १६८ ॥ च-लीहैशृंगारकरिथारमेंप्रसादलैकेऊंचीचित्रसारीजहांवैठेअनुरागीहैं । झनकमनकजाइजोरिकरठाढ़ीरही गहीमतिदेखिदेखिनूनवृत्यभा-गीहैं । कहीयुगसुईलावोलाइदईगहीहाथफोरिडारीआँखेंअहोवड़ी-येअभागीहैं । गईपतिपासश्वासभरतनवोलिआवैवोलीदुखपाइआये पांयपरेरागीहैं ॥ १६९ ॥

लागेवाकेपाछे ॥ भागवते ॥ पाठकापाठकाश्चैवयेचान्ये शास्त्रचिंतकाः ॥ सर्वेव्यसनिनोमूढा यः क्रियावान्सपंडितः ॥ १ ॥ कुंडलिया ॥ कूकर चौक चढाइये, चाकी चाटन जाइ । चाकी चाटन जाइ आदिअभ्यास न छाडै । बरजत वेद पुराण विपय पकरत हठि हाड़ै ॥ बच्छ पयोधर पान कहौ तेहि कौन सिखावै । अनभोजनम अनेक अवियाहीको धावै ॥ अग्रदासको बशकहा परे कूपतनधाइ । कूकर चौक चढाइये चाकी चाट-नजाइ ॥ २ ॥ शंकराचार्यजीकृत नूतन वृत्तभागी हैं ॥ नारीस्तनभरजघननिवेशं दृष्ट्वा माया मोहावेशम् ॥ एतन्मांसविपादविकारं मनसि विचारय वारंवारम् । भजगोविंदं भजगोविंदं गोविंदं भज मूढमते ॥

कियोअपराधहमसाधुकोदुखायोअहो वड़ेतुमसाधुहम साधुना-

मधरचोहै । रहौअजूसेवाकरैंकरीतुमसेवाऐसी तैसीनहींकाहूमांझ-
मेरोउरहरचोहै । चलेसुखपाइहगभूतसेछुटाइदिये हियेहीकीआँ-
खिनसोंअबैकामपरचोहै । बैठेबनमध्यजाइ भूखेजानिआपआये
भोजनकराइचलो छायादिनढरचोहै ॥ १७० ॥ चलेलैगहाइकर-
छायावनतरुतरचाहतछुटायोहाथछोड़ेकैसेनीकोहै । ज्योंज्योंबल-
करै त्योंत्योंतजतनयेऊ अरेलियोईछुड़ाइगह्योगाढ़ोरूपहीकोहै ॥
ऐसेहीकरतवृन्दावनघनआइलियेपियोचाहैरससबजगलाग्योफीको
है । भइउतकंठाभारीआयेश्रीविहारीलालमुरलीबजाइकेसुकियो
भायोजीकोहै ॥ १७१ ॥

हमनाम साधु ॥ दोहा ॥ गलियनिमें हर्षतफिरैं, साधुकहैं सब कोइ ॥
श्वान नाम बाघा धरयो, खोजी बाघ न होइ ॥ १ ॥ रूपही काहै ॥
हाथ छुडाये जातहो. निबलजानिके मोहिं ॥ हियमेंते जब जाहुगे, सबल
बन्दौंगी तोहिं ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ प्रीतम सुजान मेरे हितके निधान
कहौ कैसे रहैं प्राण जोपै अनाखि रिसाइहो । तुम तो उदार दीनहीन आइ
परयो द्वार सुनिये पुकार याहि कौलौं तरसाइहौ ॥ चातक हौं रावरो
अनोखो मोहिं आवरो सुजान रूपबावरो बदन दरशाइहौ । विरह नशाइ
दया हिय में बसाइ आइ हाइ कब आनँदको घनबरसाइहौ ॥ ३ ॥ तापै
सूरदासजी अरु साहूकार की स्त्रीको दृष्टांत ॥ ४ ॥ ऐसे जबकही तब
करुणानिधान हँसे प्रीति के वशभये ॥ ५ ॥

खुलिगयेनयनज्योंकमलरविउदयभये देखिरूपराशिबाढ़ीको-
टिगुणप्यासहै । मुरलीमधुरसुररास्योमदभरिमानोंढरिआयोका-
ननमेंआननमेंभासहै । मानियेप्रतापचिंतामणिमनमांझभई चिंता-
मणिजैतिआदिबोलेरसरासहै।करुणामृतग्रंथहृदयग्रंथकोविदारिडा-
रै बांचैरसग्रंथपंथयुगलप्रकासहै ॥ १७२ ॥ चिंतामँणिसुनीबनमां
झरूपदेख्योलाल ह्वैगईनिहालआईदेहनातोजानिकै । उठिबहुमान
कियोदियोदूधभातदोना दैपठावैनितहरिहितूजनमानिकै । लियो

कैसेजायतुम्हैंभाइसोंदियोजोप्रभु लैहौनाथहाथसोंजोदेहैंसनमानि-
कै।बैठेदोऊजनकोऊपावैनहींएककनरीझेश्यामघनदीनोदूसरोहूआ-
निकै ॥ १७३ ॥

चिन्तामणि जयतिआदि ॥ श्लोक ॥ चिन्तामणिर्जयति सोम
गिरिर्गुरुर्मेशिक्षागुरुश्चभगवाञ्शिखिपिच्छमौलिः ॥ यत्पादकल्पतरुपल्ल-
वशेखरेषु लीलास्वयंवररसंलभतेचयच्छ्रीः ॥ १ ॥ करनात्रतग्रंथ ॥ अद्वै
तवीथीपथिकैरुपास्यास्वानंदसिंहासनलब्धदीक्षा ॥ शठेनकेनापिवयंहठेन
दासीकृतागोपवधूवटेन ॥ २ ॥ कोऊ पावै ॥ दोहा ॥ निकट न देख्यो
पारथी, लग्यो न देख्यो बाण ॥ मैं तोहिं पूछौं हेसखी, केहि विधि निकसे
प्राण ॥ ३ ॥ जल थोरो नेहा घनो, लगे प्रीतिकेवाण । तूपी तूपी करिमरे
इहिविधि छांडेप्राण ॥ पुमन आवमांगै आनन॥ ४ ॥देखा ज्ञानकर्म नाम सों
शुद्धहोइ अरु गीतामें भक्ति योग चित्त शुकने लिख्यो ज्ञान कर्म आरा
पाश शुद्ध होई बीचमें भक्तियोग भाष्यमें लिख्यो है भक्ति रत्न के दोऊ
ढकनाहैं चक्रवर्ती ने लिख्यो है दोऊ लैंगे नहीं बीचमें भक्तियोगरोकै है
दोउनको ॥ ५ ॥

मूल ॥ कलिजीवजंजालीकारणै विष्णुपुरीवड़निधिसची ॥
भगवतधर्मउतंगआनधर्मआननदेखा । पीतरपटितरविगतानिपक-
ज्योंकुंदनरेखा ॥ कृष्णकृपाकरिवेलफलतसंगदिखायो । कोटिग्र-
न्थकोअर्थतेरहविरंचनमेंगायो ॥ महासमुद्रभागवततेभाक्तिरतन
राजीरची । कलिजीवजंजालीकारणैविष्णुपुरीवड़निधिशची॥४७॥
टीका ॥ जगन्नाथक्षेत्रमांझबैठेमहाप्रभूजबै चहूंओरभक्तभूपभीरअ-
तिछाईहै । बोलेविष्णुपुरीपुरीकाशीमध्यरहैं यातेजानियतमोक्ष
चाहनीकीमनआईहै । लिखीप्रभुचीठीओपमणिगुणमालएकदीजिये
पठाइमोहिलागतसुहाईहै । जानिलईवातनिधिभागवतरतनदाम
दईपठैआदिमुक्तिखोदिकैवहाईहै ॥ १७४ ॥ मूल ॥ विष्णुस्वामि
संप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति ॥नामतिलोचनशिष्यसूरशशिसदृश

उजागर । गिरागंगउनहारिकाव्यरचनाप्रेमाकर ॥ आचार जहरिदासअतुलवलआनँददाइन। तिहिमारगवल्लभविदितपृथुपाधितपराइन ॥ नवधाप्रधानसेवासुदृढ़मनवचक्रमहरिचरणरति । विष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति ॥ ४८ ॥

खोदिके वहाइ हनुमन्नाटके ॥ भवबंधच्छिदेतस्मैनस्पृहयामि मुक्तये । भवान्प्रभुरहंदास इतियत्रविलुप्यते ॥ १ ॥ सालोकसार्ष्टिसामिप्यसारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानंनगृह्णंति विनामत्सेवनंनराः ॥ २ ॥ विष्णुपुरीवाक्यम् ॥ येमुक्तावपिनिःस्पृहाःप्रतिपदं प्रोन्मीलदानंददां यामास्थायसमस्तमस्तकमणीं कुर्वंतियंस्वेवशे । तान् भक्तानपितांचभक्तिमपितंभक्तिप्रियं श्रीहरिं वंदेसंततमर्थयेनुदिवसं नित्यंशरण्यंभजे ॥ मुक्तिनिस्पृहा कथाएकपुराणकी एक समय श्रीनारदजी श्रीवृन्दावन में आये श्रीलालजीकी लीलादेखिकै वहुत प्रसन्न भये पीछेते रोवनलगे यह बड़ो आश्चर्य्यहै ॥ ५॥

ज्ञानदेवजूकीटीका ॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायवड़ेईगँभीरमतिज्ञानदेवनामताकीवातसुनिलीजिये । पिताग्रहत्यागिआइग्रहणसंन्यासकियोदियोवोलिरूठतिया नहींगुरुकीजिये । आईसुनिवच्छपाछेकह्योजान्योमिथ्यावादभुजनपकरिमेरेसंगकारिदीजिये । आईसोलिवाइजातिअतिहीरिसाइदियोपांतिमेंतेडारिरहे दूरिनहिंछीजिये ॥ ॥ १७८ ॥ भयेतीनिपुत्रतामेंमुख्यवड़ोज्ञानदेवताकीकृष्णदेवजूसोंहियेकीसचाईहै।वेदनपढ़ावैकोईकहैसवजातिगईलईकरिसभाअहोकह्यामनआईहै। विनसोंब्रह्मत्वकहीश्रुतिअधिकारनाहिवोल्योयोंनिहारिपढ़ैभैंसालैदिखाइये । देखिभक्तिभावचाव भयो आनिगहेपाव कियोईसभाववहीगहीदीवताईहै ॥ १७९ ॥

काव्यरचनापद ॥ माईआजु होनिशान बाजे दशरथ राइके । रामजन्म सुनि रानी गावति आनँद वधाइके। उमँगे ऋषिविश्वामित्र पढत वशिष्ठ तंत्र चैत्रमासनौमी शुक्लपक्ष पाइके । उमँगे दलह किधौं जल उमँगे मत्तगज उमँगे महल सब कंचन जराइके । उमँगे पौरी पगार उमँगे वीथी

बजार उमँगी अयोध्यापुरी रह्यो सुखछाइके । उमँगे सूरज कुल धरम असुरकुल लंकके कँगूरा ढये अगम जनाइके ।उमँगे वृक्ष सब सूखे हरेभये अबै उमँग्यो वनदंडक अधिक जिवाइके । उमँगे वृद्ध बाल सुर मुनि जेते ईश उमँगे गौतम जानि त्रिया मोक्षदाइके । उमँगे बादर रीछ हनूमान पूजाईश सुग्रीव रिपुको नाशकरि हानिये नशाइके । उमँग्यो सरयूको नीर मज्जन करिहैं रघुवीर उमँगे सबजीव जन्तु कोउ न सकै सताइके । उमँगी सभा बिराजै अपने अपने समाजै उमँगे उमँगे तिलक जबमस्तक चढ़ाइके । उमँगे उघटत संगीत उमँगे नृवट गीत मृदंगी मन मृदंग बजाइके । उमँगे मुनि समाजैं बहुविधि बाजे बाजैं महाराज दान दीजै सजिकै तुलाइके । उमँगे ढाढ़िया गावैं ठाढे बजावैं उमँगि अशीश देत नृपमाथो नाइके । उमँगेनाचै लागदाट तालसांचे रीझि वस्तुदेत जो जाहीलाइके । उमँगी कौशल्या रानी सुत जायो शारंगपानी उमँगे जन ज्ञान देव सीताराम गाइके १ मुताख्या ब्रह्मणकला सोपान देव महान देव ज्ञान देव ऐसे तीन जैसे धायपुत्र परोसी साखी ऐसे मखनमें ब्राह्मण साखी यह जानि लीजै सो भैंसा पढ़्यो प्रमाण कौन ॥

टीकातिलोचनजूकी ॥ भयेउभैशिष्यनामदेवश्रीतिलोचनजूसू-रशशिनाहींकियोजगमेंप्रकाशहै । नामीकीतौबातसुनिआये सुनो दूसरेकीसुनेईवनतभक्तकथारसरासहै ॥ उपजेवणिककुलसेवेकुलअ-च्युतकोऐयेनहींवनैएकतियारहैपासहै । टहलुवानकोऊसाधुमनानि-कोजानिलैयहीअभिलाषसदादासनिकोदास है॥ १७७॥आयेप्रभुटह लुवारूपधरिद्वारपर फटीएककामरीपन्हैयांटूटीपाइहै । निकसत-पूछैंअहोकहांतेपधारेआप वापमहतारीऔरदेखियेनगाइहै । वाप-महतारीसेरेकोऊनाहिंसांचीकहौंगहौजोटहलतौपैमिलतसुभाइहै । अनमिलवातकौनदीजिये जनायवहखाऊंपांचसातसेरउठतरिसाइहै ॥ १७८ ॥ चारिहीवरनकीजुरीतिसवमेरेहाथ साथहूनचहौंकरौ-नीकेमनलाइकै । भक्तनकीसेवासोतौकरतहीजनमगयोनयोकछु-

नाहिं डारेवरषबिताइकै ॥ अंतर्यामीनाममेरोचेरोभयोतेरोहौंतो बोल्योभक्तभावखावोनिशंकअघाइकै । कामरीपन्हैयांसबनईकरि दई औरु मीड़िकैन्हवायोतनमैलकोछुड़ाइकै ॥ १७६ ॥

अनमिलपै ॥ सवैया ॥ अरसात जम्हातलगे नखगात कितौ तुतरात सुबोलत हूं । कवि सुन्दर ऊलटि और सुनो इतनैं पर सौंहकरै अजहूं ॥ तिनसों वकहा कहिये जिनके सुपनेहूँ न लाज भई कबहूं । जग में सबी ओषधि है सब की पै स्वभावकी ओषधि नाहिंकहूं ॥ १ ॥ मनलाइकै ॥ दोहा ॥ चारि वरणकी चातुरी, सरै न मेरो काम ॥ भक्त सेवजो जानिहौं, तो रहौ हमारे धाम ॥ २ ॥ भक्तनकी सेवा ॥ गीतायां ॥ यद्यद्वांछति मद्भक्तस्तत्तत्कुर्य्यामतंद्रितः ॥ ३ ॥ बाप महतारी नहीं ॥ जयतिजगनिवासो देवकी जन्मवादो शास्त्रजन्मगावैं अजन्मगावैं दोऊ सत्तः भक्ति बेटा मित्र साखा ऐसे जानिये ॥

बोल्योघरदासीसोंतूरहैयाकीदासी होइ देखियोउदासीदेतऐसो नहींपावनो । खाइसोखवावोसुखपावोनितनित्तहिये जियेजगमाहिं जौलौंमिलिगुणगावनो । आवतअनेकसाधुभावतटहलुहिये लिये चावदावैपांवसबनिलड़ावनो । ऐसेहीकरतमासतेरहव्यतीतभये गयेउठिआपनेकुबातकोचलावनो ॥ १८० ॥ एकदिनगईहीपरोसिनिकेभक्तवधूपूछिलईबातअहोकाहेकोमलीनहै । बोलीमुसिकाई वेटहलुवालिवाइलाये कहूंनअवाइखोटिपीसितनछीनहैं ॥ काहूसों नकहौयहगहोसनमांझयेरीतेरीसोंसुनैगोजोपैजातरहैभीनहैं । सुनि लईयहीनेकुगयेउठिहूतीटेकदुखहूअनेकजैसेजलविनमीनहैं ॥१८१॥ बीतेदिनतीनिअन्नजलकरिहीनभयेऐसोसोप्रवीनअहोफेरिकहांपाइये।वड़ीतूअभागीबातकाहेकोकहनलागी रागीसाधुसेवामेंसुकैसेकरिलाइये । भईनभवानीतुमखावोअन्नपानीयहमैंहींमतिठानीमोको प्रीतिरीतिभाइये । मैंतोहांअधीनतेरेघरहींमैंरहौंलीनजोपै कहौस दासेवाकरिवेकोआइये ॥ १८२ ॥ कीनेहरिदासमैंतोदासहूनभयो

नकु बड़ोउपहाससुखजगमोंदिखाइये। कहैजनभक्तकहाभक्तिहमकरी कहोअहोअज्ञताईरीतिमनमेंनआइये ॥ उनकीतौवातवनिआवैसव उनहींसोंगुनहीकोलेतमेरेअवगुणछिपाइये । आयेघरमांझताऊमूढ़ मैंनजानिसक्यों आवैअव क्योंहूंधाइपाँइलपटाइये ॥ १८३ ॥

आवत अनेक साधु ॥ गीतायां ॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजते मा मनन्यभाक् । साधुरेव समंतव्यो सम्यसग्व्यवसितोहिसः ॥ १ ॥ अन्न जल करि हीन ॥ श्लोक ॥ वैष्णवः परमोधर्मो वैष्णवः परमंतपः ॥ वैष्णवः परमोराध्यो वैष्णवः परमंगुरुः ॥ २ ॥ चारो वेदमें अरु अठारह पुराण में अरु श्री भागवत में यह सुनीहै वैष्णव स्वरूप सर्वोपरि श्री भगवत रूपी साक्षात् है ॥ ३ ॥

टीकावल्लभाचार्य्यजीकी ॥ हियमेंस्वरूपसेवाकरिअनुरागभरे ठरेओरजीवनिकोजीवनकोदीजिये । सोईलैप्रकाशघरघरमोंविलास कियो अतिहीहुलासफलनयननकोलीजिये । चातुरीअवधि नेकुआतुरीनहोतिक्योंहूं चहूं दिशिनानारागभोगसुखकीजिये । बल्लभजूनामलियोपृथुअभिरामरीतिगोकुलमें धामजानिसुनिअति रीझिये ॥ १८४ ॥ गोकुलकेदेखिवेकोगयोएकसाधुसूधो गोकुलम गनभयोरीतिकछुन्यारिये । छोकरकेवृक्षपरवटवाझुलाइदियोकियो जाइदर्शनसोभयोसुखभारिये । देखेआइनाहिंप्रभूफेरिआपपासआ यो चिंतासोंमलीनदेखिकहीजानिहारिये ॥ वैसोईस्वरूपकैईगईसुधि बोल्योआनि लीजियोपिछानिकहींसेवानितधारिये ॥ १८५ ॥

गोकुलके देखिवेको ॥ कवित्त ॥ जौलौं व्रज बीथिन में विथकै न येरेमन तौलौं कुटिलाई की सुकालिमा जनाइये। तौलौं नवनीत चोरचि- त्त में न आनै नेकु जौलौं और साधन में स्वच्छता न पाइये। स्मृति पुराण वेद पण्डित प्रवीणताई करि अभिमान शेष पंकलपटाइये । पैजकरि कहतु हौं प्रवीणन सों कान खोलि सोकल मलीन जहां गोकुल नगाइये ॥ १ ॥ वेर गोधूलिकै सुनत तिया गोरी गान दामिनी निकरसी निकर गृहतेंघिरैं

गोधनके पाछे आछे नटवर वेष काछे श्याम चलत कटाछे तियनैन नैनसों-भिरैं । जारिनि किवारिनि अटारिनि झरोखनिते जित तितफूलपाती गैल छैलपै परैं । होति जब सांझ इन गोकुल गलिन मांझ कोटि वैकुंठसुख सहज वहे फिरैं ॥ २ ॥ नाहीं प्रभु ॥ दोहा ॥ छतौनेह कागदहि पै, भये लिखाइनटांक ॥ आंचलगै उघन्यो अबै, सेंहुंडकोसो आंक ॥ ३ ॥ स्नेह विछुरनि में उखरि आवै वैसोई रूप ॥ दोहा ॥ प्रेम एकइक चित्तसों, एकै संग समाय ॥ गंधीको सोंधो नहीं, स्वजननहाथ बिकाय ॥ ४ ॥ नैन कोफल ॥ बर्हायितेतेनयनेनराणां लिंगानि विष्णोर्ननिरीक्षतोये ॥ ५ ॥

खुलिगईआंखैंअभिलाखैंपहिचानिकीजैदीजेजुबताइमोहिंपावैनिजरूपहै । कहीजाइवाहीठौरदेखौप्रेमलेखौहियेलियेभावसेवाकरोमारगअनूपहै । देखिकैमगनभयोलयोउरधारिहारिनयनभरिआये जान्योभक्तिकोस्वरूपहै । निशिदिनलग्योपग्योजग्योभागपूरणहो पूरणचमतकारकृपाअनुरूपहै ॥ १८६ ॥ मूल ॥ संतसाखि जानैंस वैप्रगटप्रेमकलियुगप्रधान । भक्तदासइकभूपश्रवणसीताहरकीनो । मारिमारिकरिखड्गवाजसागरमेंदीनो ॥ नृसिंहकोअनुकरणहोइहिरणाकुशमारयो । वहैभयोदशरथरामविछुरेतनडारयो ॥ कृष्णदामत्रांधेसुनेतिहिक्षणदीनेप्रान । संतसाखिजानैंसवैप्रगटप्रेमकलियुगप्रधान ॥ ९० ॥ टीका—संतसाखिजानैंकलिकालमेंप्रगटप्रेमबड़ोई असंतजाकेभक्तसोंअभावहै । हुतौएकभूपरामरूपततपुरमहारामहीकीलीलागुणसुनैंकरिभावहै । विप्रसोंसुनावैसीताचोरीकौनगावैहियो खरौभरिआवैवहजानतसुभावहै ॥ परयोद्विजदुखीनिज सुवनपठाइदियो जानैंनसनायो भरमायोकियोघावहै ॥ १८७ ॥

कलियुग प्रधान ॥ प्रेमते दर्शन प्रेमते वाको स्वरूप प्रेमते वाके स्वरूपको बाप प्रेमते स्वरूपके बाप को शिक्षाकार याते प्रधान ॥ १ ॥ घावहै ॥ कुंडलिया ॥ धोबीबेटा चांदसा सीटी और पटाक।सीटी और पटाक प्रेमहरि भक्ति नजानै । अनकनरहै न टांक छालनी सों मनछानैं ॥

श्वास धवनि ज्यों धवै अंग मूसा ज्यों दाढै । ऐसो महा अचेत थौस कूकर ज्यों काढै ॥ अगर कहैं निर्फलगई सेमरि फूली पाक । धोवीवेटा चांदसा सीटी और पटाक ॥ २ ॥ दोहा ॥ कवहुं न सुखमें हरिभजे, भक्तन मिले न दौरि ॥ तीनों पन योंहींगये, फिरत पराई पौरि ॥ ३ ॥

मारिमारिकरिकरखङ्गनिकासिलियो दियोवोरसागरमेंसोअवे शआयोहै । मारौं याहीकालदुष्टरावणविहालकरौंपावनकोदेखौंसी ताभावदृढ़छायोहै ॥ जानकीरमणदोऊदरशनदीनोआनि वोलेवि नप्राणकियोनीचफलपायोहै । सुनिसुखभयोगयोशोकसबदारुण जो रूपकीनिहारिनयेफेरिकैजिवायो है ॥ १८८ ॥ नीलाचलधाम तहांलीलाअनुकरणभयोश्रीनृसिंहरूपधारिसांचेमारिधारचोहै । को ऊकहैदोसकोऊकहतअवेशतोपै करौदशरथकियोभावपूरोपारचो है ॥ हुतीएकवाईकृष्णरूपसोंलगाईमतिकथामेंनआईसुतसुनीकहे उधारचोहै ॥ वांधियशुमतिसुनिऔरभईगतिकरिदईसांचीरतितन तज्योमानौवारचोहै ॥ १८९ ॥

सोये समस्त भाव प्रेमसों होतभये जैसे श्रीगोपिकान के प्रेमसों भाव होत भये ॥ १ ॥ तापै दृष्टांत एक प्रेम के द्वै स्त्री एकतो आनंदिता एक व्याकुलता तिनके एक एक पुत्र आनंदिताके तो सुनन्द व्याकुलताके विरह ता विरहकी स्त्री तदात्मककोस्वरूप ॥ २ ॥ सवैया ॥ वेर वढ्यो सुव-ढ्यो अतिही अवके कहिको लारिकौनको सूझै । कैसी भई हरि हेरतहीं अवको हियके जियकी गतिबूझै । वाहरहू घरहूमें सखी अँखियां निवहे छवि आनि अरूझै । सांवरो रूप रम्यो उरमें सगरोजग सांवरो सांवरो सूझै ॥ ३ ॥ ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे ॥ यास्यामि तीर्थमद्यैव कंठेकृत्वातु वा-लुकम् ॥ अथवात्वं गृहाद्गच्छ त्वयामे किंप्रयोजनम् ॥ ४ ॥ ऐसे नन्दजी में बैठिके सो वाईने कहो तदात्मकको पुत्रतद्वत् तद्वत्को स्वरूपसोकहैं ५ ॥

कवित्त ॥ श्याम को जप्रतिहुती श्यामाजू स्वरूपभरी पगी प्रेम पूरणते ह्वैगई कन्हाई है । सुरति लिखी जो चिट्ठी प्यारी पिय ततकाल भामिनी

वियोगभयो अतिदुखदाई है॥ व्याकुल बिहाल अति प्यारीके बिरहतन राधे राधे रटि पुनिभई राधिकाई है। चकित सचेत कहैं बेर बेर हेरिपाती पथिक न आयो यह पाती कैसे आईहै ॥१॥ पद ॥ दुहुं दिशिको अति विरह विरहिनी कैसे कै जुसहै। सुनो सखी यह बात श्यामसों को समुझाइकहै ॥ जब राधा तबहीं मुख माधो माधो रटतिरहै। जब माधो ह्वैजाति क्षणकमें राधा विरह दहै ॥ पहले जानि अगिनि चन्दनसी सतीहोन उमहै। समाचार ताते शीरेके पाछे कौनकहै। उभय दारुह्वै कीटमध्यज्यों शीतलताहिचहै । सूरदास प्रभु व्याकुल विरहिनि क्योंहूं सुखनलहै ॥ २ ॥ दोहा ॥ पियके ध्यान गही गही, रही वही ह्वैनारि॥आय आपही आरसी, लखि रीझत रिझवारि ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ तटभुवितरलाक्षो लक्षतो यासमंतादिहवसतिसधूर्त्तः शीघ्रमायात यूयम् । असकृदिति वदंती कामिनी कापिवालं कपिकिमपितमालं गाढमालिंगतिस्म ॥ ४ ॥ तापै एक दृष्टांत लंका में त्रिजटा अरु सीताजीको ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ भृंगीभयते भृंगहोइ वहकीट महाजड । कृष्ण प्रेमतेकृष्णहोइ कछु अचरज नहिंबड ॥ ६ ॥ प्रेमहि पीवहि अंतरुपे तो । बीसि तीनि साठिहैं जेतो ॥ ७ ॥ एक सिद्ध अमलीके नीचे बैठ्यो तप करतरह्यो ता मग श्रीनारदजी आये सो पूछी हरि मिलेंगे सो परमेश्वर ते पूछी नारदजी कही अमलीके पत्ता इतने युग तब नाच्यो मिल्यो तापै राजाकी बेटी को अरु द्वै मित्रन को दृष्टांत॥८॥

मूल ॥ प्रसादअवज्ञाजानिके पाणितज्योएकैनृपति ॥ हौंकहा कहौंबनाइबातसबहीजगजानै । करतेदोनोभयोश्यामसौरभरुचिमानै ॥ छप्पनभोगतेयहलखीचकरमाकोभावै सिलिपिल्लेकेकहतकुँवरिपैहरिचलिआवै ॥ भक्तनिहितसुताविषदियोभूपनारिप्रभुराखिपति । प्रसादअवज्ञाजानिकै पाणितज्योएकैनृपति ॥ ९१ ॥ पुरुषोत्तमकाशीराजा ॥ प्रसादकीअवज्ञातेतज्योनृपकरएककरीकैविवेकसुनोजैसीभांतिभईहै । खेलैनृपचौपरिकोआयोप्रभुभक्तमेश दाहिनेसेफासेवांयोछुयोमतिगईहै । लैगयेरिसाइकैंफिराइमहादुः

खपाइ उठचोनरदेवगेहगयोसुनिनईहै । लियोअनसनहाथतज्यो यहीछिनतब सांचोमेरोपनबोलिविप्रपूछिलईहै ॥ १९० ॥ काटे हाथकौनमेरोरहैगहिमोनयाते पूछतसचिवकहाशोचयोंविचारिये । आवैएकप्रेतमोदिखाईनितदेतनिशि डारिकैझरोखाकरशोरकरि भारिये । सोऊढिगआइरहौआपकोछिपाइतब डारैहाथआनितवहीं काटिडारिये । कहीनृपभलेचौकीदेतमेंघुमायोभूप डारचोउठिआ निछेदन्यारोकियोवारिये ॥ १९१ ॥ देखिकैलजानो कहाकियोमैं अयानोनृप कहीप्रेतमानोनहींप्रभुसोंविगारिये । कहीजगन्नाथदेव लैप्रसादजावोवहांलावोहाथवोवोवामसोईउरधारिये । चलेतहांधाइ भूपआगेमिल्योआइहाथ निकस्योलगाइहियेभयोसुखमारिये । लाये करफूलताकेभयेफूलदोनाके नितहीचढ़तअंगगंधहरिप्यारिये १९२

प्रसादअवज्ञा ॥ श्लोक ॥ प्रसादं जगदीशस्य अन्नपानादिकं च यत्॥ ब्रह्मवन्निर्विकारंहि यथा विष्णुस्तथैवतत् ॥ १ ॥ पूछि लई है ॥ दोहा ॥ बाम बाहु फरकत मिलै, ज्यों प्रीतमरस मूरि ॥ त्यों तोहीसों भेंटिहौं, राखि दाहिनोदूरि ॥ २ ॥

करमाबाईकीटीका ॥ हुतीएकबाईताकोकरमासुनामजानि बि नारीतिभांतिभोगखीचरीलगावही । जगन्नाथदेवआइभोजनकरत नीके जितेलागैंभोगतामेंयहअतिभावही । गयोतहांसाधुमानिबड़ो अपराधकरे भरैबहश्वाससदाचारलैसिखावही । भईयोंअबारदेखै खोलिकैकिवारतोपैजूंठनिलगीहैमुखधोयेबिनआवही ॥१९३॥ पूछी प्रभुभयोकहाकहियेप्रगटखोलि बोलिहूनआवैहमैंदोखिनईरीतिहै । करमासुनामएकखीचरीखवावै मोहिं मैंहूंनितपाऊंजायजानीसांची प्रीतिहै । गयोसरोसंतरीतिभांतिसोसिखाइआयो मतमोअनतबिन जानेयोंअनीतिहै । कहीवाहीसाधुसोंजुसाधिआवौवहीबात जाइकै सिखाईहियआईबड़ीभीतिहै ॥ १९४ ॥ सिलपिल्लेउभैबाईकीटी का ॥ सिलिपिल्लेभक्तउभैबाईसोई कथासुनौएकनृपसुताएकसु

ताजिमीदारकी । आयेगुरुघरदेखिसेवाढिगबैठीजाइ कहीललचाइ पूजाकीजेसुकुवारकी । दियोशिलटूकएकनामकहिदियोवही की जियेलगाइमनमतिभवपारकी । करतकरत अनुरागबढ़िगयोभारी बड़ीयेविचित्ररीतियहीशोभासारकी ॥ १९५ ॥

वैष्णव प्रेमको समझै नहीं ॥ वेदसमझै याते करमाबाई को वेदही सिखायो ॥ दोहा ॥ लकरी धोवै भ्योंसनै, करै छतीसौ पाक ॥ जाको षट षटकरम हैं, ताको भावै छाक १ सो प्रेमको समुझै नट गोपाल कपट क्यों भावै कोटिक स्वांग बनावै २ बड़ी भीति है ॥ साधुको फेरिआया देखिकै डरी। आप कहा सिखाइ गयो तब साधु बोले री तूडरै मतिरी ॥ यह क्रिया ब्राह्मण की है तेरी नहीं तब पोथी देखी तब जानी तू वैसेही कन्यो करि तब साधु हँसे कही ललचाइ ॥ ३॥

पाछिलेकवित्तमांझदुहुनिकीएकैरीति अबसुनौन्यारीन्यारीनी केमनदीजिये । जिमीदारसुताताकेभयेउभयभाईरहैंआपसमेंवैरगाम मारच्योसुवेछीजिये । तामेंगईसेवाइनबड़ोईकलेशकियोतियोनहीं जातखानपानकैसेकीजिये । रहेसमुझाइयाहिकछुनसुहाइ तबकही जायलावोतेरेदोऊसमधीजिये ॥१९६॥ गईवाहीगांवजहांदूसरोसुभा ईरहैवैठच्योहैअथाईमांझकहीवहीबातहै लेहुजूपिछानीतहांबैठचोइ कठौरेप्रभुबोलि उठेउकोऊबोलिलीजेप्रीतिगातहै । भईआंखि राती लगीफाटिवेकोछातीसो पुकारीसुरआरतसोमानोतनपातहै। हियेआ इलागेसबदुखदूरिभागेकोऊबड़ेभागजागेघरआईनसमातहै ॥१९७॥

भई आँखिराती ॥ कवित्त ॥ कंचनमें आंचदई चुनी चिनगारीभई दूषण भयेरी सब भूषणउतारिलै । पियहै विदेश वाही देश क्यों न पैरै धाइ ससकि ससकि उठै मनहूं विचारिलै । परघर आगि आली मांगन क्यों जाति अब आगिमेरे अंग चिनगारी चारिझारिलै । सांझ समैसांच सुनबाती क्यों न देति आली छाती सों छुवाइ दिया बाती क्यों न बारिलै ॥ १ ॥ बसन डसन भये हसन रसन होत श्वासनिसों जागिहै बियोग

आगिआगरी। धामतौ उजार से हैं छारसे हैं काम काज आलिनके यूथ जाल ऐसे हाल नागरी। भोजन हलाहल कुलाहल सो नाद जाति वाद है विवाह ऐसे विशदनिकी सागरी। आपुनु मृगीके तूल कामदेव शारदूल बचि है न मूल शूल उठी है उजागरी ॥ २ ॥ दोहा ॥ धवल महल शय्या धवल, धवल शरदकी रैन। एक श्याम विन विकल सब, ज्यों पुतरी बिन नैन ॥ ३ ॥

टीकानृपसुताको ॥ सुनोनृपसुताबातभक्तिगातगानपगीभजी सबविषयव्रतसेवाअनुरागीहै। व्याहीहीविमुखवरआयोलेनवहेवर खरी अरबरीकोईचिंताचिंतालागीहै। करिदईसंगभरीआपनेहीरंग चली अलीहूनकोऊएकवहीजासोंरागीहै। आयोढिगपतिबोलिकि योचाहैरतियाकीऔरभईगतिमतिआवौविथापागीहै ॥ १९८ ॥ कौनवहबिथाताकोकीजियेयतनवेगिवड़ोउदवेगनेकुबोलिसुखदीजि ये। बोलिबोजोचाहौतौपैकरौहरिभक्तिहियेविनहरिभक्तिमेरोअंग जिनिछीजिये। आयोरोषभारीतबमनमेंविचारीवापिटारीमैंजुकछु सोईलैकैन्यारोकीजिये। करीवहीबातमूसिजलमांझडारिदईनईभई ज्वालाजियोजातनहिंखीजिये ॥ १९९ ॥ तज्योजलअन्नअनचाहत प्रसन्नकियो होतक्योंप्रसन्नताकोसरबसलियोहै। पहुंचेभवनआइ दईसोजताइबातगातअतिछीनदेखिकहाहठकियोहै। सासससमझावै कछूहाथसोंखवावेयोकोवाल्योहूनभावेतबधरकतहियोहै। कहैसोई करैंअबपरैपांइतेरेहमबोलीजववईआवेतौहीजातजियो है ॥ २०० ॥

तज्यो जल अन्न ॥ दोहा ॥ शठसनेहसों डरपिये, नंद और भय नाहिं। सांपिनि सुत हित जानि कै, गिले पेट पचि जाहिं ॥ १ ॥ कवित्त ॥ समरमें लर्‍यो जाहि गिरह ते गिर्‍यो जाइ गगन में फिर्‍यो जाइ पावक को दहिबो। कानन में रह्यो जाइ व्यालकर गह्योजाइ विरह्हु सह्योजाइ और कहा कहिबो। हलाहल पियोजाइ सरबस दियो जाइ करवत लियो चाइ वारिधि को वाहिबो। और दुख याहूते जु दुसह

कठिन ऐसो जैसो कहूं विमुख संग एकछिनरहिबो ॥ २ ॥ ऐसो सत्संग मन में जानिबो ॥ ३ ॥

आयेवाहीठौरभौरआइतनभूमिगिरयो गिरयोजलनैनसुरआरत पुकारीहै। भक्तिवशश्यामजैसेकामवशकामीनर धायलागेछातीसों जुसंगसोंपिटारीहै। देखिपतिसासुआदिजागतबिवाहमिटयो बादि हीजनमगयोनेकुनसँभारीहै। कियेसवभक्तहरिसाधुसेवामांझपगे जगेकोऊभागघरवधूयोंपधारीहै ॥२०१॥ भक्तनकेहेतुसुतविषदियो उभयवाईकीटीका ॥ भक्तनकेहेतुसुतविषदियोउभैबाई कथासरसा ईबातखोलिकैजताइये। भयोएकभूपताकेभगतअनेकआवैंआयो भक्तभूपतासोंलगनलगाइये। नितहीचलतऐयेचलननदेतराजा चि तयोवरषमांझकह्योमोरजाइये। गईआशटूटितनछूटिवेकीरीतिभई लई बातपूंछिरानीसवैलैजनाइये ॥ २०२ ॥

आयो भक्तभूप ॥ श्लोक ॥ मदाश्रयां कथामिष्टाः शृण्वंति कथयंति च ॥ तपंति विविधास्तापानैतान्मद्गतचेतसः ॥ १ ॥ साधुसेवामें कहा लाभ ॥ तुलयामल वेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥ २ ॥ प्रथमे ॥ वासुदेवे भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः ॥ जनयत्याशु वैराग्यं ज्ञानं च यदहैतुकम् ॥ ३ ॥ सप्तमे ॥ वासुदेवे भगवति भक्तिमुद्वहतां नृणाम् ॥ ज्ञानवैराग्यवीर्याणां नेह कश्चिद्व्यपाश्रयः ॥ ४ ॥

दियोसुतविषरानीजानीनृपजीवैनाहिं संतहैस्वतंत्रसोइन्हैकैसेरा खिये। भयेविनभोरवधूशोरकरिरोइउठीभोइगईरावलमेंसुनीसाधु भाषिये। खोलिडारीकटिपट भवनमेंप्रवेशकियोलियादेखिबाल ककोनीलतनसाखिये। पूंछ्योभूपतियासोंजुसांचकहिकियोकहा क हीतुमचल्यौचाहौनैनअभिलाषिये ॥ २०३ ॥ छातीखोलिरोयेसं तबालहूनआवैमुख सुखभयोभारीभक्तिरीतिकछुन्यारिये। जानी हूनजातिपांतिजाकोसोविचारकहा अहोरससागरसोसदाउरधारिये।

हरिगुणगाइसाखिसंतनिवतायदियोबालकजिवाइलागीठौरवहप्यारि ये । संगकेपठाइदियेरहेजेवेभीजेहिये वोलेआपजाऊंजौनमारिकै विडारिये ॥ २०४ ॥ सुनौचित्तलाइकहीदूसरोसुहाइहिये जियेज गमाहिंजौलौंसंतसंगकीजिये । भक्तनृपएकसुताव्याहीसोअभक्तम हा जाकेघरमांझजनवामनहिंलीजिये । पल्योसाधुशीतसांजुशरीर द्दगरूपपले जीभचरणामृतकेस्वादहीसोंभीजिये । रह्योकैसेजाइ अकुलाइनवस्याइकछुआवैं पुरप्यारेतवविपसुतदीजिये ॥ २०५ ॥

जानीहू न जातिपांति ॥ कुंडलिया ॥ सोईनारिसुतेवडीजाकीको ठीज्वारि । जाकी कोठीज्वारि जाहि यादवपति भावे । श्रवण सुनत हरिकथारसनगोविंदगुणगावै ॥ आरज विदुप उदार सुमति सुकुलीनी सो- ई । हृदय बसत हरिचरण जगत डार्‍योकरि छोई ॥ अगर कहे तादासपर तन मन दीजैवारि।सोई नारि सुतेवडी जाकी कोठी ज्वारि ॥ १ ॥ दोहा ॥ यद्यपि सुन्दर सुवर पुनि, सगुनौ दीपक देह । तऊ प्रकाश करै तितौ, भरिये जितौ सनेह ॥ २ ॥ एकादशे ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्यास्तुतिप्राह गुणकर्मानुकीर्त्तनम् ॥ ३ ॥ हरिगुणगावैसाखि- संतन ॥ आदिपुराणे ॥ मद्भक्ता यत्र गच्छंति तत्र गच्छामि पार्थिव ॥ भ क्तानामनुगच्छंति भुक्तयो मुक्तिभिः सह ॥ ४ ॥

आयेपुरसंतआइदासीनेजनाइकही सहीकैसेजातिसुतविपलैके दियोहै । गयेवाकेप्राणरोइउठीकिलकारिसवभूमिगिरेआनिटुकभयो जातहियोहै । वोलीअकुलाइएकजीवेकोउपायजोपै कियोजायपि तामेरेकोउवारकियोहै । कहैसोईकरैद्दगभरेलावोसंतनिको कैसेहोत संतपूंछौचेरोनामलियोहै ॥ २०६ ॥ चलीलैलिवायचेरीवोलिवोसि खाइदियो देखिकैधरणिपरीपांइगहिलीजिये । कीनीवहीरीतिद्दगधा रामानोंप्रीतिसत करीयोंप्रतीतिगृहपावनकोकीजिये । चलेसुखपाइ दासीआगेहीजनाईजाहि आइठाढ़ीपौरिपांइगहेमतिभीजिये ।कहीहरे बातमेरेजानौपितामातमैंतौअंगमेनमातआजुप्राणवारिदीजिये २०७

रीझिगयेसंतप्रीतिदेखिकैअनन्तकह्यो होइगीजुवहीसोप्रतिज्ञातैजु करीहै । बालकनिहारिजानीविषनिरधारदियो दियोचरणामृतको प्राणसंज्ञाधरीहै । देखताबिमुखजाइपाइततकाललिये कियेतवशिष्यसाधुसेवामतिहरीहै । ऐसेभूपनारिपतिराखी सबसाखीजन रहैअभिलाषी तोषैदेखोयह घरी है ॥ २०८ ॥

दियोचरणामृत ॥ श्लोक ॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । विष्णुपादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम् ॥ १ ॥ देवताननें कही शुकदेवजीसों श्रीभागवत हमैं देहु अमृत राजा परीक्षितकोदेहु सो इन भागवत न दयोहै याते हरिको बालकको चरणामृत दियो॥२॥ दोहा ॥ धन्यसन्त जहँजहँ फिरे, तहँ तहँ करत निहाल। चरणामृत मुखडारिके, फेरि जियायोबाल ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ वरं हुतवहज्वालापिंजरांतर्व्यवस्थितिः । नासौ श्रीविष्णुविमुखो जनसंवासवैशसम् ॥ ४ ॥

मूल ॥ आसैअगाधदोउभक्तकोहरितोषनअतिशयकियो ॥ श्रीरंगनाथकोसदनकरनवहुबुद्धिविचारी । कपटधर्मरविजेन्द्र द्रव्याहितदेहविसारी । हंसपकरनेकाज बाधक बानोंधरिआये। तिलकदामकीसकुचजानितिहिआपवँधाये ॥ सुतवधहरिजनदेखिकेदैकन्या आदरदियो । आसैअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशयकियो ॥ ॥ ५२ ॥ टीका ॥ आसैसौअगाधदोउभक्तमामाभानजेकोदियोप्रभुपोपताकीवातचितधारिये । घरतेनिकासिचलेवनकोविवेकरूपमूरतिअनूपविनमंदिरानिहारिये । दक्षिणमेंरंगनाथनामअभिरामजाकोताकोलैवनावैधामकामसवटारिये। धनकेयतनफिरैभूमिपैनपायोकहूंचहूंदिशिहेरिदेख्योभयोसुखभारिये ॥ २०९ ॥ मंदिरसरावगीकोप्रतिमासोपारसकीआरसनाकियोवेदनूनहूंवतायोहै । पावैंप्रभुसुखहमनरकहूगयेतौकहा धरकनआईजाइकानलैफुकायोहै।ऐसीकरीसेवाजासोंहरीमतिकेवराज्यों सेवरासमाजसबनीकेकैरिझायोहै।दियोसौंपिभारतवलेवेकोविचारकरैहरैकौनराहभेदराजनपैपायो है२१०॥

घरसे निकसिचले ॥ कवित्त ॥ चाहैंधन धाम वाम सुत अभिराम सुख कह्यो नाहीं नाहीं कछू सरत न काजहै । चतुरन आगे कोटि चातुरी न काम आवै बातन बनाइ सुनि उपजत लाज है । जोपै कहौं सांच यामें झूंठ न मिलाव नेकु तोपेश्वान से क्यों कहूं रोंक्यो गजराज है । वृन्दावन चाहै तौ न चाहै जीवतनहूंको मनहूंको दूरि ऐसे मिलत समाज है ॥ वेद नूनहूं बतावै ॥ श्लोक ॥ गजैरापीड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमंदिरे । यावनी नैव वक्तव्या प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ १ ॥ रंगनाथ ॥ कावेरी विरजा चैव वैकुण्ठं रंगमंदिरम् । प्रवासदेवरंगेशप्रत्यक्षं परमं पदम् ॥ २॥

मामारह्योभीतरऔऊपरसों भानजोहौ कलसभँवरकलीहाथसों फिरायोहै । जेवरलैफांसिदियोमूरतिसुखैंचिलईऔरवारवहुआपनी कैचढ़िआयोहै । कियोहोजोद्वारतामेंफूलितनफाँसिबैठेउअतिसुख पाइतबबोलिकैसुनायोहै । काढ़िलेवोशीशईशभेपकीननिंदाकरैं भरे अंकवारिमनकीजियोसवायोहै ॥ २११ ॥ काढ़िलियोशीशईश इच्छाकोविचारकियोजियोनहींजाततऊचाहमातिपागीहै । जोपैत नत्यागकरौकैसेआससिंधुतरौवाहीओरआयो तहांनीमखुदीलागीहै। भयोशोकभारीहमैंह्वैगईअवारीकाहूऔरनेविचारीदेखैंवहीवड़भागी है । भरिअंकवारिमिलेमंदिरसँवारिझिलेखिलेसुखपाइनयनजानेसोई रागीहै ॥ २१२ ॥ कोढ़ीभयोराजाकियोयतनअनेकएयेएकहूनला गैकह्योहंसनिमँगाइये । वधिकवुलाइकहीवेगिहीउपायकरौ जहांतहां ढूंढ़िअहो इहांलगिलाइये । कैसेकरिलावेंवेतोरहैंमानसरमांझलावौ गेछुटौगेतवजनेचारिजाइये । देखतहिउड़िजातजातिकोपिछानिलेत साधुसोनडरैंजानिभेषलैवनाइये ॥ २१३ ॥

मामारह्यो भीतर ॥ दोहा ॥ साधुसती अरु शूरमा, ज्ञानी अरु गजदंत येतेनिकसि न बाहुरैं, जो युगजाहिं अतंत ॥ १ ॥ श्लोक ॥ स्वर्गापवर्गनरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः । सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकं शरणं व्रजेति ॥ २ ॥ अग्रेवह्निः पृष्ठेभानुः सायंचिबुकसमर्पितजानुः । करतल-

भिक्षा तरुतलवासस्तदपि नमुंचत्याशापाशः ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जौन युगति पिय मिलवकी, धूरि मुक्ति मुख दीन। जो लहिये सँग सजन तौ, धरक नरकहू दीन ॥ ४ ॥ ईशइच्छा भलीकरी ॥ यद्यद्वांछति मद्भक्तः ॥ इनकही मुंह कैसे दिखावेंगे सेवराके चेला भये याते काव्यो प्रथम पाप पुण्य भोगे ऐसे ओषधि ऋषीन व्यवहार कलिये वैद पसारी ऐसे कोढी भयो खर कुत्तानहीं भले मनुष्य पै है ॥

गयेजहांहंससंतवानोसोप्रशंसदेखि जानिकेबँधायेराजापासलैके आयेहैं । मानिमतिसारप्रभुवैद्यकोस्वरूपधारिपूंछिकैबजारलोगभू पाढिगलायेहैं । काहेकोभँगायेपक्षीआछीहमदेहकरैं छांड़िदीजैइन्हैं कहीनीठिकरिपाये हैं । औषधीपिसाईअंगअंगनिमिलाइकियेनीके सुखपाइकहीइनकोछुड़ाये हैं ॥ २१४ ॥

जानिके वधाये ॥ दोहा ॥ हंसकहै सुनि हंसिनी, सुनो पुरातन साखि॥ वधिकभेद जानेनहीं, पति बानैकीराखि ॥ १ ॥ वैद्यकी ॥ कबित्त ॥ तप वैल हजूर हरौल चंडौल कफवाइ मूलहूल हलकारा काहली विचा- रिये। कोटकोतवालको तो दादहै दिवानफोरा फौजदार पित्तीपदचर हंकारिये। तिजारी तापतिल्ली संग्रहणी सेठमानिलेहु खई खाज खांसी राजपत्नी निहारिये । शीत अतीसार युग मंत्री विषम बादशाह भाजि वैदराज आयो सेना लिये भारिये ॥ २ ॥ आई मनजूनकै जनून वढ़ीनून सेती भूनिडारैं रोग अरुण आमल वैठायोहै। अरक फर- कसेतो प्यादिनके यूथ वहु चूरण चतुर चोवदार मनभायो है। गोली किधौं गोला काथ कटक भुसुण्डी मानों उसन सलिल शीत वातको नशायो है। अंजन सुगन्ध लेप मर्दन कराइ पुनि सेन चतुरंग साजि वैद- राज आयो है॥ ३ ॥ छप्पय ॥ नारद शुक सदवैद ग्रंथ भागवत बतावैं। करै संतसंग जव वृत्ति कुपथ होने नहिंपावैं । ओषधि नवधाभक्ति यतन प्रभुको आचारा। चरणामृत करिक्काथ हरै सो सकल विकारा॥ संत रचण रजधोइकै तौइमारौ करिदीजे । पथदे महाप्रसाद अन्न रसना

नहिं लीजे। त्रिगुण दोष वाई चौरासी जनम मरणकोहठिहरै। तत्त्ववेत्ता तिहुँलोकमें फिरि न रोगतिहिं संचरै॥ ४ ॥

लेवोभूमिगांवबलिजांवयादयालुताकीभागभालजाकेताकोदरश नदीजिये। पायोहमसबअबकरोहरिसाधुसेवामानुषजनमजाकीस फलताकीजिये। करिलैनिदेशदेशभाक्तिविस्तारभई हंसहितसार जानिहियेधरिलीजिये। बधिकनजानीजासोंखगनिप्रतीतिकीनी ऐं सोभेषछाड़िये नराख्योमतिभीजिये ॥ २१५ ॥ महाजनसदावर्ती कीटीका ॥ महाजनसुनोसद्राव्रतीताकोभक्तपनमनमें विचारसेवा कीजैचितलाइकै। आवतअनेकसाधुनिपटअगाधमतिसाधलेतजैसे अवेसुबुधिमिलाइकै। संतसुखमानिरहिगयोघरमांझसदा सुतसोंस नेहनितखेलेसंगजाइकै। इच्छाभगवानसुख्यगोनलोभजानि मारि डारयोधूरिगाड़िगृहआयोपछिताइकै ॥ २१६ ॥ देखैमहतारी मगबेटाकहांरह्योपगिबीतेचारियामतऊधाममेंनआयोहै। फेरीनृप डौंड़ीजाकेसंतसंगआयलौंड़ीकह्योयोंपुकारिसुतकौनेबिरमायोहै। वेगिदेवताइदजैआभरणादियोलीजैकहीसोसंन्यासयिहमारयोमन लायोहै। दईलैदिखाइदेहबोल्योयाकोगहिलेहुयाहीनेहमारोपुत्रमारे उनीकेपायोहै ॥ २१७ ॥

हिये ॥ श्लोक ॥ आराधनानां सर्वेषां विष्णोराराधनं परम् ॥ तस्मात्परतरं देवि तदीयानां समर्चनम् ॥ १ ॥ भक्ते तुष्टो हरिस्तुष्टो हरौ तुष्टे च देवताः ॥ भवंति सिक्ताः शाखाश्वतरोर्मूलनिषेचनात् ॥ २ ॥ आरंभगुर्वी क्षयति क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ॥ दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ ३ ॥ मनमें विचार ॥ नवमे ॥ मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः ॥ ४ ॥ चितलाइके ॥ कर नहीं तौ भक्ति डिगिजाइ जैसे पाथर चढ़ावते तौ बडी बेर चढ़े चित्तबिना नेक में गिरिपरे हैं ॥ ५ ॥ साधुलेत अनेक प्रकारके साधु आवे हैं ॥ जिन में न्यारी न्यारी क्रिया महादेवकीसी रीतिजानौ ॥ ६ ॥

बोल्योअकुलाइ मैंतौदियोहैबताइमोकोदेवौजुछुड़ाइनहींझूंठक छुभाषिये। लेवौमतिनामसाधुजोउपाधिमेटउचाहौजावौंउठिऔर कहूंमानिछोरिनाखिये। आइकेबिचारकियोजानीसकुचायोहियोबो लिउठीतियासुतदैकनीकेराखिये। परेउबधूपांइतेरीलीजियेबुलाइ पुत्रशोककोमिटाइऔरखरीअभिलाषिये॥ २१८॥ बोलिलियोसं तसुताकीजियेजुअंगीकारदुखसोअपारकाहूबिमुखकोदीजिये। बो ल्योसुरझाइमैंतौमारयोसुतहाइमोपैजियेहूनजाइ मेरोनामनहींली जिये। देखौंसाधुताईधरीशीशपैबुराईइनरतीहूनहोसकियोमेरुसम रीझिये। दईबेटीब्याहिकहिमेरोउरदाहमिटउकीजियेनिबाहजगमा हिं जौलौंजीजिये॥ २१९॥ आयेगुरुघरसुनिदीजैकीनसरिबड़े संतसुखदाईसाधुसेवालेवताईहै। कह्योसुतकहांअनूपायोसुतकैसी भांतिकहिकोबखानेजगमीचुलपटाईहै। प्रभुनेपरीक्षालईसोईहमैंआ ज्ञादई चलियेदिखावौजहांदेहकोजराईहै। गयोवाहीठौरशिरमौरह रिध्यानकियोजियोचल्योआयोदासकीरतिबड़ाईहै॥ २२०॥ मूल॥ चारोयुगचतुर्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरन दारुभईतरवारिमारुप यरचीभुवनकी। देवाहितासितकेशप्रतिज्ञाराखीजनकी। कमध्वज केकपिचारुचितापरकाष्ठलाये। जैमलकेयुद्धमाहिंअश्वचढ़िआपन धाये। घृतसहितभैंसचौगुणीश्रीधरसंगशायकधरन। चारोयुगचतु र्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरन॥ ५२॥

लेवोमति नाम साधु॥ कुंडलिया॥ भुस ऊपरको लीपनो अरु बा- रूकी भीति॥ भूनकी मनो मिठाई॥ बाजीगरको बागस्वप्नमें नवनिधि- पाई॥ अजा स्तन ज्यों कंठ तुच्छ चादरकी छाया। पूरवबस्तु बि- सारि पश्चिमदिशि ढूंढन धाया॥ आन उपासक रामबिनु अगर सुऐ- सीरीति। भुस ऊपरको लीपनो अरु बारूकी भीति॥ कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथा कर्त्तुं समर्थः॥ ऐसे प्रीतिमें अवगुण दीखे जैसे मजनू की सहनकफोरी जब नाच्यो॥ १॥

भुवनचौंहानकीटीका॥ सुनोकलिकालबात औरहैपुराणख्यात भुवनचौहानजहांरानाकीदुहाईहै। पट्टायुगलाखखातसेवाअभिलाप माधुचल्योई शिकारनृपभीरेसँगधाईहै। मृगीपाछेपरेकरेटूकहति ज्ञाभवनजे आइगईदयाकहीकाहेकोलगाई है। कहैमोकोभक्तक्रियाकरैमैंअभक्तनिकी दारुतरवारिधरौयहैवनभाईहै॥ २२१॥

सुनों कलिकालहै तीन युगनमें तौ पुराणन में विख्यातहैं सतयुगमें तौ ध्रुव त्रेतामें प्रह्लाद हैं दूसरो दास राजा रामाश्वमेधमें कथा है द्वापरमें भीष्मपितामह अरु द्रौपदी तीन युगन में हरि प्रकट दर्शन देते कलियुगमें तौ जीव लगोहहैं याते कलियुगके जीव अधिकारी नहीं शून्य हैं सो नहीं और युगनमें बरदेके छुटि जाते दश दश हजार वर्ष तप करिकै स्त्री धनमाल मांगते सोहै छुटिते और ये कलियुग के जीव तनकहू दर्शन देहिंतौ चिपटि जाहिं क्योंकि गोपिनने द्वापरमें कृष्ण देखिकै घरछोडेहैं कलिके जीव कागज देखिके घर छोडिदेहैं फिरि घरको मुख न देखैंगे पीतौ घरहूको आई॥ १॥ कवित्त॥ रसिकप्रवीणनिकी कविताई नाना भांति गाई रसस्वादही सों होति सफलाई है। यहै जानि मोहनजू भोग भोगता बनाये आये चलेधुरिही सो सबनिजनाई है। त्रियुग प्रकट रूप देखे नितनैनन सों बैनमें स्वरूप लखिहोति अधिकाई है।कल कलिकालके लगोहैं येरसाल जीव छोडि हैं नक्योंहूं हरि मूरति छिपाईहै॥ २॥ ये वाणीमें साक्षात् मूरतिही देखै है अधिकाई तो येईहै याते प्रगट दर्शन नहीं देहैंहरि॥ ३॥ कृपा॥ श्लोक॥ वैष्णवानां त्रिकर्माणि दया जीवेषु नारद॥ श्रीगोविन्देपराभक्तिस्तदीयानां समर्चनम्॥ ४॥

औरएकभाईतानेदेखीतरवारिदारुसक्योनसँभारिजाइरानाकोजनाईहै। नृपनप्रतीतकरेकरैयहसौंहनानावानोप्रभुदेखितेजबातनचलाईहै। ऐसेहीबरषएककहतव्यतीतभयोकहैमोहिंमारिडारोजोपैमैं बनाईहै करीगोटकुंडजाइपाइकैप्रसादबैठे प्रथमनिकासिआपसवन दिखाईहै॥ २२२॥ क्रमसोंनिहारिकहीभुवनविचारिकहाकह्योचा-

हैदारुमुखनिकसतसारहै। काढ़िकेदिखाइमानोंबीजुरीचमचमाइआ
ईमनमांझबोलेउवाकोमारोभारहै । भक्तकरजोरिकैबचायोअजु
मारियेक्योंकहीबातझूंठनहींकरीकरतारहै। पटादूनादूनपावैआवौ
मतिमुजराकोमैंहीवरआऊं होइमेरोनिस्तारहै ॥ २२३ ॥

मारिडारिये॥ एतेसत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्यये।सामा-
न्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये ॥ तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं
स्वार्थाय निघ्नन्ति ये ये निघ्नंतिनिरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥ २ ॥
कवित्त॥ तजि स्वारथऔ परमारथको चित्तदैके सुधारत देवतजे। स्वारथहू
परमारथहू चित्तदैके सँभारत मानुष ते। परमारथ को तजि स्वारथ चित्त-
दैके सुधारत राक्षस जे। स्वारथहू परमारथहू चित्तदैके जे बिगारत जानो
नते ॥ ३ ॥ अरिल्ल॥ भई तला यागौ ठजुरेजाहि चक्कवे। परचौनीजे आ-
जु खाइदै लप्पवे। परमेश्वर पतिराखी बात नहिं कहनकी। बिजुली ज्यों
तरवारी चमकी भुवनकी ॥ ४ ॥

रूपचतुर्भुजकेपंडाकीटीका ॥ दरशनआयोरानारूपचतुर्भुजजूकेर
हेप्रभुपौढ़िहारशीशलपटायेहैं। वेगिदेउतारिकरिलैकैगरेडारिदियो
देखिवारकहेउधौरोधौरेयेआये हैं। कहततोकहिगईसहीनहींजाति
अव महीपतिडारिमारहरिपदध्यायेहैं। अहोऋषीकेशकरौमेरेलिये
सेतकेशलेशहूनभक्तिकहीकियेदेखौछायेहैं ॥ २२४ ॥ मानिराजा
त्रासदुखराशिसिंधुबूड़ौहूतौसुनिकैमिठासवाणीमानोंफेरिजियोहै ॥
देखिश्वेतवारजानिकृपामोअपारकरी भरीआंखिनीरसेवालेशमैंनकि
योहै। वड़ेईदयालसदाभक्तप्रतिपालकरैमैंतौहौंअभक्तऐयेहियोसकु
चायो है। झूंठेसम्बंधहूतेनामलीजैमेरोहीजूतातेसुखसाजैयहदरशा
इदियो है ॥ २२५ ॥ आयोमोररानासेजबारसोंनिहारिरहे केश
काहूऔरकेलैपंडानेलगायेहैं। ऐंचिलियोएकतामेंखैंचिकैचढ़ाईना
करुधिरकीधारानृपअंगछिरकायेहैं। गिरयोभूमिमुर्छाह्वैकैतनकीन

सुधिकछूजाग्योयामबीतेअपराधकोटिगाये हैं । यहअबदंडराजबैठे सोनआवैइहांअबयोंहूंआनमानिकरै जेसिखाये हैं ॥ २२६ ॥

हरयदध्याइये ॥ कुंडलिया ॥ खटिया टूटे भ्यो सरन भुजा भगन भये-ग्रीव । भुजा भगन भये ग्रीव दंड यमराज धरैगो । तहां धराहर और रामबिन कौन करैगो । मात तात सुत सुता प्रिय परिजन कहिचारो । सब सों पर्यो बिछोह सुदिन हरिनाम संभारो । अगर आसरो और तजि राम-नाम दृढ़सींव । खटिया टूटेभ्योसरन भुजा भगन भयो ग्रीव ॥ १ ॥ अहो ऋषीकेश ॥ गीतायां ॥ यंत्रस्य गुणदोषत्वं क्षमत्वं पुरुषोत्तम ॥ अहं यंत्रं भवान् यंत्री नमे दोषो नमे गुणः ॥ २ ॥ झूंठे सम्बंध ॥ दोहा ॥ परसा झूंठे भक्तको, हरि राखत सनमान ॥ जैसे प्रोहित कुपढ़को, देतदान यजमान ॥ ३ ॥ खरौखरौ सब लेतहै, परखि पारखी सार ॥ खोटेदास अनन्यके, गाहक नंदकुमार ॥ ४ ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार सो इनके प्रेरक नंदकुमार ॥ ५ ॥

भयेचारिभाईकरेंचाकरीबेरानाजूकी तामेंएकभक्तिकरैवनमेंबसे रोहै । आइकेप्रसादखावैफेरिउठिजाइतहांकहैनेकुचलौतौमहीनाली जैतरोहै । जाकेहमचाकरहैंरहतहजूरसदामरैतोजरावैकोनवही जाकोचेरोहै । छूटेउतनवनरामआज्ञाहनुमानआयेकियो दागधूवां लागिप्रेतपारनेरोहै ॥ २२७ ॥

एकभक्ति ॥ श्लोक ॥ तुल्यं भूभृति जन्म तुल्यमुभयोस्तुल्यं च मूल्यं वपुरतुल्यं दार्ढ्यमुदग्रटंकखननं तुल्यं च पाषाणयोः ॥ एकस्याखिल वंदनाय विधिना देवत्वमारोपितम् ॥ तद्द्वारे विहिता परस्परपदाघाता-स्पदं देहली ॥ १ ॥ दोहा ॥ ज्ञाति गोत सब परिहरे, प्रभु सेवाकी आस ॥ रंक हरिहिको ह्वैरहै, सो कहिये निजदास ॥ २ ॥ जाके हम चाकर हैं ॥ सवैया ॥ जिनके चिरदै पतितै अति पावनहै वचनै इमि छंदनिके । सुबड़ेइ कृपालु बड़ेइ दयालु बड़े गुणदुःख निकंदनि के । कवि सूरतिजे शरणागत पालहैं दायक सुख आनंदनिके । कृपालबडे करुणाकरहैं हम

चाकरहैं रघुनंदनके ॥ २ ॥ नरनकी करै सेव बड़े अहमद भेव पाछे काम क्रोध लोभ मोह अधिकात है। तासों जीव हिंसा झूंठ निंदा आदि कर्म ह्वै है ताहीके कुसंग नर दुःख दरशातहै। मेरेजान बीज सब दोसनि को चाकरीहै सोई ताहि भावे मद अंध उतपातहै। पूजा परमेश्वरकी परिहरै पुण्य पाप जैसे पौन परसेते पात उड़िजातहै ॥ ३ ॥ नेक सुजरां करिआव ॥ गीतायां ॥ मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु॥ मामेवैष्यसि सत्यंते प्रतिजाने प्रियोसि मे ॥ ४ ॥

सवैया ॥ होहुनिचिंतकरैमतिचिंततू चोंचेंदईसोईचिंतकरैगो। पाइपसारिपरेउरहिसोइतूपेटदियोसोइपेटभरैगो । जीवजितेजलके थलकेपुनिपाहनमेंपहुंचाइधरैगो । भूखहिभूखपुकारतुहैनरतूकहां सुन्दरभूखमरैगो ॥ ३ ॥ कुण्डलिया ॥ यहतौगलौगुपालबनायो सोखालीक्योंरहिसी । सोखालीक्योंरहिसीसंतौगलौगुपालबनायो। पांचमहीनापीछेजनम्यो दूधअगाऊआयो। निरधनकेघरचांकीहोती अन्नकहूंनहिंदीसे। ताहूकोहरिविमुखनराखें आनिपरोसिनिपीसे। कृष्णायहवरजातबतायो धृकमनमाहींवेसी । यहतौगलौगुपालबनायो सोखालीक्योंरहिसी ॥ ४ ॥ ॥ पद ॥ नारदजीमेरेसाधतेअन्तरनाहीं । जोमेरेसाधतेअंतरराखेतेउनरकमेंजाहीं । जहँजनजैहैतहँमैंजैवोजहँसोवेतहँसोऊं। जोकबहूंमेरोभक्तदुखपावे कोटियतन करिखोऊं ॥

सवैया—पाइँदिये चलिये फिरिबेको हाथ दिये हरि कर्म कमायो ॥ कान दिये सुनिये हरिको यश नैन दिये हरि दरश दिखायो । नासिका दीनी हुतीरस सुंघन जीभदई हरिको यश गायो । ये सब साज दिये अति-सुंदर पेटदियो किधौं पाप लगायो ॥ पांडवगीतायाम् ॥ भोजने छादने चिंतां वृथाकुर्वंति वैष्णवाः ॥ योसौ विश्वम्भरो देवः कथं भक्तानुपेक्षते ॥ १ ॥ हाथ हलाये विनतौ पंखाहू न पवन देहै हाथतौ हलायोई चाहि-

ये यतन ॥ करि खाऊं ॥ लक्ष्मीमेरी अर्द्ध शरीरी हरिदासनकी दासी । सब तीरथ दासानिके चरणन कोटि गंग अरु कासी । जहँ जहँ मेरो हरि-यश गावै तैंहीं कियो मैं बासा । आगे साधु पाछे उठि धाऊं मोहिं भक्त-की आसा । मन बच क्रम करि हिरदै राखे सोइ परमपद पावै । कहत कबीर साधुकी महिमा हरि अपने मुख गावै ॥ ५ ॥ हरि अरु हरिजन एक समाना । खोजिलेहु सब वेद पुराना ॥ याते सबही संसार रूपी माया से छुटावे अरु हरिकी भक्तिको बढावे हरिमारगु लगावे ॥

मेरतौप्रथमवासजैमलनृपतिताकोसेवाअनुरागनेकुखटकौनभाव ई । करैंघरीदशतामेंकोऊजोखबरिदेतलेतनाहिंकानऔरठौरमरवा वई । हुतोएकभाईवैरीभेदयहपाइलियोकियोआनिघेरोमाताजाइके सुनावही । करैंहरिभलीप्रभुघोराअसवारभये मारीफौजसबैकहैलो गसचुपावही ॥ २२८ ॥ देखैंहाफेघोराअहोकौनअसवारभयोआगे जबेदेखौ कहीवहीवैरीपरचोहै । बोल्योसुखपाइअजूसांवरोसिपाई कोहो अकेलेहीफौजमारीमेरोमनहरचोहै । तोहीकोदिखाइदईमेरेत रफतनैन बैननिसोंजानीवहीश्यामप्रभूटरचोहै । पूछिकेपढ़ाइदियो बानेपनयहलियोकियोइनदुःखकरैभलीबुरोकियोहै ॥ २२९ ॥

खटको न भावई ॥ गीतायाम् ॥ चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बल-वद्दृढम् ॥ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ कवित्त ॥ छिन में प्रवीन छिन मायामें मलीन पुनि छिनमेंहीं दीन छिनमांहि जैसो शक्रहै । लिये दौरि धूप छिन छिनकमें अनंतरूप कोलाहलठाने मथानकैसो तक्र है । नटकोसो थार किधौं हारहै रहटकोसो धाराकोसो भँवरकै कुम्हार कोसो चक्रहै । ऐसो मन भ्रामकसो अब कैसे थिरहोत आदिहीको चंचल अनादिहीको वक्रहै ॥ श्लोक ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्द्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ३ ॥ पूछिके पठाइ दियो कबित्त ॥ काहेको कपूर चूरि चंदनमें सानतहो काहेको गुलाबनिको कीजत पतनु है।कहैं ऊधो राम राग औरे लग औरै ठठै दौरे कहाहोत यहां

जारत अतनुहै। वेई तरुणी चरुणी वेई सुई लालडोरे उनहींके टांके होत दुखको हतनुहै। छांडि देव पापनिको दूरिकै चवाइनिको आंखिनके घाइनिको आंखेही यतनुहै ॥ ४ ॥

भयोएकग्वाल साधुसेवासोंरसालकरै परैजोईहाथलैकैसंतनखवावही। पायोपकवानबनमध्यगयोखवाइबेकोआइबेकीढीलचोरभैंसिसोचुरावही। जानिकैछिपाईबातमातासोंबनाइकही दईबिप्रभूखेघृतसंगफिरिआवही। दिनहोदिवारीकोसो उनपहरायोहांस आईघरजामलियेरांभिकैसुनावही ॥ २३० ॥ भागवतटीकाकारिश्रीधरसुजानिलेहु गृहमेंरहतकरैंजगतब्योहारहै। चलेजातमगठगमिलैकहेकौनसंगसंगरघुनाथमेरोजीवनअधारहै। जानिइनकोइनाहिंमारिबोउपावकरैं धरेचापबाणआवैवहीसुकुवारहै। आयेघरलायेपूछैश्यामसोंस्वरूपकहां जानिबेतौपारकियेआपडारचोभारहै२३१॥

मूल ॥ भक्तनसंगभगवाननितज्योंगऊवच्छगोहनफिरे ॥ निष्किचनइकदाससतासकेहरिजनआये। विदितबटोहीरूपभये हरिआपलुटाये। साखिदैनकोश्यामखुरइहांप्रभुहिपधारे। रामदासकेसदनराइरनछोरसिधारे। आयुधछाततनअनुगके बलिबंधनअपुवपुधरे। भक्तनसंगभगवाननितज्योंगऊवच्छगोहनफिरे ॥ ९४ ॥

आईघर ॥ दोहा ॥ छल करि बलकरि बुद्धि करि, साधनके मुख दोहिं ॥ हुंडीकेसे दामको, हरिजू सों गनिलेहिं ॥ १ ॥ धरे चाप बाण ॥ कोटि विघन शिरपररहे, कोटि दुष्टकोसाथ ॥ तुलसी कछू न करिसकैं जो सहाइ रघुनाथ ॥ २ ॥ गोहन फिरै ॥ ब्रह्मवैवर्त्ते ॥ भक्तसंगेभ्रमत्येव छायेव सततं हरिः ॥ चक्रेण रक्षते भक्तान् भक्त्या भक्तजनप्रियः ॥ ३ ॥ कृष्णकृष्णेति कृष्णेति संप्रयाति भवेनरः ॥ पश्चान्मद्गमनं पार्थ सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४ ॥

टीका ॥ भक्तनकेसंगभगवानऐसेफिरचोकरैंजैसेवच्छसंगफिरैनेहवतीगाईहै। हरिपालनामविप्रधाममेंजनमलियोकियोअनुरागसा

धुदईश्रीलुटाईहै । केतिकहजारलैबजारकेकरजआये गरजनसरै कियोचोरीकोउपाईहै । विमुखकोलेतहरिदासकोनदेतदुखआयेवर संततियासंगवतराईहै ॥ २३२ ॥ बैठेकृष्णरुक्मिणीमहलतहांशोच परयोहरयोमनसाधुसेवासाहरूपकियोहै । पूछिचलेकहाकहीभक्त हैहमारोएक मैंहूआऊंआवोआयेजहांपूछिलियोहै । अनूमगचल्यो जातबड़ोउतपातमध्यकोऊपहुंचाइदेवोलैरुपइयादियोहै । करोंस माधानसंतमौंलिवाइजाउइन्हैंजाइवनमांझदेखिबहुधनजियोहै॥ २३३ देखिजोनिहारिमालातिलकनसदाचारहोहिंगेभंडारघनजोपैइतौला यों है । लीजियेछिनाइयेहीबारकहेडारिदेवौदियोसवडारिछलाछि गुनीमेंछायोहै । अंगुरीमरोरिकहीबड़ोतूकठोरअहोतोको कैसेछाड़ौ सतजैबेमोकोभायोहै । प्रकटदिखायोरूपसुन्दरअनूपवह मेरोभक्त भूपलैकेछातीसोंलगायोहै ॥ २३४ ॥

चोरी को उपाय ॥ श्लोक ॥ वैष्णवो बंधुसत्कृत्य ॥ विजयरथ कुटुंबबैठे कृष्ण रुक्मिणी महल ॥ वर्जयित्वा महाराज श्रीमद्भगवदालयम् ॥ १ ॥ हर्यो मनसाधु सेवा ॥ साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् । मदन्यं ते न जानन्ति नाहन्तेभ्यो मनागपि ॥ २ ॥ कोउ पहुंचावै विमुख को लेत वनिया ह्वैके चोरी करी वह वैष्णव निकस्यौ पिछौरी लेके भज्यौ द्वै रुपइया मेरे सारेको विवाहहै आजु पहुंचाना देखै जो निहारि जानीके सरावगी वनिया है ॥ ३ ॥

गौड़देशवासीउभयविप्रताकीकथासुनोंएकवैश्यवृद्धजातिवृद्ध छोटोसंगहै । औरऔरठौरफिरिआयेफिरिआयेवनतनभयोदुखीकी नीटहलअभंगहै । रीझेउबड़ोद्विजनिजसुतातोकोंदईअहोरहानही चाहोंमेरेलईविनयरंगहै । साखीदैगुपालअबबातप्रतिपालकरो ठरोकुलग्रामभामपूंछौसोप्रसंगहै ॥ २३५ ॥ बोल्योछोटोविप्र क्षिप्रदीजियेकहीजोबाततियासुतकहैंअहोसुतायाकेयोगहै । द्विजक हैंनाहींकैसेकरौंमैंतोदेनकहीकहीक हाभूलिगयोविथाको प्रयोगहै।भई

सभाभारीपूंछेसाखीनरनारीश्रीगुपालबनवारीऔरकौनतुच्छलोगहै। लावोंजूलिवाइजोपैसाखीभरैआइतौपैऱ्याहिबेटीदीजैलीजैकरोसुख भोगहै ॥ २३६ ॥

फिरि आये बन ॥ पद ॥ ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी। मोहन कुंज मोहन वृन्दावन मोहन यमुनापानी ॥ मोहननारि सकल गोकु-लकी बोलत अमृतबानी ॥ जैश्रीभटके प्रभुमोहन नागर मोहन राधारानी ॥ १ ॥ श्लो ॥ वृन्दावनरजो वन्दे यत्रासन्कोटिवैष्णवाः ॥ २ ॥ कवित्त ॥ कालिंदी के तीर द्रुमडार झुकिनीरआई त्रिबिधि समीर वहै वहै मतिमनकी। कुंजकुंजकुंजनमें बोलत मधुप माते आवत सरसगन्धमा-धुरी सुमनकी । राधेकृष्ण नाम धुनि छाइरही जहां तहां कही न परत शोभा पुलिन अवनिकी ॥ देखि देखि रहे फुलि सुधिबुधि भूलिझूलि ठौर ठौर राखे वृन्दावन वृन्दावनकी॥ ३॥ वन्दौंश्रीवृन्दावन धाम। ब्रह्मादिक दुर्लभ तिनहींको देत तुच्छ जीवन बिश्राम। उद्धवसे हरि प्रीतम चाहत गुल्मजन्म लाग्यो अभिराम। वलिबलिजाई कृपा निधि मोको लाड़लड़ावत आठोयाम। यही रीति रानी श्रीराधा नहीं बिचार रूप गुणधाम। पाइनिलाल भालबेंदी दई भोडरापिय लखिरीझतश्याम ॥ १ ॥ श्लोक ॥ वाराणस्यां विशालाक्षि विमला पुरुषोत्तमे ॥ रुक्मिणी द्वारकायां तु राधा वृंदावने वने ॥ २ ॥ छप्पय ॥ सवनकुंज अलिगुंज पवन तहँ त्रिविधि सुहाई। रतन जटित अवनी अनूप यमुना बहि आई ॥ छऋतुकोक संगीत रागरागिनि सखिरतिपति। सब सुखराज समाज सहज सेवत अतिनित प्रति ॥ शृंगारहास्यरसप्रेम हैं काल कर्म गुन कछु न डर। दंप-ति विहार गोविंद सरस जैजै वृंदाविपिनवर ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ ब्र-ह्माके कमंडलुते गिरिजा प्रचंडनते शिवजटा मंडनते धारायों बहतिहै। तीनों लोक पावनको आपदा नशावनको जाके गुणगावनको वाणी यों चहतिहै। कहै कबिराइ सुर असुरहु पूंजैं जाहि सुरधुनी कहे दुख पाप नरहतहै। यमुनाजीकी महिमा याते न कही परै गंगापगपानी ताकी

पटरानी कहत है॥ ४ ॥ कवित्त ॥ रसिबो बसिबो वृन्दावन को हँसिबो मिलि संतनमें रहिये । पढ़िबो गुनिबो नित राम सदा सुख सों लहि जो जितनौ चाहिये । योगी सुयती हियध्यान धरैं जगजीवनि भाग बड़ौ च-हिये । भ्रमणा मिटि जाइ सबै जियकी यमुना यमुना यमुना कहिये ॥ ॥ २ ॥ यमुना सुभगतीर कुंजसुख पुंजभीर मोर पिक कीर धुनि भांति भान्ति हेरीहै । फूलीद्रुम डारैं गुंजमधुप बिहारैं प्यारी प्रीतम निहारैं आंखैं चहुंदिशि हेरी है ॥ पुलिन प्रकाश रास बिबिध बिलास जहां बढत हुलासबात बीते होति मेरी है । कैसो यहधाम अभिराम वृन्दा-बनं नाम ऐसी छबि हेरीपरी रोमरोम बेरी है ॥ ६ ॥ दोहा ॥ उपमा वृन्दा बिपिनकी कहिधौं दीजै काहि ॥ कोटिकोटि वैकुंठहू, तिहि सम कहे न जाहि ॥ ७ ॥

आयोबृन्दाबनबनवासीश्रीगुपालजूसोंवोल्योचलौसाखीदेवलईहै लिखाइकै । बीतेकैऊयामश्यामसुंदरजूप्रतिमानचलैतौपैवोल्योक्यों जुभाइकै । लागेजबसंगयुगसेरभोगधरेउरंगआधेआधपावैंचलेउनूपु रबजाइकै । धुनितेरेकानपरैपाछेजनिडीठि करैकरैरहौंवाहीठौरक हीमैंसुनायकै । गयेढिगग्रामकही नेकुतौचिंताउरहैचितयेतेठाढ़ेदि योमृदुमुसुकाइकै । लावौजाबुलाइकहीआइदेखौआयेआयसुनतही चौंकिसबग्रामआयोधाइकै । बोलिकैसुनाईसाखिपूजीहिये अभिला षलाषलाषभांतिरंगभरेउउरभाइकै । आयोनसरूपफेरिबिनयकरि राख्योघेरिभूपसुखढेरदियेअबलौंबजाइकै ॥ २३७ ॥

सुखढेरदियो ॥ कवित्त ॥ लागी जब आश तब उतऱ्यो आकाश हूंते सिंधुजलजंत्र रसचीह्नो पानकीन्होहै । देख्यो हितसार वाको उदर बिदारि कढ़्यो चढ़्यो मोलभारी व्रासंपुटनिलीनोहै । चाहत किशोर भ्रम्यो दशदिशिओर लग्यो ब्रजचितचोर जियबारि फेरिदीनोहै । उरके सुलाक मोती नासिका बुलाकभयो बड़ोई चलाक मोहिं लाकमन की-नोहै ॥ १ ॥ बदन सुराही में छबीलो कबिछातौमद अधर पियाला

क्षणक्षणमें गहतुहै। अलसाइके पोटत कपोल पर्य्यंकपर कबहूं गजक जानिं भषन चहतुहै। प्रेमनगसाथी ये तौ सदाई अशंकभारि छकोई रहत कोऊ कछु न कहतुहै। झुकि परै बातके कहेते अनखात न्यारो बेसरिको मोती मतवारोई रहतुहै॥ २॥ दृष्टांत सिद्धको चौबेने तमाचोदियो॥ ३

रामदासकीटीका ॥ द्वारकाकेढिगहीडांकोरएकगांवरहैरहैराम दासभक्तभक्तिजाकोप्यारिये । जागरणएकादशीकरैरणछोरजूके भयो तनवृद्धआज्ञादईनहींधारिये। बोलेभरमाइतेरोआइबोसह्योन जाइ चलोंघरधाइ तेरेलावोगाड़ीभारिये । खिरकीजुमंदिरकेपाछेत हांठाढ़ीकरौभरोअकवारमोकोबेगिहीपधारिये॥ २३८ ॥ करीवा हीभांतिआयोजागरणगाड़ीचाढ़ि जानीसबवृद्धभयोथकीपांवगातिहै। द्वादशीकीआधीरातलैकैचलेउमोदगात भूषणउतारिधरेजाके सांची रातिहै। मंदिरउवारिदेपरिखेहैउजारितहांदैरेपाछेजानिदेखिकहीकौ नमातिहै। वायीपधराइहांकिजानिसुखपाइरहौगहौंचलौजाति आनि मारेउघावअतिहै॥ २३९॥ देखेचहुंदिशिगाड़ीकहूंपैनपायेहरिप छितावौकारिकहैभक्तिकेलगाईहै । बोलिउठेउएकयहओरयहगयोह तोदेखेजाइवावरीकोलोहूलपटाईहै । दासकोजुडारीचोटओटिलई अंगमेंहीनहींमेंतोजाहुविजयमूरतिबताई है । मेरीसरसोनौलेहुकही जनतोलिदेहु मेरेकहाबोलेउबारीतियाकेजताई है ॥ २४० ॥ लगे जबतोलिवेकोबारीपाछेडारिदईनईगतिभईपलाउठेनहींबारीको । त बतौखिसानेभयेसबैउठिघरगयेकैसेसुखपावैंफिरौमतिहीमुरारीको । घरविराजैंआपकहेउभक्तिकोप्रतापजाइकरैजोपैफुरै रूपलालप्यारी को। बलबंधनामप्रभुबांधेबलिभयोतब आयुधकोक्षतसुनिआयेचो टमारीको ॥ २४१ ॥

द्वारकासे दोसौ कोस काहू मंडलमें डांकोर गांव है खिरकीकी गेलब- ताई जैसे रुक्मिणी श्रीकृष्णने हरीही भगवान् अपने गुण अपने भक्त- नको सिखावैं सांचीराति तापै दृष्टांत एकडोकरी ठाकुरकी सेवा भहंतको

देतिही सो उनकही दर्शन करि लेहिंगे अंगमेंही ओटिलई तुम अपराधी भक्तमारेउ मरैंगे महाप्रलय करौ हत्यानहीं मेरी सर सोनों अब अपनो नहीं वलबंधन नाम इहां घावप्रति छवौना है रहे यात्रकारको नमतिहै महबूबा देश हर बिचिकोईआनि तमासा जो वैदीनक ॥

मूल ॥ वच्छहरणपीछेविदितसुनोंसंतअचरजभयो । जसूस्वामिकेवृषभचोरिव्रजवासिलाये । तैसेइदियेश्यामवरपादिनखेतजुताये। नाभाज्योंनन्ददासमुईइकवच्छजिवाई । अम्बअलहकौनयेप्रसिद्धजगगाथागाई । वारमुखीकेमुकुटकोश्रीरंगनाथकोशिरनयो । वच्छहरणपीछेविदितसुनोंसंतअचरजभयो ॥८४॥ जसूस्वामीकीटीका॥ जसूनामस्वामीगंगायमुनाकेमध्यरहैंसाधुसेवाताकोखेतीउपजावहीं। चोरीगयेवैलताकीइनकोनसुधिकछूतैसेश्यामहलजुतेमनभावहीं । आयेव्रजवासीपैठवृषभनिहारिकहीइहैंकौनलायोघरजाइदेखिआवहीं ऐसेवारदोइचारिफिरेउनठीकहोत पूछीपुनिल्यायेआयेइन्हें पैनपावहीं॥ २४२ ॥ वड़ोईप्रभावदेख्योतैसेप्रभुवैलदिये भयोहियेभावआइपाइनमेंपरेहैं । निपटअधीनदीनभाषिअभिलापजानिदयाकोनिधानस्वामीशिष्यलैकेकरे हैं । चोरीत्यागिदईअतिसुधिवुधिभई नईरीतिगहिलईसाधुपंथअनुसरे हैं । अन्नपहुंचावैदूधदहीदैलड़ावैआवै संतगुणगावै वेअनंतसुखभरे हैं ॥ २४३ ॥

साधुसेवैरागी हैं हरीको सांचो सनेहतो तबहीं जानिये जब हरिके प्यारेन में सनेह होई ॥ १ ॥ संतसे वाहिरि प्रसन्न मजनूको तो सलाम करी लैलेकी गली में देखो करै द्विज दोप साधुसेवा के प्रतापसों वडो वैश्नव भयो ताहि देखिके ॥ २ ॥ श्लोक ॥ काककुक्कुटकायस्थाः स्वजातिपरिपोषकाः ॥ स्वजातिपरिहंतारः श्वानसिंहगजाद्विजाः ॥ ३ ॥ तापैदृष्टांत राजा मरुतको अरुउतथ्यको ॥

नन्ददासकीटीका ॥ निकटबरेलीगांवतामेंसोहवेलीरहैनन्ददासविप्रभक्तसाधुसेवारागीहै । करैंद्विजदोषतासोंमुइएकवाछियाले डारि

दईखेतमांझगारीजकलागीहै । हत्याकोप्रसंगकरैसंतजनहूंसोंलरैहि न्दूसोंनभारैयहबड़ोईअभागीहै । खेतपरजायवाहिलईहैजिवाइदेखि परदोषीपांइभक्तिभावमतिपागीहै ॥ २४४ ॥ अल्हकीटीका ॥ चले जातअल्हमगलगेवागदीठिपरचो करिअनुरागहरिसेवाबिस्तारिये । पकिरहेआंबमांगैमालीपासभोगलियेकहोलीजैकहीझुकिआईसबडा रिये । चल्योदौरिराजाजहांजाइकेसुनाईबातगातभईप्रीतिअलुटतपां वधारिये । आवतहीलौटिगयोमैंतोजूसनाथभयो दयोलैप्रसादभक्ति भावईसँभारिये ॥ २४५ ॥ बारमुखीकीटीका ॥ वेश्याकोप्रसंगसु नोंअतिरसरंगभरचो भरचोधरधनअहोऐयेकौनकामको । चलेमग याचनकोठौरस्वच्छआईमनछाई भूमिआसनसोंलोभनहींदामको । निकसीझमकिद्वारहंससेनिहारिसबकौनभागजागेभेदनहींमेरेनामको मोहरनिपात्रभरिलैमहंतआगेधरचो ढरचोजलनैनकहीभोगकरो श्यामको ॥ २४६ ॥ पूछीतुमकौनकाकेभौनमेंजनमलियोकियोसु निमौनमहाचिंताजियधरीहै । खोलिकैनिशंककहोशंकाजिनिआनो मन कहीबारमुखीऐयेपाइआइपरीहै । भरचोहैभंडारधनकरोअंगी कारअजूकरियेविचारजोपैतोपैयहैएककहै । उपाइहाथरंगनाथजूकेअ होकीजियेमुकुटजामजातिमातिहरी है ॥ २४७ ॥

कौनकामको ॥ धर्मशास्त्रे ॥ दशश्वानसमश्चक्री दशचक्रिसमोध्व-ज: ॥ दशध्वजसमा वेश्या दशवेश्यासमो नृपः ॥ १ ॥ काकझुण्ड पैनबैठे हंस सतद्रव्य ऐसे कोन भाग ॥ नारदपंचरात्रे ॥ यास्याद्यमस्थानां हु गवामभयाय यत्तत् ॥ सर्वं भवतिगांगेय को न सेवेतबुद्धिमान् ॥ २ ॥ छप्पय ॥ ज्ञानवंत हठकरैं निबल परिवार बढावैं । विधवाकरैं शृंगार धनी सेवाको धावैं ॥ निर्धन समझैं धर्म नारि भरता नहिं मानैं ॥ पंडित किरिया हीन राज दुर्लभ करिजानैं ॥ कुलवंत पुरुष कुलविधि तजैं बंधु न मानत बंधु हित । संन्यास धारिधन संग्रहैं सुये जगमें मूरुख विदित ॥ ३ ॥ भेदनहीं नामको ॥ श्लोक ॥ नह्यंमयानि तीर्थानि न देवा

मृच्छिलामयाः ॥ जोपैद्दहम रीहै ॥ दोहा ॥ सब सुखपावै जासुते, सो हरिजूको दास। दुख पावै कोउ जासु ते, सो न दासरे दास ॥ **रंगनाथ को मुकुट** ॥ तेजीयसां न दोषाय वह्नेस्सर्वभुजो यथा ॥ ४ ॥

बिप्रहूनछुवैजाकोरंगनाथकैसेलेतदेतहमहाथतोकोरहैइहांकीजिये। कियोईबनाईसबघरकोलगाईधनबानिठनिचलीथारमध्यधरिदीजिये। सन्तआज्ञापाइकेनिशंकगईमन्दिरमेंफिरीयोंसशंकधृगतियाधर्मभीजिये। बोलेंआइयाकोलाइआइपहराइजाइ दियोपहराइनयोशीशमतिभीजिये॥ २४८ ॥ मूल ॥ औरयुगनतेकमलनयनकलियुगबहुतकृपाकरी। बीचदियेरघुनाथभक्तसंगठगियालागे। निर्जन बनमेंजाइदुष्टक्रमकियेअभागे॥ बीचदियेसोकहांरामकहिनारिपुकारी। आयेशारंगपाणिशोकसागरतेतारी। दुष्टकियेनिर्जीवसबदास प्राणसंज्ञाधरी। औरयुगनतेकमलनयनकलियुगबहुतकृपाकरी ॥ ॥८८॥टीका॥विप्रहरिभक्तकरिगौनोचल्योतियासंग जाकेढूनोरंगजाकीबातलैजनाइये। मगठगमिलेद्विजपूछेअहोकहांजातजहांतुमजात यामेंमननपत्याइये। पंथकोछुटायोचाहैबनमेंलिवाइजाइकहैअति सूधोपैंड़ोउरमेंनआइये। बोलेबीचरामतऊहियेनेकुधकधकी कहीउहीभामश्यामनामकहांपाइये॥ २४९ ॥

बिप्रहू न छुवै राजाने ऋषिन्यौते सो छोडि गये वनमें कुत्ता को खायो यों सबको खवायो लिंग गाजर सोय बार अंडकोश प्याजनख लहसन हाडमूरी मूड तरबूजसो ऐसो मेरो धान्य निषिद्धहै ॥ १ ॥ नेकुधकधकी ॥ कुंडलिया ॥ बैरी बंधुवा बावरो, ज्वारी चोरलवार। व्यभिचारी रोगी ऋणी, नगर नारिको यार। नगर नारिको यार, भूलिपरतीति न कीजै। सौंहैंसौसौ खाइ चित्तमें एक न लीजै। कह गिरिधर कबिराइ न्याइमें भायो ऐसे। मुखसों हितको कहै पेटमें बैरी जैसे ॥ २ ॥ कमलनयन बहुत सूझै तीनयुग आयुर्दाबुद्धि बल धन रोग नहीं कर्म करसोइबनें कलियुगमें कछू न बनै नाम बतायो कृपाकरि ॥ ३ ॥

चलेलागिसंगअवरंगकोकुरंगकरयो तियापररीझेभक्तिसांचीइन जानीहै। गयेबनमध्यठगलो भलगिमारचोविप्रक्षिप्रलैचलेबधूअति बिलखानीहै । देखैफिरिफिरिपाछेकहैकहादेखोमारचो तबतोउचा रचोदेखोवाही बिचप्रानीहै। आयेरामप्यारेसबदुष्टमारिडारेसाधुप्रा णदैउबारेहितरीतियोंबखानीहै ॥ २५० ॥ मूल ॥ एकभूपभागवत कीकथासुनतहरिकोइरति । तिलकदामधरिकोइताहिगुरुगोविंदजा ने। षटदरशनीअभावसर्वथाघटकरिमाने । भांड़भक्तकोभेषहासहि तभंडकुललाये। नरपतिकेदृढ़नेमताहिपैपाइँधुवाये । भाँड़भेषगा ढ़ोकह्योदरशपरशउपजीभगति । एकभूपभागवतकीकथासुनतहरि होइरति ॥ ५६ ॥

चलेलागि संग ॥ कवित्त ॥ विप्रसोई पढ्यो चारोबेदहूको भेद जाने स्मृति षट शास्त्रमति न्याइ सबरढ्यो है। सोई पढ्यो भारत पुराण पढ्यो पिंगलसो सबै कोश पढ्यो सोतौ काव्यकोषकढ्यो है। पढ्यो आगम सो अगम बिचार वित्त सोई पढ्यो ज्योतिस सो ज्योतिरस मढ्यो है । सोई पढ्यो व्याकरण जानिलिये शब्द वर्ण सोई सब पढ्यो जोई रामनाम रढ्यो है ॥ दोहा ॥ जो है जाके आसरे, ताहीको शिरभार। करुई,हरुई तोमरी, खेइलगावै पार ॥ २ ॥ सवैया ॥ कामसे रूप प्रतापदिनेशसे सोमसे शील गणेश समाने । हरिचंदसे सांचे बडेबिधिसे मघवासे महीप विषै सुख साने। शुकसे मुनिशारद सेवकता चिरजीवन लोमशसे अधिका-ने। ऐसे भये तौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन रामनजाने ॥ ३ ॥ तिलक दामधरि चारि आश्रम हरिके अंगते संत शरीर । वैष्णवोसमदे हस्तु तुलसीकाष्ठधारकः ॥ पूजनीयोमहीपाल वैष्णवो भक्तिवर्जितः ॥ षट्दर्शनीषट्शास्त्रवक्ता दासनहीं संतदास कहावै धनहरिको जैसे गुमास्ता दश रूपया महीना पावै ऐसे ॥ ४ ॥

टीका ॥ राजाभक्तराजडोमभांड़कोनकाजहोइभोइगईयाकेधन हरिकोनदीजिये । आयेभेषधारीलेपुजाइनाचेदैकेनालनृपतिनिहा

रिकहियोंनिहालकीजिये । भोजनकराइभरिमोहरनिथारलायेआगे धरिविनयकरीअजूयहलीजिये । भईभक्तिराशिबोलेआवैबासभावै नाहिंबांहगहेरहेंकैसेचलेमतिभीजिये ॥ २५१ ॥ मूल ॥ अंतरनिष्ठ नरपालइकपरमधरमनाहिंनधुजी । हरिसुमिरनहरिध्यानआनिकाहूनजनावै । अलगनइहिविधिरहैअंगनामरमनलावै । निद्रावशसोभूपवदनतेनामउचारयो । रानीपतिपररीझिबहुतवसुतापरवारयो । ऋषिराजशोचिकह्योनारिसोंआजभक्तिमेरीकुजी । अंतरनिष्ठनरपालइकपरमधरमनाहिंनधुजी ॥ ८७ ॥

राजाभक्तराज ॥ श्लोक ॥ दृढतरनिबद्धमुष्टेः कोशनिषण्णस्य सहजमलिनस्य॥कृपणस्य कृपाणस्य च केवलमाकारतो भेदः ॥ १ ॥ भईभक्तराशी॥ कवित्त ॥ जलके सनेही मीन बिछुरत तजैप्राण मणि बिन अहि जैसे जीवत न लहिये। स्वाति बूंदके सनेही प्रगट जगतमांझ एकसीपि दूजैपुनि नातकहूं कहिये। रविके सनेही वसैं कमल सरोवरमें शशिके सनेही था चकोर जैसे रहिये । तैसेही सुखद एकप्रभुसों सनेह जोरि और कछु देखिकाहू और नाहिं बहिये ॥ १ ॥ राजानेतब बांह गही ॥ सवैया ॥ तजे पितु मात तिया सुत भ्रात कियेजगमात पितातबऔरै । नंदकुमार भजे नहीं मूढ भजे सोइरूप ठहरात न ठौरै। लेत न सीख सिखावत औरै सुदौरत भोग दिशाकर कोरै । भांडभयो विपयी न भयो सुकछ्यो कछू और नच्यो कछू औरै ॥ २ ॥

टीकाअंतरनिष्ठराजाकी ॥ तियाहरिभक्तकहैपतिपैनभक्तपायो रहैसुरझायोमनशोचबढ्योभारीहै । मरमनजान्योनिशिसोवतपिछान्योभाव विरहप्रभावनामानिकस्योविहारीहै । सुनतहीरानीप्रेमसागरसमानीभोरसंपतिलुटाईमानोंनृपतिजियारीहै । देखिउत्साहभूपपूछोसुनिवाहिकह्योरह्योतनठौरनावजीवयोंविचारी है॥२५२॥ देखितनत्यागिपतिभईऔरगतियाकी ऐसीरतिवानमैंनभेदकछूपायोहै । भयोदुखभारीसुधिबुधिसबटारी तब नेकनविचारीभावरा

शिहियेछायोहै । निशिदिनध्यानविरहप्रबलतजेप्राणभक्तरसखान रूपकापैजातगायोहै । जाकेयहहोइसोइजानेरसभोइयामें डारैमति खोइसबप्रकटदिखायोहै ॥ २८३ ॥

नाम निकस्यो बिहारीहै ॥ कवित्त ॥ कुटिल अक्रूरक्रूर बैरी काहूजनमकोहै चेटकसोडारि शिरलैके ब्रज भूरिगो । व्याकुल बिहालबाल वंशीधरलाल बिन मीनज्यों तरफितन प्रेमरसँ झुरिगो । चरण उचाइ चितवत ऊंचेधाम चढि चिंताके चकित भईचैनसब चूरिगो । बारबारकहत बिसूरजलेनैनपूरि धूरि न उडाति आली अवरथदूरिगो ॥ १ ॥ भ्रमैं-भौंर ठौर ठौर केतकी कुमुद और तनक जो लाज करै पंकजके संगकी । चंचल चलाक चित चोकरीकी भूलमति घायलज्यों घूम्योकरे लगनि कुरंगकी । और नहींस्वाद है विवाद काहू बातनिको मनमें न मनसाहै औरके प्रसंगकी । जग में सराहिये सनेहकी नवलरीति बिछुरनि मीनकी औ मिलनि पतंगकी ॥ २ ॥

मूल ॥ गुरुगदितबचनाशिष्यसत्यअतिदृढ़प्रतीतिगाढ़ोगह्यो । अनुचरआज्ञामांगिकह्योकारजकोजेहौं । आवारजइबाततोहिंआयेतेंकेहौं । स्वामीरह्योसमाइदासदरशनकोआयो । गुरुकीगिराबिश्वासफेरिसबघरमेंलायो । शिष्यपनसांचोकरनकोबिभुसबसुनतसोईकह्यो । गुरुगदितबचनाशिष्यसत्यअतिदृढ़ प्रतीतिगाढ़ोगह्यो ॥ ॥ ९८ ॥ टीकागुरुनिष्ठकी ॥ बड़ोगुरुनिष्ठकछूघटिसाधुइष्टमानै स्वामीसंतपूजोमानेकैसेसमुझाइये । नितहीबिचारैपुनिटारैयेउचारै नाहिं चल्योजबरामतिकोकहीफिरिआइये । शपथदिवाइनजराइबेंकोदियोतनलायोयोंफिराइबहैबातजूजताइये । सांचोभावजानिप्राणआइसोबखानकियोकरैभक्तसेवाकरीवर्षलौंदिखाइये ॥ २९४ ॥

दृढ़ प्रतीति करि मानों गुरुके बचन को पर यामें गुरुको शिष्यको भलो होइ ऐसी दृढ़ प्रतीति न करै तापै घोराको दृष्टांत । बड़ोगुरुनिष्ठ नारद वाक्यम् ॥ यस्य साक्षात् भगवति ज्ञानदीपप्रदे गुरौ । मर्त्यबुद्धिः

श्रुतं तस्य सर्वं कुंजरशौचवत् ॥ १ ॥ आचार्यंमाविजानीयात् ॥ करी भक्तसेवा नाभाजू कहीहै ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु, गहीन भक्ता-मनहीं ॥ आदिपुराणे ॥ अस्माकं गुरवो भक्ता वो भक्तानां गुरु वैयम् । अस्माकं बांधवा भक्ता भक्तानां बांधवा वयम् ॥ वैष्णवके अप-राधों को गुरु अरु हरि न बचावै ॥ २ ॥ दोउनके अपराधों को साधु बचावै जैसे दुर्वासाको महादेव गुरु ब्रह्मा दादा गुरु हरि परम गुरु न बचाय सके अंबरीषने बचायो साधुही सब अपराध सों बचावैं और की साम-र्थ्य नहीं सो छोड़ावै याते साधु त्रैलोक्य में बड़े हैं ॥ २ ॥

मूल ॥ संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीविमलरैदासकी । सदाचारश्रुतिशास्त्रवचनअविरुद्धउचारचो । नीरक्षीरविवरनपरमहंसनउरधारचो । भगवतकृपाप्रसादपरमगतिइहितनपाई । राजसिंहासनबैठि ज्ञातिपरतीतिदिखाई । वर्णाश्रमअभिमानताजि पदरजवंदहिजासकी । संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीविमलरैदासकी ॥ ५६ ॥ टीकारैदासजूकी ॥ रामानंदजूकोशिष्यब्रह्मचारीरहैएकगहैब्रह्मचुटकीकोतासोंकहैवानिये । करौअंगीकारसीधोकहोदशबीसवारबरपैप्रबलधारा तामेंबापैआनिये । भोगकोलगावैप्रभूध्याननाहिंआवैअरेकैसेकरिलावैजाइपूछीनीचमानिये । दियोशापभारीबातसुनीनहमारीघटिकुलमेंउतारीदेहसोईयाकोजानिये ॥ २५५ ॥

वाणी विमलरैदासैकी केवल भक्तही गाई ॥ पद ॥ धन्यहरिभक्ति त्रयलोक यश पावनी । करौ सतसंग इहि विमल यश गावनी । वेद पुराण पुराण ते भागवत भागवत ते भक्ति प्रकट कीनी । भक्तिते प्रेमते लक्षणा विना सतसंग नहिं जाति चीनी । गंगा पापहरै शशिताप अरु कल्पतरु दीनता दूरि खोवैं । पाप अरु ताप सब तुच्छ माति दूरि करि अभी की दृष्टि जब संत जोवैं । विष्णुभक्त जिते चित्त पर्धरतिते मन बच करम करि विश्वासा । संत धरणी धरी कीर्ति जग विस्तरी प्रणत जन चरण रैदास दासा ॥ १ ॥ नीरक्षीर ॥ गीतायाम् ॥ निर्मान-

मोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताः सुख-दुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढ़ाः पदमव्ययं तत् ॥ २ ॥ राजसिंहासन पै कहूं चमा-रहू बैठे हैं तब कही गुरुकी संतन की कृपाते बैठि जातहैं कामनहीं स्वरूप मुख्य है ॥ ३ ॥

भातदूधथावैंयाकोछुयोहूनभावसुधिआवैआवैसबपछिलीसोसेवाकोप्रतापहै । भईनभवाणीरामानंदमनजानीबड़ोदंडादियोमानिवेगिआयोचल्योआपहै । दुखीपितुमातुदेखिधाइलपटायेपांइ कीजियेउपाइकियेशिष्यगयोपापहै । स्तनपानाकियोजियोलियोउन्हेंईशजाननिपटअजामफेरिभूलेपायोतापहै ॥ २८६॥ बड़ेईरैदासहरिदासनिसोंप्रीतिबड़ीपितानसुहाइदईठौरपिछवारही । हुतोधनमालकनादियोहूनिहालतियापतिसुखजालअहोकियेजवन्यारही । गाढ़ेपगदासीकाहूयतनप्रकाशीलावै खालकरैजूतीसाधुसंतकोसँभारही । डारिएकछानिकियोसेवाकोस्थानरहैंचौंड़ौअपजानिबांटिपावैयहैवारही॥

पितानसुहाई ॥ कवित्त ॥ पैसेविन बापकहै पूततौ कपूत भयो पैसे विन भाईकहै जीको दुखदाई है । पैसे विन यारकहै मेरो यह यार नाहीं पैसे विन ससुरकहै कौनको जमाई है । पैसे विन बंदेकी प्रतीति नहीं पंचनमें पैसे विन आइघर रोइ रोटीखाई है । कहैं अलमस्तसजे बजेसहो आठौ याम आजुके जमाने में पैसेकी बड़ाई है ॥ १ ॥ धर्म कर्म प्रीति रीति सजन सुहृदताई सकल भलाइनिको पुंजसो बिलाइगो। अंतर मलीन-ह्वैके कलह प्रवेश भयो नरनकलेश निशि दिन सरसाइगो । नहीं रागरंग नहीं-चरचा चतुरता की नहीं सुखसेज धनआनँद नशाइगो । देखिकै निराश जिय लहतन हुलासमन देखतही देखतही ऐसोसमो आइगो ॥ २ ॥ बड़ेईरैदास ॥ दोहा ॥ नंदनँदनकी भक्तिबिन, बडो कहावै सोइ ॥ जैसे दीपक बुझनको बड़ोकहै.सबकोइ ॥ ३ ॥

सहैअतिकष्टअंगहियेसुखशीलरंगआयेहरिप्यारेलियोभक्तिभेषधारिकै । कियोबहुमानखानपानसोंप्रसन्नह्वैकेदीनोकह्योपारससहैराखि

योसँभारिकै । मेरेधनरामकछूपाथरनसरैकामदाममेंचाहौचाहौडारौ तनवारिकै । राईएकसोनौकियोदियोकरिकृपाराखोराख्योवह छानि मांझलेहुगोनिकारिकै ॥ २५९ ॥ आयेफिरिश्याममासतेरहव्यती तभयेप्रीतिकरिबोलेकहौपारसोकीरीतिको । वाहीठौरलीजैमेरोम ननपतीजेअब चाहौसोईकीजैमैंतौपावतहौंभीतिको । लैकैउठिग येनयेकौतुकसो सुनोपावैसेवतमुहरपांचनितहीप्रतीतिको । सेवाहू करतडरलाग्योनिशिकहेउहरि छांड़ौअरआपनीऔराखोमेरीजीति को ॥ २६० ॥

याते हरि भक्तिही वडीहै किये शिष्य ॥ श्लोक ॥ अंत्यजाअपि तद्राष्ट्रे शंखचक्रांकधारिणः ॥ सुधिआवै राजा इंद्रद्युम्नअगस्तस्नापगज- मयेकियोवहुमान ॥ पद ॥ आजुके दिवसकी जाहुँ वलिहार । मेरेगृह आया राजारामजीका प्यार । करों दंडवत चरण पखारों । तन मन धन संतनि परवारों । आंगन भवन भयो अतिपावन । हरिजन बैठे हरियश गावन । कहैं कथा अरु अर्थ विचारें । आप तरैं औरनिको तारें । कहै रैदास मिले हरिदासा । जनम जनम की पूजी आसा ॥ १ ॥ पाथर न सरै काम पारसतौ सोई जो पार उतारै सोतौ एक रामनाम है ॥ २ ॥ डरलाग्यो ॥श्लोक॥ स्तेयं हिंसानृतं दंभः कामः क्रोधः स्मयो मदः । मदोवै रमविश्वासः संस्पर्द्धा व्यसनानिच । एतेपंचदशानर्थाह्यर्थमूलामता नृणाम् । तस्मादनर्थमर्थाख्यं श्रेयोर्थी दूरतस्त्यजेत् ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ कैसाया कैहरिगुण गाई । दोनो सेती दीनों जाई ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ विषयाविष्टचित्तानां विष्णवावेशः सुदूरतः । वारुणीदिग्गतं वस्तु व्रजन्नैंद्रींकिमाप्नुयात् ॥ ७ ॥

मानिलईबातनईठौरलैवनाइचाइसंतनिवसाइहरिमंदिरचिनायोहै विविधवितानतानगनौजोप्रमानहोईभोईभक्तिगईपुरीजगयशछायोहै दरशनआवैलोगनानाविधिरागभोगरागभयोविप्रनकेतनसवछायोहै। वड़ेइखिलारीवेरहेहींछानिडारिकरी घरपैअटारीफोरिद्विजनासिखायो है ॥ २६१ ॥ प्रीतिरसराशिसोरैदासहरिसेवतहै घरमेंदुराइलोकरंज

नादिटारीहै । प्रेरिदियेह्रदयजाइद्विजनपुकारकरीभरीसभानृपआगे कहेउमुखगारीहै । जनकोबुलाइसमुझाइन्याइप्रभुसौंपिकीनो जगयशसाधुलीलामनुहारी है । जितेप्रतिकूलमैंतौमानेअनुकूलयातेसंतनप्रभावमनिकोटरीकीतारी है ॥ २६२ ॥

लोक रंजनादि टारिये ॥ ४ ॥ सवैया ॥ हमसों मनमोहनसों हितहै चुगली करि कोऊ कहा करि है । अबतो बजिके बदनामी भई गुरु लोगनिकेजु कहा डरि है । कवि धीर कहै अटकी छविसों ब्रजमे भटकी बिसर्‍यों घरहै । तुमको यह बातसों कामकहा अपने कोउ जान कुँवा परिहै ॥ १ ॥ मुखगारीहै ॥ पुष्करमाहात्म्य ॥ अपूज्या यत्र पूज्यंते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ॥ तत्र तत्र प्रवर्त्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥ २ ॥ न्याइ प्रभुसोंपि ॥ छन्द ॥ सदा कृपानिधान हो कहा कहौं सुजानहो अमान हान मानहो समान काहि दीजिये । रसाल प्रीतिके भरे खरे प्रतीतिके निकेत रीति नीतिके समुद्र देखि देखि जीजिये । टीकी लगी तिहारियेइ सुआइयो निहारिये लोक रंजनादि टारिये समीप यों बिहारिये । उमंग रंग भीजिये पयोदमोददाइये बिनोदको बढाइये बिलंब छांडि आइये ।किधौं बुलाइ लीजिये॥ ३ ॥तारीहै॥दोहा॥ ज्यों ज्यों आवै बिघनडर त्यों त्यों प्रेम हुलास । जैसे दीपक तम चहै सतगुन होत प्रकास ॥ मन कोटरीकी तारी है हिरण्यकशिपु दुःख दिये तब प्रह्लाद गुण प्रगटे ऐसे ॥ ४ ॥

बसतचितौरमांझ रानीएकझालीनामनामाबिनकामखालीशिष्य आनिभईहै । संगहुतेविप्रसुनिक्षिप्रतनआगिलागीभागीमतिनृपआगे भीर सब गई है । वैसेहीसिंहासनपैआइकैविराजेप्रभुपढ़ैवेदबाणीपैन आयेयहनई है । पतितपावननामकीजियेप्रगटआज गायोपदगोद आइबैठेभक्तिलई है ॥ २६३ ॥

पद गायो॥ ३॥ पद ॥ आयो आयो हौ देवाधि तुम शरण आयो । सकल सुखकी मूल जाकी नाहिंसम तूलसो चरण मूल पायो । लियो विविध जौन वास यमकी अगम त्रास तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिर्‍यौ ॥

माया मोह विषय रस लंपट यह दुस्तर दूर तऱ्यौ । तुम्हरे नाम बि-श्वास छांडिये आन आश संसारी धर्म मेरो मन न धीजै । रैदास दास की सेवा मानहुं देवा पतितपावन नाम आज प्रगट कीजै ॥ १ ॥ सवैया ॥ मृतकको ठौर ठौवन कुल जाको हरि मूरति लो इनमें अरकी । सेवन लग्यो जग्यो जग ऊपर निंदक नर भूसन कूकरकी । हरि प्रसन्न शिर चढ़ौ सिंहासन जैति धुनि काशि नगर की । लाल कृपाल प्रेम रस बंधन निर्णय भक्ति राधिका बरकी ॥ २ ॥ जैमिनिपुराणे ॥ मोरध्वजस्थाने । अंत्यजा अपितद्राष्ट्रे शंखचक्रांकधारिणः ॥ संप्राप्य वैष्णवीं दीक्षां दीक्षिता इव संबभौ ॥ ३ ॥ सप्तमे ॥ विप्राद्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपादारविंदविमुखाच्छ्वपचंवरिष्ठम् । मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थे प्राणं पुनंति सकुलं न तु भूरिमानाः ॥ ४ ॥

गईघरझालीपुनिबोलिकैपठायेअहो जैसेप्रतिपालीअबतैसेप्रतिपालिये । आपहूपधारेउनबहुधनपटवारेविप्रसुनिपांवधारेसीधौदैनिकारिये । करिकैरसोइद्विजभोजनकरनबैठेद्वैद्वैमधिएकपोरैदासकोनिहारिये ॥ देखिभईआंखैदीनभाषैंशिष्यभष्येलावें स्वर्णकोजनेऊकाढ़ेचोत्वचाकीनोन्यारिये ॥ २६४ ॥ मूल ॥ कबीरकानिराखीनहींवर्णाश्रमषटदरशनी ॥ भक्तिविमुखजोधर्मसोअधर्मकरिगायो । योगयज्ञव्रतदानभजनबिनतुच्छदिखायो ॥ हिंदूतुरकप्रमानरमैंनीसबदीसाषी । पक्षपातनहिंबचनसबहिंकेहितकीभाषी ॥ आरूढ़दशाह्वैजगतपरमुखदेखीनाहिंनभनी । कबीरकानिराखीनहींवर्णाश्रमषटदरशनी ॥ ६० ॥

पतितपावन नामकीजिये प्रगट आजुगायो पद आपु बैठे भक्ति मन भाई है निहारिये ॥ भूतानांदेवचरितम् ॥ देखेते ज्ञान आयो ॥ यस्य नास्तिस्वयं प्रज्ञा ॥ १ ॥ जानिगये ॥ एकते अनेक भये परम भागवतही हैं भृंगी भयते भृंग होत ॥ शुकोहंशुकोहम् ॥ वृक्षनिमें दिखायो ऐसे इनको जीत्यो तब सोनेको जनेऊ दिखायो भक्ति विमुख जो धर्म

सो अधर्म करि गायो ॥ २ ॥ भागवते॥ गुरु वैष्णवो गोविप्रं हरि अर्थ सबको पूजै पै ग्रह व्यतीपात देखै सोइ अधर्म स्वर्ग नरक संसार कारण धरम वहै जगछूटै ॥ सोहरिकी शरण जायतब ऐसे ॥३ ॥ तुच्छ दिखायो ॥ दोहा ॥ रामनाम तौ अंक है, अरु सब साधन शून्य ॥ अ-क्षरके सन्मुख रहै, शून्य शून्य दश गून्य ॥ पक्षपात नहीं॥४॥छप्पय ॥ पांड़े भली कथा कहिजानै । औरनि परमारथ उपदेशै आपु स्वारथ लपटानै, ज्यों दीपक धरु करै उजारो निज तन तम सन ठानै । महिषी क्षीर स्रवै औरनिको आपु भुसहि रुचि मानै ॥ श्रोता गोता क्यों न खाइ आचारज फिरै भुलाने । यह कलि छल सबकी मति नाठी समझत लाभ न हाने ॥ हितकी कहत लगत अनहितकी रज राजसमें साने । कहत कबीर बिना रघुवीरहि यह पीरहि को जाने ॥ ५ ॥ भजनबिन ॥ सकर्ता सर्वधर्माणां भक्तोयस्तव केशव ॥ सकर्ता सर्वपापानां यो न भक्तस्तवाच्युत ॥ ६ ॥ यदि मधुमथन त्वदंघ्रिसेवां हृदि विदधाति जहाति वा विवेकी ॥ तदखिलमपि दुष्कृतं त्रिलोके कृतमकृतं तु कृतं कृतं च सर्वम् ॥ १ ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकबीरहियोलियोभक्तिभावजा-तिपांतिसबटारिये । भईनभवाणीदेहतिलकरवानीकरौकरौगुरुरामा नंदगरेमालधारिये । देखैनहींमुखमेरोजानिकैमलेच्छमोको जातन्हा नगंगाकहीमगतनडारिये । रजनीकेशेशमयआवेशसोंचलतआपपरे पगरामकहैमंत्रसोंविचारिये ॥ २६५ ॥ कीनीवहीबातमालातिलक बनाइगातमानिउतपातमातशोरकियोभारिये । पहुँचीपुकाररामानं दजूकेपासआइकही कोऊपूछैतुमनामलैउचारिये । लावोजूपकरि वाकोकबहमकियोशिष्यलायेकरिपरदामेंपूछीकहिडारिये । रामना ममंत्रयहीलिख्योसबतंत्रनिमेंखोलिपटमिलेसांचोमतउरधारिये२६६

सबतंत्रनिमें ॥ श्लोक ॥ श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः ॥ १ ॥ कवित्त ॥ रहे गोनराज

रजधानीपै न पानी पुनि कहै बाक बानी जिमि आशमान जाइगो । सप्त पाताल अरु सात द्वीप भाइ सत एक बेर चांद सूर्य ज्योतिहू बिलाइगो । जोइ कछू सृष्टि रची करताकी वृष्टिही सो एक बेर सृष्टिहूको करता समाइगो । कहैं कवि काशीराम और कछू थिर नाहिं रहिबे को एक राम-नाम रहि जाइगो ॥ २ ॥ छप्पय ॥ यत बिन योगी अफल अफल भोगी बिन माया । जलबिन सरवर अफल अफल तरुवर बिनछाया ॥ शशि बिन रजनी अफल अफल दीपक बिन मंदिर । नर बिन नारी अफल अफल गुण बिन सब सुन्दर ॥ नारायणकी भक्तिबिन राजा परजा सब अफल । तत्त्ववेत्तातिहुंलोक में रामरटैं ते नर सुफल ॥ ३ ॥

बुनैतानोबानोहियरामम‌ड़रानोकही कैसेकैवखानोवहीरीतिक छुन्यारिये । उतनोहीकरैतामेंतननिरवाहहोइभोइगइऔरैवातभक्ति लागीप्यारिये । ठाढ़ेमंडीमांझपटबेचनलैजनकोऊआयोमोकोदेहु देहमेरीहैउघारिये । लग्योदेनआधोफारिआधेसों नकामहोयदियो सबलैबोजोपैयहीउरधारिये॥ २६७ ॥ तियासुतमातमगदेखेभूंखेआ वैं कबदबिरहेहाटनमेंलवैंकहाधामको। सांचौभक्तिभावजानिनिपट सुजानवेतो कृपाकेनिधानगृहशोचपरेउश्यामको । बालदलैधाये दिनतीनियोंबितायेजब आयेधरिडारिदईलहेउहैपरामको। माताक रैशोरकोऊहाकिमसशोरिबांधे डारोबिनजानेसुतनहींलेतदामको ॥ ॥ २६८ ॥ गयेजनदोइ चारिढूंढ़िकेलिवाइलायेआयेघरसुनी बात जानीप्रभूपीरको । रहेसुखपाइकृपाकरीरघुराइदईक्षणमेंलुटाइसबबो लिभक्तभीरको। दयोछोंड़ितानोबानोसुखसरसानोहियेकियेरोषधा येसुनिविप्रतजिधीरको । क्योंरेतेजुलाहेधनपायोनाबुलायेहमें शूद्र निकोदियोजाबोकहैयोंकबीरको ॥ २६९ ॥

बुनै तानो बानो दोऊकरैं सोदोऊ कैसे बने मनतो एकही है मनको अ-भ्यास भजनको इंद्रियनको अभ्यास क्रियाको जैसे जडभरत शरीर त्यागती बार ॥ १ ॥ देवानां गुणलिंगानाम् ॥ अथवा हरि आपही

मडराइ ॥ २ ॥ सुख सरसानो एक फकीर तापै फकीर आवै कही गुजर कैसे है तब कही हमें साहिब देताहै जब खाते हैं संत संतोष सों परे रहेते दूसरो कही ऐसे हमारी गलीके कुत्ता हू करते हैं आप कैसे देताहै तब बांटि खाते हैं तब तौ आनन्द माने है ॥

क्योंजूउठिजाऊंकछूचोरीधनलाऊंनितहरिगुणगाऊंकोऊराहमेंन मारीहै । उनकोलैमानकियोयाहीमेंअमान भयो जोपैजाइं हमैंतोहीतौजियारीहै । घरमेंतोनाहींमंडीजांउतुमरहौबैठे नीठिके छुड़ायोपैड़ोछिपैव्याधिटारीहै । आयेप्रभूआपद्रव्यलायेसमाधान कियोलियोसुखहोयभक्तिकीरीतिउजारीहै ॥ २७० ॥ ब्राह्मणकोरूपधरिआयेछिपिवैठेजहांकाहेकोमरतभूखोजावोजू कबीरके । कोऊ जाइद्वारताहिदेतहैअढ़ाईसेरवेरजिनिलावोचलेजावोयोंवहीरके। आयेघरमांझदेखिनिपटमगनभये नयेनयेकौतुकसोंकैसेरहैधीरके । बारमुखीलईसंगमानोवाहीरंगरंगेजानोयहबातकरीउरअतिभीरके ॥ ॥ २७१ ॥ संतदेखिदुरेसुखभयोईअसंतनिकेतबतौविचारिमनमांझ ओरआयोहै । वैठीनृपसभातहांगयेपैनमानाकियो कियोएकचीजउ ठिजलढरकायोहै । राजाजियशोचपरयोकह्योकहाकह्योतबजगन्नाथपंडापांवजरतबचायोहै । सुनिअचरजभारेनृपनेपठायेनरलायेसुधिकहीअजूसांचहीसुनायोहै ॥ २७२ ॥

नये नये ॥ दोहा ॥ व्यास बडाई जगतकी, कूकरकी पहिचानि । प्रीति किये मुख चाटिहै, बैरकिये तनुहानि ॥ १ ॥ हाथ कछू न लगै भजन गांठिको जाइ ऐसे बिषयिनको संगहै जैसे सेवरिके सुवाको कछू हाथ न लगै देखतही में सुन्दर सेवत बिचारी बडाई खोई आपही आवैगे ॥ २ ॥ बारमुखी लई संग या कुसंगसों कबीर परम साधुताकी महिमा घटीविषे कहनलगे ॥ दोहा ॥ संगति खोटी नीचकी, देखो कारकै व्यास । महिमा घटी समुद्रकी, बस्यौ जु रावन पास ॥ ३ ॥ जल ढरकायो ऋषभदेव यथेष्ट कृपा देखि जगत बुरोहोय ॥

कहीराजारानीसोंजुवातवहसांचभईआंचलागीहियेअवकहौकहा कीजिये । चलेहीवनातिचलेशीशतृणवोझभारीगरेसोंकुल्हारीवांधि तियासंगभीजिये । निकसेवजारह्वैकेडारिदईलोकल्लाजकियो मैं अ काजछिनछिनतनछीजिये । दूरिजेकवीरदेखिह्वैगयोअधीरमहाआ योउठिआगेकह्योडारिमतिरीझिये ॥ २७३ ॥ देखिकेप्रभावफेरिउ पज्योअभावद्विजआयोवादशाहजूसिकंदरसोनामहै। विमुखसमूहसं गमाताहू मिलाइलईजाइकैपुकारे जूदुखायोसवगाँवहै । ल्यावोरेपक रिवाकोदेखैंरेमकरकैसोअकरमिटाऊंगाढ़ेजकरतनावहै । आनिठा ढ़ेकियेकाजीकहतसलामकरोजानैंनसलामजामेंरामगाढ़ेपावहै ॥ ॥ २७४ ॥ वांधिकैजंजरिगंगातीरमांझवोरिदियोजियौतिरठाढ़ोक हैयंत्रमंत्रआवहीं । लकरीनमांझडारिआगिनिप्रजारिदईनईमानोंभई देहकंचनलजावहीं । विफलउपाइभयेतऊनहींआइनयेतवमतवारौ हाथीआनिकेझुकावहीं । आवतनढिगऔचिंघारिहारिभाजिजाइआ गआपसिंहरूपवैठेशोभागावहीं ॥ २७५ ॥

भाजिजाइ भगवान सिंहरूपहाथीके पास सन्मुख आइ ठाढे भये हाथी चिंघारिके भाज्यौ वादशाह ने कही हाथी क्यों नहीं पेले कही महाराज सन्मुखसिंह है तौ मोहिं क्यों नहींदेखै सन्मुख आवै तब देखो जब आयो तब देखतही वडो डरकियो यह वही नृसिंह है जो प्रह्लादकी रक्षाको प्रगट्यो है याते संतनिके सन्मुख तब हरि दीखै ॥ १ ॥ भगा- वही ॥ दोहा ॥ बधिक बाज करु दुष्ट नर जो इन चीत्यौ होइ । तुलसी या संसारमें, साधु न जीवैकोइ ॥ २ ॥ राजा स्त्रीसों पूछैं कृष्ण सान्दीपनके पढे दक्षिणा। मांगो सो कही स्त्रीसों पूछैं तब प्रभास में बूडिगयो पुत्र सोल्या- ई देव ऐसे पंडित पूछे बिफल उपाव ॥ जले विष्णुःस्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वत मस्तके ॥ ज्वालामालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥ ३ ॥

देख्यौवादशाहिभावकूदिपरेगहेपाव देखीकरामातिमातभयेसव लोक हैं । प्रभुपैवचाइलीजैहमैंनगजवकीजैलजै सोईभावैगांवदेश

नाभोग हैं । चाहैंएकरामजाकोजपैआठौयामऔरदामसोंनकामजा मेंभरेकोटिरोग हैं । आयेघरजीतिसाधुमिलेकरिप्रीतिजिन्हैं हरिकी प्रतीतिवेईगायवेकेयोगहैं ॥ २७६ ॥ होइकैखिसानेद्विजानिजचारिवि प्रनके मूड़निमुड़ाइभेपसुंदरवनायेहैं । दूरिदूरिगांवनमेंनामानिकोपू छिपूछि नामजोकवीरजूकोझूठैंन्योतिआयेहैं । आयेसबसाधुसुनिये तौदुरिगयेकहूंचहूंदिशिसंतनिकेफिरैंहरिधाये हैं । इनहीकोरूपधरि न्यारेन्यारेठौरबैठेएऊमिलिगयेनीकेपोखिकैरिझायेहैं ॥ २७७ ॥

गहेपाव ॥ पद ॥ कलिमें सांचो भक्त कबीर । जबते हरिचरणन रुचि उपजी तबते बुन्यो न चीर । दीनों लेहिं न यांचै काहू ऐसो मनको धीर । योगी यती तपी संन्यासी इनकी मिटी न पीर । पांच तत्त्वते जनम न पायो काल न ग्रस्यो शरीर । व्यास भक्तको खेत जुला योहरि करुणामय नीर ॥ १ ॥ मेरोमन अनतही सचुपावै । जैसे उडत जहाजको पक्षी फिरि जहाज पै आवै ॥ जो नर कमल नैनको तजिकै आन देवको ध्यावै । विद्यमान गंगातट प्यासो दुर्मति कूपखनावै ॥ जिनमधुक- र अंवुजरसचाखौ ताहि करीलनभावै । सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥ २ ॥ दोहा ॥ कहाकरै रसखानिको, कोऊ दुष्ट लवार ॥ जोपतिराखन हारहै, माखन चाखनहार ॥ ३ ॥ हरिको निश्चय मानिकै वनिजकरै जोकोइ ॥ तुलसी मन विश्वास सों, दाम चौगुना होइ ॥ ४ ॥ मछरी मीनखाई कुत्ता बिलाईते बचै ॥

आइअप्सराछरिवेकोलियेवैसकियेहियेदेखिगाढ़ोफिरिगईनहींला गीहै । चतुर्भुजरूपप्रभुआनिकैप्रगटकियोलियोफलनैननिकोवड़ोव डभागीहै । शीशधरैंहाथतनसाथमेरेधामआवो गावोगुणरहौजौलौंते रीमतिपागीहै । मगमेंहैजाइभक्तिभावकोदिखाइवहु फूलनिमँगाइपो ढ़िमिल्योहरिरागी है ॥ २७८ ॥

आई अप्सरा ताको देखिकै मोहित नहीं भये जैसे नारदजी ॥ १ ॥ पद ॥ तुम घरजावो मेरी वहिना । यहां तिहारो लेना न देना राम बिन

गोबिंद बिना बिष लगैं ये बैना॥ जगमगात पट भूषण सारी उर मोतिनके हार। इन्द्रलोकते मोहनआई मोहिं करन भरतार॥ इनबातनको छांडि देहुरी गोबिंदके गुनगावो। तुलसीमाला क्यों नहिं पहिरो बेगिपरम पदपावो॥ इन्द्रलोक में टोटपऱ्योहै हमसों और न कोई। तुमतो हमें डिगावन आई जाहु दईकी खोई॥ बहुते तपसी बांधि बिगोये कचे सूतके धागे। जो तुम यतनकरो बहुतेरा जलमें आगिन लागे॥ हांतो केवल हरिके शरणै तुमतो झूंठीमाया। गुरुपरताप साधुकी संगति मैंजु परमपदपाया॥ नाम कबीर जाति जुलाहा गृह वनरहौं उदासी। जोतुम मान महत करि आई तो इकमाइ दूजे मासी॥ १॥ कवित्त॥ वहमति कहां गई अब मति औरौ भव ऐसी मतिकी जो मति आपनी बिगारोगे। सुधि कहूं सोइ गइ बुद्धिकहूं बूडिगई अब क्यों न भई सो तो नईबाट पारोगे॥ निपटनिरंजन निहारि के बिचारि देखो एकही बिचारि कहा दोसरी बिचारोगे। तुमसों न उज्यारो प्रभु मोसों न पतितभारो मोहिंमति तारो बैकुंठको बिगारोगे॥ २॥

मूल॥ पीपाप्रतापजगबासनानाहरकोउपदेशादियो। प्रथमभवानीभक्तमुक्तिमांगनकोधायो। सत्यकह्योतिहिशक्ति सुदृढ़हरिशरण बतायो॥ श्रीरामानंदपदपाइ भयेअतिभक्तिकासींवा। गुणअसंख निरमोलसंतधरिराखतग्रीवा॥ परसप्रनालीसरसभईसकलविश्व मंगलकियो। पीपाप्रतापजगबासना नाहरकोउपदेशादियो॥ ६१॥ टीकापीपाकी॥ गांगरोलगढ़बठपीपानामराजाभयोलयोपनदेवीसेवारंगचढ़्योभारिये। आयेपुरसाधुसीधोदियोजोईसोईलियोकियोमनमांझप्रभुबुद्धिफेरिडारिये। सोयोनिशिरोयोदेखिसुपनोविहाल अतिप्रेतविकरालदेहिधरिकैपछारिये। अवनसुहाइकछूवहुपाइंपरिगईनईरीतिभईयाहिभक्तिलागीप्यारिये॥ २७९॥

आयेपुरसाधु॥ पीपाकी दयारहै भक्तिअंग में॥ कवित्त॥ देवी

हेठि शीतला बराही जा जगावै राति अऊत पितर पंचपीरको मनावै हैं। खैंतखाल गूंगारव भैरव भूपालादिक नाना देवता मनावै नगरकोट जावै से। ब्याहकाज छौंछिक परोजन सराध भात काटिकै करज यों उदारता दिखावै हैं। केवल जगतहराम सुमिरै न सीतारामकोपैं जब धर्मराज नरकको पठावैहैं ॥ १ ॥ पीपाजी भवानी को सेवैं पै दया भक्ति अंगरहै याते साधुआये दियो सीधा जोई सोई लियो ॥ श्लोक ॥ यदृच्छा लाभसंतुष्टो द्वंद्वातीतो विमत्सरः ॥ २ ॥ कियो मनमांझ साधुनिने भोग धरिकै हरिसे कही जेइँके चुपकरि मति ह्वै रहियो राजाके भक्ति उपजाइयो ॥ ३ ॥ भागवते एकादशे ॥ भूतानां देवचरितं दुःखाय च सुखाय च। सुखायैवहि साधूनां त्वादृशामच्युतात्मनाम् ॥ ४ ॥

पूछौहरिपाइवेकोमगजबदेवीकही सहीरामानंदगुरुकरिप्रभुपाइये। लोगजानैबौरोभयोगयोयहकाशीपुरीफुरीमतिअतिआयेजहांहरिगाइये। द्वारपैनजानदेतआज्ञाईशलेतकहीराजमीनहेतसुनिसबही लुटाइये। कहीकुंवागिरैचलेगिरनप्रसन्नहिये जियेसुखपायेलायेदरशदिखाइये॥ २८० ॥ कियेशिष्यकृपाकरीधरीहरिभक्तिहियेकही अबजावोगेहसेवासाधुकीजिये। बितयेबरषजबसरसटहलजानिसंत सुखमानिआवैघरमध्यलीजिये। आयेआज्ञापाइधामकीनीआभिराम रीतिप्रीति कोनपारावारचीठीलिखिदीजिये। हूजियेकृपालवहीबात प्रतिपालकरौचलेथुगवीशजनसंगमतिरीझिये॥ २८१ ॥

पूछो हरि पाइबोको मग जैसे राजा मचुकुंदने देवतनपै मुक्ति मांगी देवता बोले हमपै मुक्ति कहां होइ तौ हमहूं मुक्ति न होई तापै दृष्टांत शीतलाको तब सोइबो मांग्यो मुक्तिही तुल्यहै देवीने रामानंद बताये धरी हरि भक्ति हिये उपदेशन करिधरि दियो जैसे आधेको अपनो बड़ो अभ्यास जैसे अज्ञानी विषयीको तौ विषयको स्वतै सिद्धि ज्ञान॥सवैया॥ जबते तुम आवन आशदई तबते तरफौं कब आइहौजू। मन आतुरता मनहीं में लखौं मनभावन जान सुहाइ होजू। विधिके छिनलौं दिन

बाटपरै यह जान वियोग बिताइहौ जू। सरसौ घन आनँद वारस सों सुमहारसको बरसाईहौजू ॥ १ ॥

कवीररैदासआदिदाससवसंगलियेआयेपुरपास पीपापालकीलै आयोहै । करीसाष्टांगन्यारीन्यारीविनयसाधुनिकोधनकोलुटाइसोस माजपधरायोहै । ऐसीकरीसेवावहुमेवानानारोगभोगवाणी केनयोग भागकापैजातगायोहै । जानीभक्तिरीतिवररहौकेअतीतिहोहुकरिकै प्रतीतिगुरुपगलागिधायोहै ॥ २८२ ॥ लागीसंगरानीदशदोयकही मानीनहींकष्टकोवतावैडरपावैमनलावही । कासरीनफारिमधिमेष लापहिरिलेवोदेवोडारिआभरणजोपैनहींभावही । काहूपैनहोहिदि योरोइभोइभक्तिआइछोटीनामसीतागरैंडारीनलज्यावहीं । यहूदूरि डारौकरौतनकोउघारोकियोदयोरामानंदहियोपीपानसुहावहीं२८३ जोपैयापैकृपाकरीदीजैकाहूसंगकरिमेरेनहींरंगयामेंकहीवारवारहै । सोंहकोदिवायदई लईतबकरधरिचलेढरिविप्रएकछोड़ेनाविचारहै । खायोविषज्यायोपुनिफेरिकैपठायोसवआयोसोसमाजद्वारावतीसुख सारहै । रहेकोऊदिनआज्ञामांगीइनरहिवेकीकूदेसिंधुमांझचाहउप जीअपारहै ॥ २८४ ॥

करी साष्टांगधनको लुटाय ॥ कवित्त ॥ जिन जिनकरनाई तिन करआई तिनकरननाई तिन करनआई है । कागर लिखाइ जिन कागरै लिखाई पाई धरामें धराई जिन धरा धूरि खाई है । दैदै लवराई जिन लई है पराई अब ताहू पास नेकहू न रहति रहाई है । जिनजिन खाई तिन उदर समाती खाई जिन न खवाई तिन खाई वहुताई है॥ १ ॥ श्लोक॥ बोधयंति न याचंति भिक्षां कारागृहे गृहे । दीयतां दीयतां नित्यमदातुः फलमीदृशम्॥ २ ॥ अहंता ममता बिनछूटेहारि प्रापति निश्चयन याते कुवागिरों प्रतीति गुरु पगलागि सूरदासग्रामकी खबरिराखे परग्रामकी नहीं ऐसे जीव विषे जाने हरिको नहीं सो इनकही गुरुआश्रयरहिये तो भलो हायसौंहको दिवाइदई जैसे तेरी प्रतीति भुक्त वैराग्य बलखबुखारेको बादशाह फकीर

एक संगत्री कही ऐसे आज्ञा ॥कवित्त॥ सबसुख दैकै शरणागत को एकै वार भक्तिके दियेपै और ठाठ ठठवत हौ। पावन पतित यह विरद तिहारो ताके दोष दुःख पुंज पलहीमें मिटवतहौ। सुरज कहत ताहि अपनो के राखौद्वार मेरी बारहीको क्यों अबार हट वत हौ ॥ देवकार काके वेद दानतार काके मोहिं नाथ द्वारकाके पठवत हौ ॥ १ ॥

आयआगेलेनआपुदियेहैंपठायजन देखीद्वारावतीकृष्णमिलेदहु भाइकै। महलमहलमांझचहलपहललखीरहेदिनसातसुखसकैकौन गाइकै। आज्ञादईजाइबेकोजाइबोनचाहैहियेपियेबहुरूपदेखौमोहिं कोजुजाइकै। भक्तबूड़िगयेयहवड़ोईकलंकभयो मेटौतमअंकशंक गहीअकुलायकै ॥ २८५ ॥ चलेपहुँचाइबेकोप्रीतिकेआधीनमहाबि नजलमीनजैसेऐसेफिरिआयेहैं। देखिनईबातगातसूकेपटभीजेहिये लियेपहिचानिआनिपगलपटायेहैं। दईलैकैछापपापजगतकेदूरिक रोढरोकाहूओरकहिसीतासमझायेहैं। छटेईमिलानवनमेंपठानभेंट भई लईछीनितियाकियाचैनप्रभुधायेहैं ॥ २८६ ॥ अभूलगिजावो घरकैसेकैसेआवैडरबोलीहरिजानियेनभावपैनआयोहै। लेतहौंपरि भैंतौजानोतेरीशिक्षाऐयेसुनिदृढ़बातकानअतिसुखपायोहै चलेमग दासैरसतामेंएकसिंधुरहै आयोवासलेतकियोशिष्यसमझायोहै। आयोऔरगांवशेपशाहीप्रभुनाव रहेकरेवासहरेटरेचींधरसुहायोहै॥

आयेआगे लैन ॥ श्लोक ॥ क्षीरेणात्मगतोदकाय निखिला दत्ताः पुरा स्वेगुणाः क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसास्वात्माकृशानौ हुतः ॥ गंतुं पावकन्मुन्मनास्तदभवत्रातुंचमित्रापदं युक्तं तेन जलेनशाम्यति सतां मैत्रीपुनस्त्वीदृशी ॥ १ ॥ दोहा ॥ सीतापतिरघुनाथजी, तुमलगि मेरी दौर। जैसे कागजहाजको, सूझत और न ठौर ॥ ४ ॥

दोऊतियापतिदेखैंआयेभागवतऐयेधरकीकुगतिरसांचीलैदिखाईहै। लहँगाउतरिवेंचिदियोताकोसीधोलियोकरोअजूपाकबधूकोट मेंदुराईहै। करिकैरसोईसोईभोगलगिवैठेकहेउआवौमिलिदोऊलहुपो

छेसीतभाईहै । वाहूकोबुलावौलावौआनिकैजिमायोतब सीतागई वाही ठौररनगनलखाईहै॥२८८॥पूंछेंकहौवातयेउचारेक्यों हैं गातक हीऐसेहीविहातसाधुसेवामनभाईहै । आवैंजबसंतसुखहोतहैअनंतत नढक्योकैउघारेउकहाचरचाचलाईहै । जानिगईरीतिप्रीतिदेखीएक इनहींमेंहमहूंकहावैंएयेछटाहूनपाईहै । दियोपटआधोफारिगाहिकैनि कारिलईभईसुखशैलपाछेपीपासोसुनाईहै ॥ २८९ ॥

दोऊतियापति महाराज पीपा अरु सीता श्रीद्वारका ह्वै आयेहैं वेई छाप लाये हैं श्रीकृष्ण जूने दई है ॥ १ ॥ सो इन्हैं लगावैंगो सो मोहींपै आवैगो लंबेसे गोरेसे पीपाजी हैं वर्ष तीसमें अरु सीताजी वर्ष पंद्रह में सर्वांग सुन्दरी गौरांगी मानों सीताही हैं उनको दर्शन साक्षात् श्रीकृष्णही हैं याते नितकी बाटदेखै ॥ २ ॥ दोहा ॥ आज द्वैजतिथि है सखी शशि ऊग्यौ आकाश । मेरे दृग अरु पीवके, हैं दोउराकेपास ॥ ३ ॥ रति सांची जैसे नटकीसी कलालै ऐसे पहले ॥ ४ ॥

करैंवेश्याकर्मअवधर्महैहमारोयहीकहीजाइवैठीजहँनाजनकीढेरी है । घिरिआयेलोगजिन्हैंनयननकोरोगलखिदूरिभयोशोकनेकुनीके हूनहेरीहै । कहैतुमकौनवारमुखीनहींभौनसंगभरुवासगहैंमौनसुनि परीवेरीहै । करीअन्नराशिआगेमोहरेरुपैयापागे पठैदईचौंधरकेतही नवेरीहै ॥ २९० ॥ आज्ञामांगिढोड़ेआयेकभूंभूखेकभूधायेऔचक हींदामपायेगयोस्नानको । मुहरानिभांड़ोभूमिगड़ेउदेखिछोंडिआयो कहीनिशितियाबोलीजावोशरआनको । चोरचाहैचोरीकरैंढेरसुनिवा हीऔरदेखैंजोउघारिसांपडारेहतेप्राणको । ऐसेआइपरीगनीसातसत बीशभई तोरेपांचबांटकरेएककेप्रमाणको ॥ २९१ ॥ जोईआवैद्वा रताहिदेतहै अहारऔरबोलिकैअनंतसंतभोजनकरायोहै । बीतेदिन तीनिधनधाइप्याइछीनकियोलियोसुनिनामनृपदेखिबेकोआयोहै । देखिकैप्रसन्नभयोनयोदेवौदीक्षामोंहिं दीक्षाहैआतीतिकरैआपसोसु

हायोहै । चाहौसोईकरौहैकृपालमोकोढरौअजूधरौआनिसंपतिऔरा नीज्याइलायोहै ॥ २९२ ॥

करैं वेश्या कर्म क्योंकि हमहूं देखा देखी आगेको बढ़े वह तन कौन कामकोहै और तन सबकाम आवे बैल भैंस सुरहगऊ हाथी भेड़ पीपाजी बोले हमैं कोऊ लेइ तौ हमहूं बिकैं सीता बोलीं हमारे पीछे लगिलेहु तुम कैसे बिकौगे बारमुखी होहिंगी सो सत्संगते रंग चढ़्यो गहगह्यो तीनि- बार पुटनि में गहगह्यो चढ़ा है एक पुट पीपाजीसों दूसरो चींधरजीसों तीसरो चींधररानी जीने गहगह्यो कह्यो ऐसे आनिपरी पीपाजीने कही कहा करौगी कही अब बाधा न करैंगी ॥ १ ॥ हतेप्राण ॥ श्लोक ॥ लिखिता चित्रगुप्तेन ललाटेक्षरमालिका ॥ न सापि चालितुं शक्या पंडितै- स्त्रिदशैरपि । लक्ष्मण दर्शन विभीषण आवै पड़ा फूल ढेरी लोह गुञ्जा मांगे ॥

करिकैपरीक्षादईदिक्षासंगरानीदईभईहैहमारीकरौपरदानसंतसों । दियोधनघोराकछूराख्योदैनिहोराभूपमानतनछोराबड़ोमान्योजीव जंतुसों । सुनिजरिबारिगयेभाईसेनसूरजकेऊरजप्रतापकहाकहैसी ताकंतसों । आयोबनजारोमोललियोचाहैखेलनकोदियोबहकाइक हौपीपाजूअनंतसों ॥ २९३ ॥ बोलेउबनिजारोदामखोलिखैलादी जियेजूलीजियेजूआइग्रामचरणपठायेहैं । गयेउठिपाछेबोलिसंतनम होछोकियो आयोवाहीसमयकहीलेहुमनभायेहैं । दरशनकरिहिये भक्तिभावभरेउआनिआनिकैवसनसबसाधुपहरायेहैं । औरदिनन्हा नगयेघोड़ाचढ़िछोड़िदियोलियोबांध्योदुष्टननेआयोमानोलायेहैं ॥ ॥ २९४ ॥ गयेहेबुलायेआपपाछेघरसंतआये अन्नकछुनाहिंकहूं जाइकरिलाइये । विषईवणिकएकदेखिकेबुलाइलईदईसवसौंजक हीसहीनिशिआइये । भोजनकरतमांझपीपाजूपधारेपूछीवारेतनप्राण जबकहिकैजनाइये । करिकैशृंगारसीताचलीझूकिमेहआयोकांधेपैच ढ़ाइलपुबनियांरिझाइये ॥ २९५ ॥

दईदीक्षा ॥ श्लोक ॥ राज्ञश्चामात्यजा दोषा पत्नीपापं स्वभर्त्तरि ॥

यथा शिष्यार्जितं पापं गुरुः प्राप्नोति निश्चितम् ॥ १ ॥ दईसवसौंज ॥ कबित्त ॥ कागनि को मोती चुगावतहै रैनिदिन हंसनि को चुनी चूर कांकरी समेत है । चेरीको चूडा अरु सुन्दर दुशाला लाल शीलहू की बात कभूंहियेहूं न लेतहै । गुणीते गुमानता गुण की पहिंचानि नाहिं आवै जो अजान तासों निपट कछू हेतहै। कोऊ जोसी गांगै सीधा सूधही जवाब देत कंचनी को कंचन उधार लैलै देतहै ॥ २ ॥

हाटपैउतारिदईद्वारआप बैठिरहेचहेसूकेपगमाताकैसेकरिआईहै स्वामीजूलिवाइलायेकहांहै निहारोजाइआईपाइपरचौठरचोराखोसु खदाईहै । मानोंजिनिशंककाजकीजियेनिशंकधनदियोबिनअंकजा पैलैमरैभाई है । मरचोलाजभारचाहैंधरचोभूमिफारिदृग बहैंनीर धारदेखिदईदीक्षापाई है ॥ २९६ ॥ चलतचलतबातनृपतिश्रवणप रीभरीसभाबिप्रकहैबड़ीबिपरीतिहै । भूपमनआईयहनिपटघटाईहो तिभक्तिसरसाईनहींजानैघटीप्रीतिहै । चलैपीपाबोधदैनद्वारहीतेसु धिदईलईसुनिकहीआवोकरौसेवारीतिहै । बड़ोमूढ़राजासोजगौठैबै ठचोमोचीघर सुनीदौरिआयोरहेठाढ़ेकौननीतिहै ॥ २९७ ॥ हुतीव रमांझबांझरानीएकरूपवतीमांगीवहीलावोवेगिचल्योशोचभारीहै । डगमगपांवधरैपीपासिंहरूपकरैठाढ़ौ देखिडरैइतआवैआपरव्वारीहै । जाइतौबिलाइमयोतियाढिगसुतनयोनयोभूमपरकलाजानीनतिहारी है । प्रगटचोस्वरूपानिजाखिचिकै प्रसंगकह्योकहांवहरंगाशिष्यभयो लाजटारी है ॥ २९८ ॥

माता कैसे ॥ सवैया ॥ प्रीतम प्यारो मिल्यो सपने में परी जबनें सुकनींद निहोरे । कंतको आइबो त्योंहीं जगाइ कह्यो सखि बैन पियूष निचोरे । योंमतिराम गयो हियमें तब बालके बालम सों दृगजोरे । ज्यों पटनें अतिही चटकीलो चढ़ैरंग तीसरी बारके बोरे ॥ १ ॥ याको शुद्ध हृदय अबहीं कैसेहै गयो सीताजी के दर्शन ते सीधेकी बेरक्यों न भयो तीनपुट में रंग है द्वै विधि दर्शन एक विधि भोजन विप्रकहैं यहां राजाके

ब्राह्मणनको पीपाजीको बोध क्यों न भयो बाससीपके लासी पत वासो पात्र भेद है ॥ २ ॥

कियोउपदेशनृपहृदयमेंप्रवेशकियोलियोवहीप्रणआपआयेनिज धामहै । बोल्योएकनामसाधुएकनिशिदेहुतिया लेहुकहीभागोसंग भागीसीतावामहै । प्रातभयेचलेनाहिं रैनिहीकीआज्ञाप्रभुचल्योहा रिआगेघरघरदेखीग्रामहै । आयोवाहीठौरचलीमातापहुँचाइआऊं आयगहेपांवभावभयोगयोकामहै ॥ २९९ ॥ विषयीकुटिलचारिसा धुभेषलियोधारिकीनीमनुहारिकहीतियानिजदीजिये । करिकैशृंगा रसीताकोठेमांझवैठीजाइ चाहैंमगआतुरह्वैअजूजाहुलीजिये । गयेज बद्वारउठीनाहरीसुफारिवेकोफारेनहींबानोजानिआइअतिखीजिये । अपनोविचारोहियोकियोभोगभावनाको मानिसांचभयोशिष्यप्रभु मतिधीजिये ॥ ३०० ॥ गूजरीकोधनदियो पीयोदहीसंतननेब्राह्मण कोभक्तकियोदेवीदीनिकारिकै । तेलीकोजिवायोभैंसिचोरनपैफेरि लायोगाड़ीभरिगेहूंतनपांचठौरजारिकै । कागदलैकोरोबनियाकोशो कहरचो भरचोघरत्यागिद्वारीहत्याहूउतारिकै ॥ राजाकोऔसेरभई संतकोजोविभवदईलईचीठीमानिगयेश्रीरंगउदारकै ॥ ३०१ ॥

गयो कामहै ॥ दोहा ॥ मन पक्षी जबलग उड़ै, विषय वासना माहिं ॥ प्रेम बाजकी झपटमें, जबलगि आयो नाहिं ॥ १ ॥ विषयी कुटिल ॥ चरण रँगे लोचन रँगे, चले मराली चाल॥ नीर क्षीर विवरण समय, बकउ- घर्यो त्यहि काल ॥ २ ॥ गूजरीको धनदियो साधु बोले ठाकुरजीको मन दही पै चल्यो है ठाकुर क्यों कहैं अपनोहीं क्यों न कहैं ॥ ३ ॥ ब्राह्मणको भक्तिकियो ॥ श्लोक ॥ वांछितकल्पतरुभ्यश्च कृपासिंधुभ्य एवच ॥ पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमोनमः ॥ ४ ॥

श्रीरंगकेचेतधरेउतियहियभावभरेउब्राह्मणकोशोकहरेउराजापै पुजाइकै । चँदवाबुझाइलियोतेलीकोलैबैलदियोदियोपुनिघरमांझ भयोसुखआइकै । बड़ोईअकालपरेउजीवदुखदूरिकरेउ परेउभूमि

गभंधनपायोदैलुटाइकै । अतिविस्तारलियेकियोहैविचारयहसुनेए कबारफिरिभूलेनहींगाइकै ॥ ३०२ ॥ मूल ॥ धन्यधनाकेभजनको विनहीबीजअंकुरभयो । घरआयेहरिदासतिनहिंगोधूमखवाये । ता तमातदुरथोथखेतलंगूरववाये ॥ आसपासकृपीकारखेतकीकरतव ड़ाई । भक्तभजेकीरतिप्रगटपरतीतिजुपाई । अचरजमानतजगत मेंकहुंनिपज्योकहुवैवयो । धन्यधनाकेभजनकोविनहिवीजअंकुरभ यो ॥ ६२ ॥ टीका ॥ खेतकीतोवातकहीप्रगटकावित्तमांझ औरए कसुनौभईप्रथमजुरीतिहै । आयोसाधुविप्रधामसेवाअभिरामकरैट रोढिगआइकहीमोहदीजैप्रीतिहै । पाथरलैदियोअतिसावधानकियो यहछातीलाइजियोसेवैजैसीनेहनीतिहै । रोटीधरिआगेआंखिमूंदिलि योपरदाकेछिपोनहींटूकदेखि भईवड़ीभीतिहै ॥ ३०३ ॥

चितधन्यो तियाहिये भावधन्यो ऐसी स्त्री जाति कैसे भावधन्यो सत्सं- गते एकादशे ॥ सत्संगेनहि दैतेया यातुधानाः खगामृगाः । गंधर्वाप्सरसो नागाः सिद्धाश्चारणगुह्यकाः ॥ २ ॥ विद्याधरमनुष्येषु वैश्याः शूद्राः स्त्रियों- त्यजाः ॥ ३ ॥ घरआये हरिदास ॥ कुंडलिया ॥ घरआये नाग न पूजई बांबी पूजन जाइ। बांबीपूजनजाइ भटकि भ्रम सबरैं आवै । हरिजन हर हर हँसे तिनहिं तजि अंतहि धावै । नकटी भूषण कोटि करै शोभा नहिं पावै । घरमें फजिहत होइ बाहर परिवार जनावै ॥ अगर भूख भाजे नहीं सुपने सो मनखाइ। घरआये नाग न पूजई बांबी पूजन जाइ ॥ ४ ॥ प्रीति है ॥ श्रवणाद्दर्शनाद्ध्यानाद्भक्तिभावोनुकीर्त्तनात् ॥ ५ ॥

वारबारपांवपरैऔरभूखप्यासतजीधरैहियेसांचौभावपाईप्रभुप्या रिये । छाकनितआवैनीकेभोगकोलगावैजोईछोड़ोसोईपावैप्रीतिरी तिकछुन्यारिये । जाकोकोऊखाइताकीटहलवनाइकरैलावतचराइ गाइहरिउरधारिये। आयोफिरिविप्रनेहखोजहूनपायोकिहूं सरसायो वातलैदिखायोश्यामजारिये ॥ ३०४ ॥ द्विजलखिगाइनमेंचाचानिस मातनाहिंभाइनकीचीटहगलागीनिरझरीहै । जायकेभवनसोतारे

वनप्रसन्न करैबड़ेभागमानिप्रीतिदेखीजैसीकरीहै। धनाकोदयालहो इकैआज्ञाप्रभुदईठरौकरौगुरु रामानंदभक्तमतिहरीहै। भयेशिष्य जाइआयछातीसोंलगाइलियेकियेगृहकाजसबैसुनिजैसीधरीहै३०५॥

द्विजलखि गाइन में ॥ कबित्त ॥ गोरज विराजै भाल लहलही बनमाल आगे गैया पाछे ग्वाल गावैं मृदुबानिरी। जैसी धुनि बांसुरीकी मधुर मधुर तैसी बंक चितवनि मंद मंद मुसुकानिरी। कदम विटपके निकट तटनीके तट अटाचढ़ि चाहि पीतपट फहरानिरी। रस बरखावै तनतपनि बुझावै नैन बैननि रिझावै बहुआवै रसखानिरी ॥ १ ॥ भूपके तेल लगायो यह तौ बड़ो आश्चर्य है वैष्णवकीतौ टहलकरै पै अभक्त राजा ताके तेल लगायो तहां टीकाकारने कहो है वही भगवंत संत प्रीतिको विचारकरै धरै दूरि ईशताई पांडवनिसों करीहै ॥ २ ॥

मूल ॥ विदितबातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके। प्रभूदास केकाजरूपनापितकोकीनो। क्षिप्रछुरहरीगहीपानदर्पणतहँलीनो। तादृशिह्वैतिहिकालभूपकेतेललगायो। उलटिरावभयोशिष्यप्रगट परचौजवपायो। श्यामरहतसम्मुखसदाज्योंबच्छाहितधेनुके। विदितबातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके ॥ ६३ ॥ टीका ॥ बांधोगढवासहरिसाधुसेवाआशलगीमतिअतिप्रभुपरचौदिखायोहै। करिनितनेमचलेउभूपकेलगाऊंतेलभयोमगमेलसंतफिरिघरआयोहै। टहलबनाइकरीनृपकीनशंकधरीधराउरश्यामजाइभूपतिरिझायोहै। पाछेसेनगयोपंथपूछेहियेरंगछयोभयउअचरजराजावचनसुनायोहै ॥ ॥ ३०६ ॥ फेरिकैसे आयेसुनिअतिहीलजायेकहीसदनपधारेसंत भईयोंअवारहै। आवननपायोवाहीसेवाअरुझायोराजादौरिशिरनायोदेखीमहिमाअपारहै। भीजिगयोहियोदासभावदढ़लियोपियोभक्तरसशिष्यह्वैकेजान्योसोईसारहै। अबलौंहूंप्रीतिसुतनातभईरीति चलैंहोइजोप्रतीतिप्रभुपावैनिरधारहै ॥ ३०७ ॥

नापित ॥ दशमे ॥ अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमास्थितः ॥ भजते तादृशीं क्रीडां यां श्रुत्वा तत्परोभवेत् ॥ २ ॥ ऐसे तुमने नाऊरूप धरचो तौ हम नाऊके शिष्य ॥ सारसमुच्चये ॥ न शूद्रा भगवद्भक्तास्तेपि भागवतोत्तमाः ॥ सर्ववर्णेषु ते शूद्रा ये न भक्ता जनार्दने ॥ १ ॥ पद रचना ॥ मधुपुरी क्यों न चलो हरीश्याम । इन चरणनकी बलि जाऊं रजधानी कैसे छांड़ि गोकुलघरसों ग्राम । नंद यशोदाकी रट मेटौ वेगि- चलो उठिधाम ॥ निशि बासर कहुँ कल न परतिहै सुमिरत तेरो नाम ॥ तब तुम बेनु बजाइ बुलाई कालिंदीके तीर । अब वै बातैं क्यों बिसरैंगी हरि हलधर दोउ बीर । गोपवधू ब्रज मंडल मंडन सबामिलि जोरैं हाथ । सुखानंद स्वामी सुखसागर तुम वेगि चलो उठिसाथ ॥ २ ॥

मूल ॥ भक्तिदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस । सुखसागरकीछापरायगौरीरुचिन्यारी । पदरचनागुरुमंत्रमनोआगमउनहारी । निशिदिनप्रेमप्रवाहद्रवतभूधरत्योंनिर्झर । हरिगुणकथाअगाधभालराजतलीलाभर । संतकंजपोषणविमलअतिपियूषसरसीसरस । भक्तदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस ॥ ६४ ॥ मूल ॥ महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी । एकसमयअध्वाचलतबरावाकछलपाये। देखादेखीशिष्यतिनहुँपीछेतेखाये । तिनपरस्वामीखिजेबवनकरिविन्नाविश्वासी । तिनतैसेप्रत्यक्षभूमपरकीनीरासी । सुरसुरीसुधरपुनिउदकलैपुहपरेणुतुलसीहरी । महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी ॥ ६५ ॥ मूल ॥ महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ । अतिउदारदंपत्यत्यागिगृहवनको गवनेउ । अचरजभयोतहांएकसंतसुनिजिनहोविभने । बैठेहुतेएकांतआइअसुरनदुखदीयो । सुमिरेशारंगपाणिरूपनरहरिकोकीयो । सुरसुरानंदकीघरनिकोसतराखेउनरसिंहज्यों । महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ ॥ ६६ ॥

तब प्रतिमा रणछोरजीकी ॥ बहुतदिन बसे नगर द्वारका नदी गोम-

तीतीर । ब्रजबासी दरशनकोतरसें परशत श्यामशरीर । प्रेम तीनप्रकार-को तापै कबूतरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ हितकरितुम पठयोलगी, वा व्यज-नाकी बाइ ॥ गई तपति तनकी तऊ, उठी पसीनान्हाइ ॥ १ ॥ महि-मा प्रसाद ॥ पाझे ॥ प्रसादं जगदीशस्य अन्नपानादिकं च यत् ॥ ब्रह्म-वन्निर्विकारं हि यथा विष्णुस्तथैव तत् ॥ विचारं येन कुर्वंति ते नश्यंति नराधमाः ॥ षिजे ॥ गुरोराज्ञा सदाकुर्यान्नतदाचरणं क्वचित् ॥ महादेवजीने विष पियो और कोऊ कैसे पीवैगो गुरुको गुरु न होइ जाइ तापै रोटीको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ गैनेब्याह उछाहको, संतअन्न नहिंखाय ॥ जहां तहांके पायवे, भजन तेज घटिजाय ॥ ३ ॥

मूल ॥ निपटनरहरियानंदकोकरदातादुरगाभई । झरघरलकरी नाहिंशक्तिकोसदनउदारे । शक्तिभक्तसोंबोलिदिनहिंप्रतिवरहीलैडारे । लगीपरोसानिहोसभवानीभैसोंमारे । बदलेकीबेगारिमूड़वाकेशिरडारे । भरतप्रसंगज्योंकालिकालइदेखितनमेंतई । निपटनरहरियानंदकेकरदातादुरगाभई ॥ ६७ ॥ कबीरकृपातेपरमतत्त्वपद्मनाभपरचोलह्यो । नाममहानिधिमंत्रनामहीसेवापूजा । जपतपतीरथनाम नामबिनऔरनदूजा । नामप्रीतिनामबैरनामकहिनामीबोलै । नाम अजामिलसाखिनामबंधनतेखोलै । नामअधिकरघुनाथतेरामनिकट हनुमतकह्यो ॥ कबीरकृपातेपरमतत्त्वपद्मनाभपरचोलह्यो ॥ ६८ ॥ टीका ॥ काशीबासीसाहभयोकोठीसोंनिबाहकैसेपरिगये कृमिचल्यो चूड़िवेकोभीरहै । निकसेपदमआइपूछीढिगजाइकहीगहीदेहखोलोगुणन्हाइगंगानीरहै । रामनामकरैबेरतीनिमेंनवीनहोतभयोईनवीनाकियोभक्तमतिधीरहै । गयेगुरुपासतुममहिमानजानीअहोनामाभास कामकरै कहीयोंकबीरहै ॥ ३०८ ॥

कबीर ॥ दोहा ॥ समझि पढैके पढि समझि, अहो कहो द्विजराय ॥ सुनि यह बातकबीरकी, पण्डितरह्योहिराय ॥ १ ॥ तपजपतीरथनाम ॥ नामलियो जिनसबकियो योगयज्ञआचार ॥ जप तप तीरथपरशुराम, सबै

नामकीलार ॥ २ ॥ नामबैर ॥ कवित्त ॥ कोऊ एक यमन जरठ संग जात कहूं सूकरकेशावकने माऱ्यो ताहिधायकै । जोरसों पुकाऱ्यो मोहिं माऱ्यो है हराम जाति ऐसेकहिवेगि प्राणगये अकुलायकै । गोपदसमान भवसागर सों पारगयो नामके प्रताप ऐसो पद कहो गायकै । प्रेमसों कहैगो कोऊ नाम कृपाराम कौन अचरज रामधाम देत हैं जुचायकै ॥ ३ ॥

मूल ॥ तत्वाजीवादक्षिणदेशवंशीधरराजताविदित । भक्तिसुधा जलसमुद्रभयेबेलाबलिगाढ़ी। पूरवजान्योरीतिप्रीतिउतरोत्तरबाढ़ी। रघुकुलसदृशसुभावसृष्टिगुणसदाधर्मरत । शूरधीरउदारदयापरदक्ष अनन्यव्रत । पदमखंडपदमापाधितप्रफुलितकरसाविताउदित । तत्वाजीवादक्षिणदेशवंशीधरराजताविदित ॥ ६९ ॥ टीका ॥ तत्वा जीवाकी ॥ तत्वाजीवाभाईउभैविप्रसाधुसेवापन मनधँसेबाततातै शिष्यनहींभयेहैं । गाड़ेउएकठठद्वारहोइअहोहरीडारसंतचरणामृत कोलैकैडारिनयेहैं । जबहींहरितदेखैंताकोगुरुकरिलेखैंआयेश्रीकवीर पूजीआशपावलयेहैं । नीठिनीठिनामदियोदियोपरचाइधामकामको इहोइजोपैआवोकहिगयेहैं ॥ ३०९ ॥ कानाकानीभईद्विजजानीजा तिगईपांतिन्यारीकरिदईकोउबेटीनहींलेतहै । चलेउएककाशी जहांबसतकवीरधीरजाइकहीपीरजबपूछेउकौनहेतहै । दोऊतुमभाई करोआपुमेंसगाईहोइभक्तिसरसाईनघटाईचितचेतहै। आइवहेकरीप रीजातिखरभरीकहै कहाउरधरीकछूमतिहूअचेतहै ॥ ३१० ॥

भक्तिसुधा अमृतमै है गुणमादिकता भिष्टभक्तिरूपी अमृत हूमादिक अतिमिष्टपै वहनश्वर अरु यह स्वमुख कर्त्ता यह सन्मुख कर्त्ता वेलावेल घाटहै ॥ मनधरी ॥ दोहा ॥ तोलो बरोबरि गोगची, मोल बरोबरि नाहिं ॥ भेषबरोबरि परशुराम, भेद बरोबरि नाहिं ॥ २ ॥ नामदियो ॥ याते परीक्षा लई सब तीरथ करत कवीरजी आये ॥ ३ ॥ चितचेतहै ॥ चित्तमें बिचारी सम्बन्ध तो सबसों है वेतो अभक्त तुम भक्तसो सम्बन्ध कामको नहीं परपरायो देख्यो स्वयंभू मुनि कर्दम ऋषि ॥ ४ ॥ वंशीधर

प्ह्लादकही पिताउद्धार इकीसकुली ब्रह्मा मारीच कश्यप हिरण्यकश्यप नाना फूफा मामा मौसी पूरबजान्यो ॥ आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरावृद्धिमती च पश्चात् । दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्रीखल सज्जनानाम् ॥ दोऊ तुम भाई करौ ब्रह्माके अंगते स्वयंभू मनु शत रूपा तिनते देवहूती आकूती प्रसूती सृष्टि थोड़ी तब ब्रह्माके बेटा कर्दम आदिदई ॥

करैंयहीबातहमैंऔरनासुहातआयेसबैहाहाखातयहछांड़िहठदीजिये । पूंछिबेकोफेरिगयेकरोंव्याहजोपैनयेदण्डकरिनानाभांतिभक्तिदृढ़कीजिये । तबदईसुतालईयातनप्रसन्नह्वैकेपांतिहरिभक्तनसों सदामतिभीजिये । विमुखसमूहदेखिसमुखबड़ाईकरै धरैहियमांझकहैपनपररीझिये ॥ ३११ ॥ मूल ॥ विनयव्यासमनोप्रकटह्वैजगकोहितमाधवकियो । पहलेवेदविभागकथितपुराणअष्टादशभारतआदिभागवतमथितउद्धारेउ । हरियशअबशोधेसबग्रंथअर्थभाषाविस्तारेउ । लीलाजेजयजयतिगाइभवपारउतारेउ । श्रीजगन्नाथइष्टवैरागसींवकरुणारसभीज्यो । हियोविनयव्यासमनोप्रकटह्वै जगकोहितमाधवकियो ॥ ७० ॥

भाषा विस्तार्‍यो ॥ पद ॥ हरि हरि नाम उचारिये हरियश सुनि ये कान । हरिको मस्तक नाइये हरि हैं सकल गुणके निधान । हाथन हरिके कर्मकारि पावन परिकर्मा दीजै । नैन निरखि श्रीजगन्नाथ आत्मा समर्पण कीजै । कोटि ग्रंथको अर्थ यह श्रीभागवत बिचारा । वासुदेव की भक्तिबिन नहीं नरको निस्तारा ॥ १ ॥ श्लोक ॥ स्त्रीशूद्रद्विज बंधूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा । कर्मश्रेयसि मूढानां श्रेयएवं भवेदिह ॥ २ ॥ इति भारतमाख्यानं कृपया मुनिनाकृतम् ॥ ३ ॥ स्मृतौ ॥ आदौत्रयोद्विजाः प्रोक्तास्तेषां वै मंत्रतः क्रियाः ॥ ४ ॥ ऐसे व्यासने जगत्‌को हित कियो तैसेही माधवदासजीने ॥ मृषा गिरस्ताह्यसतीरसत्कथाः ॥ तापै भट्टजी अरु कूबाको दृष्टान्त ॥ ५ ॥

टीकामाधवदासजीकी ॥ माधवदासद्विजनिजतियातनुत्यागकि योलियोइनजानजगऐसोईब्योहारहै । सुतकीबढ़नयोगलियेनितचाह तहौभईयहऔरलैदिखाईकरतारहै । ताततजिदियोगेहवेईअवपालैंदे हकरैंअभिमानसोईजानियेगँवारहै । आयेनीलगिरिधामरहेगिरिसिंधु तीरअतिमतिधीरभूखप्यासनविचारहै ॥ ३१२ ॥ भयेदिनतीनिये तौभूखकेअधीननाहिं रहेहरिलीनप्रभुशोचपरेउभारिये । दियो सेनभोगआपलक्ष्मीजूलैपधारी हाटककीथारीझनझनपांवधारि ये । बैठेहेकुटीमेंपीठिदियेहियेरूपरँगेविजुरीसीकौंधिगईनीकेननिहा रिये । देखि सोप्रसादबड़ोमनअहलादभयोलयोभागमानिपात्रधरेउई विचारिये ॥ ३१३ ॥

माधवदास कनौजिया ब्राह्मण रहे यह विचारैहैं लरिकास्याने होहिं तौ माता स्त्री की टहलको छोंड़िकै बैराग लेंहि तौलौं स्त्री पाइगई उलटी टहल लरिकनिकी आइपरी जैसे कोई सवारी चाहैहो उलटौ शिरपै घोडा को बाचा धन्यो ॥ १ ॥ दिखाई पालन सबको हरिही क- रैहै अब जो लरिकनको बाटिबो बिचारौं फिरि सगाई ब्याह फेरि छूछक इतने में शरीरकी छूछि ह्वै गई गृह कारज तौ बद्रीनाथके पहाड हैं कब छूटैंगे सह दिखाइके निकान्यो जैसे बलखके बादशाहको ॥ २ ॥ हिये रूपरंग साधु द्वै जातिके एक भगवतकामी एक स्थानी एक गमनी गमनी द्वै जाति के एक पर उपकारी एक अन्तकामी स्थिरी द्वै जातिके एक भगवतकामी एक अर्थकामी शोभादेशचारी ग्रामचारी ग्रामचारीके तीनभेद एक हटानब्रती एकस्थानब्रती एक ग्रानक माधवदास हरिकामी है सो साधुनके भेद हैं ॥

खोलिजोकिंवारथारदेखियेनशोचपरेउ करेंउलैयतनढूंढ़िवाही ठौरपायोहै । लायेबांधिमारीबेनधारीजगन्नाथदेवभेवजबजान्योपी ठिचिह्नदरशायो है । कहीतवआपमेहीदियोजबलियोयाने माने अपराधपांवगहिकैक्षमायोहै । भईयोंप्रसिद्धवातकीरतिनमातकहूं सुनिकैलजातसाधुशीलयहगायो है ॥ ३१४ ॥ देखतस्वरूपसुधि

तनकीविसरिजातिरहिज।तिमंदिरमेंजानेनहींकोइहै । लग्योशीत गातसुनोवातप्रभुकांपिउठे दईसकलातआनिप्रीतिहियेभोईहै। ला गेजववेगवेगीजाइपरेसिंधुतीरचाहैजवनीरलियेठाढ़ेदेहधोईहै । करि कैविचारयोंनिहारिकहीजानेमैंतो देतहौअपारदुखईशतालैखोई है ॥ ३१५ ॥ कहाकरोंअहोमोपैरहोनहींजातनेकुमेटौव्यथागात मोकोव्यथावहुभारीहै । रहैभोगशेषऔरतनमेंप्रवेशकरैतातेनहीं करोदूरिईशतालैटारीहै । वहूवातसांचयाकीगांसएकऔरसुनोसाधु कोनहँसेकोऊ यहमैंविचारीहै । देखतहीदेखतमेंखीड़ासीबिलाइगई नईनईकथाकहिभक्तिविस्तारीहै ॥ ३१६ ॥

भईयों प्रसिद्धि वात ॥ सो ज्यों ज्यों सुने जगन्नाथने माधवदासके लिये आप वैतपाये त्यों त्यों ये लजात अरुकहैं हमारा कुनाश भयोहै जिनको पुष्पादिसों पूजिये तिन्होंने वैतपाये साधुनके लक्षण हैं जैसे सुदामा कही मेरो दारिद्रगयो मेरेदारिद्रको ॥ ख्यातकियोहै सवकहै हैं सुदामा गरीव भक्तहै ॥ १ ॥ देहधोइये ॥ श्लोक ॥ यद्यद्वांछति मद्भक्तस्तत्तत्कुर्यामतंद्रितः ॥ रह्योनहीं जात सव जग जगन्नाथकी सेवा करैहै । जगन्नाथजी माधवदासकी सेवाकरैहैं ॥

कीरतिअभंगदेखिभिक्षाकोआरंभकियोदियोकाहूवाईपोताखी जतचलाइकै देवोगुणलियोनीकेजलसोंप्रछालिकरिकरीदिव्यवाती दईदियेमेंवराइकै । मंदिरउजारोभयोहियेकोअँध्यारोगयोगयो फेरिदेखिवेको परीपाइँआइकै। ऐसेहैंदयालदुखदेतमेंनिहालकरैंकरैं लैजैसेवाताकोसकैकौनगाइकै ॥ ३१७ ॥ पंडितप्रवलदिगविजयक रिआयोआपवचनसुनायोजूविचारमोसोंकीजिये । दईलिखिहारका शीजाइकैनिहारपत्र भयोअतिद्वारलिखीजीतिवाकीखीजिये । फे रिमिलिमाधवजूकोवैसेईहरायोएकखरकोवुलायोकहीचढ़ोजीउधी जिये । वोलेउजूतीवांधौकानगयोसुनिह्वानआनजगन्नाथजीतेलैच ढ़ायोवाकोरीझिये ॥ ३१८ ॥

भिक्षाको आरंभ॥ दोहा॥ धरतीतौ खूंदनसहै, काठसहै वनराइ॥ कुवचनतौ साधू सहै, और पै सहो, न जाइ॥१॥ हार॥ कवित्त॥ दूनो भलो सुपथ पै न कुपथ ऊनो भलो सूनो भलो गेह पै न वल साथ करियोअनलकी लपट औझपट भली नाहरकी कपटी के कपटसों दूरिपरिहरिये। यहै जगजीवन परम पुरुषारथहै पर घर जाइ फेरि रससो निकरिये। हारिमानि लीजिये न कीजै वाद नीचनसो सर्वस्वदीजै पै न परवश परिये॥ २॥ दोहा॥ हारेतो हरिजन भले, जीतनदौ संसार॥ हारेहरिपै जाहिगे, जीते यमके द्वार॥३॥जगन्नाथजीते तव जगन्नाथ कही गदहापै चढौ तेरे मुख न्याय है।जैसे वानेकही काजीके मुख न्यायहै॥ ४॥

ब्रजहीकीलीलासबगावैंनीलाचलमांझमनभईचाहजाइनयननिहारिये। चलैवृन्दावनमगलागिएकगांवजहांवाईभक्तिभोजनकोलाईचावभारिये। वैठेयेप्रसादलेतलेतहगभरिअहोकहौकहावातदुखहियेकोउवारिये। सांवरोकुँवरयहकौनकोभुराइलायेमाइकैसेजीवैसुनिमतिलैविसारिये॥ ३१९॥ चलेऔरगांवजहांमहाजनभक्तरहैगहैमनमांझआगेविनतीहूकरीहै। गयेवाकेघरवहगयोकाहूऔरघरभावभरितियाआयपाँयनमेंपरीहै। ऊपरमहंतकहीअवएकसंतआयोयहांतौसमाइनाहिंआईअरवरीहै। कीजियेरसोईजोइसिद्धसोइलावोदूधनीकेकैपियावोनाममाधवआशभरीहै॥ ३२०॥ गयेउठिपाछेभक्तआयोसोसुनायोनामसुनिअभिरामदौरेसंगहीमहंतहै। लियेजाइपाइँलपटायेसुखपायमिलेझिलेघरमांझतियाधन्यतोसोंकंतहै। संतपातिवोलेमैंअनंतअपराधकियेजियेअवकहीसेवोसीतमानिजंतहै। आवतामिलापहोइयहीराखौवातगोइआयेवृन्दावनजहांसदाईवसंतहै॥ ३२१॥

सवैया॥ झीने झगामें दगाही भरी औ लगाही लगा सँगडोलतहैं। देखैं पगान जगा जगमें सुभगा कुलकानिके गोलत हैं। नैनलगा सो लगाही गया सुभगा उर वान विलोलत हैं। लरिकान में डोलत हैं जगन्नाथ हुरुरू कुरुरू करि वोलत हैं॥ १॥ धूरिमें धूरिभरे सबगात

सुजात पुकारत डोलत हैं। अलकावलि राजति हैं विथुरी सुथरी बरगोल कलोलत हैं। अंबुजलोचन चारुचितौनि सुभाल विशाल बिलोलत हैं। लरिकानिमेंडोलत हैं जगन्नाथ हुरुरू कुरुरू करिबोलतहैं॥ २ ॥माधवदास पंडित सों बोले आपबड़े उतावले इतनेमें आऊं तोलों आपही चढिबैठे जबलाज में दबिगयो तब माधवदासजी जगन्नाथजीसे बोले यह दिग्विजय करि आयोहौ सो सब ख्वारकरी मेरहु बुरोभयो यह आछो न कियो मेरे बदले चढायो मैंतौ अपने बदले चढायोहै तब अपने हाथसों अपराध क्षमा करायो ये साधुताके लक्षणहैं ॥ ३ ॥ न्याये ॥ विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेशां परिपीडनाय ॥ खलस्य साधोर्विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥ ४ ॥ पठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिंतकाः ॥ सर्वे व्यसनिनो मूढा यः क्रियावान् स पण्डितः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ भक्ति विना श्रीभागवत, कहैं सुनैंजे अंध ॥ त्यों दर्वी व्यंजननिमें, स्वाद न जानेमंद॥ ६ ॥ छप्पय ॥ पंडित पढि भागवत भक्ति भक्तनिजू सिखवत ॥ महिषी ज्योंपयस्रवत आपसो स्वाद न पावत। मृगजु नाभि नहिं लखै लेत तृण शिलमधि घ्रानैं। कट आगर करपरवहे ये मरम न जानै। तैसे दर्वीन्याय चतुरभुज भक्ति विना मंडक धुनि। दर्पण दियो जुनैनाबिन त्यों अंधअंधेरो डोरिपुनि ॥ ७ ॥ सप्तमे ॥ यथाखरश्चंदनभारवाही भारस्य वेत्ता न तु चंदनस्य ॥ तथाल्पविज्ञाः श्रुतिशास्त्रयोगान्मद्भक्तिहीनाः खरवद्वहंति ॥ ८ ॥ तापै गंगला तेलीको दृष्टांत और पंडितको दृष्टांत ॥ ९ ॥ संतपतिः ॥ दोहा ॥ नैन निकट काजर बसै, पैदर्पणदरशाइ ॥ ज्यों साधुनके संगविन, हरि मुख छवि न लखाइ ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ वेदहूकी निंदाकरै साधुहूकी निंदाकरै गुरुकी आज्ञा विष्णु शिवभेदमानिये। नामहीके आसरे आइ बहुपाप औ अश्रद्ध वानहीसों उपदेशलै बखानिये । एक अर्थवाद अरु व्याख्या कुतर्क करै महिमा सुनत हिये अश्रद्धा न आनिये। नामकी समान सब धर्म समान कहै नामन अफल अपराध दश जानिये ॥

देखिदेखिवृन्दावनमेंमगनभये गयेश्रीबिहारीजूकेचनातहीपायेहैं।

कहिरह्योद्वारपालनेकमैंप्रसादलालयमुनारसालतटभोगकोलगायेहैं। नानाबिधिपाकधरैस्वामीआपध्यानकरैबोलेहरिभावैनाहिंवेईलेखवा येहैं । पूछेउसोजनयोंढूंढ़िलायोआगेगायोसवतुमतौउदासहासरसस मझायेहैं ॥ ३२२ ॥ गयेब्रजदेखिवेकोभांडीरमैंपैमरहेनिशिकोदुराइ पाइक्रमलैदिखायेहैं । लीलासुनिवेकोहरियानेगांवरहैंजाइगोवरहूपा थिपुनिनीलाचलधायेहैं । घरहूकोआयेसुतसुखीसुनिमातावाणीमार गमेंसुपनदेकैवणिकमिलायेहैं । याहीविधिनानाभांतिचरितअपारजा नोजितेकछुजानेतितेगाइकैसुनायेहैं ॥ ३२३ ॥ मूल ॥ श्रीरघुनाथ गुसाईंगरुड़ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं । शीतलगतसकलातविदितपुरुषो त्तमदीनी । शौचगयेहरिसंगकृत्यसेवककीकीनी । जगन्नाथपदप्रीति निरंतरकरतखवासी । भगवतधर्मप्रधानप्रसन्ननीलाचलवासी। उत्क लदेशउड़ीसानगरवैनतेयसबकोऊकहै ॥ श्रीरघुनाथगुसाईं गरुड़ ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं ॥ ७१ ॥

विसारिये ॥ दोहा ॥ जो मोसों मोसों करो, तौ रनहे कहुँ ठौर ॥ तुमहौ जैसी कीजियो, अहो रसिक शिरमौर ॥ तुमतौ उदास हास रस समझायो तुम जगतसों विरक्तभये सोतौ आछो पै हरिसों विरक्त भये सो आछोनहीं माधवदास कही मैं तुम्हारे ठाकुरकी साचिक्कणता देखि सो प्रसं- ग ॥ २ ॥ निशिको दुराइ खाइ क्रमसों दिखाई है जब डरे तब कही मथुरा विश्राम घाट झारो संत चरणोदक शीत सेचन करो सोई कियो मूलमेंनाभाजीनेधरे हैं खेमगुसाईं खेमकर लीला सुनिवेको हरियानेगोलीगां वरहैं गोबरपाथो सो प्रसंग ॥

टीका ॥ अतिअनुरागघरसंपतिसोंरहेउपागिताहकरित्यागनीला चलकियोवासहै । धनकोपठावैपिताऐपैनहींभावैकछूदेखिवोसुहावै महाप्रभुजूकोपासहै । मंदिरकेद्वाररूपसुंदरनिहारोकरै लग्योशीत गातसकलातदईदासहै। शौचसंगजाइवेकीरीतिकोप्रमानवहै वसेसब जानौमाधवदाससुखरासहै ॥ ३२४ ॥ महाप्रभुकृष्णचैतन्यजूकोआ

ज्ञापाइआयेवृन्दाबनराधाकुंडबासाकियोहै । रहनिकहनिरूपचहनि कहनिसकैथकैसुनितनभावरूपकरिलियोहै । मानसीमैंपायोंदूधभा तसरसातहिये लियेरसनारीदेखिवैदकाहिदियोहै । कहांलौंप्रतापक हौंआपहीसमझिलेहुदेहुवहीरीझिजासोंआगेपायजियोहै ॥ ३२८ ॥

भावरूप ॥ दोहा ॥ चढिकर मैंन तुरंग पर, चलिबो पावक माहिं ॥ प्रेमपंथ ऐसो कठिन; सब कोउ निवहत नाहिं ॥ १ ॥ यह स्वरूप मोम-रूपी भावना हरिकी अग्निरूपसों कैसें निवहै या शरीरको सखी भावरूप अष्टधातुको कियो अग्निरूप रस तामें प्रवेश कियो ॥ दोहा ॥ भजन रसिक रघुनाथजी, राधा कुंडनिवास ॥ लोन तक ब्रजको लियो, आसुनहीं कछुआस ॥ २ ॥ राधाकुंडवास ॥ यथा राधा तथा विष्णुः यथाकु-ण्डप्रियं तथा ॥ सर्वगोपसु सेवैका विष्णोरत्यंतवल्लभा ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ रतन जडित नगखचित घाट सिढियनकी शोभा । गुंजत मोर मराल भरे आनंदकी गोभा ॥ माधव काज तमाल मृक्ष सबही झुक झूमैं । छबिकी उठति तरंग निरखि नंदलाल जुघूमैं ॥ दोहा ॥ श्री महारानी राधिका अष्ट सखिनके झुंड । डगर बहारें साँवरो, सुजय जय राधाकुंड ॥

मूल ॥ श्रीनित्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशिबिस्तरी । गौड़देशपाखंडमेंटिकियोभजनपरायन । करुणासिंधुकृतज्ञभयेअग तिनगतिदायन । दशधारसआक्रांतिमहतजनचरणउपासे । नामलेत निःपापदुरिततिहिनरकेनासे । अवतारबिदितपूरबमहीउभयमहतदे हीधरी । श्रीनित्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशिबिस्तरी ॥ ॥ ७२ ॥ नित्यानंदकीटीका ॥ आयबलदेवसदावारुणीसोंमत्तरहें चाहेमनमान्योप्रेममत्तताईचाषिये । सोईनित्यानंदप्रभुमहंतकीदेही धरीभरीसबआनितऊपुनिअभिलाषिये । भयोबोझभारीकिहूंजातन सँमारीबातठौरठौर पारषदमांझधरिराखिये । कहतकहतअरुसुनत सुनतवाकेभयेमतवारेबहुग्रंथताकीसाखिये ॥ ३२६ ॥

देही धरी ॥ पद ॥ अब तौ हरी नामलौ लागी साधौ हरी नामलौं

लागी । सब जग को यह माखन चोरा नाम धर्यो बैरागी । कहँ छोड़ी वह मोहन मुरली कहँ छोड़ी सब गोपी । मूंड मुड़ाइ डोरि कटि बांधी माथे मोहन टोपी । मात यशोमति माखन कारण बांधे जाको पांव । श्यामकिशोर भये नवगोरा चैतन्य जाको नांव । पीताम्बर को भाव दिखावै कटिकोपीनकसे । दास भक्तकी दासी मीरा रसना कृष्णवसे ॥ १ ॥ दशमे ॥ आसन्वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः । शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतांगतः ॥ २ ॥ एकादशे ॥ कृष्णवर्णंत्विषा कृष्ण सांगोपांगास्त्रपार्षदाः ॥ यज्ञैःसंकीर्त्तनप्राया यजंतिहि सुमेधसः ॥ ३ ॥ चाषिये॥दोहा॥भूतलगे मदिरापिये, सबकाहू सुधि होइ॥प्रेम सुधारस जिन पियो, तिहि न रहै सुधिकोइ ॥ ४ ॥ जैसे गंगा यमुना सरस्वती महिमा गौर नाम गोरतन अन्तर कृष्ण स्वरूप ॥ ५ ॥

टीकाश्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुकी ॥ गोपिनकेअनुरागआगेआप हारिश्यामजान्यो यहलालरंगकैसेआवैतनमें । योंतोसबगौरतनीनख शिखबनीठनी खुलेउयोसुरंगरंगअंगरंगेवनमें । श्यामताईमांझसों ललाइहूसमाइजाइतातेमेरेजानाफिरिआईयहमनमें । यशुमतिसुतसो ईशचीसुतगौरभयेनयेनयेनेहचोजनाचेनिजगनमें ॥ ३२७ ॥

हारिश्याम ॥ पंचाध्यायी ॥ भगवानपि तारात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ॥ वीक्ष्य रंतुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥ २ ॥ कवित्त ॥ पाग जिमिरागही भर्यो है या बांसुरीमें ताको ताने शिखा सुनि गोपी कांत चतिहै । कानमध्य तूलदिये दिये जैसी बाती बरै नांहिं नैउपाइ कोऊ बाद जहीं पचतिहै ॥ बनके पखेरू उठि पांखन बयारि करैं गोकुल की कुलबधू कैसे कैबचतिहै । जरिगई अतितातो ताते तकिनेही कान्हें फूंकिफूंकि गहैं तऊ आगरी नचतिहै ॥ २ ॥ एक ओर बीजना डुरावति चतुर नारि एक ओर झारी लिये करजलपानकी । पाछेते खवासिनी खवावैं पान खोलि खोलि राधे मुख लाली मानों तम करतानकी॥ ताही छिन बांसुरी बजाई नँदनन्दन जू आई सुधि वाही ब्रज कुंज की

लतान की। बायेंगिरि नीरवारी दाहिने समीर वारी पाछे पानदान वारी आगे वृषभान की ॥ ३ ॥ वेमगदापग अंधनिको इन चालिबो आछि निहूं को नियाऱ्यो। सूरति थाह दिखावत वे इन प्रेम अथाह के वारिधि डाऱ्यो। वेबशवास बसावत हैं इन बास छुड़ाइ उज्यारनिल्याऱ्यो। देखो अहो हरि की वंसुरी इन कैसे सुबंशको नाम बिगाऱ्यो ॥ ४ ॥ दियाके उज्यार तिय दूधसीरो करतिही संगवाके आसपास भावजन भीरकी। लौनेहू ते सुलख सलोनी साठि सोनेकीसी गौनकीसी आई किधौं आई सुनासीर की ॥ काशी राम रूपभरी रतिहूते अति खरी कहूंवाके कान परी बंशी बल बीरकी ॥ सानो लागी तीरकी यापरी है अहीरकी सँभार न शरीरकी न ओरकी न छीरकी ॥ ५ ॥ भूलीसी फिरति फिराति कुंज कुंजनिमें केतौ समझाइ रही बैठीरहो गेहमें। तबतो न मानी काह्न सुनिवेको जातितान मानी नहीं कान्ह तरुणाई केतेहमें। अब तौ प्रह्लाद डसी विरह के भुअंगम ने अंग रोमरोम विष रमिगयो शरीर में। सांसरी भरन लागी आंसुरी ठरन लागी पांसुरी निकासि आई बांसुरीके नेहमें॥ २॥ इन जेते सुरलीने तेते वेधउर कीने जेते राग तेते दाग रोम रोम छीजिये। अन्तरकी सूनीघर करैसूने औरनिके शेषसुनि श्रवण बसेरो बन कीजिये। ताननकी तीखीउर बानन चलाये देत चीरी चीरी अंगनि तुणीन तनकीजिये। बांसुरीवसेंगी तौ हम न वसेंगी श्याम वांसुरी बसाइ कान्ह हमें विदा कीजिये॥ १ ॥ बाजी उठिधाईं बाजी देखिवेको दौरी आईं बाजी सुनि आईं पौरि वंशी गिरिधरकी। बाजी हँसि बोलैं बाजी संगलगी डोलैं बाजी भईं बौरी बाजिन बिसारी सुधि घरकी। बाजी न धरत धीर बाजिन संभारे चीर बाजिन की छाती पर पीर दावानलकी। बाजी कहैं बाजी पुनि बाजीकहैं कहां बाजी बाजीकहैं बाजीवंशी चंचलचतुरकी॥ ३॥ श्लोक॥ तासां तत्सौभगमिदं वीक्ष्माणश्चकेशवः। प्रशमायप्रसादाय तत्रैवां तरधीयत ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ जाही कुंज पुंजतर गुंजत भवँर भीर ताही तरुवर तर शीश धुनियत हैं। जाही रसनासे कही रसकी रसीली बात ता-

ही रसनासों आप गुण गुनियतहैं। आलम बिहारी लाल हियेते अचेत भये येहों दई हेत खेत कैसे लुनियतहैं॥जेइ कान्ह आंखिनके तारेहुते निशि दिन तेई कान्ह काननि कहानी सुनियतहैं।।६॥मंजु रची रसरुचिके सुगुमानकी मेंड़ खसाइ गयोरी।थाह बताइहमैं सजनी मँझधारमें छांडिनशागयोरी। खेल संयोगकी नेकोदिखाइ बियोग फनीथे कटाइ गयोरी। प्रेमकें फंद- फँसाइगयो ब्रजमेंघरकान्ह बसाइ गयोरी ॥ २ ॥ कदमकरील तीर पूछति अधीर गोपी आनन रुखौहौंगरौं खरौई भरौहौंसौं। चोरहौ हमारो प्रेम चौत रानि तान्यो गदरानिकसि भाज्यो ह्वैके करिल जौहौं सो। ऐसेरूप ऐसेभेषमेंहू दिखैयो अति देखतहिं रसखानि नैनचुभोंहौंसों। मुकुटझुकोहौं हियहारहैं हरौहौं कटि फेटापियरौहों अंगरंगसबरौ हौंसों ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्ववकुलांबुक दंबनीपाः। येन्ये परार्थभविका यमुनोपकूले शंसं तु कृष्ण पदवीं रहितात्मनां नः ॥ ४ ॥ पंचाध्यायी॥ यमुनाके विटप पूछि भई निपट उदासी। क्यों कहिहै साखि महाकठिन येतीरथवासी ॥ श्लोक ॥ पुनः पुलिनमागत्य कालिंद्याः कृष्णभावनाः। समवेता जगुःकृष्णं तदागमनकांक्षया ॥ ॥ ५ ॥ तब गोपी अधीनह्वै वृक्षनसों बलिनसों पूछतभई महा विह्वल शरीरह्वैगये सोकहैं हैं तुमकहूं श्रीकृष्णदेखे हैं ॥ श्लोक ॥ भजतोपिनवै केचिद्भजंत्यभजतः कुतः। आत्मरामा ह्याप्तकामा अकृतज्ञा गुरुद्रुहः ॥ ६ ॥ नपारयेहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः। यामांभजन दुर्जरगेहशृंखलां संवृश्च्य तद्वत प्रतियातु साधुना ॥ ७ ॥ दोहा ॥ कसत कसौटी हेमको, लोकरीति यहनेम। प्रेम नगरकी पैठमें भयो कसौटी हेम ॥ ८ ॥ वातैं श्रीकृष्णजी गोपिकनिके आगेहारे इनके प्रेमको देखिकैं महा प्रफुल्लित ह्वैके हाथजोरिके आइमिले ॥ ९ ॥

आवैकभूप्रेमहेमपिंडवततमहोइकभूसंधिसांधिछूटिअंगवाटिजात है। औरएकन्यारीरीतिआंसूपिचकारीमानोंउभैलालप्यारीभाव

सागरसमातहै। ईशताबखानिकहाकरोसोप्रमाणयाको जगन्नाथक्षे त्रनेत्रनिरखिसाक्षातहै। चतुर्भुजषटभुजस्वरूपलैदिखायोदियोदियो जोअनूपाहितबातपातपातहै॥३२८॥कृष्णचैतन्यनामजगतप्रकटभ योअतिअभिरामलैमहंतदेहीधरीहै। जितोगौड़देशभक्तिलेशहूनजा नेकोऊ सोऊप्रेमसागरमेंबोरेउकहिहरीहै। भयेशिरमौरएकएकज गतारिबेकोधारिबेकोकौनसाखिपोथिनमेंधरीहै। कोटिकोटिअजामी लवारिडारेदुष्टतापैऐसेहूमगनकियेभक्तिभूमिभरीहै॥ ३२९॥

आवै कभूप्रेम॥ पद॥ रासमंडल बने नृत्य नीकी बनी। गौर गोविंदके नयन अरविंदसों छटत आनंद मकरंद चहुंदिशि घनी। ताल बस मृदु चरण धरत धरणी हुलसि बिलस हस्तक भेद चलन लोयन अनी। फुलका आयाद घन कंपभारे थरहरनि परसत प्रस्वेद सुरभेद भारी बनी। अहित सित आरकत धरत जड़ता जबहिं वहिठाढ़े रहत गहत वानक फनी। निपट अवसन्न जब तबहिं क्षिति धुकि परत अंग नाहिं हलत गत श्वासकी निगमनी। ता समय जगतमें जीवजेतिक वसत प्रेम आनंदके होत सबरेधनी। चकृत सब पारषद शब्द मुखमें मिलत लगी टकटकी यह सुख मनोहर भनी॥

मूल॥ सूरकवित्तसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै। उक्ति चोजअनुप्रासवरनअस्थितअतिभारी। वचनप्रीतिनिर्वाहअर्थअद्भु ततुकधारी। प्रतिबिंबितदिव्यदृष्टिहृदयदेहरिलीलाभासी। जन्म कर्मगुणरूपसबैरसनापरकासी। विमलबुद्धिगुणऔरकीजोयहगुणश्र वणनिधरै। सूरकवित्तसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै॥७३॥

शिरचालनकरै॥ श्लोक॥ किंकवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुर्भृतः। परस्य हृदये लग्ना यन्न घूर्णयते शिरः॥ २॥ दोहा॥ किधौं शूरको शर लग्यो, किधौं सूरकी पीर। किधौं सूरको पदसुन्यो, यों शिर धुनत अधीर॥ २॥ कबित्त॥ जासों मनहोत तासों तन मन दीजियत जासों मनभंग तासों कछू न विशेषिये। बोलै तासों बोलि अन-

बोलै तासों अनबोलि प्रेमरस चाहै तासों प्रेमरस पेखिये । प्रीतिरीति चाहै तासों प्रीति रीति जानियत नातरु अनेक रूप सबही अलेखिये । नर कहा नारी कहा खूबी महाखूबी कहा आपको न चाहै ताहि आपहू न देखिये ॥ ३ ॥ कहावत ऐसे त्यागी दानि । चारि पदारथ दिये सुदामा गुरुके सुत दिये आनि । विभीषणै निज लंकादीनी प्रेमप्रीति पहिचानि । रावणके दश मस्तक छेदे दृढ़गहिं शारँगपानी । प्रहलादकी जिन रक्षा-कीनी सुरपति कियो निधानि । सूरदासपर बहुत निठुरता नैननहूं की हानि ॥ ४ ॥ बचन प्रीति ॥ ऊधो यह निश्चय हम जानी । खोयो गयो नेह न गुनपै प्रीति कोठरी भई पुरानी । यह लै अधर सुधारस सींची कियो पोष बहु लाड़ लड़ानी । बाहुरौ कियो खेल शिशुको गृह रचना ज्यों चलति बिजानी । ऐसी हितकी रीति दिखाई पन्नग कांचुरी ज्यों लपटानी । फिरिहू सुरति करत नहीं ऐसे त्यागत भँवर लता कुम्हिलानी । बहुरंगी जित जाति तिते सुख एक रंगी दुख देह दहानी । सूरदास पशु-बनी चोरकी खायो चाहैं दाना पानी ॥ ५ ॥

मूल ॥ ब्रजवधूरीतिकलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत । पौगंड बालकिशोरगोपलीलासबगाई । अचरजकहाइहिबातहुतौयहलौजु सखाई । नयननिनीरप्रवाहरहतरोमांचरैनिदिन । गदगदगिराउ दारश्यामशोभाभिजिउतन । शारंगछापताकीभईश्रवणसुनतआवेस देत । ब्रजवधूरीतिकलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत ॥ ७४ ॥ श्रीकेशवभटनरमुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरी । काश्मीरकीछा पपायतापनजगमंडन । दृढ़हरिभक्तिकुठारआनधर्मविटपविहंडन । मथुरामध्यमलेच्छवदकरिवरवटजीते । काजीअजितअनेकदेखिप रचेभयभीते । विदितबातसंसारसबसंतसाखिनाहिंनदुरी । श्रीके शवभटनर मुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरी ॥ ७५ ॥ टीका श्रीकेशवभट्टकी ॥ आपकाशमीरसुनीवसतविश्रामतीरतुरकसमूह द्वारयंत्रइकधारिये । सहजसुभायकोउनिकसतआइताको पकरत

धाइताकेसुनतनिहारिये । संगलैहजारशिष्यभरेभक्तिरंगमहा अरे वाहीठौरबोलेनीचपटटारिये । क्रोधभरिझारेआयसुवापैपुकारेवेतो देखिसवैहारेमारेजलवोरिडारिये ॥ ३३० ॥

पौगंड बाळ किशोर ॥ रसामृते ॥ कौमारं पंचमादांतं पौगंडं दशमावधि ॥ आषोडशं चकैशोरं यौवनं स्याततः परम् ॥ १ ॥ हरिकुवार॥ दोहा ॥ व्यास विषयजल बटिरह्यो, नीचसंग जळधार ॥ हरिकुठारसों प्रीतिकरि, कटत न लागे बार ॥ २ ॥ वाराहे ॥ अहो मधुपुरी धन्या वैकुंठाच्च गरीयसी ॥ विना कृष्णप्रसादेन क्षणमेकं न तिष्ठति ॥ ३ ॥ जाके सुनत निहारिये ॥ श्लोक ॥ मणिमंत्रमहौषधीनामचिंत्यशक्तिः ॥ ४ ॥ जलवोरिडारिये ॥ कवित्त ॥ गये सबदौरि जहां काजीकी जुपौरियति कियो तिनसोई अजू कीजिये पुकारहे । औ जुकोऊऐसो एक आयोहै जुमथुरामें संगहैं हजार शिष्य तेजका न पारहे। लैके झरकारे धरकारे मति भांतिकह्यो क्योंरे अधर्मी हिंदु धमकियो ख्वारहे । होहु तुम रांडकियो पुरुपारथ भांड़जोई हरिसों बिमुख ताको नहीं पारावारहै ॥२॥ काजी अति डरेउ हिये परेउ खरभरेउ यह कौमआई अरेउ अबकसे का उपाइ मैं । रचे भूत वैताल मूठि दीठि मायाजाल सुदर्शन किये ख्याल सहज सुभाइ मैं । असुरके तनमें सो अगिनि लगाइ दई दई कहो दई कहा कहा कियो हाइमैं । येतोहैं वडे प्रतापी मैं तौ रहौं महापापी अहो मतिथापी आवैं परों भेद पाइ मैं ॥ २ ॥ आयपाइंपरेउनीर नयननिते ढरेउ बैन कहै मरेउ मरेउ प्रभु मेरी रक्षा कीजिये । तब स्वामी कह्यो तोहिं लैहौं मैं बचाय पुनि एकहै उपाइ सीख सुनि मेरी लीजिये । फेरि जो अधर्म ऐसो करौगे न कर्म आव मेटौ सबगर्भ सदा शीतल ह्वैजीजिये । और जितेवादी हरि विमुख प्रसादी तिन्हैं लीये सतमारगमें नौधारस पीजिये ॥ ३ ॥ जिते हिंदू तुरुकनि सैकरानि मारिहारे भरेदुःखभारे वेतो स्वामि जूपै आये हैं ॥ प्रभु कह्यो आवो अब दुःख जनिपावो कैसो राइ गुणगावो यमुना जल अन्हाये हैं । महीन एक बस्तर लाये तिनकोलै

पहराये हिंदूको चिह्नपाये जग यश गाये हैं। तुरक तिया काह्र धरीआइ सब पाईं परी करी प्रभु दया नरनारी दरशायेहैं ॥ ४ ॥

मूल ॥ श्रीभटसुभटप्रगटचोअघटरसरसिकनमनमोदघन। मधुरभावसंमिलितललितलीलासुवलितछवि। निरखतहरषतहृदैप्रेमबरषतसुकलितकवि। भवनिस्तारनहेतदेतदृढ़भक्तिसबनानित। जासुसुयशशशिउदैहरतअतितमभ्रमश्रमचित। आनंदकंदश्रीनंदसुतश्रीवृषभानुसुताभजन। श्रीभटसुभटप्रगटचोअघटरसरसिकनमनमोदघन ॥ ७६ ॥ श्रीहरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई। खेचरनरकीशिष्यनिपटअचरजयहआवै। विदितबातसंसार संतसुखकीरातिगावै। वैरागिनिकेवृन्दरहत सँगश्यामसनेही। ज्योंयोगेश्वरमध्यमनोशोभितवैदेही। श्रीभटचरणरजपरसिकैसकलसृष्टिजाकीनई। श्रीहरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई ॥ ७७॥

मधुर कहिये माधुर्य शृंगाररस ॥ पद ॥ राधिका आजु आनंदमें डोलैं। सांवरेचंद गोविंदके रस भरी दूसरी कोकिला मधुरसुरबोलैं। पहर पट नील तान कनक हीरावली हाथले आरसी रूपको तोलैं। जै श्रीभट आजु नागरि नीकी बनी कृष्णके शीलकी ग्रंथको खोलैं ॥ २ ॥ संतो सेव्य हमारे श्री प्रियप्यारे वृन्दाविपिन विलासी। नंद नँदन वृषभानु नंदनी चरण अनन्य उपासी। मतप्रणय वश सदा एक रस विविध निकुंज निवासी। जै श्रीभट युगुल वंशीवट सेवत मूरति सब सुखरासी ॥ २ ॥ तौ नंद वृषभान कहैं इनके उपासिक श्री राधाकृष्णके संतहैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ साधुसराहैं सो सती, यती योपिता जानि। रज्जबसांचे शूरको, वैरीकरै बखानि ॥

टीकाश्रीहरिव्यासदेवकी ॥ चढ़थावरगावबागदेखिअनुरागभयोलयोनितनेमकरिचाहैपाककीजिये। देवीकोस्थानकाहूबकरालैमारोआनिदेखतगिलानिइहांपानी नहींपीजिये। भूखेनिशिभईभक्तितेजमिटिगईनई देहधरिलईआइलखिमतिभीजिये। करौजूरसोईकौन

करैकछूऔरैभोईसोईमोकोदीजैदानशिष्यकरिलीजिये ॥ ३३१ ॥ करीदेवीशिष्यसुनिनगरकोसटकीयोपटकीलैखाटजाकीबड़ोशिरदा रहै । वढ़ीमुखबोलैंहौंतोभईहरिदासदासीजौनदासहोहुतौपैअभीडा रौमारहै । आयेसबभृत्यभयेमानोंतननयेलयेगयेदुखपायतापकिये भवपारहै । कोऊदिनरहेनानाभोगसुखलहेएक श्रद्धाकेसुपचआयो पायोभक्तिसारहै ॥ ३३२ ॥

पायो भक्तिसार है ॥ श्लोक ॥ अश्वत्थं काकविष्ठाया जातइत्युच्यते वुधैः । देवानामपिनृणांवै पूज्य एव न संशयः ॥ पद ॥ जाति भेद जो करै भक्त सो तौ बड़ो पापी । ताते भलो बधिक पर निंदक गुरु-तालप मदरापी । बायसकी बिष्ठासों उपजै पीपर नाम कहावै । परिकर्मा दंडवत करै द्विज सब जग पूजन आवै । तुलसी जो घूरेपै उपजै दोष न कोई धरई । ता तुलसीके पात फूल दल हरि पूजनको रहई । कूकरमरै गोमती संगम अश्व चक्र ह्वैरहही । तिन चक्रनको सब जग वन्दै दोष न कोऊ कहही । ज्यों जल बरषै पुरवीथिनमें गंगामें बहि आवै । सो तिहि परशि महा अपराधी कल्मष सबै नशावै । सेन धना रैदास कबीरा और किते परवाना । इनको दरशन दीनो है हरि प्रगट सबै जग जाना ॥ योग यज्ञ जप तप व्रत संयम इनमें तौ हरि नाहीं । गंगाराम हित नवल युगलबर वसत भक्त उरमाहीं ॥ २ ॥

मूल ॥ अज्ञानध्वांतअन्तहिकरनद्वितियदिवाकरअवतरचो । उ पदेशेनृपसिंहरहतनितआज्ञाकारी । पक्ववृक्षज्योंनायसंतपोषकउप कारी । वानीभोलारामसुहृदसबहिनपरछाया । भक्तचरणरजयाचि विशदरावबगुणगाया । करमचंदकश्यपसदनबहुरिआइमनोबपुध रचो । अज्ञानध्वांत अंतहिकरनद्वितीयदिवाकरअवतरचो ॥ ७८॥ श्रीविट्ठलनाथब्रजराजज्योंलाललड़ाइकेसुखलियो । रागभोगनितवि विधहरतपरिचर्य्यातततपर । शय्याभूषणबसनरुचिररचनाअपनेकर। वहगोकुलवहनंदसदनदीखतकोजोहै । प्रगटविभवजहँघोषदेखिसुर

पतिमनमोहै। बल्लभसुतवल्लभजनकेकलियुगमेंद्वापरकियो । श्री विठ्ठलनाथव्रजराजज्यों लालल‍ड़ाइकेसुखलियो ॥ ७९ ॥ टीका ॥ कायथत्रिपुरदासभक्तिसुखरासभयोकरचो ऐसेपनशीतदगलापठाइये । निपटअमोलपटहियेहितजटिआवेतातेअतिभावैनाथअंगपहिराइये । आयोकोऊकालनरपतितेविहालकियोभयोईशव्यालनेकुघरमेंनखाइये । वहीऋतआईसुधिआईआंखिपानीभरि आई एकखातिदीठिआईवेलिलाइये ॥ २२३ ॥

चरण रज यांचि देव प्रसन्न कियो वरमांगौ वह चतुर अथवंश धन नहीं पुत्रको सोनाके कटोरामें दूध प्यावते देखो ऐसे आत्म हरि ज्ञान ॥ ॥ १ ॥ व्रजराज ज्यों ॥ पद ॥ जे वसुदेव किये पूरण तप तेइ फल फलत श्री वल्लभ देव । जे गोपाल हुते गोकुलमें तेई अब आनि बसे करि गेह । ते वे गोपवधू हुती व्रजमें आवतेई वेद ऋचा भई येह । छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल वेई वेई वेप पैंई कछु न संदेह ॥ २ ॥ भेदियाकी प्रेरणा दई आये इनवे ॥ ३ ॥

वेंचिकेवजारयोंरुपैयाएकपायो ताकोलायोमोटोथानमात्ररँगलालगाइये । भीज्योंअनुरागपुनिनयनजलधारभीज्योभीज्योदीनताई धरिराखो औरैआइये । कोऊप्रभुजनआइसहजादिखाईदई भईमनादियोलैभँडारीपकराइये । काहूदासदासीके नकामकोपैजाडलैकेचिंनतीहमारीजूगुसाईंनसुनाइये ॥ २२४ ॥ दियोलेभंडारीकररारवेधारिपटवायेनिपटसनेहीमाथवोलेअकुलाइके । भयेहेजड़ायेकोऊवेगिहीउपायकरौविविधउठाये अंगवसनसुहाइके । आज्ञापुनिदईयोंअँगीठीवारिदईफेरिवहीभई सुनिरहेअतिहीलजाइके । सेवककुलाइकहीकौनकीकवाइआईसवैसोसुनाईएकवहलीवचाइके ॥ २२५ ॥ सुनीनत्रिपुरदासवोल्योधननाशभयो मोटौएकथानआयोराख्योहैविछाइके । लावोवेगियाहीक्षणमनकीप्रवीनजानिलायोदुखमानिज्योंतिलईसोसिमाइके । अंगपहराईसुखदाईकापैगाईजातिकहीजववात

जाड़ोगयोभरिभाइके । नेहसरसाईलैदिखाईउरआईसबै ऐसीरसिकाईहृदयराखीहैवसाइके ॥ ३३६ ॥

नेह सरसाई ॥ दोहा ॥ हरिरहीम ऐसी करी, ज्यों कमान शर पूर ॥ खैंचि आपनी ओर को, डारि दियो अति दूर ॥ १ ॥ यह कहिकै मंदिरके द्वार पै गोविंद कुण्ड की छत्री पैजाय बैठे गुसाँई के टहलुवा प्रसाद लायो सो न लियो तव नाथजी आपही लाये ॥ दोहा ॥ खौंचि चढ़निटीली ढरनि, कहो कौन यह प्रीति ॥ आज काल्हि मोहनगही, वंश दिया की रीति ॥ कावित्त ॥ जवलौं न कोऊ पीर लागतिहै अपने उर तवलौं पराई पीर कैसे पहिँचानिहौं । आजुलों न जानतहौं लग्योहै नेह काहूसों जबनेह लागिहै तौ हित उनमानिहौं । कहत चतुर कवि मेरे कहिबे की तौ एकौ न रहेगी तव समझि जिय आनिहौं । जैसे नीके मोहिं तुम लागतहो प्यारेलाल तैसो नीको तुम्हैं कोऊ लागिहै तौ जानिहौं ॥ १ ॥ तव रहीम पीठि फेरि लई नाथजी थार धरिके अंतर्ध्यान होत भये तव यह पद गायो ॥ पद ॥ छवि आवन मोहनलालकी । लाल काछनी काछे कर मुरली पीत पिछोरी सालकी । वंक तिलक केसरिको किये द्युति मानों विधुबालकी । विसरत नाहिं सखी मोमनते चितवनि नयन विशालकी । नीकी हँसनि अधर सधरनिकी छवि छीनी सुमन गुलालकी ॥ जलसों डारि दियो पुर इनपर डोलनि मुक्ता मालकी ॥ आपमोलबिन मोल न डोलनि वोलनि मदन गोपालकी । यह स्वरूप निरखै सोइ जानै इस रहीम के हालकी ॥ २ ॥ कमलदल नैननिकी उन मानि । विसरत नाहिं सखी मोमन ते मंद मंद मुसकानि । यह दशननिद्युति चपलाहूते महा चपल चमकानि । वसुधाकी वशकरी मधुरता सुधापगी वतरानि । चढ़ी रहे चितउर विशालकी मुक्तमाल थह रानि । नृत्य समय पीतांवर हूकी फहर फहर फहरानि । अनुदिन श्रीवृंदावन व्रजते आवन आवन जानि । छवि रहीम चितते न टरतिहै सकल श्यामकी वानि ॥ ३ ॥ दोहा ॥ मोहन छवि नैननिवसी, परछवि दृगनि सुहाइ । भरी सराइ रहीम ज्यों, पथिक

आइ फिरिजाइ ॥ ४ ॥ अंतर दाव लगीरहै, धुवां न प्रगटै सोइ । कै जिय जानै आपनो, कैजाशिर बीती होय ॥ ५ ॥ तिहि रहीम तनमन दियो कियो हिये में भौन । तासों दुख सुख कहनकी, बात रही अब कौन ॥ ॥ ६ ॥ स्त्रीकी चूरीको दृष्टांत ॥ ७ ॥

मूल ॥ श्रीविट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये । श्रीगिरिधरजूसरसशीलगोविंदजुसाथहि । बालकृष्णयशवीरधीरश्रीगोकुलनाथहि । श्रीरघुनाथजुमहाराजश्रीयदुनाथहिभजि । श्रीघनश्यामजुपगेप्रभुअनुरागीसुधिसजि । येसातप्रकटविभुभजनजगतोरततसयशगाइये । श्रीविट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये ॥ ॥ ८० ॥ गिरिधरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो । श्रीवल्लभगुरुदत्तभजनसागरगुणआगर । कवित्तनोपनिर्दूपनाथसेवामें नागर । वाणीबंदितविदुषसुयशगोपालअलंकृत । व्रजरजअतिआराध्यवहैधारीसर्वसुचित । सांनिध्यसदाहरिदासवर्यगौरश्यामदृढव्रतलियो । गिरिधरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो॥८१॥

यदुनाथ ॥ सवैया ॥ शीश दिनेश तपै जिहि बार सुवारहि बार बिहारीको ऐवो । यास में बैरिनि आरज लाज सुएकहुवार बनैं न चितैवो । शोच यहै सजनी रजनी दिन कौन से अवसर अवसर पैवो । जानतहौं यदुनाथ यहै कबहूं कमहोसानिही मरिजैवो ॥ २ ॥ पद ॥ बातनहीं हौं पतित पावन । मोते काम परे जानोगे बिन रणशूर कहावन ॥ सतयुग त्रेता द्वापरहूके पतितनकी गति आपी । हमैं उन्हैं बहुतै अंतरहै हम कलियुगके पापी ॥ कोऊ टांकद्वै टांक पौसेरा बडी बडाई सेर । हौं पूरन पति ताई ऐसो त्यों आननि में मेर ॥ हौं दिनमणि खद्योत आनखल अविद्याको जु उजागर । गोपद पावनके न सरवरैं हौं दुर्मति जल सागर । पतित पावनहै बिरद तिहारो सोइ करौ परवान । पाहन नाव पार करौ नाभाको केहर पकरौ कान ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रेमरसरासिकृष्णदासजू प्रकाशकियोलियोनाथमानि

सोप्रमाणजगगाइये । दिल्लीकेबजारमेंजलेबीसोनिहारिनयनभोगलै लगाईलगीविद्यमानखाइये । रामसुनिभक्तनकोभयो अनुरागबासि शशिमुखलालजूकोजाइकैसुनाइये । देखिरिझवाररीझिनिकटबुलाइ लयेलईसंगचलेजगलाजकोबहाइये ॥ ३३७ ॥ नीकेअन्हवाइपटआ भरणपहिराइसुगन्धहूलगाइहरिमंदिरमेंलायेहैं । देखिभईमतवारीकी नीलै अलापचारीकह्योलालदेखिबोलीदेखेमोहभायेहैं । नृत्यगानता नभावमुरिमुसकानिदृगरूपलपटानीनाथनिपटरिझायेहैं । ह्वैकैतदा कारतनछूटेउअंगीकारकरीधरीउरप्रीतिमनसबकेभिजायेहैं ॥३३८॥ आयेसूरसागरसोकहीबड़ेनागरहो कोऊपदगावोमेरीछायानमिलाइ ये । गायेपांचसातसुनिजातमुसुकातकही भलेजूप्रभातआनिकरिकै सुनाइये । परेउशोचभारीगिरिधारीउरधारीबातसुंदरबनाइसेजधरेउ योंलखाइये । आइकेसुनायोसुखपायोपक्षपातले बतायोहूमनायोरंग छायोअभूंगाइये ॥ ३३९ ॥

दिल्लीके सेवकनको प्रसाद दियो काहूनेतौ लियो कही अधिकारी भ्रष्ट- भयो है काहू लयो पै पायो नहीं बिचार्‌यो बडेनकी क्रिया में मन दीजै कौ भावसों भोग लगाइये तापै दृष्टांत नारदजीको नृत्यगान ॥ पद ॥ मोमन गिरिधर छविपर अटक्यो । ललित त्रिभंगी अंगनपर चलिगयो तहांहि ठटक्यो । सजलश्याम घन वरण नीलह्वै फिरि चित अनतन भट क्यो । कृष्णदासके प्राण निछावरि यह तन जग शिर पटक्यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ सखियां कखियां हाथदे, तन राख्यो ठहराइ । मनहरि मदिरा छविछक्यो, दईनारि लटकाइ ॥ २ ॥ अभूंलगि गाइये ॥ पद ॥ आवत वनकान्ह गोप बालक संग नेचुकी खुररेणु छुरित अलकावली । भौंहमन्मथ चाप बक्र लोचन बाण शीश शोभित मत्तमोर चन्द्रावली । उदित उडुराज सुंदर शिरोमणि वदन निरखि फूली नवलयुवति कुमुदा- वली । अरुण सकुचत अधर बिंबफल उपहसत कछुक प्रगटे होत कुमुद दशनावली । श्रवण कुंडल तिलक भाल बेसरि नाक कंठ कौस्तुभमणि

शुभग त्रिवलीवली । रत्न हाटक खचित उरसि पद कनक पांति बीच राजत शुभ झलक मुक्तावली । वलय कंकण बाजुबंद आजानु भुज मुद्रिका करतल बिराजत नखावली । कुणित कर मुरलिका अखिल मोहित विश्व गोपिका जन मन ग्रन्थित प्रेमावली । कटि क्षुद्रघंटिका कनक हीरामई नाम अंबुज बलित श्रृंगार रोमावली । धाइ कबहुंक चलत भक्त हित जानि पिय गंड मंडल रचित श्रम जल कणावली । पीतकौशेय प्रधान सुंदर अंग बजत नूपुर गीत भरत सदावली । हृदय कृष्णदास बलि गिरिधरन लालकी चरणनख चंद्रिका हरत तिमिरावली ॥ २ ॥ यहपद गावत सुनतप्रभु, हर्षतहियसुखपाइ । छवि निरखत हरि आपनी, मनहीं मन मुसक्याइ ॥

कूवामैंईखिसिल्देहछुटिगईनईभईभयो अशंकाकछूऔरैडरआई है । रसिकनिमणिदुखजानिसोसुजाननाथदियोदरशआइतनग्वालसुखदाइये । गोवर्द्धनतीरकहीआगेवलवीरगये श्रीगुसाईधीरसोंप्रणामयोंजनाइये । धनहुवतायोखोदिपायोविश्वासआयो हियेसुखछायोशंकएकलेवहाइये ॥ ३४० ॥ मूल ॥ श्रीवर्द्धमानमंगलगँभीरउ भैथंभहरिभक्तिके । श्रीभागवतबखानिअमृतमयनदीवहाई । अमलकरीसबअवनितापहारकसुखदाई । भक्तनसोंअनुरागदीनसों परमदयाकर । भजनयशोदानंदसंतसंघटकेआगर । भीपमभटअंगजउदारअतिकलियुगदातासुगतिके । श्रीवर्द्धमानमंगलगँभीर उभैथंभहरिभक्तिके ॥ ८२ ॥ रामरामप्रतापतेखेमगुसाईखेमकर । रघुनंदनकोदासप्रकटभूमंडलजान्यो । सर्वसुसीतारामऔरकछुउर नहिंआन्यो । धनुषबाणसोंप्रीतिस्वामिकेआयुधप्यारे । निकटनिरंतररहतहोतकबहूंनहिंन्यारे । शूरवीरहनुमंतके सदृशपरमउपासकप्रेमभर । रामरामप्रतापतेखेमगुसाईखेमकर ॥ ८३ ॥

माथुर बाराह पुराण में लिख्यो है सब ब्राह्मणनके मुकुट माथुर सो मथुरियनि के मुकुट मणि बिठ्ठलदास ॥श्लोक॥ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा य

दिवेतरः ॥ विष्णुभक्तिसमायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः ॥ २ ॥ मानदद ॥ तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना ॥ अमानिनां मानदेन कीर्त्तनीयः सदाहरिः ॥ २ ॥ गुनहिगुनअंतरधार्‌यो संतनिको सुभाव सूपको सोंहै सारही लेहैं असार फटाकि डारें असंतको सुभाव चालिनी कोसों ॥ ॥ ३ । ४ । ५ । ६ ॥

विठ्ठलदासमाथुरमुकुट भयोअमानीमानप्रद । तिलकदास सोंप्रीतिगुणहिगुणअंतरधरेउ । भक्तनकोउत्कर्षजन्मभरिरसनउचारेउ । सरलहृदैसंतोषजहांतहँपरउपकारी । उत्सवमेंसुतदानकियोक्रमदुष्कृतभारी । हरिगोविंदजयजयगोविंदगिराहुसदआनंदकृत । विठ्ठलदासमाथुरमुकुटभयोअमानीमानप्रद ॥ ८४ ॥ टीका ॥ भाईउभैमाथुरसोंरानाकेपुरोहितहेलरिमरे आपसमेंजियोएकजामें है । ताकोसुतविलसुदाससुखराशिहियेवैसथोरीभयोबड़ोसेवैश्यामें है । बोल्योनृपसभामध्यआवतनविप्रसुतक्षिप्रलैकेआवोकहीकहोपूजेकामहै । फिरिकैवुलायोकरोजायरणयाहीठौर काहूसमझायोगावैनाचैप्रेमधामहै ॥ ३४१ ॥ गयेसंगसाधुनलैविनयरंगरँगेसवराना उठिआदरदेनीकेपधरायेहैं । कियेजाबिछौनातीनिछातिनके ऊपर लेनाविगाईआयेप्रेमगिरेनीचेआयेहैं । राजामुखभयोश्वेतदुष्टनको गारीदेत संतभरिअंकलेतघरमधिलायेहैं । भूपबहूभेंटकरीदेहवाही भांतिपरीपाछे सुधिभईदिनातीसरेजगायेहैं ॥ ३४२ ॥ उठेजबमाघनेजनायसबबातकही सहीनहींजातिनिशिनिकसेविचारिकै । आयेयोंछटीकरामें गरुड़गोविंदसेवाकरतमगनाहियेरहतनिहारिकै । राजाकेजोलोगसुतौढूंढ़िकररहेबैठि तियामातुआइकरेरुदनपुकारिकै । कियेलैउपाइरहीकितौ हाहाखाइयेतौ रहेमड़रायतबवसींमनहारिकै ॥ ३४३ ॥

विनय रंगरंगे ॥ कवित्त ॥ कविता रसिकतादि गुन सब उर बसे नम्रता सजनता न रीझि आप पास में । बातें गढ़ि छोलि कहैं

पोलिकोन पारावार रीझें नचि चारु बनवारीके विलासमें।इनके जे गुण तिन्हैं उपमान पाई कहूं चहूं दिशि हेरि कियो लै प्रकाशमें । काहू न सुहाय तजिजाय सो भवन बैठे जैसे चांदनी सरस आई पूस मास में ॥ २॥ छाये कछू ॥ श्लोक ॥ रण्डे मन्यस्व मन्यस्व दुर्भगे दुःखकारिणि ॥ परान्नं दुर्लभं लोके देहोयंच पुनः पुनः ॥ २ ॥ दोहा ॥ तुरसी कुरसी सों कलों, चढई हरिके अंग ॥ पीवतही बैकुण्ठ को, लियो जातिहै भंग ॥ ३ ॥

देख्योजबकष्टतनप्रभुजीस्वपनदियो जावोमधुपुरीऐसेतीनवार भाषिये । आयेजहांजातिपांतिआयेकछूऔरैरंगदेख्योएकखातीसा धुसंगअभिलाषिये । तियारहेगर्ववतीसतीमतिशोचरती खोदतभूमि पाईप्रतिमाधनराखिये । खातीकोबुलाइकहीलहीयहलेहुतुम उनपा इपरिकह्योरूपसुखचाखिये ॥ ३४४ ॥ करेसेवापूजाअरुकामनहीं दूजाजलिगईभक्तिभयेशिष्यबहुभाइकै । बड़ोईसमाजहोतमानोंसिंधु सोतआये बिबिधबधायेगुणीजनउठेगाइकै । वफैआईएकनटीरूपगु णधनजटीवहगावै तानकटीचटपटीसीलगाइकै । दियेपटभूषणलैभू षणमिटतिकहुंचहूंदिशिहेरिपुत्रादियोअकुलाइकै ॥ ३४५ ॥ रंगीरा इमामताकीशिष्यएकरानासुताभयो दुखभारीनेकुजलहूनपीजिये। कहिकैपठाईवासोंचाहोसोईलीजे धनमेरोप्रभुरूपमेरेनयननकोदीजि ये । द्रव्यतौनचाहौरीझिचाहौ तनमनदियोफेरिकैसमाजकियोबिन तीकोकीजिये । जितेगुणीजनतिन्हैंदियेअनगनदान पाछेनृत्यकरेउ आपदेतसोनलीजिये ॥ ३४६ ॥

भूषण मिटत ॥ कबित्त ॥ हाथिनको अंकुश बनाये पुनिघोरन को लोहेकी लगाम मुखदशन चबातकी । योगिनिको पुरी राज्य रोगिन को पथपुरी जाते ज्वर जातहै विषम उरपात की । सांपन को मंत्रभूत प्रेतन को यंत्र रचि पानी पढि दिये तेन व्यथारहे गातकी । अवनी में आय बिधि रचें हैं उपाय ऐपै तासों न बसाय जे पचावैं रीझ बा-

तकी ॥ दोहा ॥ रूप चोच की बात पुनि, और कटीली तान। रसिक प्रबीणनके हिये, छेदनको ये बान ॥ २ ॥

ल्याईएकडोलामेंबैठारिरँगीराइजूको सुंदरशृंगारकहीवारतेरी आइये। कियोनृत्यभारीजोविभूतिसोतोवारीलियेभरीअंकवारीभेट कियेद्वारगाइये। मोहननिछावरिमेंभयोमोहिंलेहुमतिलियोउन शिष्यतनतज्योकहांपाइये। कह्योजुचरित्रबड़ेरसिकाबिचित्रनिको जोपै लालमित्रकियोचाहौहियलाइये॥ ३४७॥ मूल ॥ हरिरामहठीलेभजनबलरानाकोउत्तरदियो। उग्रतेजउदारसुघरसुथराईसींवा। प्रेमपुंजरसराशिसदागदगदसुरग्रीवा। भक्तनकोअपराधकरैताकोफलगायो। हिरण्यकशिपुप्रहलादप्रगटदृष्टांतदिखायो। सस्फुटवक्ताजगतमेंराजसभानिधरकहियो। हरिरामहठीलेभजनबलरानाकोउत्तरदियो॥ ८५ ॥ टीका ॥ रानासोंसनेहसदाचौपरिकोखेलोकरें ऐसो सोसंन्यासीभूमिसंतकीछिनाई है। जाइकेपुकारच्योसाधुझिरकिविडारचोपरच्योविमुखकेवशावातसांचीलैझुठाई है। आयेहरिरामजूपैसबहीजनाईरीति प्रीतिकरिबोलेचलौआगेआवोभाई है। गयेबैठेआवोजनमनमेंनलायोतब नृपसमझायोझारचोफेरिभूदिवाई है॥ ३४८॥

राना सों सनेह ॥ दोहा ॥ विषय विषमजे भरि रहै राजा मद रँग भोइ। तिनके द्वारे रहतजे, विषयी जानो सोइ ॥१॥ भाई है हमारो दनिपाल करीके नातेमाने हमारो तौनातो कंठीकोहै ॥ अस्माकं बदरीचक्रे युष्माकं बदरीतरुः ॥ ६ ॥ अथवा भाई है साधुनकी सेवा जहां निमित्त रजोगुण नृपतिके रहे हैं नहीं तौ महा अपराधलगै है तौ तिहारो काम न होइ तौ काहेको रहैंगे ॥ दोहा॥ धनुष बाण धारे रहैं अग्रदासकेकाज। भीरपरे हरिभक्त पै, सावधान तब राज ॥ ३ ॥

मूल ॥ कमलाकरभटजगतमेंतत्त्ववादरोपीध्वजा। पंडितकलाप्रवीणअधिकआदरदेआरज,संप्रदायशिरछत्रद्वितीयमनोंमध्वाचारज। जेतिकहरिअवतारसबैपूरणकरिजाने। परिपाटीध्वजविजैस

द्दशभागवतवखाने । श्रुतिस्मृतिसंवतपुराणततमुद्राधारीभुजा कमलाकरभटजगतमेंतत्त्ववादरोपीध्वजा ॥ ८६ ॥ ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहारिएकैकियो । गोप्यस्थलमथुरामंडलजिसेवाराहबखाने । तेकियेनारायणप्रकटेप्रसिद्धपृथ्वीमेंजाने । भक्तिसुधाकोसिंधुसदासतसंगसमाजन । परमरसज्ञअनन्यकृष्णलीलाकोभाजन । ज्ञानस्मारतकपक्षकोनाहिंनकोउखंडनवियो । ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहारिएकैकियो ॥ ८७ ॥ टीका ॥ भट्टश्रीनारायणजूभयेब्रजपरायणजायताईग्रामतहांव्रतकरिध्यायेहैं । बोलिकैसुनावैंइहांअमकोसरूपहैजू लीलाकूडधामश्यामप्रगटदिखायेहैं । ठौरठौररासकेविलासलैप्रकाशकियेजियेयोंरासिकजनकोटिसुखपाये हैं । मथुरातेकहीचलौवैनीपूछेवैनीकहोऊंचेगावआइखोदसोतलैदिखाये हैं॥ ३४९ ॥

ब्रजभूमि ॥ कवित्त ॥ ब्रजमान व्यापक अखंड प्रेम ब्रह्म जैसे सच्चित आनंद माया त्रिगुणते न्यारो है । जाके बन उपवन ग्राम नदी परबत हरिरूप रचे हरिखेले खिलख्यारो है । रत्नमय भूमि अरु अमृतमय जल ताको मारुत सुगंधनि सों भन्यो हरियारो है । ब्रह्मा शिव नारद मुनींद्रकहैं वेद चारो खेद मिटिजाइ जाके सुमिरो उचारो है ॥ १ ॥ दोहा ॥ ब्रजबृन्दाबन अवटरस,राधा कृष्ण स्वरूप। नाम लेत पातक कटै,ज्यों हरिनाम अनूप ॥ २ ॥ ज्ञान कृष्णरत सो ज्ञान अद्वैत वेदांत सों सुखी रहत है ॥ ३ ॥

मूल ॥ श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये । नृत्यगानगुनिनिपुणरासमेंरसबरषावत । अवलीलाललितादिवलितिदंपतिहिरिझावत । अतिउदारनिस्तारसुयशब्रजमण्डलराजत । महामहोत्सवकरतबहुतसबहीसुखसाजत । श्रीनारायणभट्टप्रभुपरमप्रीतिरसबशकिये । श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये ॥ ८८ ॥ मूल संसारस्वादसुखबातज्योंदुहुश्रीरूपसनातनत्यागदियो । गौड़देशबंगालहुतेसबहीअधिकारी । हयगयभवनभँडारविभवभूभुजअ

सुहारी । यहसुखअनित्यविचारवासबृन्दावनकीनो । यथालाभ संतोषकुंजकरवामनदीनो । ब्रजभूमिरहस्यराधाकृष्णभक्ततोषउद्धारकियो।संसारस्वादसुखबातज्योंदुहुश्रीरूपसनातनत्यागदियो ८९॥

संसारस्वाद ॥ भागवते ॥ जहौ युवैव मलवदुत्तमश्लोकलालसः ॥ भर्तृहरिशतके ॥ यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता साप्यन्यमिच्छाति जनं सजनोन्यसक्तः । अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या धिकृतां च तं च मदनं च इमांच मांच ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जिते मणि माणि कहैं जोरे मणि माणिकहैं धरामें धरा धूरही मिलाइबी । देह देह देह फेर पौपाइहै न ऐसी देह कौन जानै कौन देह कौन योनि जाइबी । भूख एक राखै मतिराखै भूख भूषणकी भूषणकी भूषण ते भूषण न पाइ-वी । गगनके जगम गन गगन न देह घाते नगन चलेंगेसाथ नगन चला-इबी । भुवन अनुहारि वादशाही की उनहारि तापै दृष्टांत गुलामको अनित्य विचार ॥ श्लोक ॥ धनंहिपुरुषोलोके पुरुषंधनमेवच । अव-श्यमेकं त्यजति तस्मात्किं धनतस्त्वया ॥ ४ ॥ विना परमेश्वर निर्वाह काहूको नहीं ॥ ५ ॥

टीका ॥ कहतवैरागगयेपागिनाभास्वामीजू वेगईयोनिवरतुकपांचलागीआंचहै । रहीएकमांझधरयोकोटिककवित्तअर्थयाहीठौरलैदिखायोकविताकोसांचहै । राधाकृष्णरसकीआचारजताकहीयामें सोईजीवनाथभटछपैवानीनाथहै । वडेअनुरागीयेतोकाहिवोबड़ाइकहा अहोजिनकृपादृष्टप्रेमपोथीवांचहै ॥ ३८० ॥ वृंदावनब्रजभूमि जानतनकोऊप्रायदईदरशाईजैसीशुकमुखगाई है । रीतिहूउपासनाकीभागवतअनुसारलियो रससारसोरसिकसुखदाई है । आज्ञाप्रभु पाइपुनिगोपेश्वरलगेआई कियेग्रंथभाइभक्तिभांतिसबपाई है । एक एकबातमेंसमातमनबुद्धिजब पुलकितगातदृगझरीसीलगाई है ॥ ॥ ३८१ ॥ रहैनंदगांवरूपआयेश्रीसनातनजू महासुखरूपभोगखीरकीलगाइये । नेकुमनआइसुखदाईप्रियालाड़िलीतू मानोंकोऊबाल

कीसुसौंजसबलाइये । करिरसोईसोईलैप्रसादपायोभायोअमलसोंआ योचढ़िपूछीसोजनाइये । फेरिजिनऐसीकरौयहीदृढ़हियेधरौढरो निजचालिकहिआंखेंभरिआइये ॥ ३५२ ॥

सांचहै ॥ दोहा ॥ थोड़े अक्षर रससहित, कहैं सुनै रससार । ताहि मनोहर जानियो, रसिक चतुरनिरधार ॥ कवित्त ॥ भक्त रसरूप राधा कृष्णरसरूप पद रचनाकेरूप यातेरूपनाम भापिये । त्यागरूप भागरूप सेवा सुखसाजरूप रूपही की भावना औ रूप मुखचाखिये । कृपारूप भावरूप रसिक प्रभावरूप गावत जातरूप लखिमन अभिलापिये । महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूके हृदयरूप श्रीगुसाँई रूप सदा नयननिमें राखिये ॥ २॥ शुकमुखसों रजयमुनागाई रत्नादिक नगाये ॥ ३ ॥

रूपगुणगानहोतकानसुनिसभासव अतिअकुलानप्राणमुरछासी आईहै । बड़ेआपधीररहेठाढ़ेनशरीरसुधिबुधिमेंनआवैऐसीबातलैदिखाई है । श्रीगुसाईकर्णपूरिपाछेआइदेखेआछे नेकुढिगभयेश्वासलाग्योतबपाई है । मानोंआगआंचलागीऐसोतनचिह्नभयो नयोयहप्रेमरीतिकापैजातिगाईहै ॥ ३५३ ॥ श्रीगोविंदचंदआइनिशिकोसुपन दियो दियोकहिभेदसबजासोंपहिचानिये । रहोंमैंखरिकमांझखोखैनिशिभोरसांझसींचै दूधधारगाईजाइदेखिजानिये । प्रगटलैकियोरूपअतिहीअनूपछवि कविकैसेकहैंथकिरहेलखिमानिये । कहांलौंबखानोंभरेसागरनगागरमें नागररसिकहियेनिशिदिनआनिये ३५४॥

ऐसी बात ॥ दोहा ॥ हृदय सरोवर छलछलहि, दंत गयंद झकोर । महासमुद्रहि परै जब, पावत ओरनछोर ॥ २ ॥ कवित्त ॥ पावक प्रचंडहूके पुंजते अधिकतातो वज्रसों विचारौ कहाताकी समतूलहै । कोटिक कटककी मुकुटताके आगेकहा महा दुःख दारुणके डरहूको मूलहै । जाके डरमीचहूनआवै पानलेत और सोई रैनि दिनमोही सरको न शूलहै । मरयोहूनजाय कितौ जियोहाइहाइ यह नेह किधौंबैरी देवताही मति भूलहै ॥ २ ॥ कौने कह्यौ बधिरे अवधिके करैया लागि येरोबि-

नकहैं ऐसो काम करियतुहै। जासों भजै घूटियेन डरेहू अहूंटिये जू टूटिये पतंगलौं पुकारे पारियतु है। नंद न अचम्भौ और गोकुलकचंद कीसों हरिहारि हाइहाइ बरैं मारियतुहै। कहाकहि कासों तोसों बावरे बिरंचि ऐसो पावकको नाम कहूं प्रेम धरियतुहै॥

रहैंश्रीसनातनजूनंदगांवपावनपै आवनादिवसतीनिदूधलैकेप्यारिये। सांवरोकिशोरआपपूछेंकिहिओररहीकहैंचारिभाईपितारोतिहूउचारिये। गयेग्रामबूझिघरहरिपैनपायेकहूं चहूंदिशिहेरिहेरिनयनभरिडारिये। अबकैजोआवैफेरिजाननहिंपावैशीशलालपागभावै निशिदिनउरधारिये॥ ३५५॥ कहीव्यालीरूपवेनीनिरखिस्वरूपनयन जानीश्रीसनातनजूकाव्यअनुसारिये। राधासरतीरद्रुमडारगहिमूलेफूले देखतसफलफानिगतिमतिवारिये। आयेयोंअनुजपासफिरेआसपासदेखि भयोअतित्रासगहेपांवउरधारिये। चरितअपारउभैभाईहितसारपगें जगेजगमाहिंमतिमनमेंउचारिये३५६॥

शीशलालपाग॥ सवैया॥ बरषा उघरैं ऋतु सावनकी निकस्यो वह छैल महाछल डारे। फूल अनार के रंग रँगी पगियाखिरकी न बनाय सँवारे॥ तादिन ते रँग और कहै हो सखी सुन श्यामा सुने झिझकारे। झुके दृग बाल लखे तब लाल सुभाल पै लालही पाग निहारे॥१॥

व्याली रूप देखत सफल फानि॥ कवित्त॥ पीतपट नाकतही दीठि डसिलेते फिरि फैलिके बिरह विष रोम रोम छावतो। होतो जब ऐसो हाल केतेब्रज वासिनको ऐसो कोक गाडरू कहांते ढूंढ़िलावतो। ईश्वर दुहाई जोपै होतो ऐसी नागिनतो कालीको नथैया कान्ह काहेको कहावतो॥ मुरि मुसकानि मंत्र जानति नराधे जीतो बेनीकीडसनि ब्रजबसन नपावतो॥ १॥ वेणीव्यालांगनाफणी॥ २॥

मूल॥ श्रीहरिवंशगोसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोइजानि है॥ श्रीराधाचरणप्रधानहृदयअतिसुदृढ़उपासी। कुंजकेलिदंपतितहांकीकरतखवासी॥सर्वसुमहाप्रसादप्रसिद्धताकेअधिकारी। विधिनिषे

धनहिंदास अनन्यउतकटव्रतधारी। व्याससुवनपथअनुसरैसोईभलै-पहिंचानिहै।श्रीहरिवंशगुसाईभजनकीरीतिसुकृतकोईजानिहै॥९१॥

हरिवंशगुसाई ॥ पद ॥ बंदौं राधिका पदपदम। परम कोमल शुभग शीतल कृपायुत सुख कदम ॥ चरणचिंतत अमल उरसिज जगत सबही छदम। भालपर अक्षर अनायास सोहै होतपरसत रदम ॥ कृष्ण अलंकृत स्वहस्तपूजन निगम नूपुर रदम। रसिक जनजीवन समूली अग्रसर बसुसदम ॥ रीति सुकृत ॥ कवित्त ॥ जाके हित हेत धनधाम तजिदेतपुनि वनवासलेत मुनि क्लेशन करतहैं। तारीलै लगावैं देहसुधि विसरावैं तऊ उरमें न आवै तब दुखमें जरत हैं। बहुत उपाय करैं मरिबेते नाहीं डरैं गिरिहूते गिरैं नदीमाहिं न परत हैं। ऐसे नंदनंदन महावर सुजाके देतं ताको व्यासनंदन जू ध्यानहीं धरतहैं। सुधानिधौ ॥ यस्याः कदापिवसनांचलखेलनोत्थधन्यातिधन्यपवनेनकृतार्थमानी। योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोपि तस्यैनमोस्तुवृषभानुभुवोदिशेपि ॥ ॥ २ ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ राशब्दंकुर्वते राधा ददामिभक्तिमुत्तमाम्। धाशब्दं कुर्वतेपश्चाद्यामिश्रेणैवलोभितः ॥ ३ ॥ राधाचरण प्रधान ॥ दोहा ॥ कुँवरि चरण अंकित धरणि, देखत जिहिजिहि ठौर। प्रियाचरण रजजानिकै, लुटत रसिक शिरमौर ॥ ३ ॥ जिहिउर सर राधा कमल, बसौलसौ बहुभाय ॥ मोहन भौंरा रैनिदिन, रहै तहां मड़राय ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ जाके हियसरहितजलनाहीं। राधापदकलताननमाहीं ॥ चरणकमल उदय होइ जौलौं। मोहन भँवरन आवे तौलौं ॥ २ ॥ कवित्त ॥ ब्रह्ममें ढूंढौं पुरानमें ढूंढौं वेदऋचापढ़िचौगुने चाइन। जान्यो नहीं कबहूं वह कैसोहै कैसे स्वरूप है कैसे सुभाइन। हेरत हेरत हारपरयो रसखानि बतायो न लोग लुगाइन। देखौ कहां दुरयो कुंज कुटीर में बैठो पलोटत राधाके पाइन ॥ २ ॥ कहा जानौं कौने बीचन देखो उन प्राणप्यारी तादिन ते मिलिबे के यतन करतहैं। पानीपान भोजन भुलानो भवन सोजन सनिदक बनाइ कन धीरज धरत हैं। दैगई महावर तिहारे

तरवानिमांझ ताके करपल्लवकीपौरै पकरतहैं । नयननसों लाइ उरलाइ कहे हाइहाइ बारबार नाइनके पाइन परत हैं ॥ ३ ॥ पद् ॥ भज मन राधि का के चरण । सुभग शीतल परम कोमल कमलकेसे बरण । क्वणित नूपुर शब्द उच्चरत विरहसागर तरण । वलितवाहि परमानंद बलिवलि श्याम जाकी शरण ॥ ४ ॥ राधेजूके चरणपलोटत मोहन । नीलकमलके दलन लपेटे अरुण कमल दलसोहन । कबहुंक लैलै नयनन लावत अलिधावत ज्यों गोहन । जैश्रीभट्टछबीली राधे होत जगेते छोहन ॥ ५ ॥ राधासु-धानिधौ ॥ योब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यैरालक्षितोनसहसापुरुषस्यतस्य ॥ सद्योवशीकरणचूर्णमनंतशक्तिंतंराधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ॥ ३ ॥ आग मे ॥ ब्रह्मानंदरसादनंतगुणतो रम्योरसोवैष्णवस्तस्मात्कोटिगुणोज्ज्वल-श्चमधुरः श्रीगोकुलेन्द्रोरसः ॥ तच्चानंतचमत्कृतिप्रतिमुहुः सद्बल्लवीनांपुरः श्रीराधापदपद्ममेवपरमं सर्वस्यभूतंमम ॥ ७ ॥ दशमे ॥ नेमांविरंच्योन भवोनश्रीरप्यंगसंश्रया ॥ प्रसादंलेभिरेगोपीयत्तत्प्राप विमुक्तिदात् ॥ ८ ॥ ब्रह्माण्डे ॥ शृणुगुह्यतमंतात नारायणमुखाच्छ्रुतम् ॥ सर्वैश्चपूजितादेवी राधावृंदावने वने ॥ २ ॥ माधुर्य्येमधुराराधामहत्त्वे राधिकागुरुः । सौंदर्येसुंदरी राधाराध्येवाराध्यतेमया ॥ प्रधानकोअर्थ ॥ कवित्त ॥ भूपतिके संपति-सों भरेहैं विविध कोशदीनी तहां छापकहो रंकपावे कैसे हैं । विना रीझ रावरी निहारि सकै राजूकौन पांगुलौ सुमेरु चढिसकै नहींजैसे हैं । राजाहू-की दईएपै मिलैगी प्रधान हाथ नीतिमेंप्रमाण बात कहियेजु ऐसेहैं । राधि का चरण रतिपावे हितरूपाही सों नाभाजी प्रधानता दिखाई यह ऐसे हैं ॥ ३ ॥ दृढउपासि सुधानिधौ ॥ धर्माद्यर्थचतुष्टयंविजयजा किंत द्वृथा वार्त्तयासैकांतेश्वरिभक्तियोगपदवीत्वारोपितामूर्द्धनि ॥ यावृंदावनसीम्नि काचनघनाश्चर्यं किशोरीमणिस्तत्कैंकर्यरसामृतादिहपरंचित्तेनमेरोचते ॥ ४ ॥ करतलवासी ॥ तांबूलंक्वचिदर्पयामिचरणौ संवाहयामिक्वचिन्मालाद्यैः परमंडयेक्वचिदहोसंवीजयामि क्वचित् ॥ कर्पूरादिसुवासितं क्वचिदहं सुस्वादुचांभोमृतं यास्याम्येवगृहेकदाखलुभजे श्रीराधिकामाधवौ ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ जहां नव नागरी रसिक नागरदोऊ प्रेमसोंविवश ह्वै करतहांसी। हुलस हुलसात लपटात तन सुधिजात परस्परबात रस के विलासी। इते अनखातउतबाना पगपरनिकीहै चरणकी छविहियेहरि प्रकासी। जहां दृगसैन की बात समझन हेत हितभरी खरी हरि बंशदासी ॥ ६ ॥ परस्परबात ॥ दोहा ॥ बतरस लालच लालकी, मुरली लई लुकाइ। सोंहकरै भौंहन हँसै, देनकहै नटजाइ ॥ ७ ॥ सर्वसुमहाप्रसाद ॥ सवैया ॥ काहूलियो जपकाहू लियो तप काहू महाव्रतसाधिकियोहै। काहूलियोगुण काहूलियो धन काहू महाउनमादहियो है। रंचक चारु चकोरनि दंपति संपति प्रेमपियूष पियोहै। राधिकावल्लभलालके थारको श्रीहरिवंशप्रसाद लियोहै ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ आदर्योप्रसाद औनिरादरी जगत रीति इष्टही की मिष्ट बात सबहीमन भाईहै। सुहथ जिमाये गौरश्याम रस रीति प्रीति अर्थो भयो गुणातीत नेमको जताई है। पर्म धर्म वरण्यो चरणोदक प्रदास मुख सर्वसु सो मान्यो भक्ति बेलिही बढाई है। शुद्ध रस मारग चलायो लोक शंकेनाहि युगल उच्छिष्ट की अधिकारतायों पाई है ॥ २ ॥ आदिपुराणे ॥ एकादशीसहस्राणि द्वादशीनांशतानिच॥ कर्णिकायांप्रसादस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम् ॥ ३ ॥ गरुडपुराणे ॥ आकंठभक्षितं नित्यंपुनातिसकलांहसः ॥ सर्वरोगोपशमनं पुत्रपौत्रादिवर्द्धनम् ॥ ४ ॥ विधिनिषेध ॥ स्मर्तव्यःसततंविष्णुर्विस्मर्त्तव्योनजातुचित् ॥ सर्वेविधिनिषेधाः स्युरेतयोरेवकिंकराः ॥ ५ ॥ अनुसरै ॥ कवित्त ॥ हितहरि वंश बिन हितकी न रीति जानै कैसे वृषभाननंदनी सों प्रीति करिये। कौन सोंहै धर्म जासों कर्मनिको भर्मजाय सुत वित्त राज पाय कैसे ध्यान धरिये। रसिकनरसनिकी राह औ कुराहकौन कौन की उपासना सों आशु सिंधु तरिये। जो पै नंद नंदनको चहै जगवंदनको तौपै व्यास नंदनको नाम उचरिये ॥ दोहा ॥ रेमन श्रीहरिवंश भज, जो चाहत विश्राम ॥ जिहि रस सब ब्रज सुन्दरी, छाँडि दिये सुखधाम ॥ ७ ॥ जय जय श्री हरि बंश सहहंसनि लीलारति। जय जय श्री हरिवंश भक्ति

में जाकी दृढ़ मति ॥ जय जय श्री हरि वंश रटन श्री राधा राधा। जय जय श्री हरि वंश सुमिरि नाशै भव बाधा॥व्यास आश हरिवंशकी सु जय जय श्री हरिबंश ॥ कबित्त ॥ तूही हरिबंशी हरिकर सों प्रसंशी है राधा गुण गान हेत अधर पै बसना। नई नई तानन से कानन में पैठि पैठि दंपति के आनन में तेरी ये बिलासना। प्यारे के हिये लागि प्यारी के अनुराग उत और प्रेम इत रूपह्वै वरसना। हिय में हित भई चित्त में चोपनई नयननि में नेह नई रस रस रसना ॥ ९ ॥

टीका ॥ श्रीहरिवंशीगुसाईं ॥ हितजूकीरीतिकोईलाखनमें एकजानेंसधाईप्रधानमानैंपाछेकृष्णध्याइये। निकटबिकटभावहोतनसुभावऐसोगुणहीकीकृपाहष्टिनेकु क्योंहूंपाइये। बिधि औ निषेधछेदडारेप्राणप्यारेहियेजियेनिजदासनिशिदिनवहैगाइये। सुखदचरित्ररसरसिकविचित्रनकेजानतप्रसिद्धकहाकहिकेसुनाइये॥ ॥ ३८७ ॥ आयेघरत्यागरागबढ्योपियाप्रीतमसों बिप्रबड़भागहरि आज्ञादईजानिये। तेरीउभैसुताब्याहिदेबोलेबोनाममेरोउनकोजोवंशसोप्रशंसजगमानिये। ताहीद्वारसेवाबिस्तारानिजभक्तनिकीआगतनकीगतिसोप्रसिद्धपाहिचानिये। मानिप्रियबातगृहगयोसुखलह्योतवकह्योकैसेजातयहमनसनआनिये॥ ३८८ ॥ राधिकावल्लभलालआज्ञासोरसालदईसेवासोप्रकाशऔबिलासकुंजधामको। सोइबिस्तारसुखसारदृगरूपपियोहियोरसिकनिजिननलियोपक्षबामको। निशिदिनगानरसमाधुरीकोपानउरअन्तरसिहातएककामश्यामाश्यामको। गुणसोंअनूपकहिकैसेकैस्वरूपकहैलहैमनमोहजैसेऔरनहींनामको॥

मानि प्रियबात ॥ दोहा ॥ टोना टामन सहस विधि, करि देखो सब कोय ॥ पीवकहै सो कीजिये, आपुनहीं वश होय ॥ २ ॥ पद ॥ प्रीतम प्रीति सों वश होइ। मंत्र यंत्र अरु टोना टामन काम न आवत कोइ। जो अपने प्रीतम प्यारे सों रहिये प्राण समोइ। तौ काहेको और ठौर वह जात प्रीति पति खोइ। हितकेगुणमें प्रीतमको मन मानिकलीजै खोइ।

सुर बिहँसति राखै अपने मन तन मँजूष में गोइ। गवौं भार गरव को सजनी अब तौ तू जिहि ठौरहि जोइ। उठि चलि मिलो किशोरी पतिसों केलि कल्पतरु बोइ॥

मूल॥ आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी। युगलनामसोंनेमजपतनितकुंजविहारी। अवलोकतरहैंकेलिसखीसुखकेअधिकारी। गानकलागंधर्वश्यामश्यामाकोतोषे। उत्तमभोगलगाइमोरमर्कटतिमिपोषे। नृपतिद्वारठाढ़ेरहेदर्शनआशाजासकी। आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी॥ ९२॥

रसिक छाप हरिदासजी रसिकहरिदास॥ दोहा॥ श्रीस्वामी हरिदासको यश त्रैलोक विस्तार। आप पियो प्यायो रसिक, नवल निकुंज विहार॥ कवित्त॥ रतन सुदेशमई अवनि निकुंज धाम अति अभिराम पिय प्यारी केलिरास है। रमत रमत दोऊ सुमति सुरति सेज अमित कटाक्षन के हाव भाव हासहै॥ भावक प्रवीण सुपुनीत गुणगानरटैं याते लोकं लोकनमें सुयश सुवास है। सखी रुद्र गनिस पानकरै रसिक शिरोमणि श्री स्वामी हरिदास है॥ २॥ पद॥ रसिक अनन्यनको पंथ बांको। जा पंथको पंथ लेत महामुनि मूंदति नयन गहे नितनाको। जापंथ को पछतातहै वेद लहै नाहिं भेद रहै जकजाको। सो पंथ श्रीहरिदास लहेउ रसरीतिकी प्रीतिचलाय निशानको। निशान वजावत गावत गोविंद रसिक अनन्यको पंथ बांको॥ ३॥ युगल नामसों नेम॥ दोहा॥ तुलसी जनक कुमारि बिन, जे सेवत रघुबीर। जैसे चंदा रैनि बिन, श्रवै न अमृत सीर॥ कवित्त॥ वहै है शरद चंद दिनमें उदोत देख्यो ज्योतिको न लेश लागै थारी के अकार है। रैनि रस देन मांझ चैन के समूह होत सो तज्यो प्रकाश रास ताको यों विचारहै। शब्द सुधाकर औ पात्र निशि बासर है तासरन कोऊ जामें सार निरधार है। रसिक प्रवीणहू चकोर रजनीशहीसों युगल स्वरूप गुण नामही अधारहै॥ ५॥ संमोहनीतंत्रे॥ गौरतेजो विनायस्तु श्यामतेजः समर्चयेत्। जपेद्वाध्यायते

वापि सम्भवेत्पातकी शिवे ॥ २ ॥ सखीसुख ॥ कवित्त ॥ विपिन बिहार फूलफूलेहैं अपार लाल लाड़िली निहार मन आई यों शृंगारिये। बीनि बीनि फूल मृदुअंगकी सुसम लैलै भूषण रचत सीरिनी के कै सँवारिये। सन्मुख ही मोहन हियेमें लख्यो प्रतिबिंब सोहन सनेह मोह भरी अंकुवारिये। यहै जानि श्यामा पीठि दई अति बामा येहो जीती चतुराई यों भुराइ पर वारिये ॥ ३ ॥ पद ॥ होड़परी मोराहिं अरु श्यामहिं। आवो चलो मधि सबकी गति लीजै रंगधौं कामहिं। हमारे तिहारे मध्यस्थ राधे और जाहि बदो पूंछ देख्यो तृण दै कहाहै यामहिं। श्रीहरिदासके स्वामी श्यामा को चौपरि कोसो खेल एकगुण द्विगुण त्रिगुण चतुर गुण दीजै री जाके नामहिं ॥ ४ ॥ पियको नचावन सिखावती प्यारी। वृन्दावन में रास रच्यो है शरद रैनि उजियारी। रूप भरी गुणहाथ छरी लिये डरपत कुंजविहारी। व्यास स्वामिनी निरखि नट श्यामहिं रीझदेत करतारी ॥ ५ ॥ महाराज कौन आछो नृत्य करैहै तृण दैकै पूंछे है बेर गोरी कह्यो तीजे लालजी को अंक में भरि लयो कही तो समान को नृत्य करैहै जैसी चौपरि की नरद एकबेर कच्ची होय फेरि पकै सोई चौपरि को खेलकहिये जय लाड़िली लाल मिले तब प्रियाजी ने रीझि कै रसिक छापदई ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ चहूं ओर बैठे मोर दाविचारो ओरनते जोत्यो मनमथ राख्यो मनहिं दुहाई में । कस्तूरी अरगजा को तिलक बिराजै भाल भाग भरे यौवन की जगमग जाई में। अलक चमर घनश्याम बाजे नूपुरादि हँसनि अवलोकनि सो बटति बधाई में। थिरचर ऐसी राज देखो देखो सखी आज दुहुनि रजाइ पाई एकही रजाई में ॥ २ ॥ सवैया ॥ जैसे अनखानि सतरोनि लपटानि पुनि अति इतरानि मुसकानि रंग बरषे। जैसे किरजान अति दीनता निदान पानआपने प्रमाण डाहि मिसिपानकरपे। झटक रिसान भुवतान त्यों त्यों प्राणनाथ प्राणन सिहान मान मनमेंही हरषे। ऐसी कुंजकेलि रस बेलि सुखझेलि रही बिना हरिदासदासी ताहि कोन निरषे ॥ पद ॥ प्यारी तेरी

पुतरी काजरहूते कारी । मानों द्वै भवँर उड़े हैं बरावर । चंपकी डार बै-ठे कुंद अलि लागी है जेव अराअर । जब आइ घेरत कटक कामको तव जियहोत दरादर । हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजविहारी दोऊमिल लरत झराझर । अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास । श्रीकुंजविहारीसे ये बिन छिन नकरी काहूकी आस । सेवा सावधान करिजाने सुघरगावत दिनरसरास । देहविदेहभये जीवतिही विसरे विश्वबिलास । श्रीवृन्दावन रज तन मन भज तजि लोकबेदकी आस । प्रीति रीति कीनी सवहिनसों किये नखासखवास । यह अपनो व्रत और निवाहो जवलग कंठ उसास । सुरपति भूपति कंचिन कामन तिनके भावे घास । अव के रसिक व्यास हम ऐसे जगत करत उपहास ॥ ३ ॥ ऐसो ऋतु सदा सर्वदा जो रहै वो लत नित मोरनि । नीकेवादर नीके धनक चहूंदिशि नीको वृन्दावन आ-छी नीकी मेघनकी घोरनि । आछी नीकी भूमि हरीहरी आछी नीकीरग निकामकी रोरनि । श्रीहरिदास के स्वामी श्यामाको मिलगावत वन्यो राग मलार किशोर किशोरनि ॥ ४ ॥

टीका ॥ स्वामीहरिदासरसराशिकोवखानिसकैरसिकताछापजो ईजायमध्यपाइये । लायोकोऊचोवावाकोअतिमनभोवावामें डारचौ लैपुलिनयहैखोवाहियेआइये । जानिकैसुजानकहीलैदिखावोलाल प्यारे नेसुकुउघारेपटसुगंधउड़ाइये । पारसपपानकरिजलडरवाइ दियोकियोतबशिष्यऐसेनानाविधिपाइये ॥ ३६० ॥ मूल ॥ उत्क र्षतिलकअरुदामकोभक्तइष्टअतिव्यासको । काहूकेआराध्यमच्छ कच्छशूकरनरहरि । वावनफरसाधरनसेतुवंधनशैलकर । एकतकें यहरीतिनेमनवधासोंल्याये । सुकलसमोखनसुवनअच्युतगोत्रीजुल ड़ाये ॥ नौगुनतौरनूपुरगुह्योमहतसभामधिरासको । उत्कर्षतिल कअरुदासकोभक्तइष्टअतिव्यासको ॥ ९३ ॥

लायो कोऊ चोवा ॥ दोहा ॥ कै सुगंध सोंधौ सरस, कै उत्तम कु-लगान ॥ इनही के कर मीचहै, मेरी मेरे जान ॥ २ ॥ दुखाइ दियौ कु-

एडलिया ॥ रानी राज सिंगार पट धोबी को धुबरोट । धोबीको धुबरोट कियो दुर्लभ मानुष तन । सुलभ विषय सब जोर ब्रह्मआधीन जगत जन ॥ कौड़ी कामिनि कुटुम्ब तिनहिं हित हीरा हारयौ । ज्यों बनिजारो बैल थक्यौ तब मगमें डारयौ । नेगन लाग्यो रामके अगर बड़ो यह खोट । रानी राज सिंगार पर धोबीको धुबरोट ॥ गाडर आनी ऊनको बांधी चरै कपास । बांधीचरै कपास विमुखहरि लों न हरामी । प्रभुप्रतापकी देह कुछित सुखसोई कामी ॥ जठर यातना अधिक भजन बदि बाहर आयो । पवन लगत संसार कृतघ्नी नाथ भुलायो । चाकरी चौर हा जिरकुँवर अगर इते पर आस । गाडर आनी ऊनको बांधी चरै कपास ॥ ३ ॥ उत्कर्ष तिलक अरु ॥ पद ॥ मेरे भक्त हे देवा देऊ । भक्तनि जानौभक्तनि मानौ निजजनमो जिवतेऊ । मातपिता भक्त ममभाई या भक्त दमा दस जनवसनेऊ । सुत संपति परमेश्वर मेरे हरिजन जाति जनेऊ, भवसागरकोबेरोभक्तहै हरिखेवट कुरखेऊ । बूड़तबहुत उबारे भक्तनलियेउबारि जरेऊ । तिनकी महिमा व्यास कपिल कहि हारे सब परवेऊ । व्यास दासकी प्राणजीवन धन हरि परिवार बड़ेऊ । रासकेलि कवित्त ॥ शरद उज्यारी फुलवारी में विहारी प्यारी श्रीगोविंद तैसी वाणी मंडली सखीन की । प्रेमको प्रकाश रास रसको विलास तामें राग रागिनी है सुरसात ग्राम तीनकी । उरपतिरप के संगीतनि के भेद भाव नीकी धुनि नूपुर किंकणी चुरीन की । लीन भई मुरली मृदंग की नवीन गति वीन की वजनि औ वजावनि प्रवीन की ॥ २ ॥ उचकि ॥ २॥ उचकी पग धरत धरणिपर झिझकि झिझकि कर करन उचतहैं । ललक ललक गति लेत सुवह पुनि झपक झपक दग पलन सुचतहै । ठुमुक ठुमुक पग वजत घुंघरू धुनि मधुर मधुर सुरतानन खचतहैं । मुलक मुलक मन हरत सकल जन आज राज ब्रजराज रास में नचत हैं ॥ ३॥ ऐसे रास में जनेऊ तोरिके श्री प्रिया जूको नूपुर गुह्यो तब यह पद गायो ॥ पद ॥ रसिक अनन्य हमारो जाति । कुलदेवी राधाबरसानो

खेरो ब्रज बासिनकी पांति । गोत गोपाल जनेऊमाला शिखा शिखंडी हरि मंदिर भाल । हरिगुणगानवेद धुनि सुनियत मंजुपखावज कुशकरताल । शाखा यमुना हरिलीला पटकर्म प्रसाद प्राणघनरास । सेवा विधि निषेध सतसंमत बसत सदा वृन्दावनवास । स्मृति भागवत कृष्ण ध्यान गायत्री जाप । वंशीऋषि निजमान कल्पतरु प्यास अशीशनदेत शराप ॥

टीका ॥ आयेगृहत्यागिवृन्दावनअनुरागकरिगयोहियोपागिहो इन्यारोतासोंखीजिये । राजालेनआयोऐपैजाइवोनभायोश्रीकिशोर अरुझायोमनसेवामतिभीजिये । चीराजरकसीशीशचिकनोखिसिल जाइ लेहुजूबँधायनहींआपबांधिलीजिये । गयेउठिकुंजसुधिआईसुख पुंजआयेदेख्योबंध्योमंजुकहिकैसेमोपैरीझिये ॥ ३६१ ॥ संतसुखदे नबैठेसंगहीप्रसादलेतपरोसततियासबभांतिनप्रवीनहैं । दूधनरताइ लैमलाईछिटकाईनिज खिजउठेजानिपतिपोखतनवीनहैं । सेवासोंछु ड़ायदईअतिअनसनीभईगईभूखबीतेदिनतीनितनक्षीनहैं । सबसमु झावैंतबदंडकोमनावैंअंगआभरणवेचिसाधजैवेंयोंअधीनहैं ॥३६२॥ सुताकोबिवाहभयोबड़उत्साहकियो नानापकवानसबनीकेबानिआ येहैं । भक्तनिकीसुधिकरीखरीअरबरीमतिभावनाकरतभोगसुखदल गायेहैं । आइगयेसाधुसोबुलाइकहीपावौजाइपोटनिबँधायचाइकुजन पठायेहैं । वंशीपहराईद्विजभक्तिलैदृढ़ाईसंतसंपुटमोंचिरीयादेहितसो बसाये हैं ॥ ३६३ ॥

आयेवृन्दावन ॥ सवैया ॥ भूमिहरी द्रुमझूमिरहे लखि ठौर रहे दृग- ठौर सुहाते । न्यारेसे लोग रँगीले तहांके मिले हँसि प्रेम हिये सरसाते । नाम न आवै औ आवै गरोभरि नामलियो नहिं जात है याते । सांवरी एक नदी पै बसै सो कहौ किमि कोउ या गांवकी वाते ॥ २ ॥ खीजिये॥ ॥ पद ॥ सुधारोहरि मेरो परलोक । वृन्दावनमें कीनोदीनो हरि अप- नो निजओक । माताको सों हित कियो हरिजानि आपने तोक । चरण धूरि मेरे शिरमेली और सबनिंदै रोक । जेनर राकस कूकर गदहा ऊंट

वृषभ गज वोक। वृन्दावन तजि बाहर भटकत तो शिर पनहीं ठोक ॥ ॥ २ ॥ जाईबोन भावै ॥ वृन्दावनके रूप हमारे मात पिता सुतबंध। गुरु गोविंद साधुगति मतिफल अरु फूलनको गंध । इन्हैं पीठि दै अनत दीठिकरि सो अंधन में अंध। व्यास इन्हैं छोडै रुछड़ावै ताको परियो कंध ॥ ३ ॥ दोहा ॥ वृन्दावनको छांड़िकै, और तीर्थको जात । छांडि बि-मल चिंतामणी, कौड़ीको ललचात ॥ ४ ॥ राधा बल्लभ कारणै सही जगत उपहास । वृन्दावनके श्वपचकी, जूठनिखाई व्यास ॥ ५ ॥ वृन्दावन छांड़िये नहीं॥ ६ ॥ खिजउठे पद ॥ तिया जो न होइ हरिदासी। सोदासी गणिका सम जानो दुष्टराड़ मसवासी । निशिदिन अपनो अंजन भंजन करत विषयकी रासी। परमारथ कबहूं नहिं जाने आनिपरे यमफांसी। कहाभयो स्वरूप गुण सुंदर नाहिंन श्याम उपासी। ताके संग न पतिगति जैहै याते भली उदासी। साकतनारि जुवर में राखै निश्चय नरक निवासी। व्यासदास यह संगति तजिये मिटै जगतकी हांसी ॥ २ ॥ अंग आभरण वेंचि बीस हजार रुपैया के वेंचिकै वैष्णव जिमाये तब तिया रसोई में लई में श्वेत वस्त्र पहिराइ कैसे वामें आवै ॥ २ ॥ पद ॥ विनती सुनिये वैष्णव दासी। जा शरीरमें वसत निरंतर नरक बात पितखांसी । ताहि भुलाइ हरिहि यों गहिये हैंसै संग सुखबासी । बढ़ै स्वहाग ताहि मन दीजे औरु बराक विशवासी। ताहि छांड़ि हित करै और सों गरेपरै यम फांसी। दीपक हाथ परै कूवांमें जगत करै सबहांसी । सर्वोपरि राधापतिसों रति करत अनन्य विलासी । तिनकी पद रज शरण व्यासको गति वृन्दावन वासी ॥ २ ॥ पोटन पद ॥ हरिभक्तनते समधी प्यारे। आये भक्त दूरि बैठारौ फोरत कान हमारे। दूर देशते स-मधी आये तेघर में बैठारे । उत्तम पलिका सों रसपेदी भोजन बहुत सँ-वारे। भक्तनको दे चून चनाको इनको सिलवट न्यारे । व्यास दास ऐसे बिमुखनको यमसदा टेरतहारे। तापर दृष्टांत उंगली सों राहबताई ॥ २॥ पोटवँधाइ के मिठाई साधुनको दई तब पुत्र खिझे यह कहा करतहौ॥ २॥

शरदउजियारीरासरचेउपियप्यारीतामेंरंगवढ़ोभारीकैसेकहिकै सुनाइये । प्रियाअतिगतिलईविजुरीसीकौंधिगईचकचौंधीभईछविमं डलमेंछाइये । नूपुरसोटूटिछूटिपरचोअरवरचोमनतोरिकैजनेउक रचोवाहीभांतिभाइये । सकलसमाजमेंयोंकहेउआजकामआयो ढो योहैजनमताकीवातजियआइये ॥ ३६४ ॥ गायोभक्तइष्टअतिसुनि कैमहंतएकलेनकोपरीक्षानायोसंतसंगभीरहैं । भूखकोजतावैवाणी व्यासकोसुनावैसुनिकहौभोगआवै इहांमानेहारिधीरहैं । तवनप्रमाण करीशंकधरीलैप्रमादग्रासदोइचारिउठेमानोंभईपीरहैं । पातरिसमे टिलईसतकरिमोकोदईपावोतुमऔरपावलियेदृगनीरहैं ॥ ३६५ ॥

तोरिकै जनेऊ ॥ पद ॥ इतनो है सब कुटुंब हमारो । सेन धना- नाभा अरु पीपा अरु कबीर रैदास चमारो ॥ रूप सनातन को सेवक गंगल भट्ट सुटारो । सूरदास परमानंद मेहा मीराभक्त विचारो । ब्राह्मण राजपू- ज्य कुलउत्तम करत जातिको गारो । आदिअंत भक्तनको सर्वस राधा वल्लभ प्यारो । इहिपंथचलत श्यामश्यामाके व्यासहि वोरो भावैतारो ॥ ३ ॥

भयेसुततीनबाटनिपटनवीन कियेएकओरसेवाएकओरधनध रचोहै । तीसरीजुठौरश्यामवंदनीअरुछापधरीकरीऐसीरीतिदेखिब ड़ोशोचपरचो है । एकनेरुपैयालयेएकनेकिशोरजूको श्रीकिशोर दासभालतिलकलैकरचोहै । छोयेदियेस्वामीहरिदासदिशिराशि कियोवहीराशिललितादिगायोमनहरचोहै ॥ ३६६ ॥

शीतकरी पद ॥ जूठन जे न भगत की खात । तिनके वदन सदन नरकनके जेहरि जनन घिनात । काम विवशकामिनके पीवत अधरन लार चुचात । भोजन पर माखी मूततहैं जिहि जेंवत नांहि सकात । वाजदारकी पांति ब्याहमें जेंवत विप्रबरात । भेंटत सुतहिं रेंटमुखलागत सुखपावत जड़तात । अपरसहै भक्तनिछुइ छुतिहातेल सचेऊ अन्हात।भक्तनपीछे सब डोलत हैं हरिगंगाअकुलात । साधुचरण रज मांझ व्याससे कोटिक पतित समात ॥ २ ॥ आदिपुराणे ॥ मद्भक्तायत्रगच्छंतितत्रगच्छामिपार्थिवा ॥

भक्तानामनुगच्छंतिमुक्तयःश्रुतिभिःसहः ॥ २ ॥ भागीरथके पीछे डोली-ही हैं आपजगमें तीर्थही है ॥ ३ ॥ वहीरीति ॥ पद ॥ लाल लटकता योवन मंता खेलतरास अनंता। यमुना तीर श्रीरयुवतिनकी बांहजोरि मं-डली बनाई मध्यराधिका कंता॥एकनि के कर कंजकपोल पर रंभनि देत हसंता। किशोर दासके स्वामी कुंजविहारी बिहारिनकेसंग विहरत केलि करंता ॥ ४ ॥

मूल ॥ श्रीरूपसनातनभक्तिजलश्रीजीवगुसाईंसरगँभीर। बेला भजनसुखककषायनकबहूंलागी। वृन्दाबनदृढ़वासयुगलचरणनिअ नुरागी। पोथीलेखनपानअघटअक्षराचितदीनो। सद्ग्रंथनकोसारस बैहस्तामलकीनो॥ संदेहग्रंथछेदनसमर्थरसराशिउपासकपरमधीर। श्रीरूपसनातनभक्तिजलश्रीजीवगुसाईंसरगँभीर॥ ९४ ॥ टीका ॥ कियेनानाग्रन्थदृदैग्रन्थिदृढ़छेद डारैंधनयमुनामेंआवैचहूंओरते। कहीदाससाधुसेवाकीजेकहैंपात्रजान करौंनीकेकरीबोल्योकटिकोप जोरते। तवसमझायोसंतगौरवबढ़ायोयह सबकोसिखायोबोलेमीठे निशिभोरते। चरितअपारभावभक्तिकोनपारावार कियोहूंवैरागसा रकहैंकौनछोरते॥ ३६७॥

भक्त जलपद। जयजय मेरे प्राण सनातन रूप। अगतनकी गति दोऊ भैया योग यज्ञके जूप। श्रीवृंदावन की सहज माधुरी प्रेम सुधाके कूप। करुणासिंधु अनाथ बंधुजय भक्तसभाके भूप। भक्त भागवत मत आचारज चतुर कुल चतुरभूप।भुवन चतुरदश विदित बिमलयश रसनाके रसतूप।चर-णकमल कोमलरज छापा मेटत कलरजधूप। व्यास उपासक सदा उपासी श्रीराधा चरणअनूप॥ बोले कवित्त ॥ सीखे व्याकरणकोष काव्य औ पुराणसीखे सीखे वेदपढ़िवो जो धर्मनको मूरिहै। न्याय वेदान्त आदि सीखे पटशास्त्र वर पंडिताई चतुराई जानै भारि पूरिहै। सीखे घटपट सांप जेवरी बखानिबेको माया भ्रमजाकी अति जीवनि की मूरिहै। भक्तनकी सभा-बीच प्रेमरस सींचि सींचि बोलिबो न सीख्यो सबसीखिबे में धूरि है॥ २॥

प्रसंगमजरंपासमात्मनःकवयो विदुः । सएवसाधुसुकृतंमोक्षद्वार मपावृतं ॥ १ ॥ मूल ॥ श्रीवृन्दावनकीमाधुरीइनमिलआस्वादन कियो । सर्वसुराधारवनभट्टगोपालउजागर । हृषीकेशभगवानविपु लविट्ठलरससागर ॥ थानेश्वरीजगन्नाथलोकनाथमहामुनिमधुश्री रंग । कृष्णदासपंडितउभैअधिकारीहरिअंग ॥ घमंडीयुगलकिशोर भूगर्भजीवदृढ़ व्रत लियो । श्रीवृंदावनकी माधुरी इनमिलिआस्वा दनकियो ॥ ९८ ॥

इनमिल विषैरस स्वादीको मिलवोकहा राजा को दूसरो न रुचै अरु दत्तात्रेयहूने क्वारी कन्याकी चूरी दूसरी हू दूरिकरी पै कैसेमिलै दत्तात्रेयजी ने ब्रह्मज्ञानीन को संग निषेधकियो उपासकनको नहीं ब्रह्मज्ञानी विधवा तुल्य हैं उपासक सुहागवती तिनको संगचूरी चाहिये जैसे चूरी को शब्द पतिको प्यारो लगै ऐसे संग रूप चूरीको शब्द कृष्णपतिको प्यारो लगै याते ब्रह्मज्ञानीके कृष्ण पति नहीं तिनहीं को संग चूरी त्याग है याते इन्हैं मिलिके रूप माधुरी को स्वादालिये ॥ पद ॥ जो कोऊ वृन्दावन रसचाखैं । खारी लगत खांड़ अरु खारक आन देशकी दाखैं । प्राणसमानतजैंन हिं सीवालोभदिखावतलाखैं । भूखेरहिकै पावैभाजी निरखि रहे तरुसाखैं । परे रहैं कुंजनिके कोने कृष्ण राधिका भाखैं । जनगोविंद बलवीर कृपाते पटरानी जूराखैं ॥ २ ॥ क्योंकि राधेको वृन्दावन वेदन में गायोहै ॥ ॥ सवैया ॥ पौरिकै पौरिया द्वारके द्वारिया पाहरूवा घर के घनश्याम हैं । दासी के दास सखीनके सेवक पार परोसिन के धनधाम हैं । श्रीवर कान्हभरे हित भामर मानभरी सतभामासी बाम हैं । एक वही विश्राम थली वृषभानलली की गली के गुलाम हैं ॥ २ ॥

टीकागोपालभट्टकी ॥ श्रीगोपालभट्टजूकेहियेवेरसालवसेलसे यौंप्रगटराधारवनस्वरूपहैं । नानाभोगरागकरैं अतिअनुरागपगे ज गेजगमाहिं हितकौतुक अनूपहैं । वृंदावनमाधुरी अगाधकोसवाद लियो जियोजिनपायो शीतभयेरसरूप हैं । गुणहीकोलेतजीव औ

गुणकोत्यागदेतकरुणानिकेतधर्मसेतुभक्तभूपहैं॥ ३६८॥ टीका॥ अलिभगवानकी ॥ अलिभगवानरामसेवासावधानमनवृन्दावनआइ कछूऔरैरीतिभई है । देखेरासमंडलमेंविहरतरसरासबाढ़ीछबिन्या सहगसुधिबुधिगई है। नामधरिरासऔविहारीसेवाप्यारीलली खगी हियमांझगुरुसुनीबातनई है । बिपिनपधारेआपजाइपगधारेशीश ईशमेरेतुमसुखपायोकहिदई है॥ ३६९॥

बाटीछबि पद ॥ रहौ कोउ काहू मनहिं दिये। मेरे प्राणनाथ श्री श्यामा सपथकरौ तृणलिये। जे अवतार कदंब भजत हैं धरि दृढ़ ब्रतजुहिये। तेऊ उमँगि तजत मर्यादा वन बिहार रसपिये । खोये रतन फिरत जे घर घर कौनकाज अपजिये । जय श्री हित हरिवंश अनंत सचनाहीं बिनधारत ताहिलिये २ आनि देशकी गैलहारीति श्री कृष्ण दौरि मेवाती लूटलै हैं जो रावरी। सोई अलि भगवानको लूटिलियो जो जोरावर रामहो तौ बचायले तो श्री शुकदेवजी ने ब्रह्मनेष्टको लूटिलियो॥ दोहा॥ अनब्याही हँसैंकरैं, ब्याही लेत उसास। गौनेकी मौने रहीं, देख राममृदुहास ॥

टीकाविट्ठलविपुलकी ॥ स्वामीहरिदासजूकेदासनामविट्ठलहैं गुरुकेवियोगदाहउपज्योअपारहै । रासकेसमाजमेंबिराजसबभक्तराजबोलिकैपठाये आयेआज्ञाबड़ोभारहै । युगलस्वरूपअवलोकना नाभेदनृत्य गानतानकानसुनिरहीनसँभारहै। मिलिगयेवाहीठौरपायोभावतनऔरकहैंरससागरसोताकोयोंबिचारहै॥ ३७०॥ टीका लोकनाथकी ॥ महाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजूके पारषदलोकनाथनाम अभिरामसबरीतिहै । राधाकृष्णलीलासोंरंगीनमेंनवीनमन जलमीनजैसेंतैसेनिशिदिनप्रीतिहै । भागवतगानरसखानसोतौप्राणतुल्य अतिसुखमानिकहैगावैजोईनीतिहै । रसिकप्रवीणमगचलतचरणलागि कृपाकैजताइदईजैसीनेहरीतिहै॥ ३७१॥ टीका॥ मधुगुसाईं की ॥ श्रीमधुगुसाईआयेवृन्दावनचाहबढ़ीदेखेइननयननसोंकैसोधौं

स्वरूपहै । ढूंढ़तफिरतबनबनकुंजलताद्रुममिटीभूखप्यासनहींजाने छांहधूपहै।यमुनाचढ़तिकाटिकरतकरादेजहां वंशीवटतटदीठिपरेवे अनूपहै । अंकभरिलियोदौरिअजहूंलौंशिरमौर चहैभागभालसाथ गोपीनाथरूपहै ॥ ३७२ ॥

पायो भागवतन ॥ पद ॥ प्यारी नेकु निरखौ नवरँग लाले । तुवपद पं-कज तल रजबंदत तिलक बनावत भाले । तेरेवरण वसन आभूषण उरध-रि चंपकमाले । बिठल विपुल विनोद करोबल भुजभरि बाहु विशाले ॥ जलमीन जैसे ॥ दोहा ॥ मीनमारि जलधोइये, खाये अधिक पियास । बलिहारी वा चित्तकी, मुये मित्तकी आस॥ २ ॥ परसा हरिसों प्रीतिकरि मछरी कीसी न्याइ॥जीवत मरत न छांड़हीं, जल बिन रह्यो न जाइ॥ ३॥

गुसाईंश्रीसनातनजूमदनमोहन रूपमाथेपधरायकहीसेवानीकें कीजिये । जानोकृष्णदासब्रह्मचारीअधिकारीभयेभटश्रीनारायणजू शिष्यकियेरीझिये । करिकैंशृङ्गारचारुआपहीनिहारिरहेगहे नहीं चेतभावसांझमतिभीजिये । कहांलौंबखानकरौंरागभोगरीतिभांति अबलोंविराजमान देखिदेखिजीजिये ॥ ३७३ ॥ श्रीगोविंदचंदरूप राशिसुखराशिदासकृष्णदासपंडितयेदूसरेयोंजानिले । सेवाअनुरा गअंगअंगमतिपागिरही पागिरहीमतिजोपैतोपैयाहिमानिले । प्रीति हरिदासनसोंविविधप्रसाददेतहियेल्याइलेतदेखपद्धतिप्रमानले । सह जकीरीतिमेंप्रतीतिसोंविनीतकरैटेरेवाहीओरमनअनुभवआनिले ॥

मतिपागिरही ॥ कवित्त ॥ गोविंद रँगीले रंगरंगनि शृंगार कियो लि-ये करछरी हिये सबके बिलोये हैं । इतरात जातधरे पगधरणीपर यौवन उमंग आप अंगअंग भोये हैं । चितवनि में न सनी सैननसों बातैंकरै हरै मनलाड़ भरे नेहसों समोये हैं । ऐसो कविकौन सकै नयनन स्वरूप कहि लाल लाल कोयनमें केते बर खोयेहैं ॥ २ ॥ प्रसाददेत ॥ कुंडलिया॥ राइनिभाइनि जासुको खँड़ावरादेहाथ खँड़ावरादे हाथ देत प्रभुकोतुलसी दल।कैदोनाभरि फूल के करुवा भरिकै जल। भोजनगटकत आपरजोगुणदे

पुनि हरषै। यावारूथल माझदयानिधिको लै बरषै । भवभोरै सेवा खड्ग लैकाट्यो निजमाथ। राइनि भाइनि जासुको खड्ग बरा दै हाथ ४ । ५ अलोनी रोटी गले में अटकै कही कहा गीता विस्तार करोगे ॥

गुसाईंभूगर्भवृन्दावनदृढ़वासकियो लियोसुखबैठिकुंजगोविंदअनूपहैं। बड़ेईविरक्तअनुरक्तरूपमाधुरीमेंताहीकोसवादलेतामिलेभक्तभूपहैं। मानसीविचारहीअहारसोंनिहाररहेगहे मनवृत्तिवेईयुगलस्वरूपहैं । बुद्धिकेप्रमाणउनमानिमेंबखानकियो भरयोबहुरंगजाहिजानेरसरूपहैं ॥ ३७८ ॥ मूल ॥ श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदियो। तनमनधनपरिवारसहितसेवतसंतनकहि। दिव्यभोगआरतीअधिकहरिहूतेहियमाहि । श्रीवृन्दावनचंदश्यामश्यामारँगभीने। मगनसुप्रेमपियूषपयधपरचेबहुदीने । श्रीहरिप्रियश्यामानंदवरभजनभूमिउद्धारकियो । श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदियो ॥ ९८ ॥ टीका ॥ श्रीरसिकमुरारिसाधुसेवाविस्तारकियोपावैकौनपाररीतिभांतिकछुन्यारिये । संतचरणामृतकेमाठगृहभरेरहेताहिकोप्रणामपूजाकरिउरधारिये । आवेंहरिदासतिन्हैंदेतसुखराशिजीभएकनप्रकाशसकैथकेसोबिचारिये । करेंगुरुउत्सवलैदिनमानसवै कोई द्वादशदिवसजनघटालगीप्यारिये ॥ ३७६ ॥ संतचरणामृतकोलावोजायनीकीभांतिजीकीभांतिजानिबेको दासलपटायोहै। आनिकैबखानकियोलियोसबसाधुनको पानकरिबोलेसोसवादनहींआयोहै । जितेसभाजनकहीचाखौदेवौमनकोऊमहिमानजानेकनजानिछेड़िआयोहै। पूछीकह्योकोटीएकरह्योआनौलायोपियोदियोसुखपासनयननीरढरकायोहै ॥ ३७७ ॥

आनो ॥ चैतन्यचरितामृते ॥ दृष्टैः स्वभावनिरतैर्वपुषस्तु दोषैर्न प्राकृतत्वमिहभक्तजनस्य पश्येत ॥ गंगावसानखलवुद्बुदफेणपंकैर्ब्रह्मद्रवत्वमुपगच्छाति नारधर्म्मे ॥ १ ॥ सौप्याईन एक तिसाईं जैसे प्रीतिकरि शालिग्रामसों पूजे ॥

नृपतिसमाजमेंविराजभक्तराजकहैं गहैंवोविवेककोऊकहनप्रभाव है। तहांएकठौरसाधूभोजनकरतरौरदेवोदूजीसोंटासंगकैसेआवेभावहै । पातरिउठाइश्रीगुसाईपरडारिदईदईगारिसुनीआपवोलेदेखौदावहै। सीतासोंविमुखमैंतौआनिसुखमध्यदियोकियो दासदूरिसेतसेवामेंनचावहै ॥ ३७८ ॥ वागमेंसमाजसंतआपचलेदोखिवेकोदेखतदुरायोजनहूंकोशोचपरचोहै । वड़ोअपराधमानिसाधूसनमानचाहैंघूमितनवैठिकहीदेख्योकहूंधरचोहै। जाइकैसुनाईदासकाहूकेतमाखूपास सुनिकैहुलासवढ़ेउआगेआनिकरचोहै। झूठहीउसासभरिसांचेप्रेमपाइलियेकियेमनभायेऐसेशंकादुखहरचोहै ॥ ३७९ ॥ उपजतअन्नगांवआवेसाधुसेवाठांवनयोनृपदुष्टआयकावाकावकियोहै। ग्रामसोंजबतकरौकरेउलैविचार आपश्यामानन्दजूसुरारिपत्रलिखिदियोहै। जाहीभांतिहोहिताहीभांतिउठिआवौयहांआयेहाथवांधिकरिआचेहूंनलियोहै। पाछेसाष्टांगकरीकरीलैनिवेदनसोभोजनमेंकहीचलेआयेभीज्योहियोहै ॥ ३८० ॥

शीत विमुख ॥ दोहा ॥ जानि अजानी ह्वै रहे, तातलेइ जो जानि। अगिला होवे अगन सम, आपुन होवे पानि ॥ २ ॥ कियो दास दूरि रसोई पावो ले महाराज लाज कैसे रहै सोंटा को मांगै है सोंटाहू खाइहै बावरे मनुष्य खाइसेर सोंटा खाइ चारि सेर कैसे महाराज जब सोंटा सों भांग घोटिकै पीवैं तब चारि पनवारे उड़ाइ जाइ सोंटाही तौ खाइहै दासको दूरि करि दियो ॥ ३ ॥ शोच पर्‌यो संतके लक्षण हैं कुछ न किया करै तौलाज करै नाहीं काहेको करै ॥ ३ । ४ । ५ । ६ ।

आज्ञापाइअचयोलैदैपठायेवाहीठौर दुष्टशिरमौरजहांतहांआप आयेहैं। मिलेमुत्सद्दीशिष्यआइकैसुनाईबातजावोउठिप्रातयहनीच जैसेगायेहैं । हमहींपठावैंकामकारिसमझावैंसबमनमेंनआवैंजानीनेहडरपायेहैं । चिंताजनिकरौहियेधरौनिहाचिंतताई भूपसुधिआई

दिनातीनकहांछायेहैं ॥ ३८१ ॥ सुनिआयेगुरुवरकलआवोमेरे वरदेखौकरामातिवातपहलैसुनाइहै । कह्यौआनिअभूजावोचलौउन मानदेखें चलेसुखमानिआयोहाथीधूमछाईहै । छोड़िकेकहारभाग येननिहारिसके आपरससारवानीवोलीजैसीगाईहै । बोलौहरिकृष्ण कृष्णछांड़ौगजतमतनसनिगयोहियेभावदेहसोनवाईहै ॥ ३८२ ॥ वहैहृगनीरदेखिहोइगयोअधीरआपकृपाकरिखीरकियोदियो भक्तभा वहै । कानमेंसुनायोनामनामदेगोपालदास मालापहिरायग रेप्रगव्योप्रभावहै । दुष्टशिरमौरभूपलखिवहिठौरआयोपाइलपटाइभ योहियेअतिचावहै । निपटअधीनग्रामकेतिकनवीनदियेलियेकरजो रिमेरोफल्यांभागदावहै ॥ ३८३ ॥

आज्ञा पाइ अचयो ले गुरुमें भाव भक्तिकी नीम है जैसे हवेली को नीम होइ तौ सतखण्डौ उठाइ लई नहीं तौ गिरिपरै ऐसेही गुरुमें भक्ति होइ तौ दशधा भक्ति दशखण्डी सिद्धहोइ उनमान देखे हकीम प्रबल रोग सुनतही न भाजे रोगको उनमान देखिये बोले हरे कृष्ण ॥ भागवते ॥ प्रविष्टः कर्णरन्ध्रेण स्वानां भावसरोरुहे । धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा सरित् ॥ प्रभाव हैं ॥ शृण्वतां स्वकथां कृष्णः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ हृद्यंतस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् ॥ ३ ॥

भयोगजराजभक्तराजसाधुसेवासाजसंतनसमाजदेखकरतप्रणाम है । आनिडारैगौनवनिजारिनिकीवारिनिसोंआयेईपुकारनवेजहांगु रुधामहै । आवतमहोछेमध्यपावतप्रसादशीतवोलेआपहाथीसोंयों निन्दवहुकामहै । छोड़िदईरीतितवभक्तनिसोंप्रीतिबढ़ी संगहीसमूह फिरैफैलि गयोनामहै ॥ ३८४ ॥ संतसातपांचसातसंगजितजातति तलोकउठिधावैंलावैंसीधैवहुभीरहै । चहूंओरपरीहईसुवासुनिचाहभ ई हाथपैनआवतसोआनैकोऊधीरहै । साधुएक गयोगहिल्योभे पदासतनु मनमेंप्रसादनेमपीवैनहींनीरहै । बीतेदिनतीनिचारिज

लैपिवावैधारिगंगाजूनिहारि मध्यतज्योंज्योंशरीरहै॥३८५॥मूल॥
भवप्रवाहनिस्तारहित अवलंवनयेजनभये। सोझासींवांअधार धीर
हरिनामत्रिलोचन। आशाधरदेवराजनीरसधनादुखमोचन। काशी
श्वरअवधूतकृष्णकिंकरकटहरियो। सोभूउदारामनामडूंगरव्रतधारि
यो। पदमपदारथरामदासविमलानंदअमृतस्रवे। भवप्रवाहनिस्ता
रहितअवलम्बनयेजनभये॥ ९६॥

निंद बहुकामहै॥ वैष्णवो बंधुसत्कृत्य ॥ २ ॥ महाराज बंधुन के लिये चोरी करै ठगाई करै आप वोले धन न होइ तौ करै ताते यह काम छोड़िदे भेट मुक्ती आइ रहैगी बहु भीरहै पांचसौ सातसै वैष्णव-नकी भीररहै संग जहां चलै गोपाल दास हाथी सीधे चलै आवै और याते भीर बहुत रहै वैष्णवनकी गूदरी तौ लाद लेहै और हारो नीरो साधु चढ़ि लेहि ऐसो महंत कहा पाइये और महंत तौ वैष्णवन कंधे लादे यह वैष्णवनको सब वोझलै चलै॥ २॥

टीका॥ सदनाकसाईताकीनीकीकसआईजैसेवारहवानीसोने
कीकसौटीकसआईहै। जीवकोनवधकरैऐपैकुलाचारढरैवेचैमांसला
इप्रीतिहरिसोंलगाईहै। गंडकीकोसुतविनजानेतासोंतोल्यैकरैभरै
हगसाधुआनिपूजेपैनभाईहै कहीनिशिस्वपनमेंवाहीठौरमाकोदेवो
सुनौ गुणगानरीझैंहियेकीसचाईहै॥ ३८६॥ लैकेआयोसाधुमैंतो
बड़ोअपराधकियोकियोअभिषेकसेवाकरौपैनभाईहै।येतौप्रभुरीझैंतो
पैजोइचाहौसोईकरौगरीभारिआयोसुनिमतिविसराई है। वेईहरिउर
धारि डारिदियोकुलाचारि चलेजगन्नाथदेवचाहउपजाई है। मिल्यो
एकसंगसंगजातवेसुज्ञातसवतवआपदूरिदूरिरहेजानिपाई है॥३८७॥

सुनौ गुनगान ॥ पद ॥ मैंतो अतिही दुखित मुरार। पांच ग्राहगी-लत हैं मोको गज ज्यों करौ उधार॥ नाम गरीब निवाजउजासों करन विषय हठतार। सदनाको प्रभु तारो ऐसे बहतहैं कारी धार॥ २॥कावित्त वह पद भाषा के हैं एक कारि गावतहो हम तुम्हैं गावत हैं सदा वेद वाणी

सों । मास भरे हाथनि सों आई तुम्हैं छूवत हो हमैं केऊ मास बीते तुम्हरी कहानी सों ॥ लक्ष्मी नारायण जू बड़े रिझवार तुम्हारी रीझनिक सतहै तुम्हारी रजधानीसों । हम निरमल गंगा जलसों न्हववैं नित तुम रीझे सदना के वदना के पानीसों ॥ २ ॥ डारिदियो ॥ पद ॥ तजौ मन हरि विमुखनको संग । तिनके संग कुमति उपजतहै परत भजनमें भंग ॥ कागे कहा कपूर चुनावे मर्कट भूपण अंग । खरको कहा अरगजालेपै श्वान अन्हाये गंग ॥ काह भयो पयपान कराये विषनहिं तजतभुवंग । सूरदास कारी कामरि पर चढ़त न दूजोरंग ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

आयोमगग्रामभिक्षालेनइकठामगयोनयोरूपदेखकोऊ तियारीझ परीहै । वैठोयाहीठौरकरौभोजननिहोरकह्योरह्यौनिशिसोइआईमेरी मतिहरीहै । लेवोमोकोसंगगरोकाटोतौनहोइरंगबूझीऔरकाटीपाति ग्रीवपैनडरीहै । कहीअवपागोमोसोंनातेकौनतोसोंमोसों शोरकरिउ ठीइनमारौंभीरकरीहै ॥ ३८८ ॥ हाकिमपकरिपूछेंकहैंहाँसिमारोहम डारचोशोचभारीकहीहाथकाटिडारिये । कट्योकरचलेहरिरंगमांझ झिलेमानी जानीकछूचूकमेरीयहैउरधारिये । जगन्नाथदेवआगेपाल कीपठाईलेन सदनासुभक्तकहांचढ़ैनविचारिये । चढ़ेआयेप्रभुपाससु पनोसोंमिट्योत्रासबोलेदैकसौटीहूपैभक्तविस्तारिये ॥ ३८९ ॥ गुसा ईंश्रीकाशीश्वरआगेअवधूतवरकरप्रीतिनीलाचलरहेलागेनीकोहै । महाप्रभुश्रीकृष्ण चैतन्यजूकीआज्ञापाइ आयेवृन्दावनदेखिभयोभा योहीकोहै । सेवा अधिकारपायोरसिकगोविंदचंदचाहतमुखारविंद जीवनजोजीकोहै । नितहीलड़ावैभावसागरछुड़ावै कौनपारावारपा वैसुनैं लागैजगफीकोहै ॥ ३९० ॥

चूक मेरी ॥ कुण्डलिया ॥ ढाक चढ़त वारी गिरै करै रावसों रोस। करै रावसों रोस दोप हरिको कहँ दीजै ॥ आपुन कुमति कमाय परेखो काको कीजे । तृपावंत ह्वै जीव सरोवर पै चलि आवै ॥ यह नाहिं देखी

सुनी आइ सर तृषा बुझावै । अगर कहै अपराध यह प्रभु हैं सदा अदोप॥ ढाक चढ़त बारी गिरै करै रावसों रोप ॥ २ ॥ पालकी पठाई ॥ श्री जगन्नाथ देव जीकरई औषधि दै पिछले जन्मको अपराध खोयो- चाहैं तब बुलाया ॥ दोहा ॥ दुर्जन को है तन भलो, सज्जनको भलो त्रास ॥ जो सूरज अधिकी तपै, तौबरपनकी आस ॥ २ ॥ न्यायके कर्त्ता न्याय करतही हैं ॥

मूल ॥ करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे । जतीराम रावल्यश्यामखोजीसंतसीहा । दलहापद्ममनोरथएकाद्योगूजपजीहा जाड़ाचाचागुरूसवाईचांदनपा । पुरुषोत्तमसोंसांचचतुरकीतामनको जिहिमेटचोआपा । मतिसुंदरधीधागेश्रमसंसारचालनाहिननचे । करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे ॥ ९७ ॥ टीकाखोजी जूकेगुरुहरिभावनाप्रवीणमहादेहअंतसमय बांधिघटासोंप्रमानिये । पावैंप्रभुजवतबबाजिउठेजानौयहैपायेनवाज्यौवड़ीचिन्तामनआनिये तनत्यागबेरनहींहुतेफेरिपाछेआयेवाहीठौरपौढ़िदेख्यौआवपक्योमा निये । तोरताकेटूकाकियेछोटोएकजन्तमध्यगयो सोविलाइवाजउठे जगजानिये ॥ ३९१ ॥ शिष्यकीतौयोगताईनीके मनआइआजुगुरू कीप्रलवलऐपैनेकुघटिक्योंभई । सुनोयहीबातमनवातवतकहीसही लैदिखाईऔरकथाअतिरसमई । वेतोप्रभुपाइचुकेप्रथमप्रसिद्धपाछे आछो फलदेखिहरियोगउपजीनई । इच्छासोसफलश्यामभक्त वश करीवहीरहीपूरपक्षसबव्यथाउरकीगई ॥ ३९२ ॥

मतिसुन्दर धीधागे मृदंग कैसी मतिहीसों सुन्दर ठहराई है पैहै झूठी ताकी चालमें सब संसार नचै है ॥ १ ॥ कवित्त ॥ आवो सदा काल पै न पायो कहूं सांचो सुख रूप सों विमुख दुख कूप वास वसाहै । धर्म को संघाती है न महाही अफाती पुनि एपै यह सन्निपात कैसी युत द- शाहै । माया कोऊ पटि गहै काया सों लपटि रहै भूल्यो भ्रम भीर में व-

हीर को सों शशाहै। ऐसो मन चंचल पताका कोसों अंचल सुज्ञानके जगेते निर्वाण पद धसाहै ॥ २ ॥ ऐसे श्रम करिके नहीं नचै संसार की चालमें रम्यो है ॥ ३ । ५ । ६ ॥

टीका राकाबांकाकी ॥ राकापतिबांकातियाबसैपुरपंडुरमेंउरमें नचाहनेकुरीतिकुछुन्यारिये । लकरीनबीनिकरिजीविकानबीनेकरै धरैहरिरूपहियेतासोंयोंजियारिये । बिनतीकरतनामदेवकृष्णदेवजू सों कीजैदुखदूरिकहीमेरीमतिहारिये । चलौलैदिखाऊंतबतेरेमनभाऊंरहेबन छिपदोऊथैलीमगमांझडारिये ॥ ३९३ ॥ आयेदोऊतिया पतिपाछेवधूआगेस्वामीऔचकहीमगमांझसंपतिनिहारिये । जानी योंयुवतिजातकभूमनचलिजात यातेबेगिसंभ्रमसोंधूरिवापैडारिये । पूछीअजूकहांकियोभूमिमें निहुरितुमकहीवहीबातबोलीधनहूबिचारिये । कहैमोकोराकाएपै वांकाआजुदेखी तुहीसुनिप्रभुबोलेबातसांचीहै हमारिये ॥ ३९४ ॥

जीविका नवीन करै ॥ उतनी ही लावै उतनी ही नृत्य करै अथवा साधुनको देकै बचे सो आप पावै यह नवीनता तो काहूपै न बने बिनती करता नामदेव ॥ दोहा ॥ कहूं कहूं गोपालकी, गई सिटल्लौ नाहिं। काबुलमें मेवा करी, ब्रजमें टेटी खाहिं ॥ २ ॥ कहूं कहूं गोपालकी गई सिटल्लौ नाहिं। बिमुख लोग घोड़ा चढ़े, काठबेंच जनखाहिं ॥ ॥ २ ॥ कहा भयो जल में जल बर्षत बर्षत नाहिं खेत जहँ सूखा ॥ अघाये आगे बहुत परोसत परसत नाहिं मरत जहँ भूखा॥ ३ ॥ सवैया ॥ श्री हरिदासके गर्भ भरे कमनेत अनन्य निहारिनि के । महा मधुरे रस पान करैं अवसान खतासिल हारिनि के । दियो नहिं लैहन मांगत काहू पै जोरत नेहतिहारिनिके । किये रहे अंड बिहारिय सों हम ठेपर बाह बिहारिनि के ॥ ४ । ५

नामदेवहारेहरिदेवकहीऔरैबातजोपैदाहगातचलौलकरीसकोलिये । आयेदोऊवीनिबेकोदेखीइकठौरीढेरीद्वैहूमिलीपावेतेउहाथनहीं

छेरिये । तबतौप्रगटइयामलायोयोंलेवाइघरदेखिमूढ़फोराकह्योऐसे प्रभूफेरिये । बिनतीकरतकरजोरिअंगपटधारोभारो बोझपरोलियो चीरमात्रहेरिये॥ ३९५ ॥ मूल ॥ परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनु कलियुगकेलक्षिमनलफरालढूसतजोधपुरत्यागी । सूरजकुंभनदास बिमानीखेमबैरागी । भावनबिरहीभरतनफरहीरेकेशटटेरा । हरी दासअयोध्याचक्रपाणिदियोसरयूतटडेरा । तिलोकपुघरदीवीजुरी उद्धवचनचरवंशजे । परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनुकलियुगके॥ ॥ ९८ ॥ टीका ॥ लड़नामभक्तजाइनिकसेविसुखदेशलेशहूनसंत भावजानेपापपागेहैं । देवीकोप्रसन्नकरैमानसकोमारिधरैलैगयेपकरि जहांमारिबेकोलागेहैं । प्रतिमाकोफारिविकरालरूपधरिआईलैकत रवारमूड़काटेभीजेवागे हैं । आगेनृत्यकरैरहगभरैसाधपावधरैऐसे रखवारेजानिजनअनुरागेहैं॥ ३९६ ॥

नहीं छेरिये ॥ कही कोऊ कंगला धरिगयो आगे ले लेहिंगे अ लकरी क्यों न मिले प्रातहि धनको मुहड़ो देख्यौ हो ले जेतो नजानिये ये कहा है तौ ॥ आचाह सों कंगाल कह्यो ॥ दोहा ॥ घर घर डोलत दीन है जन जन याचत जाइ । दिये लोभ चसमा चखन लघु पुनि बड़ो लखाइ ॥ १ ॥ जैसे लोभी को लघु बड़ो दीखै तैसे त्यागी तो बड़े हैं ते लघु दीखैहै । पर्यंत धन मुक्ति स्वर्ग तुच्छ दीखै अत्यन्त ॥ दोहा ॥ राम अमल तेरहैं पीवै प्रेम निशंक ॥ आठ गांठि कोपीन में कहे इंद्र सों रंक ॥ २ ॥ वे पर-वाही वैष्णव ऐसे ॥ ३ ॥

टीकासंतकी ॥ सदासाधुसेवाअनुरागरंगपागिरह्योगह्योनेमभि क्षाब्रतगांवगांवजाइके । आयेघरसंतपूछेतियासोंयोंसंतकहासंतचूल्हे झांझकहीऐसेअलसाइके । वानीसुनिजानीचलेमगसुखदानीमिलेक हौकितहुतेसोवखानीडरआइके । बोलीवहसांचवोहीआंचहीकोध्या नमेरेआनिगृहफिरिकियेमगनाजिवाइके ॥ ३९७ ॥ टीकातिलोक

की ॥ पूरबमेंओकसोतिलोकहैसुनारजाति पायोभक्तसारसाधुसेवा उरधारिये । भूपकेविवाहसुताजोराएकजेहरिकोगढ़िबेकोदियोकह्यो नीकेकैसँवारिये । आवतअनंतसंतऔसरनपावैकिहूंरहेदिनदोयभूप रोसयोसँभारिये। लावोरेपकरलाये छाड़ियेमकरकही नेकुरह्यो काम आवै नातैमारिडारिये ॥ ३९८ ॥ आयोवहीदिनकरछुयोहून इननृपकरैप्राणविनवनमांछछिप्योजाइकै । आयेनचारिपांचजानी प्रभुआंचगढ़िलियोसोदिखायोसांचचलेभक्तभाइकै । भूपकोसलामकियोजेहरिकोजोरादियो लियोकरदेखिनयनछोड़ैनअघाइकै।भईरीझभारीसबचूकमेटिडारीधनपायोलैमुरारीऐसेबैठघरआइकै॥३९९॥

वानीसुनिजानी चाले ॥ सवैया ॥ होतही प्राण जो घात करै तिन पार परोसिन सो कलगाढ़ी । हाथ नचावति मूड़ खुजावति पौरि खड़ी अति कोटिन वाढ़ी ॥ ऐसी वनी नखते शिखलौं मनों क्रोधके कुंडमें वोरिकै काढ़ी । ईंट लिये पियको मुख जोवत भूतसी भामिनि भौनमें ठाढ़ी ॥ २ ॥ ऐसी कलहा को बचन सुनिके साधू उठि चले क्योंकि जिनके वचन सुनिके भूतहू भाजिजाहिं ॥ २॥ राजाके पुरोहित कुरला डारा अपनी स्त्री पतोह संपत्ति और शरीर सुख विद्या अरु वरनारि मांगे मिलैं न चारि विन पूरबके पुण्य विन अनंत संत ॥ पंचमे ॥ तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥ ३ ॥ सत्ससंगको मार्ग आछो है ॥ ४ ॥

भोरहीमहोत्सवकियोजोईमांगैसोईदियो नानापकवानरसखान स्वादलागे हैं । संतकोस्वरूपधरिलैप्रसादगोदभरिगयेजहांपावौंजो तिलोकगृहपागेहैं । कौनसोत्रिलोकअजूदूसरोत्रिलोकीभैन बैनसुनि चैनभयोआयोनिशिरागे हैं । चहलपहलधनभरचोघरदेखिढरचो प्रभुपदकंजजानीमेरेभागजागेहैं ॥ ४०० ॥ मूल ॥ अभिलाषअधिकपूरणकरनयेचिंतामणिचतुरदास । सोमभीमसोमनाथविकोविशा

खालमध्याना। महदासुकुंदगयेसत्रिविक्रमरघुजगजाना। बालमीकिवृद्धव्यासजगनझांझबीठलआचारज। हरभूलालाहरीदासबाहुबलराघवआरज। लाखाछीतरउद्धवकपूरघाटमघूराकियोप्रकास। अभिलाषअधिकपूरणकरनयेचिंतामणिचतुरदास॥ १९९॥ भगतपालदिग्गजभगतयेथानापतिशूरधीर। देवनन्दवरहरियानंदमुकुन्दमहीपतिसंतरामतमोली। खेमश्रीरंगनंदविष्णुबीदावाजूसुतनोरी। छीतसद्वारकादासमाधवमांडनरुपादमोदर। भलनरहरिभगवानबालकहरकेशवसोहेंघर। दासप्रियागलोहंगगुपालनागूसुतगृहभक्तभीर। भक्तपालदिग्गजभगतयेथानापतिशूरधीर॥ २००॥

चहल पहल॥ दोहा॥ परमारथ अनुसरतही बीचहि स्वारथ होइ। खेतीकीजै नाजकी सहज घास तहँ होय॥ २॥ घाटम॥ पद॥ जोनर रसना नाम उचारै। केतिक बात आप तारिबेकी कोटि पतित निस्तारै। काम क्रोध मद लोभ तजै जो जीवदशा प्रतिपालै॥ तीरथ जेतिक ते वसुधापर तिनहूंके अघटारै। मेना जाति यद्यपि कुल नीचो सत गुरु शब्द विचारै। घाट मदास राम जो परचै तीन लोक उद्धारै। थानापति क्यों न भये॥ क्षुधारूपिणी कूकरी हरिने दई लगाई। परसा टूकाडारिकै गोविंदके गुणगाई। ३। ४। ५॥

मूल॥ बद्रीनाथउड़ीसेद्वारकासेवहरिभजनपर। केशवपुनिहरिनाथभीवखेतागोविन्दब्रह्मचारी। बालकृष्णभलभरतअच्युतअपपाव्रतधारी। पंडागोपीनाथमुकुन्दागजपतिमहायसु। गुणनिधियशगोपालदेइभक्तनकोसर्वसु। श्रीअंगसदासानिधिरहैकृत्यपुण्य पुंजभलभागभर। बद्रीनाथउड़ीसाद्वारकासेवहरिभजनपर॥२०१॥ टीकाप्रतापरुद्रराजाकी॥ श्रीप्रतापरुद्रगजपतिकोबखानकियोलियोभक्तिभावमहाप्रभुपैनदेखहीं। कियेहूउपायकोटिऔटिलैसंन्यासलियो हियोअकुलायअहो कहूंमोकोपेखहीं। जगन्नाथरथआगेनृ

त्यकरैंमत्तभयेनीलाचलनृपपाइपरच्योभागलेखहीं । छातीसोंलगायोप्रेमसागरडुबायो भयोअतिमनभायोदुखदेतयेनिमेषहीं ॥४०१॥
मूल ॥ हरिसुयशप्रचुरकरिजगतमेंयेकविजनअतिशयउदार । बिद्यापतिब्रह्मदासबहोरणचतुरबिहारी । गोबिंदगंगारामलालबरसानियामंगलकारी । पियदयालपरशुरामभक्तिभाईखाटीको । नंदसुवनकीछापकवित्तकेशवकोनीको । आशकरणपूरणनृपतिभीषमजनदयालगुणनहिंपार । हरिसुयशप्रचुरकरिजगतमेंयेकबिजनअतिशयउदार ॥ ४०२ ॥

प्रेमसागर ॥ महा प्रभु जू प्रेम भक्ति देत भये ॥ श्लोक ॥ ज्ञानतः सुलभा भक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपूर्णतः । समासहस्रैर्हरिभक्तिदुर्लभा ॥ २ ॥ अर्जुनके रथकी रक्षाके निमित्त अनेक झूठ सांच बोले ऐसे भक्तन सों बँधेहैं पै हरिके बँधेहीं में शोभा है ॥ श्लोक ॥ तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् । श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुविगृणंति ये भूरिदाजनाः ॥ २ ॥ भूरिदा कहि बड़े दाता जन्म कर्म के दूरि करनेहारे सो इन कविन हरिके गुण रूपही वर्णन करे हैं तिन गुणाविंदन को बांचिकै जगत् तरि जायगो विश्वास मानि ॥ ३ ॥

टीकागोविंदस्वामिकी ॥ गोवर्द्धननाथसाथखेलेसदाझेलेरंगअंगसख्यभावहियेगोविंदसुनामहै । स्वामीकरिख्यालताकीबातसुनिलीजेनीकेसुनेसरसातनयनरीतिअभिरामहै । खेलतहौलालसंगगयोउठिदांवलैकैमारीखेचगिलीदेखिमांदिरमेंश्यामहै । मानिअपराधसाधूधकादैनिकारिदियोमतिसोअगाधकैसेजानेवहवामहै ॥ ४०२ ॥
बैठेकुंडतरिजाइ निकसैगोआइवन दियोहैलगाइताकोफलभुगताइये । लालहियेशोचपरचोकैसेजातभरचोवहअटेउमगमांझभोगधरचोपैनखाइये । कहीश्रीगुसाईजीसोंमोपैकोनभावैकछूचाहौजोखवायोतौपैवाकोजामनाइये । वाकोहुतोदांवमोपैसोतौभावजानो

नाहिं कहैमोसोंबातैशोकमारैवेगिलाइये ॥ ४०३ ॥ वनवनखेलेनिन बनतनमोकोनेकुभनतजगारीअनगनतलगावैगो । सुधिबुधिमेरीगई भईवड़ीचिंतामोहिंलाइयेजूढूंढ़िजवचैनढिगआवैगो । भोगजेलगाये मैंतौतनकनपाये रिसवाकीजवजाइजवमोहिंकछूभावैगो । चलेउठि धाइनीठिनीठिकेमनाइलायेमंदिरमेंखाइसिलिकहीगरेलावैगो४०४॥

सख्यभाव ॥ नवप्रकारकी भक्तिहै तामेंसख्य वडी कठिन है तामें ईश्वरताकी गंध न रहै दृष्टांत वादशाह के खिलवत वखाने अरु दो मित्रनको ॥ २ ॥ विश्वासंसमतानित्यं सख्यत्वं भावउच्यते ॥ २ ॥ पन्हैंयां पराई नाथजीको खेलत पापाण की मूरति चैतन्य ह्वै कैसे खेलन लगी ॥ ३ ॥ यादृशी भावनायस्य ॥ ४ ॥ गोविन्द स्वामीके अवलों मन भावना रहै याते संगखेले एकगोपहौं सो नंदजीके मंदिर में जाइके पगडी उतारि लायो लालकी सगाई मारि जाइ है ॥ ५ ॥

गयेहैंवहरभूमितहांकृष्णझूमिआये करीवड़ीधूमआकवौंड़ानिसों मारिकै । इनहूंनिहारिउठिमारिदईवाहीसोंजुकौतुकअपारसख्यभाव रससारिकै । मातामगचाहैवड़ीवेरभईआईतहांकहीवारवारओटपाई उरधारिकै । आयोयोंविचारअनुसारसदाचारकियो लियोप्रेमढिगक भूंकरतसँभारिकै ॥ ४०५ ॥ आवतहौभोगमहासुंदरसोमंदिरकोरहे उमगवैठिकहीआगेमोहिंदीजिये । भयोकोपभारीथारडारिकैपुकार करीभरीनअनीतिजातिसेवायहलीजिये । वोलिकैसुनाईअहोकहाम नआईतवखोलिकैवताईअजूवातकानकीजिये । पहिलेजुखाइवनमां झउठिजाइपाछेपाऊंकहांधाइसुनिमतिरसभीजिये ॥ ४०६ ॥ मूल॥ जेवसेसवमथुरामंडलतेदयादृष्टिमोपरकरौ । रघुनाथगोपीनाथराम भद्रदासस्वामी । गुंजामालीचित्तउत्तमवीठलमरहटानिःकामी । यदु नंदनरघुनाथरामानंदगोविंदमुरलीसोती । हरिदासमिश्रभगवानमु कुंदकेशवडंडोती । चतुर्भुजचरित्रविष्णुदासवैनीपदमोशिरधरौ । जेवसेवसमथुरामंडलतेदयादृष्टिमोपरकरौ ॥ २०३ ॥

आइतहां देखै तौ धूममचाइ रह्योहै माताकहै ओटपाई धूम कौन सों मचाइ रह्योहै इहां तौ कोई है नहीं माताको कृष्ण क्यों न दीखे गोविन्द स्वामीको कैसे दीखे गोविन्द स्वामी श्रीकृष्णके संगते अप्राकृतभयो याते दीखे जैसे कच्चोआंब पालसों पकै खटाई जातिरहै मिठाई ह्वै जाइ जैसे ध्रुव भगवानके संगते अप्राकृतभये ऐसेही गोविंदस्वामी अप्राकृतभये मतिरसभी जिये विठ्ठलनाथजीकी मति रसमें भीजिगई सो सख्यभावमें भीजिगये हैं२॥

टीकागुंजामालीकी ॥ कहीनाभास्वामीआपगायोमैंप्रतापसंत बसेब्रजवसेसोतौमहिमाअपारहै । भयेगुंजामालीगुंजहारधारुनामप रयो करयोवासलाहौरमेंआगेसुनौसारहै । सुतबधूविधवासोंबोलिकै सुनायोलेहु धनपतिगेहश्रीगुपालभरतारहै । देवोप्रभुसेवामांगेंनारि वारिवारयहै डारैसबवारियापैगनैजगछारहै ॥ ४०७ ॥ दईसेवावाहि औरघरधनातियादियो लियोब्रजवासवाकीप्रीतिसुनिलीजिये । ठाकु रविराजैजहांखेलैसुतऔरनके डारेईंटखोवारयोप्रभुपरखीजिजे ।दिये बेविडारिधरयो भोगपैनखातहारि पूछीकहीवेईआनेंतबहींतौजीजिये कह्योरिसभरिबूरिनीकेभोरडारोभरिखावौ हमहाहाकरीपायोलाइरी झिये ॥ ४०८ ॥ मूल ॥ कलियुगयुवतीजनभगतराजमहिमासबजा नेंजगत ॥ सीताझालीसुमतिशोभाप्रभुताउमाभटियानी । गंगागौरा कुवरीउबीटागुपालीगणेशदेरानी ॥ कलाखाकृतगढ़ौमानमतीशु चिसतभामा ॥ यमुनाकोलीरामामृगादेभक्तनविश्रामा ॥ युगजीवा कीकमलादेवकीहीराहरिचेरीपोषेभगत । कलियुगयुवतीजनभगत राजमहिमासबजानेजवत ॥ २०४ ॥

भक्तराज ॥ स्कांदे ॥ स्त्रियोवायदिवा शूद्रो ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपिवा ॥ पूजयित्वा शिलाचक्रं लभते शाश्वतं पदम्॥ १ ॥ दोहा ॥ राम रंग लाग्यो नहीं, विप्र जनेऊ बांह ॥ रज्जब लोनातागलगि, चक्र चूनरी चाह ॥ २ ॥ महिमा यह सब भक्त राज है जाति पांति की गनती नहीं एक पंगतिमें

राखी रानी ब्राह्मणी कोली भठियानी रैदासिनी भक्तिही श्रेष्ठ है जहां भक्ति तहां भगवान शबरी के गये अभिमानी ऋपिन के न गये प्रीति की रीति सांची जानी ॥

टीकागणेशदेरानीकी ॥ मधुकरशाहभूपभयोदेशओडछेकोरानीसोगणेशदेसुकामवाकोकियोहै । आवेंबहुसंतसेवाकरतअनंतभांतिरह्योएकसाधुखानपानसुखलियोहै ॥निपटअकेलीदेखिबोल्योधनथैलीकहां होइतौबताऊंसबतुमजानौहियोहै। मारीजांघछूरीलखिलोहुवेगिभागिगयो भयोशोचजानैजिनिराजावंदादियोहै ॥ ४०९ ॥ बांधिनीकीभांतिपौढ़िरहीकहीकाहूसोंन आयोढिगराजामतिआवोतियाधर्म्महै । वीतेदिनतीनजानीवेदननवीनकछूकहियेप्रवीणमोसोंखोलिसबभर्महै । टारीबारदोइचारिनृपकेविचारपरचो कह्योसावधानजिनिआनोजियमर्महै । फिरचोआसपासभूमिपरितनरासकरी भक्तिकोप्रभाव छांड़ितियापतिशर्महै ॥ ४१० ॥

आवैं बहुसंत वह तरंग के पै सबही को सेंवै कह्यो सावधान ॥ कवित्त ॥ संतहैं अनंत गुण अंतको न पावै याको जाने रसवंत कोई रीझै पहिचानि कै । अवगुण न दीठिपरै देखतही नैन भरै ढरै पग ओर उर प्रेम भारि आनिकै ॥ जोपै कछूघटि क्रिया देखि पति इनमांझ करिलै विचार हरिही की इच्छा मानिकै । बालक शृंगारकै निहारि नेहवती माता देतिहै दिठौनाकारो दीठि दुर जानिकै ॥ दोहा ॥ कामी साधु कृष्ण कहि लोभी बावन जानि ॥ क्रोधीको नरसिंहही नही भक्ति की हानि ॥ २ ॥ जाको जैसो सुभाव जायनहिं जीवसों । नींव न मीठी होइ सींचि गुण घीवसों ॥ ३ ॥ कोइला होइ न ऊजला, नौमन साबुन लाइ । मूरख को समझावनो, ज्ञान गांठिको जाइ ॥ काहू ने कही सुंदर क्यों न भये तापै दृष्टांत राजा आशकरन को और साहब जादे फकीरको प्रसंग ॥ १ ॥

मूल ॥ हरिकेसम्मतजेजगततेदासनकेदास ॥ नरबाहनबाहन

वरीसजापूजैमलवीदावत । जयंतधारारुपाअनभईउदरावत ॥ गंभी रैअर्जुनजनार्दनगोविंदजीता । दामोदरसापिलेगदाईश्वरहेमविदीता। मयानंदमहिमाअनंतगुढ़ीलितुलसीदास । हरिकेसम्मतजेभगततेदा सनकेदास ॥ २०५ ॥ टीकानरवाहनजीकी । हैभैगांवनावनरवाहन साधुसेवीलूटिलईनावजाकीबंदीखानेदियोहै । लौंड़ीआवैदेनकछुखा इवेकोआईदया अतिअकुलाइलैउपाइयहाकियोहै । वोलिराधावल्ल भऔलेवोहरिवंशनामपूछेशिष्यनामकहोपूछीनामलियोहै । दईमँग वायवस्तुराखियोदुराइबातआपुदासभयोकहीरीझिपदादियोहै ४११ मूल ॥ श्रीमुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही॥ यहवचनपरिमान दासगाँवढीजढियानैभाऊ । बूंदीवानियाराममड़ौतैंमोहनवारीदाऊ ॥ मांड़ौढीजगदीशलक्षिमणचटथावरभारी । सुनपथमेंभगवानसवैसल खानसुपालउधारी ॥ जोवनेरिगोपालकेभक्तइष्टतानिमेंही । श्रीमुख पूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही ॥ २०६ ॥ टीकाजोवनेरगोपाल की ॥ जोवनेरवाससोंगुपालभक्तइष्टताको कियोनिर्वाहवातमोकोला गीप्यारिये । भयोहौविरक्तकोऊकुलमेंप्रसंगसुनौआयोयोंपरीक्षालेन द्वारपैविचारिये । आइपरच्योपाइँधारोनिजमंदिरमेंसुंदरनदेखोमुखप नकैसेटारिये । चलौजिनिटारौतियारहैगीकिनारोकरिचलेसबछिपी नेकुदेखियाकेमारिये ॥ ४१२ ॥

लूटिकैसेवै तो पापलैगगो जगतके पाप पुण्य मिथ्याजाने स्वप्नवत् ता-कोफल दुखसुख कहा जैसे व्यभिचारिणी स्त्रीके स्वप्नको फलझूठो सेवा में सांचो॥यादृशीभावना यस्य॥ १ ॥दई ऊंचे को देखि यामें मारिये ॥ ४१५॥ मगवाई १ कामदार बोले तीनि लाख तीस हजारको माल क्यौं फेरि दियो नरवाहन वोले ॥ जो हरिवंशको नामसुनावै तन मन धन तापै बलि-हारी । जो हरिवंश उपासक सेवै सदा सेऊं ताके चरण विचारी ॥ श्री ह-रिवंश गिरा यश गावै सर्वस देहौं तेहि वारी । जो हरिवंश को धर्म सि-

खावै सो मेरे प्रभुते प्रभु भारी ॥ पददियो ॥ पद ॥ मंजुल कल कुंज देश राधा हरि विशद वेश राका नभ कुमुद चंद शरद यामिनी ॥ श्यामल द्युति कनक अंग विहरत मिलि एक संग नीरद मनो नील मधि लसत दामिनी। अरुण प्रीति नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल सौरभ युत शीत अनिल मंदगामिनी। किशलय दल रचत सेन बोलत पिय चारुबैन मानस हित प्रति पद प्रतिकूल कामिनी ॥ मोहन मन मथत मार परसत कुचनी विहार नेपथ युत नेति नेति वदति भामिनी। नर वाहन प्रभु सकेलि बहु विधि भर भरति झेलि सो रति रस रूप नदी जगत पावनी ॥ २ ॥ चलि हे राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान रास रच्यो श्याम तट कलिंद नंदनी। निर्त्तत युवती समूह रागरंग अति कुतूह बाजत तमूल मुरलिका आनंदनी। बंशीवट निकट जहां परम रवनि भूमि तहां सकल सुखद मलय बहै वायु मंदनी। जाती ईषत् विकास कानन अतिशय सुवास राकानिशि शरद मास विमल चांदनी। निरबाहनप्रभुनिहारि लोचन भरिघोषनारि नख शिख सौंदर्य काम दुख निकंदनी। विलसो भुज ग्रीव मेलि भामिनि सुख सिंधु झेलि नव निकुंज श्याम केलि जगत वंदनी ॥ ३ ॥ आपन ते अधिक पूजा अष्ट प्रकार की ब्राह्मण भोजन अग्नि होम जल मंत्र गोत्रन बैष्णव उदर और इत्यादि ॥ ४ ॥ आदिस्तुपरिचर्यायां सर्वांगैरपिवंदनम्। मद्भक्तपूजाभ्यधिकासर्वभूतेषुमन्मतिः ॥ ५ ॥

एकपैतमाचोदियोदूसरेनेरोषकियो देवोयाकपोलपैयोंवाणीकही प्यारिये। सुनिआंसूभरिआये जाइलपटाये पांयकैसेकहीजाइयहरीतिकछुन्यारिये। भक्तइष्टसुनोमेरेबड़ोअचरजभयोलईमैंपरीक्षामोको भईशिक्षाभारिये। बोलेउअकुलाइअजूऐपै कहांभायऐपैसाधुसुखपायकहेंयहीमेरोज्यारिये ॥ ४१३ ॥ मूल ॥ परमहंसवंशनमेंभयोविभागीवानरो। मुरधरिखंडनिवासभूपसबआज्ञाकारी। रामनामविश्वासभक्तपदरजब्रतधारी। जगन्नाथकेद्वारदंडवतप्रभुपरधायो। दईदासकोदादिहुंडीकरिफेरिपठायो। सुरधुनीओघसंसगतेतामवद

लिकुछितनरो। परमहंसवंशनमेंभयोविभागीवानरो ॥ २०७ ॥
टीकालाखाभक्तकी॥ लाखानामभक्तताकोवानरोबखानकियो कहेंज
गडौमजासोंमेरोशिरमौरहे । करैसाधुसेवाबहुपाकडारिमेवासंतजें
वतअनंतसुखपावैंकौरकौरहे ॥ ऐसेमेंअकालपरयोआमेंघरमालजा
लकैसेप्रतिपालकरेंताकीऔरठौरहे । प्रभुजीस्वपनादियोकियोमैं
यतनए कगाड़ीभारिगेहूंभैंसआवैकरौगौरहे ॥ ४१४ ॥

विभागी वानरो ॥ भगवान्‌की भक्ति रूपी संपत्ति चारों बाटि पावें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र काहूसों घटती नहीं जैसे काहू के चारि पुत्र पंडित मूरख निर्धन पंगुला सबही बांटि पावैं कुछित ॥ नारदपंचरात्रे ॥ यस्माद्यस्मादपि स्थानाद्गंगायामंभ आपतत् ॥ सर्वंभवति गांगेयं कोन सेवेत बुद्धिमान् ॥ १ ॥ दोहा ॥ तुलसी नारो जगत को, मिलै संगमें गंग। महा नीचपन आदिको, शुद्ध करै सतसंग ॥२॥ नीर नगरको परशु-राम ता समरत अज्ञान। साधु समागम सुरसरी, मिल इक होत समान॥ ३॥

गेहूंकोठीडारिमुहुंमूंदिनीचेदेखौखोलि निकसेअतोलिपीसिरोटीलै
वनाइये। दूधजितोहोइसोजमाइकैविलोइलीजेदीजेयोंचुपरिसंगछांछ
दैजिमाइये । खुलिगईआखेंभापेंतियासोंजुआज्ञादई भईमन
भाईअजुहरिगुणगाइये । भोरभयेगाड़ीभैंसिआईवही रीतिकरी
करीसाधुसेवाकीप्रीतिहूवखानिये ॥ ४१५ ॥ प्रीतिहूवखा
नकीजेलीजेउरधारिसारभक्तिनिरधारहे । रहैढिगगांवतहांसभाएक
ठांवभईडाटिगयेभाईसोउगाहीकोविचारहे । बोलिउठ्योकोऊयों
हारकोतौभारचुक्यो लीजियेसँभारिलाखासंतभवपारहै। लाजदवि
तिनादियेगेहूंलैपचासमन दईनिजभैंससंगसबसरदारहै॥ ४१६ ॥
मारवाड़देशतेचल्येईसाष्टांगकियेहियेजगन्नाथदेवयाहीपनजाइये ।
नेहभरिभारीदेहवारिफरिडारीकैसेकरेंतनधारीनेकुश्रमसुरझाइये ।
पहुंच्योनिकटजाइपालकीपठाइदईकहेंलाखाभक्तकौनवेगदेवताइये।
काहूकहिदियोजाइकरगाहेलियोअजू चलौप्रभुपासइहिक्षणहींबुलाइ

ये ॥ ४१७ ॥ कैसेचलौपालकीमेंप्रणतप्रतिपालकीजेदीजेमोकोदान याहिभांतिजानिहारिये । बोलेप्रभुकहीआपुसुमिरनीविनाइलायेअव पहराइमोहिसुनिउरधारिये । चढ़ेचढ़िवढ़कियोचाहैंयहजानीमैंतौ पढ़िपढ़िपोथीप्रेममोपैविस्तारिये । जाइकैनिहारेतनमनप्राणवारेजग न्नाथजूकेप्यारेनेंकढिगतेनढारिये ॥ ४१८ ॥

बोलीदेवता पितृ अतिथि इनको ऋणियारहै न देइ तौ ताते लाखा को दीजे ॥ २ ॥ एकोपि कृष्णस्य कृतः प्रणामोदशाश्वमेधावभृथे नतुल्यः । दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥ बडेगहै करहोत बड ज्यों बावन कर दंड । मौजी प्रभुको संगबडगयो अखिलब्रह्मांड ॥

बेटीएककारीव्याहिदेतनबिचारी मनधनहरिसाधुनकोकैसेकैल गाइये। कीजैवाकोकार्यकहीजगन्नाथदेवजूनेलीजेमोपैद्रव्यडरनेकहू नआइये। बिदापैनभयेचलेहगभनलयेगयेआगेनृपभक्तमगचौकीअ टकाइये । दियोहैस्वपरिप्रभुजनिहठकरौअजू हुंडीलिखिदइलईवि नयकैजताइये ॥ ४१९ ॥ हुंडीसौहजारकीलैगृहद्वारआयेजब तामें तेलगायेसौकबेटीव्याहकियोहै । औरुसबसंतनबुलाइकैखवाइदिये लियेपगदाससुखराशिप्रणलियोहै । ऐसेहीबहुतदामबाहीकेनिमित्त लैलै साधुभुगतायेअतिहरषताहियोहै । चरितअपारकछूमतिअनु सारकहेउ लहेउजिनस्वादसोतौपाइनिधिजियोहै ॥ ४२० ॥

पद ॥ हरिके जनकी अतिठकुराई । महाराज ऋधिराज देव मुनि सकुचि रहत शिरनाई। दृढ़ विश्वास दियो सिंहासन तापर बैठे भूप। हरि-यश छत्र विमल शिरसाजत राजत परम अनूप। निशिमहदेश राज करता को लोकन अति उत्साह । काम क्रोध मद मोह लोभ ये भये चोरते शाह । अर्थ काम कहुं दूरिगये ढुरि धर्म मोक्ष शिरनायो । बुधि विवेक दोउ पवँरि पवँरिया समय न कबहूं पायो । अष्टसिद्धि नवनिद्धि चातुरी करजोरे आधीनी । छरीदार बैराग विनोदी झरक बाहिरीकीनी ॥ हरिपद

पंकज प्रीति प्रियावरताही सों अनुराता। मंत्री ज्ञान न अवसर पावै बात कहत सकुचाता ॥ माया मोह न व्यापेकबहूं जो यह भेदहि जाने । सूरदास पदटरत न टारे गुरुप्रसाद पहिंचाने ॥ १ ॥ धनहम तो गुमस्ताऐसे ॥

मूल ॥ जगतविदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपावनकरी । महास्मारतकलोगभक्तिलवलेशनजाने । मालामुद्रादेखितासुकीनिंदाठाने । ऐसेकुलउतपन्नभयोभागवतशिरोमनि । ऊसरतेसरकियोषंडदोषहिखोयोजिनि । बहुतठौरपरचोदियेरसरीतिभक्तिहिरदैधरी । जगतविदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपावनकरी ॥ २०८ ॥ टीकानरसीमहिताकी ॥ जूनागढ़वासापितामाततननाशभयो रहैएकभाईऔ भौजाईरिसिभरीहै । डोलतफिरतआइबोलतापिवावोनीरभाभीपैन जानीपीरबोलीजरीबरीहै । आवतकमायेजलप्यायेबिवसरैकसैपियो योजबावदियोदेहथरहरीहै । निकसेविचारकहूंदीजेतनडारमानों शिवपैपुकारकरीरहेचितधरीहै ॥ ४२१ ॥ बीतेदिनसाताशिवधामतेन जातचारपरैकाहूतुच्छद्वारसोऊसुधिलेतहै । इतनीविचारिभूखप्यास दईढारिलियोप्रगटस्वरूपधारिभयोहितहेतहै । बोलेवरमांगिअजूमांगिमैंनजानतुहौं तुम्हैंजोइप्यारोसोइदेवोचितचेतहै । परयोशोचभारीमेरीप्राणप्यारीन्यारीतासों कहतडरतवेदकहैंनेतिनेत है ॥४२२॥

पावनकरी पहले अपावनता कैसी है जाहि पावनकियो जैसे खाई गढ़अरावो बड़ोहोइ तौ ताको सरकरै सो शूरमा कहावै अरु शोभापावै ऐसे अपावन बड़ी होइ तब पावन की शोभा सो नरसी तौ अभक्तदेश जीतिकै भक्तिको राज्य कियो ॥ १ ॥ महा स्मा रत लोग स्मारतकौ यह कर्म कारिकै नाम लीजे कैसरि जाइ ॥ अष्टमे ॥ मंत्रतस्तंत्रतश्छिद्रं देशकालौहिवस्तुतः । सर्वं करोति निश्छिद्रं नामसंकीर्तनं तव ॥ ३ ॥ ऐसो क्यों वांकी गढ़ी सुरंगसो टूटेहै ॥

दियोमैंवृकासुरकोवरडरभयोजहां वैसेवरकोटिकोटियापैवारिडारेहैं । बालकनहोइयहपालकहैलोकनकोमनकोविचारकहादीजेप्रा

णप्यारेहैं । जोपैनहींदेतमेरोबोलिबोअचेतहोतादियोनिजहेततनआ लिनकेधारेहैं । लायेवृन्दाबनरासमंडलजटितमणि प्रियाअनगतबी चलालजूनिहारेहैं ॥ ४२३ ॥ हीरनिखचितरासमंडलनचतदोऊरच तअपारनृत्यगानतानन्यारिये । रूपउजियारीचंदचांदिनीनसमतारी देतकरतारीलालगतिलेतप्यारिये ।ग्रीवकीदुरनिकरअँगुरीमुरनिमु खमधुरसुरनिसुनि श्रवणतापारिये ।बजतमृदंगमुरचंगसंगअंगअंग उठततरंगरंगछबिजाकीन्यारिये ॥ ४२४ ॥ दईलैमशालहाथनिरखि निहालभईलालदीठिपरीकोऊनईयहआई है । शिवसहचरीरंगभ रीअटकरीबातमृदुमुसुकातनयनकोरमेंजताई है ।चाहयाहिटारचो यहचाहैप्राणवारचो तबश्यामढिगआइकहिनीके समुझाई है । जावो यहध्यानकरौ करौसुधिआऊंजहांआयेनिजठौरचटपटीसोंलगाई है॥

बजत मृदंग ॥ कवित्त ॥ पियप्यारी दोऊमिल रासको मचाइ रहे देखै जो निहारि वाहिरहीन संभार है । तता थेईथेई करत नृत्यतगति लेतरंग सौभरत पेख सकुचत मारहै । बाजत मृदंग मुरचंग उठत उमंग गावत हैं ताल संग लाग्यो प्रेमलारहै । शरद समाज वन वृन्दावन प्रगटभ- यो कहैं कबि कौन जाको पावै नहीं पारहै ॥ १ ॥ भागवते ॥ वलयानां नूपुराणां किंकिणीनां च योषिताम्। सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलो रासमण्डले ॥ २ ॥ वकारतेमानिये ॥ ३ ॥

कीनीठौरन्यारीविप्रसुताभईन्यारीएकसुताउभयवारीजगभक्ति विस्तारीहै । आवैबहुसंतसुखदेतहैअनंतगुणगावतरिझावतऐसेसेवा विधिधारीहै । जितीद्विजजातिदुखभायोअतिगातमानीबडोउतपात दोषकरैनविचारीहै । येतोरूपसागरमेंनागरमगनमहा सकैकहाकारि चहूंओरागिरिधारीहै ॥ ४२६ ॥ तीरथकरतसाधुआयेपुरपूछेकोऊ हुंडीलिखिदेहिहमैंद्वारकासिधारिबे । जेवरहैदूषिकहीजातहीभगावै भूखनरसीबिदितसाहआगेदामडारिबे । चरणपकरिगिरिजावोसुलि खावौअहोकहौवारबारसुनिविनतीनटारिबे । दियोलैबतायघरजाय

वहीरीतिकरी भरीअङ्कवारिमेरेभागकहावारिये ॥ ४२७ ॥ सातसै रुपैयागनिढेरीकरिदईआगेलागेपगदेवोलिखिकहोबारबारहै । जानी वहँकायेप्रभुदासदेपठायेलिखि कियेमनभायेसाहसांवलउदारहै । वाहीहाथदीजेपैलेकीजियेनिशङ्ककाज गयेयदुराजधानीपूछोसोवजारहै । ढूंढ़िफिरिहारेभूखप्यासमीड़िडारेपुर तजिभयेन्यारेदुखसागर अपारहै ॥ ४२८ ॥

कीनी ठौर न्यारी ॥ सवैया ॥ देव औ दानव दोऊ छले बलि हू को छल्यो बलिबावन यातैं । आनि छल्यो सिगरो ब्रजरी पुनि ऐसी छली नहिं और है यातैं । होहु छली छलसों कह्यो वेद हो जानि परी न किशोरकी घातैं । मोहिं घरीकु जिवायो चहै तौ करौ कि निवाही विश्वासी की बातैं ॥ १ ॥ आवैं बहु सन्त ॥ दोहा ॥ नागरसो हरिरूप पर, सागर पग न रसाल। मत आगर जागर सदा, सेवत संत मराल ॥ २ ॥ दोष ॥ मृदुसों मृदुअति कठिनहै, कठिन मंदमतुसार । अलि अंबुजमें दुरिरह्यो काटे काट अपार ॥ ३ ॥

शाहकोस्वरूपकरिआयेकाँधेथैलीधारि कोनपासहुंडीदामलीजिये गिनाइकै । वोलिउठेढूंढ़हारेभलेजूनिहारआजुकहोलाजहमैंदेतमैं हूंपायेआइकै । मेरोहैइकोसौवासजानैकोऊहरिदास लेवोसुखराशि करोचीठीदीजेजाइकै । धरेहैंरुपैयाढेरलेखोकरोबेरबेर फेरिआइपाती दईलईगरेलाइकै ॥ ४२९ ॥ देखिआयेशाहदौरिमिलेउत्साहअंगवे उरंगवोरसतसंगकोप्रभावहै । हुंडीलिखिदईदामलियेसोखवाइदिये कियेप्रभुपूरेकामसंतनसोंभावहै । सुतासुसरारिभयोछूछकविचारसा सदेतवहुगारिजाकेनिपटअभावहै । पितासोंपठाइकहीछातीलैजराइ इन जोपैकछूदियोजाइआवोइहिदावहै ॥ ४३० ॥ चलेगाड़ीटूटीसी लैबूढ़ेढभैवैलजोरिपहुंचेनगरछोराद्विजकहीजाइकै । सुनताहिआईदेखिमुहँपियराईफिरीदामनहींएकतुमाकियोकहाआइकै । चिंताजनि करौजाइसासूढिगढरोलिखिकागजमेंधरौ अतिउत्तमअघाइकै । कही

समुझाइसुनिनिपटरिसाइउठी कियोपरिहासलिख्योगांवखुनसाइकै। आये ॥ कवित्त ॥ बलिजूके नित्त चित्त रहतहीमेरे हियेहरि जू की भक्तिमेरे आई है कि नादिनै। मोरध्वज करत बिचार यह वार वार कबहुंक प्रभु अपनाइ हैं कि नाहिं नै। पारपद दोऊ सोऊ चहतहैं मनको निवेश और देशहूमैंहोइगो किनाहिंनै॥ गुणगणखानि भगवानजोईं लीलाकरैं साधुसुख इच्छाहेतु और हेतुनाहिंनै ॥ १ ॥ जानेहरिदास बोले हम हारे दासनहीं तुमदास हौ मिले कैसे नरसीजी के संगते जो कछू नरसी को लिख्यो चिट्ठीमें आयो सो सब देनौं ॥ २ ॥

कागदलैआईदेखिदोसरेफिराईपुनि भूलेपैनपाईजातपाथरलिखायेहैं। रहिबेकोदईठौरफूटीदईपौरिजहां बैठेशिरमौरआपबहुसुखपायेहैं। जलदैपठायोभलीभांतिकैऔटायोभई बरपासिरायोसोसमोइकेअन्हायेहैं। कोठरीसँभारिअगिपरिदासोदियोडारि लैबजायेतालबेसअगिनितआयेहैं ॥ ४३२ ॥ गांवपहरायोछबिछायोयशगायोअहोहाटकरजतउभैपाथरहूआयेहैं। रहिगईएकभूलेलिखनअनेकजहां लैहौताहीपासजापैसबमिलपायेहैं। बिनतीकरतिबेटीदीजियेजूरहैलाज दियोमँगवाइहरिफेरिकैबुलायेहैं। अंगनसमातिसुतातातको निरखिरंग संगचलीआईपतिआदिबिसरायेहैं ॥ ४३३ ॥

जलदै पठायो जल लावनवारे बोले मूंडतौ ढको तब कही बावरे हौं मूड उघारिके लज्जा छोडिकै हरिको भजन करिये ये अपनी ओर खैंचै वे अपनी ओर खैंचैं जैसे निपट और बादशाह को प्रसंग ॥ १ ॥ लै बजाये ताल ॥ कवित्त ॥ लैकरि ताल बानी बोले सो रसाल सुनियो नंदलाल मैं कहावत ब्रजराजको। तुम गणि का सीरीतारी प्रहलाद भीरटारी कवि जासुधारी कान्ह द्रौपदी की लाज को। चरणद्रोही बधिक तान्यो गजने पुकान्यो अति केवल रामआये श्रीसुदामा गृहकाजको। नरसीकी बार हरिक्यों अबार लागे आब आये ततकालरूप धारिकै बजाजको ॥ २ ॥ रहै लाज नाहीं तौ नाककटैगी तब नरसीजी बोलेकै नाककटैगी तौ

कृष्णकी रहैगी तापै दृष्टांत बजोह लालखारी को सुतादोइ नरसीकै कुँवर सेना रतनसेना ये तौ बैठोनिकेनामहैं आगेविस्तार कह्यो है ॥ ३ ॥

सुताहुतीदोइभोइभक्तिरहीघरहीमेंएकपातित्यागिएकपतिहूनाकियोहै। भूमिमेंफिरतउभैगाइनिसोंचाइनिसोंधनसोंनभेटकाहूनामकहिदियोहै। आइलागीगाइबेकोकहीसमुझाइअहोपाइबेकोनहींकछुपावैदुखहियोहै। चाहेहरिभक्तितोमुड़ाइकैलड़ाइलीकीजैबारदूरिरहीप्रेमरसपियोहै ॥ ४३४ ॥ मिलीउभैसुतारंगझिलीसंगगाइनिवेचाइनिसोंनृत्यकरैभाइनिवताइकै। सालंगहैनामममासामंडलीकमंत्रीरहैकहैविपरीतिवड़ीराजासोंसुनाइकै। वड़ेवड़ेदंडीअरुपंडितसमाजकियो करौवाकीभंडीदेशदीजियेछुड़ाइकै। आयेचारिचोवदारचलैजूविचारकीजैभयोदरवारहमैंदियोहैपठाइकै॥४३५ चारोतुमजावोदूरिभयोहमैंराजाडर सकेकहाकरिअजूचलैसंगसंगही। नाचतवजावतयेचलीढिगगावतसुभावतमगनजानीभीजिगईरंगही। आयेवाहीभांतिसभाप्रवलवहुतभई तऊबोलेरीतियहयुवतीप्रसंगही। कहीभक्तिगन्धदूरिपढ़ेपोथीपरीधूरिश्रीशुकसराहीतियामाथुरनभंगही ॥ ४३६ ॥

पति त्यागि ॥ कुंडलिया ॥ नारीतजै न आपनो, सपनेहू भरतार। गुंग पंगु वहिरा वधिर, अंध अनाथ अपार ॥ अंध अनाथ अपार वृद्धबाचन अतिरोगी। वालक पंड कुरूप सदा कुवचन जडयोगी ॥ कलही कोढी भीरु चोर ज्वारी व्यभिचारी। अधम अभागी कुटिल कुमति पति तजैननारी ॥ २ ॥ छप्पय॥ पितावचन प्रहलाद मेटि अपनो मतठान्यो। वलिराजा गुरु वचन नेकुहिरदे नहिं आन्यो ॥ दई स्वामिको पीठि विभीपण कुलमरवायो। गोपिन पतिव्रत त्यागि कियो अपनो मनभायो ॥ निगम निरूपहिं मन्द कर्म की लगी नहीं प्रतिवाइ । हरि धर्म के साधे जगन्नाथ अधर्म धर्म ह्वै जाइ ॥ २ ॥ पोथी ॥ दोहा ॥ पोथी तौ थोथी भई, पंडित भयो न कोइ। एकै अक्षर प्रेमको, पढ़ै सुपंडितहोइ ॥ १ ॥

शुक सराही ॥ भागवते ॥ धिग्जन्मनस्त्रिवृद्विद्यांधिग्व्रतं धिग्बहुज्ञताम् ॥ धिक्कुलं धिक्क्रियादाक्ष्यं विमुखायेत्वधोक्षजे ॥ पद ॥ हम सबहि मंद भाग भगवान सों बिमुख भये बिमुख भये धन्य वे नारि गोविंद पूजे । मूंदिरहे नैन हम सबै उलूक ज्यों भानु भगवान आये न सूझे ॥ ३ ॥ संग गोधन लगे खेल रसरंगमे भोरके निकासि भूखे आइये । देहु तौ भात कर जोर ग्वालन कह्यो अहो भूदेव तुमपै पठाये ॥ ४ ॥ केवल करुणा टरनि प्रात भोजन करनि निगमहू अगम महिमा बतावे । कहां प्रभुकीय चनि हमरे मदकी मचनि देवकीरचनि कछु कहि न जावे ॥ ५ ॥ शौच आचार गुरु कुलहि सेवा कछू कुटिल करकस हिये बुद्धिहीनी ॥ देखो इनतियनि को भाग या जगत में सच्चिदानंदके रंग भीनी ॥ ६ ॥ उमंगि पहिले चली पार संसारके सांवरो कुँवर हिय मांझ पोयो । धरि रहेकूर सुरलोक आशा अलप पाइ अमी आश अमृत निचोयो ॥ ७ ॥ तिया कौतुक मिली कछुक जानी चली कमलिनी हियो मनना मिलावें । शेष त्रिपुरारि ब्रह्मादि सनकादि सुख चरणकी रेणु शिरपर चढ़ावें ॥ ८ ॥ यदपि नारायण अवतार यदुकुल विषे सुन्यो बहु भांति तौ मनन आये । देखो या दैव की माया अति मोहनी दई दृग धूरि हम सब भुलाये ॥ ९ ॥ धिक्र् जन्म जाति कुल क्रिया स्वाहा स्वधा योग यज्ञ जप तप सकल धृग हमारे ॥ ज्ञान विज्ञान धर्म कछू कर्म नहीं ईश पद विमुख आरंभ न सारे ॥ गृह आगार संसार दुख संभवे मिथुन मृग निर्भयो मन मिलावे । सूरकी शोर हरि विमुख जग में बड़े बूझि गयो दीप जब बढ़ कहावे ॥ ऐसे संसारी जीव बड़े कहावें साधु उन्हैं छोटो मानैं ॥

बोलिउठोविप्रएकछकप्रसंगदेख्यो कह्योरसरंगभरचोढरचोनृपपाइमें । कहीजूबिराजोगाजोनितसुखसाजोजाइकियेहरिराइवशभीजेरहौभाइमें । धारोउरऔरशिरमौरप्रभुमंदिरमे सुंदरकेदारोरागगावैभरेचाइमें । श्यामकंठमालटूटआवतरसालहिये देखिदुखपायेपरे बिमुखसुभाइमें ॥ ४३७ ॥ नृपतिसिखायोजाइवृथायशछायो काचे

सूतमेंपुहायोहारटूटैख्यातकरीहै । माताहरिभक्तभूपकहोजनिकरो कातनऊवाणि राजसकीमायामतिहरीहै । गयोढिगमंदिरकेसुंदरमैं गाइपाट तागोवटवाइकरिमालागुहिधरीहै । प्रभुपहिराइकंहेउगाइअ वजानिपरै भरैसुरराग औरगायोपैनपरीहै ॥ ४३८ ॥ विमुखप्रसन्नभ येतबतौउदारनैदेनयेनयेचोजहरिसन्मुखभाषिये । जानेग्वालबालए कमालगहिरहेहिये जियेलग्योयहीरूपकहेउलाखलाखिये। नारायण वड़ेमहाअहोमेरेभागलिख्यो करैकौनदूरिछबिपूरिअभिलाखिये । मरौकहाजाइआपपरसैकलंकतुम्हैंराखियेनिशंकहारभक्तिमारिना खिये ॥ ४३९ ॥

नयेनये चोज ॥ सवैया ॥ अति सूधो सनेह को भार गहे जहँ नेकु सयानप वांकनहीं । तहँ सांचे चले तजि आपनपौ झिझकै कपटी जुमिसांक नहीं। घर आनँद प्यारे सुजान सुनौ इत एकते दूसरो आंक नहीं । तुम कौन धौं पाटी पढ़ेहौ लला मनले तपै देत छटांक नहीं ॥ १ ॥ प्रण राखि लियो तुम भीषमको क्षण मे गजराज के काजको धायो । देत बिलंब नलायो सुदामहि पावक ते प्रहलाद बचायो । दीनदयाल सुने मनीराम सुयाहीते मैं चित दै गुण गायो । मैं तौ गरीव गरीव रह्यो तुम कैसे गरीबनिवाज कहायो ॥ बड़ी गरीबी गोविंदा जो पै होइ गरीव ॥ २ ॥ मेरे भाग लिख्यो । श्लोक ॥ लिखिता चित्र गुप्तेन ललाटेक्षरमालिका । नसापि चालितुं शक्या पंडितैस्त्रिदशैरपि ॥ १ ॥ कवित्त ॥ दीननकेपाल ब्रजपाल हौ अवध पाल गाइनके पाल नेकु इतेहू निहारिये । वैकुंठकेपाल हरिचौदह भुवनपाल बिरदके पाल निज बिरद सँभारिये । भक्तपाल धर्मपाल सृष्टिपाल हे कृपाल हूजिये दयाल और भांति न विचारिये । सुरन के पालकहौ सूरति बिहाल अब येहो जू गोपाल लाल मोहिना विसारिये ॥ २ ॥ पद ॥ वधिरभये लौदेवा वधिरभये लौ । अपनो बिरद क्यों विसरै लौ । कोपियो मडनी कम्हाने मारिसी । मूढ डीक धूलिदाबि थापसी भक्तिकरौ तौ नरसी । योमारि

थो तौ भक्त बछल तारौं विरद जाइसी । मलेंछनी जाति कबीर उधारौं नामानाछाप ॥ रागपौछाई ॥ जैदेव नैपद मापती आपी मालाने अवमूक भाई । जाइ न फूल सूतनौ धागो दोइदमडी नें मोल पावी । नरसीने एकहार लै अपतांता रावापनावा परेस्योजावी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ आसिकशिर अपनाअरे, धरैंदैंपैरौलाइ । वे निशाफमहबूबके, करें दूर अनखाइ ॥ ४ ॥ झूलना ॥ जिस दैपरैनपरी या कंडा सो घाव दरदक्या जाने । वे दरदान इस्क सुहेला इस्कंजना दे भाने । शिर लाहू लटू देसके सो कछू इश्क सयाने । कहै भगवान हित रामराइ प्रभुहारन दिल बिच आने ॥ ४ ॥

रहैतहाँसाहकियेउभैले विवाहजानैतियाएकभक्तकहेहरिकोदिखाइये । नरसीकहीहीभलेसोईप्रभुवाणीलईसांचकरिदईगयेरागछुटवाइये । वोलेपटखोलिदियेकियेदर्शनताने तानेपटसोवैवहकहीदेवोभाइये । लियेदासकामकियोकागदगहायदियो दियोकछुखाइवेकोपायोलैभिजाइये ॥ ४४० ॥ गहनेधर्योहौरागकेदारोसाहवरधरिह्रपनरसीकोजाइकैछुड़ायोहै । कागदलैडारयोगोदमोदभरिगाइउठे । आयेझनझनश्यामहारपहिरायोहै । भयोजैजैकारनृपपाइलैलपटाइगयो गह्योहियेभावसोप्रभावदरशायोहै । विमुखखिसानेभयेगयेउठिनयेमांहिं विनाहरिकृपाभक्तिपथजातपायोहै ॥ ४४१ ॥ करनसगाईआयोपायोवरभायोनाहिंघरघर फिरयोद्विजनरसीवतायोहै । आइसुखपाइपूछ्योसुतसोदिखाइदियो कियोलैतिलकमनदेखतचुरायोहै अजूहमलायकनतुमसवलायकहौ शायकसोछुटोजाइनामलैसुनायो है । सुनतहीसाथोठौंकिकहैतालकूटावहवालयोरिआयोजावोफोरिदुखछायो है ॥ ४४२ ॥

गाइ उठे ॥ पद ॥ थौजीथौजी राज थारागलनी मालम्हानै थौजी राज। कृपाजुकीजे विमुख पतीजेमुख सों तौ वचन कहौ जी राज । केसर वरणी कुवँरि राधिका कस्तूरी वरणा छोजीराज । सांवरी सूरति माधुरी मूरति

यह छवि हियरे रहौ जी राज । अनाथन नाथ बधूनाबाला सुखना सागर छौंजी राज । पैठिपतालकालीनाग जुनाथ्यो म्हारी करुणाल्योजीराज । जुहीनाफूल सूतनोधागो सो काहे गाढ गहौजी राज । रिमिझिमि करतो सांवलियो आयो नरसी महिता तुमल्योजीराज ॥ चौपाई ॥ अहोवकी दुष्टाने प्यायो । मारनताहि कुचन विपलायो । दई धायकी गति पुनिताहि । तादयालु विन सुमिरों काहि ॥ २ ॥

काढ़िकैअँगूठाडारो तवसोउचारौवातमनमेंविचारौकियोतिलक वनाइकै । जानेसुताभागऐसेरहेशोचपागिसवआवैजवव्याहिवेकोधन दैअघाइकै । लगनहूंलिखिदियोदियोद्विजआनलियोडारिराख्योकहूं गावैतालयेवजाइकै । रहेदिनचारियेविचारिनहींनेकुमन आयेकृष्ण रुक्मिणीजूझूमिमिलेधाइकै ॥ ४४३ ॥ ठौरठौरपकवानहोततियगा नकरैंघुरतनिशानकानसुनियेनवातहै । चित्रमुखाकियोलैविचित्रपट रानीआपधारी रंगवोरीपैचढ़ायोसुतरातहै । करीसोज्यवनारतामें मानसअपारआये द्विजनविचारपोटवांधीपैनमातहै । मणिमयहीसा जवाजिगजरथऊंटकोरझमकेंकि शोरआजसजीयोंवरातहै ॥४४४॥ नरसीसोंकहैगहेहाथतुमसाथचलोअंतरिक्षमेंहूंचलौयेतीवातमानिये। कहीअजूजानौंतुममैंतौहियेआनोंयहै लहैसुखमनमेरो फेटतालआ निये। आपहीविचारसवभारसोंउठायलियोदियोडेराधुरीसमधीकी पहँचानिये। मानसपठायोदिनआयेपैनआयेअहो देखिछविछाये नरपूंछैंजोवखानिये॥ ४४५ ॥

आयेकृष्ण ॥ पंचाध्यायी॥ अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमाश्रितः । भजते तादृशीं क्रीडांयांश्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥ २ ॥ मिले धाइकै । कोऊ कहै नरसीने कृष्णको साक्षात् ठाकुर जाने होहिंगे कै राजा कै साहूकार जाने होहिंगे सो नहीं पुरके न जाने नरसीने हरिही जाने ॥ १ ॥ दशमे मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः स्त्रीणां स्मरो मूर्तिमान् गोपानां स्वजनोऽसतांक्षि-

त्रिभुजां शास्तास्वपित्रोः शिशुः । मृत्युर्भोजपतेर्विराट् च विदुषां तत्त्वं परं योगिनां वृष्णीनां परदेवतेतिविदितो रंगंगतः साग्रजः ॥

नरसीबरातमतिजानोयहनरसीकी नरसीनपावैऐसोसमझअपारहै। आइकैसुनाईसुधिवुधिविसराईअहोकरतहँसाईवातभापोनिरधारहै । गयोजोसगाईकरिदरवरआयोद्विजनिजअंगमेंनमातकैसेरंगविस्तारहै कहीएकघासधनरासससोनपूजैकिहूं चहूंदिशिपूरिरहीदेख्योभक्तिसारहै ॥ ४४६ ॥ चलेअचरजमानिदेखिअभिमानगयोलयोपाछोत्राह्मणकोहमैंराखिलीजिये । जाइगहिपांइरह्योभाइपरिदयाकरोगयेदृगभरेपांइपरेकृपाकीजिये । मिलेभरिअंकलैदिखायोसोमयंकमुख हूजिये निशंकइन्हैंभोरसुतादीजिये । ब्याहकरिआयेभक्तिभावलपटायेसब गयेगुणजानिजितैसुनिसुनिजीजिये ॥ ४४७ ॥ मूल ॥ दिवदासवंश जसोधरसदनभइभक्तिअनपायिनी । सुतकलत्रसंमतसवैगोविंदपरायन । सेवतहरिहरिदासद्रवतमुखरामरसायन । सीतापतिकोसुयश प्रथमहीगमनवखान्यो । द्वैसुतदीजेमोहिंकवितसवहीजगजान्यो । गिरागदितलीलामधुरसंतनआनँददायिनी । दिवदासवंशजसोधर सदनभईभक्तिअनपायिनी ॥ २०९ ॥

नरसी बरात दृष्टिकूट ॥ वृक्षाग्रवासीन च पक्षिराजो दुग्धं स्रवंती न च कामधेनुः । त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः नारी च नामा न च राजकन्या ॥ ॥ १ ॥ हमैं राखि लीजे हमतौ तेरेराखे रहेहैं नहीं तो धनहूं जाइगो अरु अयशहोहिगो ब्याहकारि आये कोऊकहै नरसीकी ऐसी सहाय करी यह तौ बड़ो अचरजहै कवित्त सवही जग है ॥ दोहा ॥ रामराम सब कोउ कहै, दशरथ कहै न कोइ । एकबार दशरथ कहै, कोटि यज्ञ फलहोइ । दशरथ तौ बड़ेई सामर्थ्यमान्हैं जिनके नामसों आठौ-सिद्धि नवो निधि आगे रहैं ॥ ३ ॥

श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे । लीलापदरसरीतिग्रन्थरचनामेंनागर । सरसउक्तियुतयुक्तिभक्तिरसगानउजागर ।

प्रचुरयपधलौंसुयशरामपुरग्रामनिवासी।सकलसुकलसंवलितभक्तप दरेणुउपासी। चन्दहासअग्रजसुहृदपरमप्रेमपयमेंपगे। श्रीनंददा सआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे ॥ २१० ॥

रसिक ॥ दोहा ॥ घरको परनो परिहर्‍यो, कहौ कौन उपदेश। तुलसी यासों जानिये, नहीं धर्म को लेश ॥ १ ॥ हम चाकर रघुनाथ के जन्म जन्मके दास। रूप माधुरी मनहर्‍यो, डारि प्रेमकी फांस ॥ २ ॥ कवित्त ॥ अधर बंधूक औ बदन अधिकाई छबि मानों विधि कीनी यह रूपको उदधिकै।कान्ह देखी आवत अचानक मुरछ गिरे घुंघुट उघारि राख्यो सखिन के मधिकै। गंगगई मारि सर मृग गिरिधर बेधे अधिक अधीन भई चितवनि तधिकै। बाण बेधे बधिक बधेको फेरि खोजलेत बधिक बधून खोज लिये वाण बधिकै ॥ ३ ॥ लीलापद ॥ पहिले तौ देखौ आइ माननीकी शोभा लाल तापाछे लीजिये मनाइ प्यारेहो गोविंद। करपैदीये कपोल रहीहै नयनन गुंदि कमल बिछाय मानों सोयो है पूर्णचन्द। रिसभरीभौंहैं मानो भौंर बैठे अरबरात इंदुतरे आयो मकरंद भर्‍यो अरबिंद। नंददास प्रभु ऐसी प्यारी को रुसैये बलिजाके मुख दीखेते मिटत सबै दुखद्वंद ॥ ४ ॥ दोहा ॥ जिहिघट बिरह आवा अगिनि, पर यक भये सुभाइ ॥ ताही घटमें नंदहो, प्रेम अमी ठहराइ ॥ ५ ॥ कुंज कुंज प्रतिपुंज अलि, गुंजत इमि परभात ॥ रविडर तम सब भाजिगयो, रोवत ताको तात ॥ ६ ॥ अबला निसरी तीरजब, नीरचुवत बर चीर ॥ जनु अंशवनि लागी झरी, तन बिछुरन की पीर ॥ ७ ॥

मूल ॥ संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजिनगोपालकी। भक्तितेजअतिभालसंतमंडलकोमंडन। बुधिप्रवेशभागवतग्रंथसंशयकोखंडन। नरहरिग्रामनिवासदेशबागडानिस्तार्‍यो। नवधाभजनप्रबोधिअनन्यदासनव्रतधार्‍यो। भक्तिकृपाबांछीसदापदरजराधालालकी। संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी ॥ २११ ॥ माधवदृढमहिउपरैप्रचुरकरीलोढाभगति। प्रसिद्धप्रेमकीराशिरढ़ागढ़प

रचोदियो । ऊंचेतेभयोपातश्यामसांचोप्रणकियो सुतनातीपुनिस द्दशाचलतऊहीपरिपाटी । भक्तनसोंअतिप्रेमनेमनाहिंकिहुँअंगघाटी । नृत्यकरतनहिंतनसँभारसमसरजनकनकीसकति। माधवदृढ़महिम हिउपरैप्रचुरकरीलोढाभगति ॥ २१२ ॥

जकड़ी साखी अरीसुनि आतमप्यारी लाल मनाइलै । पहि लेरी पहरै रैनिके तेन वसत साजे। यह प्रीतम मन भावतो तेरे निकट विराजे । मानन कीजे पीयसों अरी तेरो यौवन लाजे । दूजेरी पहरै रैनिके तैं मरम न जान्यो । यह यौवन बहु मोलको लैविष में सान्यो । तीजेरी पहरैरैनि के तू अजहुँ न चेती।अंगन दियो सुजानके मैं वकी जुकेती । फिरि पाछे पछिताइगी मिलि साहव सेती । चौथेरी पहरैरैनि के शशि ज्योतिहु मानी । मैं तौतोहिं बहुतैकही तैं चितनहिं आनी । ये देखौ पहुपीरी भई टरैसर वरपानी । खेमरसिक भये भोरके सुंदरि पछितानी ॥ १ ॥ अतिप्रेम ॥ दोहा ॥ प्रेम भक्ति एकौपलक, कोटि वरपको योग ॥ प्रेम भक्ति सव योग है, योग प्रेम विन रोग ॥ २ ॥

माधवदासजीकीटीका ॥ गढ़ागढ़पुरनाममाधववाढ़िप्रेमभूमिलोटैं जवनृत्यकरैभूलैसुधिअंगकी । भूपतिविमुखझूंठजानिकैपरीक्षालई आनतीनिछातिपरदेखीगतिरंगकी । नूपुरनिबांधिनाचिसांचसोदि खायादियो गिरेहूकराहिमध्यजियोमतिपंगकी।वड़ोत्रासभयोनृपदास विश्वासवढ़ोमढ़ेउरभावरीतिन्यारीहीप्रसंगकी ॥ ४४८ ॥ मूल ॥ अभिलाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो । नगअमोलइकताहि सवैभूपतिमिलियाचैं । श्यामदासवहुकरैदासनाहिंनमनकाचै । एक समयसंकटलेवपानीमेंडारयो । प्रभूतिहारीवस्तुवदनतेवचनउचा रयो । पांचदोइसतकोसतैंहरिरहीरालैउरधरयो । अभिलाषभक्तअं गदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो॥ २१३॥ टीकाअंगदभक्तकी ॥ राइसे नगढ़वासनृपसोसलाहदीनताकोयहकाकारहैअंगदाविमुखहै। ताकी नारीप्यारीप्रभुसाधुसेवाधारी उरआयेगुरुघरकहैंकृष्णकथासुखहै ।

वैठभौनदेखिकौनकैसेमौनरहौजातवोल्योतियाजातिकहाकरौनरहूपहै । सुनिउठिगयेवधूअन्नजलत्यागिदियेलियेपांवजाइविषयवश भयोदुखहै ॥ ४४९ ॥

गढ़ागढ़ ॥ भागवते ॥ ज्ञानतः सुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपुण्यतः । सेयंसाधनसाहस्रैर्हरेर्भक्तिः सुदुर्लभा ॥ १ ॥ कृष्णकथा कहै सो गुरुसों पूछें एकनित्य मुक्तितेन पूछै निरवधि विषयो न पूछे मुमुक्षु पूछै जिज्ञासू ॥ २ ॥ छप्पय ॥ तात मात सुत भ्रात आपको बंधनमाने । छुटेकर्म नहिं लेश यहै उर अंतर जाने । जन्म मरण की शंकरहै निशिदिन मनमाहीं । चौरासीके दुःख नेकु नाहिं बरणे जाहीं । इहिभांति सदा शोचत रहैं संतन सों पूछत फिरै । है कोऊ सतगुरु ऐसो सो मेरो कारज करै ॥ ३ ॥

मुखनदिखावेयाहिदेख्योई सुहावैकही भावैसोईकरोनेकुवदनादिखाइये । सैंहूंजलत्यागिदियोअन्नजातकापैलियोजीयोजवनकितवआपकछूखाइये । वोलीमोसोंवोलोजिनिछाँड़ोतनयाही छिनप्रणसांचोहोतौतौपैसुनतसमाइये । कहौअवकीजैसोइमेरीमतिगईखोइ भोईउरदयावातकहिसमझाइये ॥ ४५० ॥ वेईगुरुकरौजाइपायनिमेंपरिगयो चाइनिलिवायलायोभयोसिखदीनहै । धारीउरमालभालतिलकवनाइकियो लियोशीतप्रीतिकोऊउपजीनवीनहै । चढ़िफौजसंगचढ्योवैरीपुरमारिवढ्योकढ्योढोपीलैकेहीरासतएकपीनहै । डारैसब वेन्चिपागपेचमध्यराख्योमुख्य भाष्योसोअमोलकरचो जगन्नाथलीनहै ॥ ४५१ ॥ कानाकानीभईनृपवातमेंसुनिलई कहीहीरावहदेयतौपैऔरमाफकियेहैं । आपसमझावैवहुयुगतिवतावैयाकेमनमेंनआवेजाइसवैकहिदियेहैं । अंगदवहानिलागैवाकीभूवापागैतासों देवोविषमारोफेरितूहीपगाछियेहैं । करतरसोईघरगरलामिलायपाक भोगहूलगायोअजूजैवोवोलिलियेहैं ॥ ४५२ ॥

वेई ॥ दोहा ॥ डरवारस डर परमगुरु, डर करनी में सार ॥ खोजी डरै सुऊवरै, गाफिल पावै मार ॥ १ ॥ प्रीति ॥ भागवते ॥ यस्य देवेष

राभक्तिर्यथादेवे तथागुरौ। तस्यैते कथिताह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः॥ २॥ बहुयुगति बताकै साम दाम दंड भेद सनेह धन भेद ॥ ३ ॥ भूवासों बोल्यो तेरोभाई अंगद बडो दुष्ट है तेरे निमित्त गांव बहुत दिये हैं सो तोको न दिये अब याहि मारि सवदेश को पट्टा तोही को करिदेहिंगे ॥ ४ ॥

वाकीएकसुतासंगलैकेबैठेजेंवनको आईसोछिपाइकहीजेंवोकहूंग इहै। जेंवतनबोधहारीतवसोविचारीप्रीतिभीतरोइमिलीगुरैरीतिकहि दईहै । प्रभुलैजिमायेरांड़भांड़कैनिवासद्वारदैकरिकिंवाररसपायो ओपनईहै । बड़ोदुखहियेरह्योकह्योकैसेजातकाहू वातसुनीनृपहूने जैसीभांतिभईहै॥ ४५३ ॥ चलेनीलाचलहीराजाइपाहिराइआवेंआ इघेरिलीनेनृपनरानिखिसाइके । कहीडारिदेवोकैलराइसन्मुखलेहु बसनहमारोभूपआज्ञाआयेधाइके । वोलेनेकुरहोमैंअन्हाइपकरा- इदेत हेतमनऔरजलडार्‍योलैदिखाइके । वस्तुहैतिहारीप्रभुली- जिये उवारीयहवाणीलागीप्यारीउरधारीसुखपाइके ॥ ४५४ ॥ एतौघरआयेवेतौजलमाधिकूदिधाये आतिअकुलायेनेकुखोजहूनपा- योहै । राजाचलिआयोसवनीरकढ़वायोकीचदेखिमुरझायोदुखसा गरवुड़ायोहै । जगन्नाथदेवआज्ञादईसुधिदेवोजाय आयकैसुनाई नरतनबिसरायोहै । गयोजाइदेख्योउरपरजगमगरह्योलह्योसुखनै ननिको कापैजातगायोहै॥ ४५५ ॥

बैठे जेंवनको अंगद जेंवनको बहिनिकी कन्याको संग लै बैठतौ क- न्यासोइ तौ सनेह सो सनेहमें भक्तिकैसी यह साक्षात् लाड़िली लालकी सखी प्रगट भईहै यह स्वरूप सखाविना और कहां अरु हमारे भक्तनके घरमें जन्मै सो सामान्य जीव है सो नहीं परकर की जीति को भाव कियो भावही सों प्रीति ह्वै है हेत मन और अब मेरो बल नहीं पहुंचै तव वि- चारि कही हरि सर्वज्ञ हैं सो जल में डारिदियो सो भगवान् ने अलगही लियो ॥ १ ॥ सर्वतः पाणिपादेति ॥

राजाहियेतापभयोदयोअन्नत्यागिकर्यो आवैजोपैभागमेरेब्राह्मणपठायेहैं । धरनोदैरहेकहेनृपकेवचनसबतबह्वैदयालुनिजपुरढिग आयेहैं । भूपसुनि आगेआइ पाँइलपटायगयोलयोउरलाइहगनीरलैभिजायेहैं । राजासर्वसुदियोजियोहरिभक्तिकियो हियोसरसायोगुण जानेजितेगायेहैं ॥ ४५६ ॥ मूल ॥ चतुर्भुजनृपकीभगतिकोकौन भूपसरवरकरै । भक्तआगमनसुनतसन्मुखजोजनइकजाई । सदन आनिसतकारसहृशगोबिन्दबड़ाई ॥ पादप्रच्छालनसुहथराइरानी मनसांचें । धूपदीपनैवेद्यबहुरिरितिनआगेनाचे । यहरीतिकरौलाधीशकीतनमनधनआगेधरै । चतुरभुजनृपकीभगतिकोकौनभूपसरवर करै ॥ २१४ ॥ टीका ॥ पुरढिगचारयोओरचौकीराखीयोजनपैयो जनहींआवैतिन्हैंलावतलिवाइकै । मालाधारीप्रभुसनमानिआवै कोऊद्वारजोपैकरैवहीरीतिसोसुनाईछप्पैगाइकै।सुनीएकभूपभक्तिनिपटअनूपकथासबको भंडाराखोलिदेतबोल्योधाइकै । पात्रऔअपात्रमोबिचारहीजोनहींतौपै कहाऐसीबातदईनेकुमेंउड़ाइकै ॥ ४५७॥

जग मग रह्यो ॥ कवित्त ॥ तरवा ललाई नख चंद्रिका सुछबि छाई हिय में समाई वह कैसे कहिजात है ॥ नूपुरादि चूरा पग धोतीपग रही लगि छुद्र घंटिका अनूप ज्योति जगमगात है । झँगा बूटेदार बनमाल मोती हीरा कांति कौन कवि उपमा कह न सकात है । तिलक बिशाल माथे चीरा छबि जाल जापै कलँगी रसाल देखि अंगद सिहात है ॥ १ ॥ राजा के हिये ताप ॥ दोहा ॥ विषयिन के शिर पर रहै, साधु फूलके गुच्छ। केवल तन वश भूमि में, परे रहे मन सुच्छ ॥ २ ॥

भागवतगावैभक्तभूपएकविप्रतहां बोलिकैसुनावैऐसीमनाजिनलाइये । पावैआसैकौनहृदयभवनमेंप्रवेशकरिभरिअनुरागकहाउरमधिआइये । करीलैपरीक्षाआटभिक्षुकपठाइदियोदियोमालातिलकद्वारदारदासयोंसुनाइये । गयोगयोभूलिफूलकुलविस्तारकियो लियोपहिचानिअवजानकैसेपाइये ॥ ४५८ ॥ बीतेदिनतीनिबीसआईबससी

खसुधिकहीहरिदासकोऊआयोयोंसुनाईहै । बोलेजूनिशाकजावो गावोगुणगोविंदके आयेवरमध्यभूपकरीजैसीभाईहै । भक्तिकेप्रसंगकोनरंगकहूँनेकुजान्यो जान्योउनमानसोपरीक्षामँगवाईहै । दियेलैभंडारखोलिलियोमनमान्योदईसंपुटमेंकौड़ीडारिजरीलपटाइये ॥ ४५९ ॥ आयोवहीराजापाससभामेंप्रकाश कियोलियोधन दियोपाछेसोईलै दिखायोहै । खोलिकैलपेटामध्यसंपुटनिहारिकौड़ीसमुझिविचारैहारैमनमेंनआयोहै । बड़ाभागवतविप्रपंडितप्रवीणमहानिशिरसलीन जानिआनिकैबतायोहै । करचोउनमान भक्त मानकोप्रमानजरी मूंदिकैपठायो ताहिगुणसमुझायोहै॥४६०॥

उड़ाय कै ॥ कवित्त ॥ सरल सों सठकहैं वक्तासों ढीठ कहैं विनय करे तासों कहैं धनको अधीन है । क्षमी सों निबल कहैं दमी सों अदत्ती कहैं मधुर वचन कहैं तासों कहैं दीन है । दाता सों दंभी कहैं निस्नेही सों गुमानी कहैं तृष्णा घटावे तासों कहैं भाग हीनहै । साधु गुण देखे अहो तहांहीं लगावे दोष ऐसो कछू दुरजन को हृदोई मलीनहै ॥ १ ॥ भगत भूपहै ॥ श्लोक ॥ पुष्पाणां स्तबकस्येवद्वयोरिति मनीषिणाम् । सर्वलोकस्य मूर्ध्निर्वास्तेविशीर्येतवनेपिवा ॥ २ ॥

राजारीझपांवगहेकहेजूवचननीकेऐपैनेकआपजाइतत्वयाकोलाइये । आयेदौरिपांइलपटायेभूपभावभरे परेप्रेमसागरमेंचरचाचलाइये । चलिबैनदेतसुखदेतचलेलोलमेंनखोलिकेभंडारादियोलिये नारिझाइये।उभैसुवासारोकहीएककरधारोमेरे दईअकुलाइलईमानोनिधि पाइये ॥ ४६१ ॥ आयोराजसभावहुवातानिअखारोजहांवेली उठी सारोकृष्णकहोझारिडारेहैं । पूछैंनृपकहोअहोलहोसवयाहीसोंजुपंछीवासमाजरहेहरिप्राणप्यारेहैं । कोटिकोटिरसनावखानोपैनपाऊं पार सारसुनिभक्तिआपशीशपावधारेहैं । राखौयहखगतनमनपगिर ह्योश्यामअति अभिरामरीतिमिलेओपधारेहैं ॥ ४६२ ॥

उभय सुवासारो ॥ अरिल्ल ॥ शिरपै ठाढो कालय वेडीदेहिहै ।

भयो धुंध में अंध कहा करि लेहि है। राम कृष्ण कह मूढ फेरि पछिताइ है। दुनिया दौलत छांडि अकेला जाइ है ॥ १ ॥ भाग्यो है मुट मरदम बासी कैद ते। वली नजीत्यो जाय हजारन जैदे ते। महाराज मैं अर्ज करों सुनु कानदै। अरिहा मारि बांधिकै छांडि याहि जिन जानदै ॥ २॥ पद ॥ कोई सुनियो संत सुजान दियो हरिलारे। जो तू कहै मेरेद्रव्य बहुत है संग न चलै अधेलारे। जो तू कहै मेरे कुटुंब बहुत है यमलै चलेअकेलारे। कहत कबीर सुनो भाई साधौ मनको करिले चेलारे ॥ ३॥ कृष्णकहु कृष्णकहु कृष्णकहु भाई। होइगी वही जो प्रभु ने बनाई। राखौ ॥ तापै बेलमा फकीर को दृष्टांत हमारोही घर जाहिगी ॥

मूल ॥ लोकलाजकुलशृंखलातजिमीरागिरिधरभजी। सदृश गोपिकीप्रेमप्रगटकलियुगहिदिखायो। नरअंकुशअतिनिडररसिक यशरसनागायो। दुष्टनदोषविचारमृत्युकोउद्यमकीयो। बारनबां कोभयोगरलअमृतज्योंपीयो। भक्तनिशानबजायकेकाहूतेनाहिंनल जी। लोकलाजकुलशृंखलातजिमीरागिरिधरभजी ॥ २१८ ॥

लोक लाज ॥ कवित्त ॥ क्षीरमेंयो नीरज्योंसमानी बूंदसागरमें तन में सुमन वास भोइगी सुभोइगी। तेरी देखिबे की बानि नयननिमें परी आनि आनि कुल कानि अब खोइगी सुखोइगी। लोक परलोकहू की भूली सुधि ऊधो राम यहेबात मन मांझ मोइगी सुमोइगी। रूप उजियारे गुण भारे लाल प्यारे आंखैताही सों लगी हैं होनी होइगी सुहोइगी ॥ १ ॥ गिरिधर भजी गिरिधरने मीराबाई भजी अथवा मीराबाईजीने गिरिधर को भज्यो याते सनेहीहि नेह की मूर्तिहै ॥ २ ॥ कवित्त ॥ नेहराज रूप राज रसिक रसालराज नैन सुखराजलै उठाये गिरिराज है। छोटे से करवर अंगुरीपै धर्यो गिरि खुभी कोसो छत्र वह रिलिये गजराज है। हाथनि ललाई तामें पहुँचनि छविछाई ऊंचो कियो हाथ सब छबिको समाज है। नैननि की सैनानि सो कहैं अलबेली सखी चोरि चोरि खायो दधि काम आयो आज है ॥ २ ॥ नेक जो निहारो पिया प्राणनिकी प्यारी अति पंकज से हा-

थनि लै धाऱ्यो गिरिभारोहै । प्रेमसों लपेटी कहै नेहभरी वात आली लेहुरी लकुट नेकु देहरी सहारो है ॥ ५ ॥ कहै हँसि आली मिलि काम आयो आजु बल खायो दधि माखन जो चोरिके हमारो है । नेहभरी वात सुनि हियहुलसात मंद मंद मुसुकात मुख रूपको उज्यारो है ॥ १ ॥ कबित्त ॥ सबहीके ग्वाल बाल गोधन हैं सबहीके सबहीको आनि परी प्राणन की भीरहै। सबहीपै मेघ वरषतहैं सुगोलाधार सबही की छेदछाती करत समीर है। किधौं यह मेरोई अनोखो ढोटा मांगि आन्यो याबोझिल पहाड़ तर कोमल शरीर है । नेकुयाके हाथते गिरिलेहु क्यों न कोऊ तुम जातिके अहीर पै नकाहूहिय पीरहै ॥ २ ॥ सदृश गोपिका प्रेम ॥ कबित्त ॥ पीरी परिगई अरुणई गई आननते कानन गईही सोसयान मुख भाग्यो है। चलि चलि कहै बैन फिरि फिरि जात नैन भईविन चैन मैन अंगअंग राग्योहै। काशीराम औरको यतनुकोन गिनती में क्षण क्षण छीजै देह नेह रंगपाग्यो है। हरि अवधूत और हेत सों न नीकीहोति भूत नाहिं लाग्यो याहि नंदपूत लाग्यो है ॥ ३ ॥ पद ॥ अब जो या तनको फेरि बनावैं । तऊ नंदनंदन विन ऊधो औरन मन में आवें । जो यातन की त्वचा उचेले लैकरि दुंदुभि सजई । मधुर उतंग शब्द सुरसुनियत लाल लालई बजई । छूटैं प्राण मिलै तनमाटी द्रुमलागे तिहि ठाम । सुनि अब सूर फूल फल शाखा लेतउठे हरिनाम ॥ ४ ॥ भक्ति निशान बजाय के ॥ मांझ ॥ जिनदांवनि हम महलीहूपे तिनदावनि तेनहिं जाने । पायंदाज न अंदर पहुँचे निंदाकरत खिसाने । कुंजमहल बासिंदा हमनिंदा अहिसाने माने । वल्लभ रसिक चुनिन्दाहूये बाजि निंदा सहदाने ॥ ५ ॥

टीकामीराबाईजीकी । मेरेतौजनमभूमिझूमिहितनेमलगेपगेगिरिधारीलालपिताहीकेधाममें । रानाकेसगाईभईकरीन्याहसामानईगई मतिबूड़िवारँगीलेधनश्यामसें । भाँवरैपरतमनसाँवरेस्वरूपमांझता मरेसीआवें चलिवेकोपतिग्रामसें । पूछेंपितुमातुपटआभरणलीजिये जूलोचनभरतनीरकहाकामदाममें ॥ ४६२ ॥ देवोगिरिधारीलाल

जोनिहालकियोचाहौऔरुधनमालसबराखियेउठाइकै । बेटीअति प्यारीप्रीतिरंगचढ्योभारीरोइमिलीमहतारीकहीलीजियेलड़ाइकै । डोलापधराइहगहगसोंलगाइचलीसुखनसमाइचाइप्राणपतिपाइकै । पहुँचीभवनसासुदेवींपैगमनकियोतियाअरुवरमठिजोरोकह्यो भाइकै ॥ ४६४ ॥ देवीकेपुजाइबेकोकियोलैउपाइसासुवरपैपुजाइपुनि वधू पूजिभाषिये । बोलीजूबिकायोमाथोलालागिरिधारीहाथऔरकोनन वैएकवहीअभिलाषिये । बढ़तसुहागयाकेपूजेतातेपूजाकरो मतहठ करोशीशपाइनिमेंराखिये । कहीबारबारतुमयहीनिरधारजानो वही सुकुमारजापैवारिफेरिनाखिये ॥ ४६५ ॥

बिकायो माथौ ॥ सवैया ॥ पल काटों इन नयनन के गिरिधारी बिना पल अंत निहारै । जीभकटै न भजै नँदनंदन बुद्धिकटै हरिनाम बिसारै । मीरा कहै जरिजाहु हियो पदपंकज बिनपल अंत न धारै । शीशनवै ब्रजराज बिना वह शीशहि काटि कुंवां किन डारै ॥ १ ॥ दोहा ॥ रसनकटैं आनहिं रटै, फुटैं आन लखिनैन ॥ श्रवणफुटैते सुने बिन, श्रीराधा यश बैन ॥ २ ॥ कही बारबार ॥ पद ॥ यशुदा बारबार यों भाखै । है कोऊ ऐसो हितू हमारो चलत गोपालै राखै ॥ ३ ॥

तबतौखिसानीभईअतिजरिबारिगईगईपतिपासयहबधूनहींकाम की । अबहींजवाबदियोकियोअपमानमेरोआगेक्योंप्रमाणकरैभरैश्वासचामकी । रानासुनिकोपकरचोधरचोहियेमारिबोई दईठौरन्यारी देखिरीझमतिबामकी । लालनलड़ावैगुणगाइकैमल्हावैसाधु संगही सुहावैजिन्हैंलागीचाहश्यामकी ॥ ४६६ ॥ आइकैननँदकहैगहैकि नचेतभाभीसाधुनसोंहेतमेंकलंकलगैभारिये । रानादेशपतीलाजैबापुकुलरतीजातिमानिलीजेबातवेगिसंगनिरवारिये। लागेप्राणसाथसंत पावतअनंतसुख जाकोदुखहोयताकोनीकेकरिटारिये । सुनिकैकटोराभरिगरलपठायदियोलियोकरिपानरंगचढ़ेउयोंनिहारिये४६७॥

लागेप्राणसाथ ॥ कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कहो कोऊ

कहै अंकन कलंकनि कुनारी हौं। कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब कीनमैं अलोक लोक लोकनते न्यारी हौं। तन जाहु मनजाहु देव गुरुजन जाहु जीभ क्यों न जाहु टेक टरत न टारी हौं। वृन्दावनवारी गिरीधारी के मुकुटपर पीत पटवारेकी मैं मूरति पै वारीहौं ॥ १ ॥ तारे क्योंन तजौं रैनि नयनशशि क्यों न तजौं जीव क्यों न जाहु सोउ अवहीं यात नते। तन क्यों न जारि जाहु जारि क्यों न क्षारहोउ क्षार क्यों न उडि-जाहु विरह पवन ते। सैन कहै वह चलनि चितवनि वनि मनवसीरी जब ते आये वनवारी वने वनते। जानो है सुजाहु अरुरहै सोतोरहो आली माधवजी की प्रीति जनिजाहु मेरे मनते ॥ २ ॥

गरलपठायोसोतोशीशपै चढ़ायोसंग त्यागविपभारीताकी झारनसम्हारीहै। रानानेलगायोचरवैठेसाधुढिगढरितवहींखवरिक रिमारोअहधारीहै। राजैगिरिधारीलालतिनहींसोंरंगजाल बोलत सहतख्यालकानपरोप्यारीहै। जाइकैसुनाईभईअतिचपलाईआयो लियेतरवारिदैकिंवाँड़खोलिन्यारीहै ॥ ४६८ ॥

गरल ॥ पद ॥ रानाजी जहर दियो हम जानी। जिन हरि मेरो न्याव निवेरो छान्यो दूध अरु पानी। जबलगि कंचन कसियत नाहीं होत न बारहबानी। अपने कुलको परदाकेले हों अवला बउरानी। श्वपच भक्त परवारों विमुख सबहीं हरि हाथ विकानी। मीराप्रभु गिरिधर भजिवे को संत चरण लपटानी ॥ १ ॥ दोहा ॥ बड़ी भक्ति मीरा गही; रानाके बड़ी भूल। चरणामृतकहि विपदियो, भयो सजीवनि मूल॥ २ ॥ चपलाई ॥ चौपरि खेलौं पीव सों बाजी लावों जीव। जो हारों तो पी-वकी जो जीतों तौ पीव ॥ ३ ॥ वेगिदे वताइये तरवारि हाथमें नांगीहै के वह विषयी नर कहां गयो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ निकट वस्तु दीसै नहीं, धृगजीवन हैं जिंद। तुलसी ऐसे जगतको, भयो मोतियाविंद ॥ ५ ॥ सबै चतुर अरु बड़ेहैं, अपने अपने ठौर। सब तजिकै हरिको भजे, सोइ चतुर शिरमौर ॥ ६ ॥

जाकेसंगरंगभीजिकरतप्रसंगनानाकहांवहनरगयोबेगिदेवताइये। आगेहीविराजेकछूतोसोंनहींलाजेअभूदेखिसुखसाजेआंखिखोलिदर शाइये। भयोईखिसानोरानालिख्योचित्रभीतिमानोउलटिपयानो कियोनेकुमनआइये। देख्योहूप्रभावऐपैंभावमेंनभिद्योजाइविनह रिकृपाकहौकैसेकारिपाइये ॥ ४६९ ॥ विषयीकुटिलएकभेषधरि साधुलियो कह्योयोंप्रसंगमोसोंअंगसंगकीजिये। आज्ञामोकोदई आपलालगिरिधारीअहो शीशधरिलेईकछूभोजनहूकीजिये। संत नसमाजमेंविछाइसेजबोलिलियो शंकअबकौनकीनिशंकरसपीजि ये। श्वेतमुखभयोविषयभावसबगयोनयो पांयनमेंजाइमोको भ-क्तिदानदीजिये ॥४७०॥ रूपकीनिकाईभूपअकबरभाईहियेलियेसंग तानसेनदेखिवेकोआयोहै। निरखिनिहालभयोछबिगिरिधारीला लपदसुखजालएकतबहींचटायोहै। वृन्दावनआईजीवगुसाईजीसों मिलिझिलीतियासुख देखिवेकोपनलैछुड़ायोहै। देखिकुंजकुंजला लप्यारीसुखपुंजभरी धरीउरमांझआइदेश बनगायो है ॥ ४७१ ॥

भाई अकबरने तामसेनसों पूंछी सांवरेपै सबरीझे हैं तबहीं मीराबाई-पै तब दर्शन को आयो ॥ १ ॥ पद सुखजाल १ पद ॥ प्यारी के कचबिथुरे मानों धाराधरकी श्यामघटा उनही तामधि पुहुप छूटिपरे जैसे बड़ी बड़ी बूंदें। तामधि मुक्त बगपांति तरौना अलक बीच बिजुलता-सी कौंधनि नेत्र खंजनरी पिक बोलनि बोलें रूंदें। लालसारी पहरे हरी कोर मघवा धनुसी घूंघट करि चली पीठ पाछे तेतरके लाल मुनियां सी कंचुकी तनीकी फूंदें। मेहँदी सों आरक्त नख बीरबहूटी ऐसी पा-वस बनिता मिली मीरागिरिधर खुले काम प्रीति काम हारगूंदें ॥ २ ॥

रानाकीमलीनमतिदेखिबसीद्वारावति रतिगिरिधारीलालनित्य हीलड़ाइये। लागीचटपटीभूपभक्तिकोस्वरूपजानिअतिदुखमानि विप्रश्रेणीलैपठाइये। बेगिलैकैआवोमोकोप्राणदोजिवावोअहोगये द्वा

रधरनौदैविनतीसुनाइये। सुनिविदाहोनगईराइरनछोरजूपै छांड़ोरा खोहीनलीनभईनहींपाइये॥ ४७२॥ मूल॥ आवैरअछितकूर्मको द्वारकानाथदर्शनदियो। श्रीकृष्णदासउपदेशपरमतत्त्वपरचोपा यो। निर्गुणसगुणस्वरूपतिमिरअज्ञाननशायो। काछवाछनिःकलं कमनोगांगेययुधिष्ठिर। हरिपूजाप्रहलादधर्मध्वजधारीजगपर। पृ- थ्वीराजपरचौप्रगटतनशंखचक्रमंडितकियो। आवैरअछितकूर्मको द्वारकानाथदर्शनदियो॥२१६॥ पृथ्वीराजराजाकीटीका॥ पृथ्वी राजराजाचल्योद्वारकाश्रीस्वामीसंग अतिरसरंगभरचोआज्ञाप्रभुपा इये। सुनिकैदिवानदुखमानिनिशिकानलग्योकहीपग्योसाधसेवाभ क्तिपुरछाइये। देखियेनिहारिकैविचारकीजेइच्छाजोईलीजेनहींसा थजावोवातलैदुराइये। आयोभोरभूपहाथजोरिकरिठाढ़ोरहेउकहो रहोदेशसोनिदेशनसुहाइये॥ ४७३॥

विदा हो नगई॥ पद॥ हरि करो जनकी भीर। द्रोपदी की लाज राखी तुम बढ़ायो चीर। भक्त कारण रूप नरहरि धरचो आप शरीर। हिरण्यकश्यप मारि लीनो धरचो नाहिंन धीर। बूड़ते गजराज तारचो कियो बाहरनीर। दास मीरालाल गिरिधर जहांदुख तहँ पीर॥ १॥ सजन सुधि ज्यों जानो त्यों लीजे। तुम विन मेरो और नकोई कृपा रावरी कीजे। घोसन भूख रैनि नहिं निद्रा यह तन पल पल छीजे। मीरा प्रभु गिरिधर. नागर अब मिलि बिछुरन नहिं कीजे॥ २॥

द्वारावतिनाथदेखोगोमतीस्नानकरोंधरोंभुजछापआयमनअभि लाखिये। चिन्ताजिनिकीजैतीनोंबातइहांलीजैअजूदीजैजोईआज्ञा सोईशिरधरिराखिये। आयेपहुँचाइदूरिनैनजलपूरिवहै दहैउरभारी कहांसंगरसचाखिये। बीतेदिनदोइनिशिरहेहुतेसोइभोइ गईभक्ति गिराआइवाणीमध्यभाखिये॥ ४७४॥ अहोपृथ्वीराजकहीस्वामी हीसोंबानीलहीआयोउठिदौरि वाहीठौरप्रभुदेखेहैं। धूम्योंकह्योका

नधरोगोमतीस्नानकरो सुनिकैअन्हायोपुनिवेनकहूंपेखेहैं । शंखच क्रआदिछापतनसबव्यापिगईभईयोंअबाररानीआइअवरेखेहैं। बोले रह्योनीरमेंशरीरलैसनाथकीजैलीजैनाथहियेनिजभागकरिलेखेहैं ॥ ॥ ४७५ ॥ भयोजवभोरपुरबड़ोभक्तशोरपरयोकरयोआनिदरशन भईभीरभारीहै । आयेबहुसंतऔमहंतबड़ेबड़ेधाये अतिसुखपायेदे हरचनानिहारीहै । नानाभेदआवेंहितमहिमासुनावेंराजा सु नतलजावेंजानीकृपावनवारीहै । मंदिरकरायोप्रभुरूपपधरायोसब जगयशगायोकथामोकोलागीप्यारीहै ॥ ४७६ ॥ विप्रअंगहीनसो अनाथवैजनाथद्वारपरयोचपचाहैमासकेतिकविहानेहैं। आज्ञाबारदो इचारभईहैफेरिहौंहियाकोहाठसारदेखिशिवपिघलानेहैं । पृथ्वीराज अंगकेअंगोछासोंअँगोछोजाइआइकेसुनाईद्विजगौरवड़रानेहैं। नयोमँ गवायोतनछाइदियोछायोनैनखुलेचैनभयोजनलखिसरसानेहैं४७७॥

मधुआषिये भगवान् ने विचारी कृष्णदासजी तीनबातें देनी कहि गये हैं सो देचुको पाछे कृष्णदास द्वारका आवेंगे उनकी मनुहारि करनी होयगी स्वामी कीसी वाणी कही क्योंकि राजाको कृष्णदास जी की वाणी में प्रीति बहुत रही है ॥

मूल ॥ भक्तनकोआदरअधिकराजवंशमेंइनाकियोलवुमथुरामें रताभक्तअतिजैमलपोपे । टोडेभजननिधानरामचन्द्रहरिजनतोषे । अभैरामइकरसनेमनीमाकेभारी। करमशीलसुरतानभगवानवीरभू पतिव्रतधारी । ईश्वरअछैराजराइमलकाहरमधुकरनृपसवंसादियो भक्तनकोआदरअधिकराजवंशमेंइनाकियो ॥ २१७ ॥ टीका ॥ मेरे तेवस्तुभूपभक्तिकोस्वरूपजानै जैमलअनूपताकीकथाकहिआयेहैं। करीसाधुसेवारीतिप्रीतिकीप्रतीतिभईनईएकसुनोहरिकैसेकैलड़ाये हैं । नाचेमानमान्दरसोंसुन्दरविचारीवातछातपरबँगलाकेचित्रले बनायेहैं । विविधबिछौनासेजराजतउठौनापानदानधरिसेनाजरी परदासिवायेहैं ॥ ४७८ ॥

नीचे मान मन्दिर ॥ कवित्त ॥ सीरे तहिखाने तामें खासे खस-खाने सींचे अतर गुलाबन सों व्यालरपटति है। भूधरसुधारे हौद छुटत फुहारे अरु भारे भरताव दान धूपद पटति है । ऐसेमें गवन कहि कैसे करि कीजै बलि सौध की तरंगआनि अंग लपटति है। चन्दन किंवार घनसारके पगार चारु तऊ आनि ग्रीषम की झार झपटति है ॥ १ ॥ बिछे हैं बिछौना घनसारके नवीने तामें कीने छिर काव तर अतर गँभीरके। गुरुवे गुलाबके फुहार छूटैं ठौर ठौर उठत झकोर तामे त्रिविध समीर के। सेज अरबिंद की चंदन की चोली चारु श्री गोबिंद सुमन शृंगार हैं शरीरके। झमक मनक सों बनि कवनि बैठीआजु राधिका रवन संग भवन उसीरके ॥ २ ॥

ताकीदारुसीठीकररचनाउतारिधरे भरेदूरिचोकीआयभावस्व च्छताइये। मानसीविचारेलालसेजपगधारे पानखातलैउगारडारेपौ ढेसुखदाइये। तियाहूनभेदजानैसोनसेनीधरीवानेदेखिकैकिशोरसोयों फिरिभोरआइये । पतिकोसुनाईभईअतिमनभाईवाकोखिजिडरपाई जानीभागअधिकाइये ॥ ४७९ ॥ टीकामधुकरशाहकी ॥ मधुकर शाहनामकियोलैसफलयाते भेषगुणसारग्राहतजतअसारहै। ओंडछे कोभूपभक्तभूपसुखरूपभयोलयोपनभारीजाकेऔरनविचारहै ।कंठी धरिआवैकोऊधोइपगपीवैसदाभाईदुखघरघरड़ारचोभालभारहै । पाइँपरछालिकहीआजुजूनिहालकियेहियेद्रयेदुष्टपावँगहेद्दगधारहै ॥ ॥ ४८० ॥ मूल—खेमालरतनराठौरकेअटलभक्तिआईसदन रैनापर गुणरामभजनभागवतउजागर। प्रेमीप्रेमाकिशोरउदरराजारतनाकर। हरिदातनिकेदासदशाऊंचीध्वजधारी । निर्भयअनन्यउदाररसिक यशरसनाभारी। दशधारसंपतिसंतबलसदारहतप्रफुलितबदन । खे मालरतनराठौरकेअटलभक्तिआईसदन ॥ २१८ ॥

भेष गुणसार ग्राही भवँरवत् सारग्राही मक्षिकावत् असार ग्राही दोषी.

भाइनिने खरको माला तिलकदैकै राजा के भेज्यो राजाने वाही चरणोदक लियो राजाके गुरु ब्यासदेव जू वहीं रहे हैं यत्र पद बनाय ॥ पद ॥ भक्त बिन किन अपराध सह्यो । कहा कहानि असाधनि कीनों हरि बल धर्म रह्यो । अधमराज मदमाते लैरथ सो जड़भरत नह्यो । पट झपटत द्रौपदी न मटकी हरि को शरणचह्यो । मत्तसभा कौरवन बिदुर ज्यों कहा कहा न कह्यो । शरणागत आरत गजपतिको आपन चक्र गह्यो । हाथ हरिनाथ पुकारत आरत कौन ओर निबह्यो । व्यास वचन सुनि मधुकर- शाह भक्ति पथ सदा गह्यो । करि मनसा कत को मुहुकारो । साकत मोहिं न देखे भावत कह्व बूढो कह बारो । साकत देखत डर लागतहै नाहर हूतेभारो । भक्तनसों कुबचन बोलतहैं नेकुडरैमब्यारो । आठै चौदशिकूंडो पूजत अभागेकोज्ञान अँध्यारो । व्यासदासयह संगति तजिये भजिये श्याम सवारो ॥ १ ॥ पद ॥ जो सुखहोत भक्तघरआये । सो सुखहोत नहीं वहुसंपति बांझहि बेटा जाये । जोसुखभक्तनिको चरणोदक गातहि गात लगाये । सोसुख सपनेहूनहिंपइयत कोटिक तीरथ न्हाये । जो सुख भक्तनि को सुख देखत उपजत दुख विसराये । सो सुख कबहुँ होत नहिं कामी कामिनि उर लपटाये । जो सुख होत भक्त बचनन सुनि नैननि नीर वहाये । जो सुख कबहुँ न पइयतु है घर पूतको पूत खिलाये । जो सुख होत मिलत साधुनके क्षणक्षण रंग बढ़ाये । सो सुखहोत नरंक ब्यासको लंकसुखमें रहिपाये ॥ ३ ॥ असारको लेहिं नहीं सार को संग्रहै साधु गुण हंसके ॥ ४ ॥ जैसे मधुकर शाह कामीकृष्ण क्रोधी नृसिंह लोभी वामन मोही रामचंद्र ऐसे अवगुणमें गुणलेहिं हरिहीकी इच्छामानैं नारद जी भक्तराजहैं पै उनहींने शाप दियो सनकादिक भगवान् रूप हैं उनहूंने शाप दियो पैभलोही करयो ऐसे साधु जो करैं सो भलोही करैं यह सार लै लेहिं ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ काठकी कठारी कारि तपसी भरिवारि लेत काठको सँवारि धाम श्यामको बैठावहीं । काठकीकमान शरकाठके बनाइ लेत काठी काठ चढि शूररणजीति आवहीं । काठकी सुमिरनीके

साधु राम नामलेत काठको पषाणविसि देवको चढावहीं । काठकी अवज्ञाको कहत बनिआवै नाहिं नाव चढ़ि काठकीधौं तवैपार पावहीं ॥ ६ ॥ काठकी बस्तु महा अमोल गनिये काठ तरण तारण है ॥

मूल ॥ कलियुगभक्तिकररी कमानरामरेणुकैऋजुकरी । अजरघरयआचरचोलोकहितमनोंनीलकंठ । निंदकजगअनिराइकहामहिमाजानेगोभूशठ । विदितगांधर्वीब्याहकियोदुइकुंतप्रवाने । भरनपुत्रभागवतसुमुखशुकदेवबखाने । औरभूपकोउछ्वैसकैदृष्टिजाहिनाहिंनधरी । कलियुगभक्तिकररीकमानरामरेणुकैऋजुकरी ॥ २१९ ॥

टीका ॥ पूनोंमेंप्रकाशभयोशरदसमाजरास विविधविलासनृत्यरागरंगभारीहै । बैठेरसभीजिदोऊबोल्योरामराजारीझिभेटकहाकीजेविप्रकहीजोईप्यारीहै । प्यारकोविचारैननिहारैकहूंनेकुछटासुतारूपघटाआनरूपसेवाज्यारीहै । रहीसभाशोचआपजाइकैलिवाइलायेभेषसोंदिवायेफेरसंपतिलैवारीहै ॥ ४८१ ॥

ऋजुकरीनरमकरी ॥ कबित्त ॥ पनच पुरानी बहिपानी यों धनुष आयो छुवत छैटूक भयो ताको कहा करिये । आलम अलप अपराध साधु जियजानि क्षमाकीजे क्षीणकीजे कित क्रोध मन धरिये । सूझत तौ द्विजवर पूजियेन जूंठवर कठिन कुठार आनि कंठपर धरिये । गुरुमति कोपिये न पूजे परकोपिये न तासों पांय रोंपिये न ताकेपाइँ परिये ॥ १ ॥ प्रकाश भयो ॥ रूपकी रीझसों प्रेमपग्यो किधौं प्रेमकी रीतिहिरूप सों पागी । मनसा वश में न जगी कवि मंडन कैमनसा वशैमन के जागी । लाजहिलै कुलकानभगी औकिधों कुलकागि लै लाजहिभागी । नयनलगे वहि मूरतिसोंरी किधौं वहि मूरति नयनन लागी ॥ २ ॥ नृत्य अरु गान बतरान मुसु कान देखि विह्वल बिकल ह्वैकै सकल विकै चुके । बड़े बड़े धर्मदास तेऊलये नारिसों संभारि हनसकै हरि सर्व सुहृदेचुके । नीर भरी अँखियनकी अँखियन ये भरिअति ऊरध अधीरगति मति

बिसरै चुके। ऐसो ऐस दैखिकै न और ऐस देखे अब मनके श्रवण नयन यहैपन लैचुके ॥ ३ ॥

मूल ॥ हरिगुरुहरिदासनिसोंरामघरानिसांचीरही। आरजकोउप देशसुतौउरनीकेधारचो। नवधादशधाप्रीतिआनधर्मसबैबिसारचो। अच्युतकुलअनुरागप्रगटपुरुषारथजान्यो। सारासारविवेकबाततीनों मनमान्यो। दासंतनिअनन्यउदारता संतनमुखराजाकही। हरि गुरुहरिदासनसोंरामघरानिसांचीरही ॥ २२० ॥ टीका ॥ आयेम धुपुरीराजारामअभिरामदोऊदामपैनराख्यो साधुबिप्रभुगतायेहैं। ऐसेयउदारराहखरचसँभारनाहिं चलिबोविचारभयोचूरादीठआयेहैं। मुद्राशतपांचमोलखोलितियाआगेधरेदीजे बेंचिगये नाभाकरपहिरा येहैं। पतिकोबुलाइकहीनीकेदेखिरीझे भीजेकाटिकैकरजपुरआयेदै पठायेहैं॥४८२॥मूल॥अभिलाषउभैखेमालकातेकिशोरपूराकिया। पांयननूपुरबांधिनृत्यनगधरिहितनाच्यो। रामकलसमनरलीसीसी-तातेनहिंबांच्यो। बाणीविमलउदारभक्तिमहिमाविस्तारी। प्रेमपुंज शुठिशीलविनयसंतनरुचिकारी। मृष्टिसराहैरामसुचलघुबैसलछन आरजलिया।अभिलाषउभयखेमालकातेकिशोरपूराकिया॥२२१॥

हरिगुरु दासन सों सांचो होइ भक्ति तबहीं सांची जैसे प्रवानोतौ सांची भक्ति मेंतौ सबही कहे हैं आप बहुमोल वस्त्र पहिरै हरिको थोड़े मोल लालजूको अथवा भजन करिकै फलचाहै सो सांचो नहीं और भ-जन करेते कछू विघ्न होइ तब हरिको देइ तौ सांचोही भजन करिकै भक्तही चाहै सांचो किशोर ॥ १ ॥ कुंडलिया ॥ मारिब फाती खी-चरी यह घर आज न कालि। यह घर आज न कालि धौलधर धूवां कैसो। तन तुसार को तार ताहि नर थिर करवैसो। स्वपने सोना पाइ कृपणता कर धन जोरचो। पुनि जागेते कहौ प्रातकाको ऋण तोन्यो। जोपीसंती फांकियो अगर सु उत्तम चालि। मारि बफाती खीचरी यहघर आजन कालि ॥ २। ३। ४। ५। ६ ॥

खेमालरतनतनत्यागसमयअश्रुपातवातसुतपूछेअजूनाकेसोदीजिये । कीजेपुण्यदानबहुसंपतिअमानभरीधरीहियेदोईसोई कहीसुनिलीजिये । विविधबड़ाईमेंसमाइमतिभईयेननितही विचार अबमनपरखीजिये। नीरभरिघटशीशधरिकै नलायोऔरुनूपुरनि बांधिनृत्यकियो नाहिंछीजिये ॥ ४८३ ॥ रहेचुपचापसबैजानीकामआपहीकोबोल्योयोंकिशोरनातीआज्ञामोकोदीजियेयहीनितकरो नहिंटरौजौलौंजीवैतन मनमेंहुलासउठिछातीलाइलीजिये । बहुसुखपायोपायेवैसेहीनिवाहेपनगायेगुणलालप्यारीअतिमतिभीजिये । भक्तिविस्तारकियोवैसलघुभीज्योहियो दियोसनमान संतसभासबरीझिये ॥ ४८४ ॥ मूल ॥ खेमालरतनराठौरकेसुफलबेलिमीठीफली । हरीदासहरिभक्तिभक्तमंदिरकोकलसो ॥ भजनभावपरिपक्वहृदयभागीरथजलसो। त्रिधाभांतिअतिअनन्यरामकीरीतिनिवाही हरिगुरुहरिबलभांतितिनहींसेवादृढसाई । पूरणइंदुप्रमुदितउदधित्यों दासदेखिबाढैरली । खेमालरतनराठौरकीसुफलबेलिमीठीफली ॥

खीजिये ॥ दोहा ॥ जबलगि रँगहो बिन रँग्यों, हरि रंग माहिं भजीठ। अब मूरखमाथेधुनै जबरँगदीनीपीठ ॥ १ ॥ मनबरूद तनजालगी तुलसी बरकन्दाज । प्रेमपलीती दगगई, निकसीआहिअवाज ॥ २ ॥ प्रेम बिनाहरिनामिलै, कोटि यतन करि कोइ । जैसे गुण बिन कूपजल आवै हाथ न सोइ ॥

मूल ॥ हरिवंशचरणबलचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो । गायो भक्तिप्रतापसबहिंदासत्वदृढ़ायो । श्रीराधावल्लभभजनअनन्यतागरबबढ़ायो । मुरलीधरकीछापकवित्तअतिहीनिरदूषण । भक्तनकी अंघ्रिरेणुवहैधारीशिरभूषण । संतसंगमहाआनंदमेंप्रेमरहितभीज्यो हियो । हरिवंशचरणबलचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो ॥ २२३ ॥

गायोभक्ति प्रताप दिखायो जैसे निपटने ॥ छप्पय ॥ श्वपच पहिरि यज्ञोपवीत करि कशन गहत जब । करम करै अघपरै डरै पुनि विप्र त्रा-

सतब । पुनिललाट पाटतिलकदेइ अरु तुलसी मालधरि । हरिकेगुण उच्चरै पायकुलकर्महि परिहरि । चतुर्भुज पुनीत अंत्यजभयो मुरलीधर शरणौ लियो । तिहिपाछे किनि लागिये जिनलोह पलटि कंचनकियो॥ १

टीकास्वामीचतुर्भुजकी ॥ गौड़वानदेशभक्तिलेशहूनदेख्योकहूं मानसकोमारिइष्टदेवकोवड़ायोहै । तहांजायदेवताकोमंत्रलैसुनायो कान लियोउनमानिगांवसुपनसुनायोहै। स्वामीचतुरभुजजूकेवेगितु मदासहोहुनातोहोहिनाशसवगांवभज्योआयोहै । ऐसेशिष्यकियेमा लाकंठीपाइजियेपांवलियेमनदियेऔअनंतसुखपायोहै ॥ ४८५ ॥

जहां जाय देवताको मंत्रलै सुनायो ॥ कबित्त ॥ छलकति छलताजि गोकुलकी गैलभजी कुब्जाचुरलेपगा मनबतकायहै । आये हैं सुखारी हैं करत हैं भिखारीप्रीतिपाछिली बिसारी येहो यह कछू न्याय है । अहो घनश्याम यह जीति ब्रज बाम मन लहै न बिश्राम मरिरही कौन ज्याम है । मरण उपाइ यहै देखे सुखपाई जोई काहु कल पाइहै सो- कैसे कले पाइहै ॥ ३ ॥

भोगलैलगावैंनानासंतनिलडावैं कथाभागवतगावैंभावभक्तिबि स्तारिये। भज्योधनलैकैकोऊधनी पाछेपर्योसोऊआनिकैदबायोबै ठिरह्योननिहारिये । निकसीपुराणबातकरैंनयोगातादिक्षाशिक्षासुनि शिष्यभयेगयोयोंपुकारिये । कह्योयाजनममेंनलियोकछुदियोफा रो हाथलैउबारोप्रभुरीतिलागीप्यारिये॥ ४८६ ॥ राजारूठमानि कह्योकरोविनप्राणप्राकोसाधुयेविराजमानलैकलंकदियोहै । चलेठौ रमारिवेको धारिवेकोसकैकैसे नैनभरिआयेनीरबोल्योधनलियोहै । कह्योनृपसांचोहैकैझूंठोजिनिहूजैसंतमहिमाअनंतकहीस्वामीऐसो कियोहै । भूपसुनिआयोउपदेशमनभायोशिष्यभयोनयोतनपायो भीजगयोहियोहै ॥४८७॥ पकिरह्योखेतसंतआयेकरितोरिलेत जिते रखवारेसुखसेतशोरकियोहै ।कह्योस्वामीनामसुन्योकहीबड़ोकामभ योयहतोहमारोसोईआपसुनिलियोहै। लैकैमिष्टान्नआपसुसुखबखान

कियोलियोअपनाइआजभीज्योमेरोहियोहै । लैगयोलिवाइनानाभो जनकराइभक्ति चरचाचलाइचाइहितरसपियोहै ॥ ४८८ ॥ मूल ॥ चालककीचरचरीचहुँदिशिउदधिअंतलोंअनसरी । शक्रकोपिशुठच रितप्रसिद्धिपुनिपंचाध्याई । कृष्णरुक्मिणीकेलिरुचिरभोजनवि धिगाई । गिरिराजधरणिकीछापगिराजलधरज्योंगाजे । संतशिखंडी खंडहृदयआनँदकैकाजै । जाड़ाहरणजगिजाड़िताकृष्णदासदेही धरी । चालककीचरचरीचहुंदिशिउदधिअंतलोंअनुसरी ॥ २२४ ॥

निकसी पुराण घात ॥ भागवते ॥ शृण्वतां स्वकथाः कृष्णः पुण्यश्रव- णकीर्तनः । हृद्यंतस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् । दूसरो जन्म कैसे भयो ॥ आगमे ॥ कृष्णमन्त्रोपदेशेन माया दूरमुपागताः । कृपया गुरुदेवस्य द्वितीयं जन्म कथ्यते॥ २ ॥ नारद पंचरात्रे ॥ श्लोक ॥ पितृ- गोत्री यथा कन्या स्वामिगोत्रेण गोत्रिका ॥ श्रीकृष्णभक्तिमात्रेणाऽच्युत- गोत्रेण गोत्रिका ॥ ३ ॥ दियोफारो ॥ दोहा ॥ सामनहूं घनसार है, जेठ मास घन सार ॥ वनहू में घनसार है, झूठेको घनसार ॥ ४ ॥

विमलानंदप्रबोधवंशसंतदाससीवांधरम । गोपीनाथपदरागभो गछपनभुजाये । पृथुपद्धितअनुसारदेवदंपतिदुलराये । भगवतभ क्तसमानठौरद्वैकोवलगायो । कवित्तशूरसोंमिलतभेदकछुजातनपा यो । जनमकरमलीलायुगतिरहसिभक्तिभेदीमरम । विमलानंद प्रबोधवंशसंतदाससीवांधरम ॥ २२५ ॥ टीका ॥ बसतनिमाइग्राम श्यामसोंलगाईमतिऐसीमनआईभोगछपनलगाये हैं । प्रीतिकीस चाईयहजगमेंदिखाईसेवें जगन्नाथदेवआपरुचिसोंजिमाये हैं । राजा कोस्वपनदियोनामलैप्रगटकियोसंतहीकेगृहमेंतोजेवांयोंरिझायेहैं । भक्तिकेअधीनसबजानतप्रवीनजनऐसेहैं रंगीनलालठौरठौरगायेहैं ॥

युगल तापै चना गेहूं के न्यायको दृष्टांत ॥ प्रीतिके सचान जगन्नाथ को छप्पनलगै हैं अपने ठाकुर को गोपीनाथ को मैं हूं लगाऊं घरको धन सब लगायो कर्जहू काढ़्यो तब विचारो कैतो छप्पनहीं भोग लगाऊं नहीं

तो सबही उड़ाऊं सो भगवान् ने चोप करिकै राजा को स्वप्न दिखायो नामख्यात कियो झूंठोपन होतो छप्पन भोगी की नाई चनाहू न मिलते ॥ १ ॥ भक्ति दियो पावै उद्यम क्यों कियो सो वृत्तान्त हमने न जान्यो ॥

मूल ॥ मदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटलगानकाव्य गुणराशिसुहृदसहचरिअवतारी । राधाकृष्णउपासिकरहसिसुखके अधिकारी। नवरसमुख्यशृंगारविविधभांतिनकरिगायो। वदनउच्चर तवेरसहसपायँनह्वैधायो। अंगीकारकीअवधियहज्योंआख्याभ्राताज मल। श्रीमदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटल ॥ २२६ ॥

टीकासूरदासमदनमोहनजूकी ॥ सूरदासनामनैनकंजअभिरामफू लेझूलेरंगपीकेनीके जीकेऔरज्यायेहैं । भयेसोअमीनयोंसंडीलेके नवीनरीति प्रीतिगुरुदेखिदामवीसगुणेलायेहैं। कहीपूवापावैंआपम दनगुपाललालपरेप्रेमख्याललादिछकरापठायेहैं । आयोनिशिभयो श्यामकियोआज्ञायोगलैकेअबहींलगावोभोगजरिफिरिपाछेहैं४९०॥ पयदलवनायोभक्तिरूपदरशायोदूरि संतनकीपानहींकोरक्षककहा ऊंमें । काहूसीखिलयेसाधुलियोचाहैपरचेकोआयेद्वारमन्दिरकेखो लिकहीआऊंमैं । रह्योवैठिजाइजूजीहाथमेंउठायलीनी पूरीआशमे रीनिशिदिनगाऊंमैं । भीतरवुलावैंगुसाईवारदोईचारि सेवासौंपिसा रिकह्योजनपदध्याऊंमैं ॥ ४९१ ॥

शृंगार ॥ कवित्त ॥ लाल भये लटू भट ठाढ़े हैं अटा के नीचे लालची रह्यो लुभाइ टकीसी लगाइ कै। गोकुल की वधू विधु मुख के अवलोकिबे को नीकी एक तान उठ्यो बांसुरी बजाइ कै । सुनि ध्वनि वाके श्रवण परी काशीराम अति अकुलाइ कै झरोखनि झांकी आइकै। खोलिकै किवारी व्रजनारी तहां देखैं झांकि गिरि पर्‌यो है गोपाल फिरि- की सी खाइकै ॥ १ ॥ पथिकनिहेरि पिय पाली रूप धारि दृग ऊरध के वारी पान करै लखे वनको । बिरल सुधार करि अँगुरिन धारि पल गतिहि निवारि भावे अंतरन छिनको । त्योंहीं वह नारि प्रीति रीति उर

धारि छांडि असुन तरवारि देखी प्रेम दुहुन को। सुरति निहारि यह कीनों निरधारि छांडै तन तरवारि देखो प्रेम दुहुयनको ॥ पद ॥ सखी के पाछे ठाढी वदन नीको लागत मानों कंचन गिरिते उदयराशिं नवसित किये। सोहतरी माथे विंदुला कुमकुमको दिये कर दीप लिये। नीलांव-र सजनी रजनी राजत कुरंग नयनी राकारी संगालिये। सूरदास मदन मोहनके लोचन आतुर चकोर नतृप्तहोत नाहिं मधुपान किये ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ चरण चिताय नख चंद्रिका पैआइ परे उछरति निहारि नाभि त्रिवली झकोर है। उरज उतंग पुनि पुनि पुनि रंग करि ढरि कटि ओर मुख छवोवैनी छोरहै। पाइ रंगभूमि रस झूमि रीझ खेल रच्यो मच्यो छवि पाइ मन डारत मरोर है। लाडिली को रूप अति लाडिलो मैं देख्यो आली लाल दृग गेंदन सों खेलैं निशि भोरहै ॥ ४ ॥ दृष्टांत पोस्तीकी रेचरी को पदलै वनायो ॥ पद ॥ मेरेगति तूही अनेक तोप पाऊं। चरण कमल नख मणि परि विपय सुख वहाऊं। घर घर जोडी लै हरि-तौ तुम्हैं लजाऊं। तुम्हरो कहाइ कहो कौनको कहाऊं। तुम से प्रभु छांड़ि काहि दीननको धाऊं। शीश तुम्हैं नाइकै अब कौनको नवाऊं। कंचन उरहार छांडि कांचको वनाऊं। शोभा सब हानि करौं जगत को हँसाऊं। हाथी ते उतरि कहा गदहा चढि धाऊं। कुमकुमको लेप छांडि काजर मुँहु लाऊं। कामधेनु घरमें तजि अजाको दुहाऊं। कनक महल छांडि क्यों परमकुटी छाऊं। पाइँनि जोपै लौं प्रभूतो अनत जाऊँ। सूरदास मदन मोहन लाल गुणगाऊं। संतन को पानहींकी हींको रक्षक कहाऊं ॥ २ ॥

पृथ्वीपतिसंपतिलैसाधुनखवाइदईभईनहींशंकयोंनिशंकरंगपागेहैं। आयेसोखजानोलेनमानोंयहवातअहोपाथरलैभरेआपआधीनिशिभागेहैं। रुक्कालिखिडारेहाभगटकेयसंतननेयातेहमसटकेहैंचलेजबजागेहैं। पहुंचेहुजूरभूपखोलिकैसंदूखदेखे पेखेआंककागदमें

रीझेअनुरागेहैं ॥ ४९२ ॥ लेनकोपठायेकहीनिपटारिझायेहमैमनमें नलायेलिखीबनतनडार्‍योहै । टोडरदिवानकह्योधनकोबिरानकियो लावोरेपकरिमूढ़फेरिकैसेभार्‍योहै । लैगयेहुजूरनृपबोल्योमोंदूरिरा खो ऐसोमहाक्रूरसोंपिदुष्टकष्टधार्‍योहै । दोहालिखिदीनोंअकबरदे खिरीझिलीनोजावोवाही ठौरतोपैद्रव्यसबवार्‍योहै ॥ ४९३ ॥

रुक्का ॥ दोहा ॥ तेरह लाख संडीले उपजे, सब साधन मिलि गटके। सूरदास मदन मोहन जी आधीराति को सटके ॥ १ ॥ बनत न डार्‍यो है बडे बडेही की चाकरी करें तब बादशाह की करें अब कृष्णकी करें तापै चोरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ इक तन अँधियारो करै, शून्य दई पुनि ताहि । दश तमते रक्षाकरो, दिन मणि अकबर शाहि ॥ २ ॥ जावो वाही ठौर ॥ कवित्त ॥ सेइ देखे साहब सँभारि देखे बाम लोनी सोइ देखो भोरलौं सुगंध भूरि सों भरे । खाइ देखे पान पकवान पुंज बार बार पौढि देख्यो तिया संग निशि खलिका परे । चढि देख्यो हाथी हय हीरा उर धारि देख्यो भूषण विविध भांति कीट मणि सों जरे । मनन सिरानो किते विषय रस सानो मंद ताते बार बार क्यों न बोल तू हरे हरे ॥ ३ ॥

आयेबृन्दावनमनमाधुरीमेंभीजिरह्योकह्योसोईपदसुनोरूपरस रासहै । जादिनप्रगटभयोगयोशतयोजनपैजनपैसुनतभेदवाटीज गप्यासहै । सूरद्विजद्विजनिजमहलटहलपायचहलपहलहिये युगलप्रकासहै । मदनमोहनजूहैइष्टदृष्टमहाप्रभुअचरजकहाकृपाद्द ष्टिअनायासहै ॥ ४९४ ॥ मूल ॥ कात्यायनिकेप्रेमकीबातजातका पैकही । मारगजातअकेलगानरसनाउच्चारौ । तालमृदंगीवृक्षरी झिअंबरतहँडारौ । गोपनारिअनुसारिगिरागदगदआवेसी । जगप्रपं चतेदूरिअजापरसेनहिंलेसी । भगवानगीतिअनुरागकीसंतसाखिमेली सही । कात्यायनिकेप्रेमकीबातजातकापैकही ॥ २२७ ॥

उरझी नकवेसरि सों पीत पट बनमाल बीच आइ उरझे हे दोऊ जन। नयनन सों नैन बैन बैनन सों उरझि रहे चटकीली छवि देखे लपटात श्याम घन। होड़ाहोड़ी नृत्य करैं रीझ रीझ अंकभरैं ततथेई २ कहत हैं मगन मन। सूरदास मदन मोहन रास मंडल में प्यारी को अंचल लेपोंछत दे श्रम कन ॥ १ ॥ कात्यायनी गौड़ देश की राज कन्या ॥ दशमे ॥ कस्यांचित्स्वभुजंन्यस्यचलत्याहापराननु। कृष्णोहं-पश्यतगतिंललितामितितन्मनाः ॥ २ ॥ सवैया ॥ खोइ गई बुधि सोइ गई सुधि रोइ हँसे उनमान जग्यो है। मौन गहे चक चौंकि रहे चलि बात कहै तन दाह दग्यो है। जानि परै नहिं जानि तुम्हें लखि ताहि कहा कछु आहि पग्योहै। शोचतही पगिये आनंदघन हेत लग्यो कि धौं प्रेत लग्यो है ॥३॥ पात्र जोई ॥ श्लोक ॥ यानैर्वापादुकैर्वापि गमनंभगवद्गृहे। देवोत्सवाद्यसेवाचअप्रणामस्तदग्रतः ॥ १ ॥

कृष्णविरहकुंतीशरीरत्योंमुरारितनुत्यागियो। विदितविलोदा गांवदेशमुरधरसवजाने। महामहोछौमध्यसंतपरिषदपरवाने। पग नघूंघुरूबांधिरामकोचरितदिखायो। देशीशारँगपाणिहंसतासंगपठा यो। उपमाऔरनजगतमेंपृथाविनानानाहिंबियो। कृष्णविरहकुंतीश रीरत्योंमुरारितनत्यागियो ॥ २२८ ॥ टीकाश्रीमुरारिदासजीकी ॥ श्रीमुरारिदासरहैंराजगुरुभक्तदास आवतस्नानकियेकानधुनिकीजि ये। जातिकोचमारकरैसेवासोंउचारिकहंप्रभुचरणामृतकोपात्रजोई लीजिये। गयेघरमांझवाकेदेखिडरकांपिउठोलावोदेवोहमैंअहोपान करिजीजिये। कहीमैंतौनूनतुच्छवोलेहमहूंतेसुच्छ जानेकोऊनाहिं तुम्हेंमेरीमातिभीजिये ॥ ४९५ ॥ वहैद्दगनीरकहैमेरीवड़ीपीरभई तुममतिधीरनहींमेरेयोगताई है। लियोईनिपटहठवड़ेपटसाधुतामें श्यामैप्यारीभक्तिजातिपांतिलैवहाई है। फैलगईगांववाकोनामलैच वावकरैं भरैंनृपकान सुनिवाहूनसुहाई है। आयोप्रभुदेखिवेकोगयो वहरंगउड़ि जान्योसोप्रसंगसुनो वहैवातछाई है ॥ ४९६ ॥

सन्निन्दासतिनामवैभवकथा श्रीशेशयोर्भिन्नधीरश्रद्धाश्रुतिशास्त्रदेशिकगिरानाम्न्यर्थवादभ्रमः । नामास्तीतिनिषिद्धवृत्तिविहितत्यागौचधर्मान्तरैस्साम्यंनामनिशंकरस्यचहरेर्नामापराधादश ॥ १ ॥ तद्धर्म्मेनिरादराणामितितेनाम्नोपराधादश ॥ २ ॥ काशीखंडे ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवायदिवेतरः । विष्णुभक्तिसमायुक्तोज्ञेयस्सर्वोत्तमोत्तमः ॥ ३ ॥

गयेसबत्यागिप्रभुसेवाहीसोंरागजिन्हें नृपदुखपागिगयोसुनीयह बातहै । होतहोसमाजसदाभूपकेबरषमांझदरशनकाहूहोतमानोंउत्त पातहै । चलेईलिवाइबेकोजहां श्रीमुरारिदासकरीसाष्टांगराशिनय नअश्रुपातहै । मुखहूनदेखेयाकोविमुखकेलेखेअहोपेखे लोगकहैंयहै गुरुशिष्यख्यातहै ॥ ४९७ ॥ ठाढ़ोहाथजोरिमतिदीनतामेंबोरिकीजेदंडमोपैकोरियोंबहोरिमुखभाखिये । घटतीनमेरीआपकृपाहीकीघटतीहै बढ़तीसीकरीतातेनूनताईराखिये । सुनकेप्रसन्नभयेकहेलैप्रसंगनयेबाल्मीकिआदिदैदैनानाविधिसाखिये । आयेनिजग्रामनामसुनिसबसाधुआयेभयोईसमाजवैसोदेखिअभिलाखिये ॥ ॥ ४९८ ॥ आयेबहुगुणीजननृत्यगानछाईधुनि ऐपैसंतसभामनस्वामीगुणदेखिये । जानिकेप्रवीनउठेनूपुरनवीनबांधिसप्तसुरतीनग्रामलीनभयेपेखिये । गायोरघुनाथजूकोगमनसमयतासँगगमनप्राणचित्रसमलेखिये । भयोदुखराशिकहापैयेश्रीमुरारिदासगयेरामपासयेतौहियेअवरेखिये ॥ ४९९ ॥

गये सब त्यागि ॥ दोहा ॥ साधक सिद्धको एकमत, जित चालै तित सिद्धि । हरिजन चिंता ना करै, मुखआगे नवनिद्धि ॥ १ ॥ गुरु शिष्यख्यात है । गुरु निर्मोही चाहिये, शिष्य न छांड़ै प्रीति । स्वारथ छोड़ै हरि मिलैं, यहै भजनकी रीति ॥ २ ॥ फलटूट्यो जल में पऱ्यो, खोजी मिटी न प्यास । गुरुतजिकै गोविंद भजे, निश्चय नरक निवास ॥ ३ ॥ सप्तसुर ॥ कवित्त ॥ केकीकी कुहक सों खरिज सुरजानि लीजे चात-

कके बोलसों ऋषभ सुर लेखिये । उचरत छागजानि लीजे गंधारसुर ऊरजके बोलसर मध्यमही पेखिये । कोकिलाके बैनसुर पंचम लखी जैये नहीं सत तुरंग सुरधैवत विशेषिये । घनकी गरजसो निपाद सुरजानि लीजे कहै शिरदार सुर सप्तयों विशेषिये ॥ ४ ॥

मूल ॥ कलिकुटिलजीवनिस्ताराहितवाल्मीकितुलसीभयो । त्रेताकाव्यनिबन्धकरीशतकोटिरमायन । इकअक्षरउच्चरेब्रह्महत्यादिपरायन । अबभक्तनसुखदेनबहुरिवपुधारिलीलाविस्तारी । रामचरणरसमत्तरहतअहर्निशिव्रतधारी । संसारअपारकेपारको सुगमरूपनौकालयो । कलिकुटिलजीवनिस्ताराहितवाल्मीकि तुलसीभयो ॥ २२९ ॥

एक अक्षर ॥ रामायणे ॥ चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् । एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ १ ॥ रामचरण ॥ दोहा ॥ पलकनिमगमधि ध्यान धरि, बरुणी जटा बनाय ॥ नैन दिगंबर ह्वै रहै, रूप विभूति लगाय ॥

टीकातुलसीदासजूकी ॥ तियासोंसनेहविनपूछेपितागेहगईभूलीसुधिदेहभजेवाहीठौरआयेहैं । बधूअतिलाजभईरिससोंनिकसगईप्रीतिरामनईतनहाड़चामछायेहैं । सुनीजववातमानोंह्वैगयोप्रभातवहपाछेपछितायतजिकाशीपुरीधायेहैं । कियोतहांवासप्रभुसेवालैप्रकाशकीनोंलीनोंदृढ़भावनेमरूपकेतिसायेहैं ॥ ५०० ॥

तियासों सनेह ॥ दोहा ॥ सकल लोक अपवश किये, अपनेही बलवान ॥ सबलासो अबलाकहैं, मूरख लोग न जान ॥ ३ ॥ वाही ठौर आयेहैं ॥ दोहा ॥ तरसतहैं तुव मिल न बिन, दरशन बिन ये नैन ॥ श्रुति तरसैं तुव वचन बिन, सुनि तरुणी रसऐन ॥ ४ ॥ बड़ो नेह तुमसों लग्यो, और न कछू सुहाइ ॥ तुलसी चन्द चकोर ज्यों, तरफ तरै निविहाइ ॥ ५ ॥ कहां लग्यो मन भावतो, सदा रहै मन माहि ॥ देख्यो चाहै

नैन भरि, बातनिक्यों पतियाहि ॥ ६ ॥ सेवा ॥ श्लोक ॥ गोप्यः कृष्णेवनं यातेतमनुद्रुतचेतसः ॥ कृष्णलीलां प्रगायन्त्यो निन्युर्दुःखेन वासरान् ॥ ७॥

शौचजलशेषपाइभूतहविशेषकोऊ बोल्यो सुख मानि हनूमान जूबतायेहैं । रामायणकथासोरसायनहैकाननको आवतप्रथमपाछे जातघृणाछायेहैं । जाइपहिंचानिसंगचलेउरआनिआयेबनमध्यजानि धाइपाइलपटायेहैं।करैंसीतकारकहीसकोगेनटारिमैंतो जानेरससार रूपधरचोजैसेगायेहैं ॥ ५०१ ॥ मांगिलीजैबरकहीदीजैरामभूपरूप अतिहीअनूपनितनैनअभिलाखिये । कियोलैसँकेतवाहीदिनहींसों लाग्योहेत आईसोईसमैचेतकविछविचाखिये । आयेरघुनाथसाथल क्ष्मणचढ़ेघोड़े पटरंगबोरेहरेकैसेमनराखिये । पाछेहनुमानआयेबो लेदेखेप्राणप्यारेनेकुननिहारेमैंतोभलेफेरिभाखिये ॥ ५०२ ॥

शौचिजल ॥ श्रुतौ ॥ शौचांतेचपदांतेचतर्पणांतेतथैवच ॥ हस्ताद्ध स्तेअधोहस्तेपंचतोयंसुरासमम् ॥ १ ॥ भूतविशेषदेवतनमें नीचहैं ॥ २ ॥ निहारिमैंतो ॥ पद ॥ लोचन रहेवैरीसोइ । जानिबूझिअकाज कीनोंद- योभुवमेंगोइ । अवगतिजुतेरीगतिनजानोरह्योयुगमेंसोइ । सबैरूपकीअव- धिमेरेनिकसिगयोढिगहोइ । कर्महीनहिपाइहीरादयोपलमेंखोइ । तुलसीदास जुरामबिछुरैकहोकैसीहोइ ॥ ३ ॥

हत्याकरिविप्रएकतीरथकरतआयो कहैमुखरामभिक्षाडारिये हत्यारेको । सुनिअभिरामनामधाममेंबुलाइलियोदियोलैप्रसादकि योशुद्धगायोप्यारेको । भईद्विजसभाकहिबोलिकैपठायोआपकैसेग योपापसंगलैकेजैयेन्यारेको । पोथीतुमबांचोहियेभावनहींसांचोअजू तातेमतिकाचोदूरिकरैनअँध्यारेको ॥ ५०३ ॥ देखीपोथीबांचनाम महिमाहूकहीसांच ऐपैहत्याकरैकैसेतरैकहिदीजिये । आवैजोप्रती तिकहीयाकेहाथजैवे शिवजूकेवैलतबपङ्कतिमेंलीजिये । थारमेंप्रसा ददियोचलेजहांपानकियो बोलेआयनामकेप्रतापमतिभीजिये । जै

सीतुमजानोतैसीकैसेकैबखानोअहो सुनिकैप्रसन्नपायोजैजैध्वनिरीझिये ॥ ८०४ ॥

सुनिअभिराम नाम ॥ श्लोक ॥ रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे॥ सहस्रनामतत्तुल्यंरामनामवरानने ॥ ४ ॥ अँध्यारोको ॥ पद ॥ पढ़त पढ़ावतसोमनमान्यो। कौन काज गोविंद भक्ति विन जो पुराणकहि जान्यो। घरघर भट कि फिरे कामिनि लगे गालफटकि धन आन्यो। निशि दिन विषय स्वाद रस लंपट तजि पांचनि को कान्यो। स्वपनेहू हरि किये न अपने हेत हरिबंश बखान्यो। सुने न वचन साधुके मुखके चरण पखारि न अचया पान्यो। सारासार विवेक न जान्यो मनसंदेह न मान्यो। दया दीनता दासभाव विन ब्यास नहीं पहिंचान्यो ॥ १ ॥ न्याये ॥ यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशास्त्रंतस्यकरोतिकिम् । नयनाभ्यांविहीनस्य दर्पणंकिंकरिष्यति ॥ २ ॥ नामकेप्रताप ॥ पद ॥ अद्भुतरामनामद्वैअंक। धर्मांकुर के पावन द्वै दल मुक्ति बधूताटंक। मुनिमन वरके पंख उभय वर जपउड़ि ऊरधजात। जनम मरण काटिनको कांतीक्षण में बितवतपात। अंधकार अज्ञान हरण को रवि शशि युगल प्रभात। भक्तिज्ञान वीरजबर बोये प्रेम निरंतर भात ॥ ३ ॥

आयेनिशिचोरचोरीकरनहरनधन देखेश्यामघनहाथचापशर लियेहैं। जबजबआवैबाणसाधडरपावैयैतोअतिमड़रावैंऐपैबलीदूरि कियेहैं। भोरआयपूछेअजूसांवरोकिशोरकौनसुनिकरिमौनरहेआंस डारिदिये हैं। दईसबलुटाइजानीचौकीरामराइदई लईउन्होंदिक्षा शिक्षाशुद्धभयेहियेहैं ॥ ८०५ ॥ कियोतनुविप्रत्यागिलागचलीसंग तियादूरिरहीतेदेखिकियाचरणप्रणामहै। बोलेयोंसुहागवतीमरचोप तिहोहुसतीअबतोनिकसिगईजाहुसेवोरामहै। बोलिकैकुटुंबकहीजो पैभक्तिकरोसही गहीतबबातजीवदियोअभिरामहै। भयेसबसाधु ब्याधिमेटीलैबिमुखताकीजाकीवासरहैतौनसूझैश्यामधामहै ८०६ ॥

डरपावै मारे क्यों नहीं सद्गति करचो चाहै ॥ श्लोक ॥ येयेहता-

ध्वजधरेणराजंस्त्रैलोक्यनाथेनजनार्दनेन । तेतेगताविष्णुपुरीं नरेंद्राःक्रोधोपिदेवस्यवरेणतुल्यः ॥ १ ॥ गतिहोइजैसेचनाचाबि कै पेटभरे एक मोहन भोग खाइकै सो तुलसीदास को उपदेश मोहन भोग भगवानके बाण अमोघ झूठो क्यों परयो समुद्रहू पै बाण झूठो न परयो मारवाड़ में डारयो फेरि कैसो इहां चोरन की अविद्या को मारयो ॥ २ ॥ लुटाइये कुंडलिया ॥ सुखसोवै नींद कुम्हारिया चोरन मटियालेहि । चोरन मटियालेहि भजन सब हाथहोय मन । लगेनअहड़ोतहां रहै सुसदीसंततजन । इंद्रीआराम न होइ सकल मिथ्या करि जानै । हरि लीला रसपान मत्त निर्भय गुण गानै । अगर वसत जो राम पद जमहि चुनौती देहि । सुख सोवै नींद कुम्हारिया चोर न मटिया लेहि ॥ ३ ॥

दिल्लीपतिबादशाहअहिदीपठायेलेनताकोसोसुनायोसूबेविप्रज्यायोजानिये । देखिबेकोचाहेंनीकेसुखसोंनिबाहेआइकहीबहुबिनयगहीचलेमनआनिये । पहुँचेनृपतिपासआदरप्रकाशकियो दियोउच्च आसनलैबोल्योमृदुबानिये । दीजेकरामातिजगख्यातसबमातकियेकहीझूंठीबातएकरामपहिंचानिये ॥ ५०७ ॥ देखोंरामकैसोकहिकैदकियेकियेहियेहूजियेकृपालहनुमानजूदयालहो । ताहीसमयफैलिगयेकोटिकोटि कपिनयेलौंचैंतनखैंचेंचीरभयोयोंबिहालहो । फोरैकोटमारेचोटकियेडारेलोटपोटलीजेकौनओटजाइमानोप्रलयकालहो । भईतबआंखेंदुखसागरकोचाखेंअबवेईहमेंराखेंभाखेंवारों धनमालहों ॥ ५०८ ॥ आइपाइलियेतुमादियेहमप्राणपावेंआपसमझावेंकरामातिनेकलीजिये । लाजदबिगयोनृपतबराखिलियोकह्योभयोघररामजूकोवेगिछोड़िदीजिये । सुनितजिदियोऔरकरयोलैकेकोटिनयोअबहूंनरहैकोऊवामेंतनछीजिये । काशीजाइवृन्दावनआइमिलेनाभाजूसोंसुन्योहोकाबित्तानिजरीझमतिभीजिये ॥ ५०९ ॥

दियोउच्चआसन ॥ दोहा ॥ व्यासबड़ाई जगतकी, कूकरकी पहिचा

नि । प्यारकिये मुखचाटई, बैरकिये तनुहानि ॥ १ ॥ हूजिये ॥ पद ॥ ऐसीतुम्हैं न चाहिये हनुमान हठीले । साहब सीतारामसे तुमसे जुवसीले । तेरेदेखत सिंहके शिशु मेडकलोले । जानतहूं कलि तेरेहू मनोगुण गणकीले। हांक सुनत दशकंधके बंधनभये ढीले । सोवलगयो किधौंभयो गहरगहीले । सेवकको परदाफटै तुम समरथ शीले । अधिक आपते आपनो सुनमानस-हीले । यह गति तुलसीदासकी देखिसुयश तुहीले । तिहूंकाल तिनको भला जोरामरँगीले ॥ २ ॥

मदनगोपालजूकोदरशनकरिकही सहीरामइष्टमेरेहगभावपागी है । वैसोईस्वरूपकियोदियोलै दिखाइरूपमनअनुरूपछबिदेखिनी कीलागीहै । काहूकह्योकृष्णअवतारीजूप्रसंशमहारामअंश सुनिबो लेमतिअनुरागीहै । दशरथसुतजानोसुंदरअनूपमानो ईशतावताई रतिकोटिगुणीजागीहै ॥ ५१० ॥

रामइष्ट ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछबिआजकी, भलेबिराजे नाथ । तुलसी-मस्तक जबनवै, धनुषबाणलेउहाथ ॥ १ ॥ वैसोई ॥ किरीट मुकुट माथे धरयो, धनुषबाण लियोहाथ । तुलसी जनके कारणे, नाथ भये रघुनाथ ॥ २ ॥

मूल ॥ गोप्यकेलिरघुनाथकी श्रीमानदासपरगटकरी । करुणा बीरशृंगारआदिउज्ज्वलरसगायो । परउपकारकधीरकवितकविजन मनभायो । कोशलेशपदकमलअनन्यदासनब्रतलीनो । जानकी जीवनसुयशरहतनिशिदिनरँगभीनो । रामायणनाटककीरहिसि उक्तिभाषाधरी । गोप्यकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी ॥ ॥ २३० ॥ श्रीवल्लभजूकेबंशमें सुरतरुगिरिधरभ्राजमान । अर्थध र्मकाममोक्षभक्तअनपायनीदाता । हस्तामलश्रुतिजानसबहीशास्त्र केज्ञाता । परिचर्य्याब्रजराजकुंवरकेमनकोकर्षै । दरशनपरमपु नीतसभातनअमृतबर्षै । विट्ठलेशनंदनसुभावजगकोऊनहिंतासमा न । श्रीवल्लभजूकेबंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान ॥ २३१ ॥ श्री वल्लभजूकेबंशमेंगुणनिधिगोकुलनाथअति । उदधिसदाअक्षोभसह

जसुंदरमितभाखी । गुरुवत्तनगिरिराज भलपनसबजगसाखी । विट्ठलेशकीभक्तिभयोबेलाहढ़ताके। भगवततेजप्रतापनमितनरवर पद्जाके। निर्व्यलीकआसैउदारभजनपुंजागिरिधरनरति। श्रीबल्लभ जूकेवंशमें गुणनिधिगोकुलनाथआति ॥ २३२ ॥

जानकीजीवन ॥ कवित्त ॥ सखाढुरावैचौंर उरवशी उडावैंमोर सावित्री चरण सेवैं महसी महेशकी। वरुणधनेशराज उडुरविराजगंधर्वीकन्या सुकवारी नागशेपकी। द्वारैपैआइसब ठाढी हैं सखी तिनमे दामिनिसी दमकि रही अवलानरेशकी। सूरति किशोर रतिपतिके समूहराज आस पास तिन बीच बेटी मिथिलेशकी ॥ ३ ॥ सवैया ॥ दूलहश्रीरघुनाथ बन्यो दुलही सियसुन्दरि मंदिरमाहीं। गावतगीत सबैमिलिसुन्दरि वेदजुवाजुरि विप्रपढाहीं। रामकोरूप निहारति जानकि कंकणके नगकी परिछाहीं। औरसबैसुधि भूलिगई करटेकिरहो पलटारतिनाहीं ॥ ३ ॥ उक्तभाषा हनुमान्नाटके ॥ आकृष्टेयुधिकार्मुकेरघुपतौवामोऽब्रवीद्दक्षिणं पुण्ये कर्मणिभोजनेचभवतः प्रागल्भ्यमस्मिन्नकिम् । वामान्यःपुनरब्रवीन्ममनभोः पृष्टंनिजंस्वामिनं छिंद्यांरावणवक्त्रपंक्तिमथवाप्येकैकमादिश्यताम् ॥ १ ॥

टीका गोकुलनाथजूकी ॥ आयोकोऊशिष्यहोनलायोभेंटलाख नकीभापनकीचातुरीपैमेरीमतिरीझिये । कहूंहैसनेहतेरोजाकेमिले विनादेहव्याकुलताहोइजोपैतोपैदीक्षादीजिये। बोल्योआजुमेरोकाहू वस्तुसोंनहेतुनेकुनेतिनेतिकहीहमगुरुढूंढ़िलीजिये । प्रेमहीकीवात इहांकरहीपलटिजातगयोदुखगातकहौकैसेरंगभीजिये ॥ ५११ ॥ कान्हहोहलालखोरियोरदियोमनलैकैश्यामरससागरमें नागररसाल है। निशिकोस्वपनमांझ निपुणश्रीनाथजीनेआज्ञादईभीतिनईभई ओटसालहै। गोकुलकेनाथजूसोंवेगिदेजताइदीजेकीजै याहीदूरिछ विपूरिदेखोख्यालहै। भोरजोविचारैनहींधीरजकोधारैवहांजाऊंकोऊ मारैपैड़ेपर्योयहुलालहै ॥ ५१२ ॥ ऐसेदिनतीनआज्ञादेतवैप्रवीन नाथहाथकहामेराविनागयेनहींसरैगो । गयेद्वारद्वारपालबोलेजूविचा

रिएक दीजैसुधिकानसुनखीजैबातकरैगो । काहूनेसुनाइदईलीजिये वुलाइअहोकहो औरदूरिकरोकरेंदुरिढरैगो । जाइवहीकहीलहीआप नीपिछानमिले सुनोमेरोनामश्यामकहोनहींटरैगो ॥ ५१२ ॥

कहूंहै सनेहतेरो ॥ दोहा ॥ इहांकियानहिं, इश्कका इस्तामाल सँभार॥ सोसाहबसों इश्कवहकरक्यासकैगँवार ॥ २ ॥ रससागर ॥ माझ ॥ लोनासाँवरनागरसागरबरमुरलीधुनिगरजै । बल्लभ रसिकतानलहरें आवत-गावत मुरपरजै । मोरपक्षकरडलैडुले कलगीत पुतरीलौंबरजै । रूपकहरद रियाव आवाजिन नावधर्मकी लरजै । प्रेमहीकी बातसो प्रेममोपे न बनै कलिपलटिदै जैसे जलको बरहा प्रेमहारि हूपै न बन्यो लहटू चकई डोरिलूटी छाछके स्वभावखट्टे मीठिकोस्वाद सब बनायें जो सनेह कृष्णसों है तैसो पुत्रनसों कियो सुतहित कियो सो बलदेव जाने ॥ २ ॥ ओट साल है नाथजीको भीतिकी ओटको बड़ो दुःख भयो अरुलरिका कान्हा देखे बिना हलाल ओरसों भली प्रीति करी ॥ ३ ॥ ख्यालहै तापैफकीरको अरु लरकाकी गुड़ीको दृष्टांत ॥

मूल ॥ रसिकरँगीलोभजनपुंजशुठवनवारीश्यामको । बातक-वित्तबड़चतुरचोखचौकसअतिजानै । सारासारविवेकपरमहंसनिपर वानै। सदाचारसंतोषभूतसबकोहितकारी । आरजगुनतनअमित भक्तिदशधाव्रतधारी । दरशनपुनीतआशयउदारआलापरुचिरसु-खधामको। रसिकरँगीलोभजनपुंजशुठवनवारीश्यामको ॥ २३३ ॥

बात ॥ कबित्त ॥ कीरतिको मूल एक रैनि दिन दानदेबो धर्मको मूल एक साधु पहिचानिबो । बढ़िवेको मूल एकऊंचो मन राखिबोई जानिवे को मूल एक भली बात जानिबो । ब्याधि मूल भोजन उपाधि मूल हास्य जामो दारिदको मूल एक आरस बखानिबो।हारिवेको मूल एक आतुरी है रणमांझ चातुरी को मूल एक बात कहि जानिबो ॥ १ ॥ दोहा ॥ बात न हाथी पाइये, बातनि हाथी पाइ ॥ बातनि सों विष ऊतरै, बातनि विष ह्वैजाइ ॥ २ ॥ तापै केशवदास को अरु बीरबलको दृष्टांत ॥

कवित्त ॥ आयो एक पंडित अखंडित बिचारवान वेद औ पुराण मंत्र यंत्रनि को गातुरी। ताने मुनिकही सही हाड़हू को सिंहाकरौं लावो लाइ दियो लियो अति हुलसातुरी। आप द्रुम चढ़्यो तिन पानी लैकै पढ़्यो पुनि छिरकेते जियो अति कियो जाको घातुरी। कीजिये विवेक एक चातुरीसों बच्यो याते एक ओर चारिवेद एक ओर चातुरी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ बात बिडारै भूत को, बात बचावै प्रान। बात अधिक भगवान ते, कही हंस अख्यान ॥ ४ ॥ हरि आवै वै बात न आवै जैसे ब्रह्माको सनकादिक पूछी चित्त विषयमें जाइ विषय चित्तमें जाइ न्यारो कैसे होय तब उत्तर न आयो तब हंस रूप धरिकै श्रीभगवानने जवाब दियो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कागा काको धनहरै, कोयल काको देइ ॥ मीठी वाणी बोलिकै, जग अपनो करि लेइ ॥ ६ ॥ प्रस्तावे ॥ हेजिह्वेरससारज्ञे मधुरं किंन भाषसे। मधुरं वद कल्याणि सर्वदा मधुरप्रिये ॥ ७ ॥ चतुराई बात कहा एक पंडित वीरबल पै आयो बात वासों पूछी कछू पढ़ोहौ पढ़ेहैं वेद शास्त्र पुराण कवित्त बात ॥ ८ ॥ कवित्त बड़े चतुर ॥ कवित्त ॥ मेह बरसाने तेरे नेह बरसाने देख एह बरसाने वर मुरली बजावैंगे। सांजि लाल सारी लाल करै लाल सारी देखिवेकी लाल सारी लाल देखे सुख पावैंगे। तुही उरबशी उरबशी नाहिं आन तिय कोटि उरबशी तजि तोसों चित लावैंगे। सेज बनवारी बनवारी तनु अशुभूषण गोरे तनवारी बनवारी आज आवैंगे ॥ ९ ॥

भागवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो। नामनरायन मिश्रवंशनवलाजुउजागर। भक्तनकीअतिभीरभक्तिदशधाकोआगर। आगमनिगमपुराणसारशास्त्रनसबदेखे। सुरगुरुशुकसनकादिव्यासनारदजुविशेखे। सुधाबोधमुखसुरधुनीजसवितानजगमेंतन्यो। भागवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो ॥ २३४ ॥

भागवत ॥ छप्पय ॥ निगम कल्पतरु उदै सोई भागवत प्रमाना।

द्वादश मोटी डार सोई स्कंध बखाना । त्रिशत पुनि पैंतीसऽध्यायसो छोटी शाखा । सूक्षम कली श्लोक सहस्र अष्टादश भाखा । यत्र अक्षर पुनि पंच लख सहस्र छिहत्तर और गनि । तत्त्ववेत्ता तिहुँ लोक में ब्रह्मबीज भागवत पुनि ॥ २॥ भली विधि ॥ कवित्त ॥ भागवत कथन समुद्र को मथन हरि गुण नाम रूप जैसे अमृत उधारयो है । मृत्युप्राय जीर जग भक्ति दान दैकै दुस्तर भवसागर को पारलै उतारयो है । प्रेमरंग राते कहै नेह भरी बातें सब जगतके नाते कारिं हांते उबारयो है । करुणा निधान गुण रतननि की खानि मानो ते ज्ञान बिज्ञान युक्ति जीव विस्तार्यो है ॥ ३ ॥ धन जननी जैसे माता एक पुत्र जनै तेसे एक इनहीं को श्री शुकदेव जीने भागवत दई है औरन पै कैसे आइसो पक्को फल सुवा डारै एकतौ कैसेंहै मुखते गिरतेही ऊपरही लैलेहिं । एक जमीन में ते लेहिं तिन को सवाद नहीं ऐसे सुवादनहीं ऐसे सुवा रूपी शुक तिनके मुखते लई ॥ ॥ ४ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ नाम नरायण मिश्रसी, नवला वंश सुहात । कोटि जनमके तम हरै, आतपलौं विख्यात । भक्तनकी ॥ दोहा ॥ साधुतहांहीं संचरै, जहां धर्मकी सीर । सरवर सूखे परशुराम, हंसन बैठेतीर ॥ २ ॥ कवित्त ॥ राजा तहँ भक्तराज मानस समाज प्रेम रस नीर भीर गंभीर सुख छायोहे । हरिगुण रूप जालिं मानिक रसाल मानों छायासों बिशाल जस समूया सरसायो है । श्रेनी कलहंस मानो झूमि रहे परमहंस अतिही प्रशंस रंग रूप विरमायो है । अलबेली अली आश बिश्वास है रसिकन की प्रेमही की राशि सो उच्छिष्ट शेप पायो है ॥ ३॥ सारशास्त्रभागवते ॥ मन्येऽसुरान्भागवतानधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्टचित्तान् । येसंयुगे चाक्षतताक्ष्यपुत्रमंशेसुनाभायुधमापतन्तम् ॥ ४ ॥ सुधाबोध ॥ सवैया ॥ भक्तिसुधारसज्ञान वचन मुख सहजाहि बोलैं । परम प्रबीन विचित्र नवीन ग्रंथकी गूढग्रंथको खोलैं । नारायण जग तारण कारण भूमण्डल सुरसरि सँग डोलैं ! जाकी जस शीतल छांह तरंग बिन अलबेली अलि हंस कलोलैं ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ मिश्र श्रीनारायण

जू मधुपुरी वास कियो पुनि हरद्वौर में नृसिंहारन सों मिले । तिनोंकी सुआज्ञा पाइ बद्रिका श्रमहिं जाइ मिलि शुकदेव जू सस महासुखमेंझिले। आयेफिरि काशी सुखराशीवे संन्यासी पाये तिनसों जनमानि सुखमन में मिले । पंडित प्रवीण जिते तिनकी कथासों तिते चितेमोचिते रहे मानो महा अहिकिले ॥ ६ ॥

कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीपरी। कामक्रोधमदमोहलोभकीलहरनलागी । सूरजज्योंजलग्रहेवहुरिताहीज्योंत्यागी । सुंदरशीलस्वभावसदासंतनसेवाव्रत । गुरुधर्मनिषकनिर्वह्योविश्वमें विदितवड़ोभृत । अल्हुरामरावकृपाआदिअंतधुकतीधरी। कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीकरी॥२३५॥ हरिदासभलप्पन भजनवलवावनज्योंवढयोवावनो। अच्युतकुलसोंदोपस्वपनहूउरनहिंआन्यो । तिलकदामअनुरागसवनगुरुजनकरिमान्यो । सदन माहिंवैराग्यविदेहनिकीसीभांती। रामचरणमकरंदरहतिमनसामदमाती । योगानंदउजागरवंशकरिनिशिदिनहरिगुणगावनो ॥ हरिदासभलप्पनभजनवलवावनज्योंवढ़योवावनो ॥ २३६ ॥

अच्युत ॥ दोहा ॥ कामी साधुहि कृष्णकहि, लोभी बामन जानि । क्रोधीको नरसिंह कहि, नहीं भक्तकी हानि ॥ १ ॥ रामचरण ॥ जिह्विट नौवतनामकी सोवटछीनीनाहिं । प्रकटे देखिकवीरज्यों, दीपकभी ढलमांहिं ॥ २ ॥ जंगली कह्यो नाम न लियो सोनाभाजी एककुवांके मनखंडेपै बैठे हैं तहां माथे तिलकधारे मालामारवाड़ी आइगये जबह्वां छप्पैंननाईजंगली देशके कहे तिनको आचार्यजी पूछेको दृष्टांत ॥ ३ ॥

जंगलीदेशकेलोगसवश्रीपरशुरामकियेपारषद । ज्योंचंदनको पवननींवपुनिचंदनकरई । वहुतकालतमनिविड़उदयदीपकज्योंहरई। श्रीपटधुनिहरिव्याससंतमारगअनुसरई । कथाकीरतननेमरस निहरिगुणउच्चरई । गोविंदभक्तिगदरोगगातितिलकदामसदवैदहद । जंगलीदेशकेलोगसवश्रीपरशुरामकियेपारषद ॥ २३७ ॥ श्रीपरशु

रामजीकीटीका ॥ राजसीमहंतदेखिगयोकोऊअंतलेनबोल्योजूअनं तहरिसगेमायाटारिये । चलेउठिसंगवाकेपहरिकोपीनअंगबैठिगिरि कंदरामेंलागीठौरप्यारिये । तहांबनजारोआइसंपतिचढ़ाइदई औरसं गपालकीहूमहिमानिहारिये । जाइलपटाइयोंपाइभावमेंनजान्योकछु आन्योउरमांझआवैप्राणवारिडारिये ॥ ५१४ ॥

गदरोगगतिसुजान सुंदर वैद्यलगैतौ भली रोगजाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ तिलक दाम औषधि दई तिलक दाम इनकी सद औषधिहै ॥ १ ॥ श्लोक ॥ तुलसीकाष्ठमालांतुप्रेतराड्रस्यदूतकाः। दृष्ट्वानश्यंतिदूरेणवातोद्धूतंयथादलम्॥ ॥ २ ॥ किरातहूणांध्रि ॥ छप्पय ॥ संततिलक करता तिलक शंकर शिरसोहै । ब्रह्माकेशिर तिलक तिलक बिन जग में कोहै । तिलक बिना शिर अशुभ तिलक राजा पदपावै । तिलक संत सनमान तिलकसों महंत कहावै । जियेयुगतिमूये मुकति सुरगण मुनि जन शिर धरैं । तुलसी तिलक सतगुरु कमल बसै भवसागर तरैं ॥ २ ॥ बैठि गुरूके पास तिलकालिलार हि कीजै । बिना तिलक जो अफल तिलक करि दिक्षादीजै । दान पुण्य तप धर्म तिलक बिन निष्फल जावै । तिलकधार कछु करौ अनत फल वेद बतावै।तिलक देखि यमहूं डरै तिलक बिना कहि दीनजन ।तत्ववेत्ता तिहुँ लोक में भोड़ो मुहड़ो तिलक बिन ॥ ३ ॥ तिलक है सत अस्नान तिलक ब्राह्मण शिर सोहै । तिलक बिना कछुकरौ सबै फल निष्फलजोहै। तिलकतिया शृंगार तिलक नृप शीश लगावै । तिलक वेद परमाण तिलक त्रलोक चढ़ावै । तिलक तत्त्व युग युग सदा तिलक मिलैं सिद्धि पाइये । परशुराम ब्रह्मांड में सुयश तिलक को गाइये ॥ १ ॥ दोहा ॥ बानों बड़ो दयाल को, तिलक छाप अरु माल । यम डरपै कालूकहै, भय माने भू- पाल ॥ २ ॥ माया टारिये ॥ मायासगी न तनसगो, सगो न यह सं- सार ॥ परशुराम या जीव को, सगो सुसिरजनहार ॥ ३ ॥ कहते हैं करते नहीं, मुंहके बड़े लवार ॥ कारो मुहड़ो होइगो, साईंके दरबार । भावमैंन जान्यों आप मैं आपभाव लायो आपु बोलेतुम बड़े उपकारी हौ।

पद ॥ रेमन संत बड़े उपकारी। यद्यपि सकल सिद्धि इनके सँग जीवनसों हितकारी । निर्मलजल बोलै आते निर्मल निर्मल कथा दृढावै। निर्मल में मलदेखै कबहूं तो ततकाल छुडावै। माया मिलै महोक्षो माडै आनँद में दिन काटै। करि हरि भक्ति तरै भवसागर और न तारन माडै। त्यागे लेह देह पुनि त्यागै चित लालच नहिं काई। चतुर दास इन भक्तनि को सँग छांडि अनत नहिं जाई ॥ ५ ॥ आप तौ गुणग्राही हौ तापै ऊंट की नारीको दृष्टांत पै मैं अपराध कियो पै तुमताही न निंदा पहुंचै न अभाव पहुंचै ॥ ६ ॥ कुण्डलिया ॥ आकाशै बिचुरीखिवै खरी च लावै लात। खरी चलावै लात बिमुखकृत भक्तनि निंदा । उलटि परे तिहि छार छार परसे नहिं चंदा । ज्यों छाया उपहार प्रहारन लागौ तनको। त्यों जगकी उपहास कहा पहुंचै हरिजन को। आगर श्यामके भृत्यसन दुनी देत घिसि जात। आकाशै बिजुरी खिवै खरी चलावै लात ॥ ७ ॥ सत उपकारी पै शाहूकार को सुई दीनी सो दृष्टांत ॥

मूल ॥ गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद। सज्जनसुहृदसुशीलवचनआरजप्रतिपाले। निरमत्सरनिष्कामकृपाकरुणाकोआलै। अनन्यभजनदृढ़करनधन्योवपुभक्तनकाजै। परमधर्मकोसेतविदितवृन्दावनगाजै । भागवतसुधाबरषैबदनकाहूको नाहिंनदुखद । गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद ॥

निर्मत्सर ॥ दोहा ॥ बात कहै निलोंभकी, भन्यो हिये अति लोभ। युगल प्रेम रस रूपकी, कैसे उपजै गोभ ॥ १ ॥ सो ऐसो वक्ता न होइ। श्रोता ऐसो चाहिये, जाके तन मन श्याम। वक्काहू हरिको भगत, जाके लोभ न काम ॥ २ ॥ श्रोताऐसो न होइ ॥ कथा सुनै नहिं कीर्तन बकै आपनीवाइ। पापी मानुष परशुराम कै औंघे उठिजाइ ॥ ३ ॥ श्याम ॥ पद ॥ सखीहों श्याम रंगरँगी। देखि बिकाइ गई वह मूरति सूरति माहिं पगी। संगहुतो अपनो सपनो सो सोइरही रसखोई। जागे हू आगे दृष्टि परे सखीनेकु न न्यारो होई।एकजुमेरीअंखियनि में निशि द्योस रह्यो करिभौ

न। गाइचरावनजात सुनौसखी सोधौं कन्हैयावोन। कासों कहौं को पति पाइरी कौन करै बकवाद। कैसेकै कह्योजात गदाधर गूंगकोगुरुस्वाद ॥ कवित्त ॥ मोरपक्ष धरे पटपीत बन मालगरे सांवरी सी मूरति प्रवीन मोसोंपगी है। टरत न टारी पल क्षणहूंन होतिन्यारी जेतिक बिसारी वि-सरति नाहिं खगी है। चलतिहौं तौ चलति है बैठीहौं तो बैठीहै सोई हौं तौ सोई हैरी जागी हौं तौ जगी है। तुम सब मिलि मेरी आंखिनि को दोषदेत येऊतो मैं मूंदिराखी तऊ तहां लगी है ५ कानन करति सीख कानन फिरति सुनि अतिही हठीली फिरि पाछे पछिताई है। धामभूलि जैहै काम अंगनि में ऐहै काम नैनशर लागै घूमि घूमि गिरिजाई है। अबलौं न मानती ही मेरीकही बात सुनि पाछे जलजातनि के पातनि बिछाई है। दीठिकहूं ऐहै मनमोहन मनोज छवि दौरि दौरि अटनिचढे-को फलपाई है ॥ १ ॥

टीकागदाधरभट्टजूकी ॥ श्यामरंगरंगीपदसुनिकैगुसाईंजीवपत्रदै पठायोउभयसाधुवेगिधायेहैं। रैनींविनरंगकैसेचढ्योअतिशोचव ढ्यो कागदमेंप्रेममढ़ेउतहांलैकेआयेहैं। पुरढिगकूपतहांवैठेरसरूप लगेपूंछिवेकोतिनहींसोंनामलैवतायेहैं। रहौकौनठौरशिरमौरवृन्दा बनधामनामसुनिमूर्छाह्वैकेगिरेप्राणपायेहैं ॥ ५१५ ॥ कान्हकहीभ ट्टश्रीगदाधरजीयेईजानोमानोउहिपातीचाहफेरीकैजिवायेहैं। दियो पत्रहाथलियोशीशसोंलगाइचाइबांचतहीचले वेगिवृंदावनआयेहैं। मिलीश्रीगुसाईंजीसोंआंखेभरिआईनीरसुधनशरीरधीरधीरवहीगाये हैं। पढ़ेसवग्रंथसंगनानाकृष्णकथारंगरसकीउमंगअंगअंगभावछाये हैं ॥ ५१६ ॥ नामहोकल्यानसिंहजातिरजपूतपूतवैठो आइकथा सोअभूतरंगलाग्योहै। निपटनिकटवासधौरहराप्रकाशगांवहासपर हासतज्योतियादुखपाग्योहै। जानीभटसंगसोंअनंगवासदूरिभईक रौलैकैनईआनिहियेकामजाग्योहै। मांगतफिरतहुतीयुवतीऔ गर्व वती कहीलैरुपैया वीसनेकुकहो राग्योहै ॥ ५१७ ॥

विषय महा दुरतही है ब्रह्मापुत्री के पाछे परयो चंद्रमा गुरुपत्नी के महादेवजू श्रीमोहनी के ब्रह्माके रोगटाके फौंगटाकी मसीकी तुसी पै अ-ध्याससों काढिये ॥ २ ॥ कवित्त ॥ सूधेकहे तू अबै नहिं मानत तू इत फेरि न नेकु चितैहै। भूमि में आंक बनावत मेटत पोथियै कांखलिये दिनजेहै। सांचीहौं भाषति मोहिं ददा कीसौं प्रीतमकी गतितेरिपै ह्वैहै। मोसों कहा अठिलात अजा सुत कैहौं ककाजूसों तोहू पढैहै ॥ ३ ॥

गदाधरभट्टजीकीकथामेंप्रकाशकहौंअहोकृपाकरोअबमेरीसुधिलीजिये । दईलौंड़ीसंगलोभगंगचितभंगकियेदियेलैबताइअबमेरो कामकीजिये । बोलेआपबैठियेजूजापनितकरोहियेपापनहींमिरोग ईदरशनदीजिये। श्रोतादुखपाइभाखैझूंठीयहिमारिनाखै सांचीकही राखैसुनितनमनछीजिये ॥ ५१८ ॥ फाटिजाइभूमितौसमाइजाइ श्रोताकहैंवहैदृगनीरह्वैअधीरसुधिआईहै । राधिकावल्लभदासप्रकटप्रकाशभासभयोदुखराशितवसुनिसोबलाई है। सांचीकहिदीजैनाहीं अभीजीवलीजैडरसबैकहिदईसुखलियोसंज्ञाभाईहै। काढ़ितरवारितियामारिवेकल्यानगयोदयोसोप्रबोधहै मैंकरीदयानाईहै॥५१९॥

मेरो काम कीजिये ॥ पद ॥ साधो जगमें कामिनि ऐसीरे । राजा रंक सबनिके घरमें बाघिनि ह्वैकै वैसीरे । बसती छोड़िरहै वन बासा चावति सूखे पातारे। दांवपरे तिनहूंको मारै दैछाती पर लातारे । ज्ञानी गुनी शूर वे पंडित येतो सबै सयानेरे। सूधे होइ परे फांसीमें युवती हाथ थिकानेरे। तीनिलोकमें कोउ न छांड्यो दियेदाढ़ तरसारे रे । हरीदास हरिसुमिरण लागे तब भगवंत उबारेरे ॥ १ ॥ दियोपर बोधन्याय । कामांधा ये न पश्यंति जन्मांधश्च न पश्यति ॥ न पश्यंति मदोन्मत्ता अर्थी दोषं न पश्यति ॥ २ ॥ दोहा ॥ विषयचुगौ जिनि चुगैमन, चुगतकछू सुखहोइ ॥ फिरिफांसी ऐसी परै, तिहि सम दुःख न कोइ ॥ ३ ॥ रेमन कबहूं जाइ जिनि, भूलि विषै वनरंग। मनमथ ठगमारत तहां, लिये

बहुत ठगसंग ॥ ४ ॥ राधावल्लभ लालबिन, व्यास न पायो सुःख ॥ डार डार मैंहूं फिरचों, पात पातमें दुःख ॥ ५ ॥

रहैकाहूदेशमेंमहंतआयोकथामाहिंआगेलैबैठायेदेखिसबैसाधुभी जेहैं । मेरेअश्रुपातक्योंनहोतशोचसोतपरेकरेलैउपाइदैलगाइमिर्च खीजेहैं । संतएकजानिकैजताइदईभट्टजूकोगयेउपसबैजबामिलिअति रीझेहैं । ऐसीचाहहोइमेरेरोइकैपुकारकरी चलीजलधारनयन प्रेमआ इधीजेहैं ॥ ५२० ॥ आयोएकचोरवरसंपातिवटोरिगांठिबांधीलैमरो रिक्योंहूं उठैनाहिंभारीहै । आइकैउठाइदईदेखिइनरीतिनई पूछौना मप्रीतिभई भूलो मैंबिचारी है । बोलेआपलैपधारोहोतहीसवारी आवैऔरदशगुणीमेरेतेरेयहीज्यारीहै । प्राणनकोआगेधरोआनिकैउ पाइकरोरहेसमुझाइभयोशिष्यचोरीढारीहै ॥ ५२१ ॥

जलधारि ॥ दोहा ॥ परसा हरियशसुनतहीं, श्रवै न जलभरि आंखि ॥ भरि भरि मूठी धूरिकी, तिन आंखिनमें नाखि ॥ १ ॥ हरियश सुनिकै नैनजो, श्रवै न भरे भरिवारि ॥ परसा मूठी धूरिकी, तिन आंखिन में डारि ॥ ॥ २ ॥ फुटोनयन फाटोहियो, जुरौ सुनत किहिकान ॥ श्रवैद्रवै पुलकै नहीं, तुलसी सुमिरत राम ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ हरियश जीवनमूरि, तुलसी सुमिरतदृगश्रवैं ॥ तिन नैनानिमें धूरि, भरिभरि मूठीमेलिये ॥ ४ ॥

प्रभुकीटहलनिजकरनकरतआपभक्तिकोप्रतापजानैभागवतगाई है । देतहुतेचौकाकोऊशिष्यबहुभेटलायोदूरिहीतेदासदेखिआयोयों जनाई है । धोवोहाथबैठोआइसुनिकैरिसाइउठेसेवाहीमेंचाइयाकोखी जिससुझाई है । हियेहितरासजगआशको विनाशकियोपियोप्रेमरस ताकीआशलैदिखाई है ॥ ५२२ ॥ मूल ॥ चरणशरणचारनभगतह रिगाइकयेताहुवा । चौमुखचौराचंडजगतईश्वरगुणजानैं । करमानं दअरुकोल्हअल्हूअक्षरपरवानैं । माधवमथुरामध्यसाधुजीवानँदसी वांदूदानरायणदासनाममांडननतग्रीवां॥चौरासीरूपकचतुर्वाणीवर नतजूजुवा । चरणशरणचारणभगतहरिगायकयेताहुवा ॥ १३९ ॥

टीकाकरमानंदचारनकी ॥ करमानंदचारनकी बाणीकोउचारनमें दारुणजोहियोहोइसोऊपिघिलाइये । दियोगृहत्यागिहरिसेवाअनुरागभरेबटुवासुग्रीवहाथछरीपधराइये । काहूठौरजाइगाडवेहीपधराये वापैलायेउरप्रभु भूलिआयेकहांपाइये । फेरिचाहभईवई श्यामको जताइ बातलईमँगवाइ देखिमतिलैभिजाइये ॥ ५२३ ॥

निजकर ॥ हृषीकेन हृषीकेशं सेवनंभक्तिरुच्यते ॥ ५ ॥ रामभाक्तिशयमैं नहिंदेखी ॥ लोचनमोरपक्षकरलेखी ॥ सोसमकुलिश कठोर सुछाती ॥ रघुपतिचारित न सुनि हरषाती ॥६॥ जगआश को बिनाश कियो॥ ॥ सवैया ॥ आशको दासरहै जवलौं तबलौं जगको नरदासकहावै॥त्यागी गुनी कविपंडित कोऊहो आशालिये सब को भरमावै॥स्वर्ग महीतल वासकहूं करौ आश जहांलगि नाच नचावै । तातेमहा सुखपाइ निराशमें आशतजै भगवान को पावै ॥ दिखाई है ॥ कुंडलिया ॥ आपु न जाई सासुरे, औरनको सिखदेइ । औरनको सिखदेइ हिया अपनो नहिं शोधै । नखशिख जटित अज्ञान मूढ जगको परमोधै । निजआंखिनके अंध गैल औरनि उपदेशै । भवजल भरचो अपार ताहि तरि सकै न शेशै । अग्रकहै अपस्वारथी परमारथ पूजा लेइ । आपु न जाई सासुरे औरन को सिख देइ ॥ २ ॥ दोहा ॥ सीताराम सुजानतजि, करै और को जाप । ताके मुखमें दीजिये, नौसादर को बाप ॥ ३ ॥ फेरि चाह भई ॥ हरि सेवा राखिलई गुरुको त्यागि दियो माता पिता पुत्र स्त्री आदिक क्योंकि सबको त्यागि हरिकी सेवा करनी नहीं तौ धूरि लगाइकै धूरिही फांकनी हरि सेवा घरहींमें क्यों न करी एकांत विना न होइ गृहमें दुख आइ लगे ॥ १ ॥ वनमें काहेको दुःख होइ लेना एक न देना दोइ ॥२॥ तापै दृष्टांत डुकरिया कीहँसुलीको ॥ श्लोक ॥ गृहं भक्तपराधीनः ॥

कोल्हअल्हूभाईदोऊकथासुखदाईसुनोंपहिलोविरक्तमदमांसन हिंखातहै । हरिहीकरूपगुणवाणीमेंउचारकरै धरैभक्तिभावहियेताकीयहवातहै । दूसरोअनुजजानोखाइसबअनुमानोंनृपहीकोगावैंप्रभु

कभूगाइजातहैं । बड़ेकेअधीनरहैजोईकहैसोईकरै ईशकरिचाहैआप-
दीनतामेंमातहै ॥ ५२४ ॥ बड़ेआयकहीचलौद्वारकानिहारिसही मि
थ्याजगभोगयामेंआपुहीविहातहै । आज्ञाकेअधीनचल्योआयेपुर
लीनभयेनयेचोजमंदिरमेंसुनौकानवातहै । कोल्हनेसुनायेसबजेजे
नानाछंदगाये पाछेअल्हदोइचारकहैसकुचातहै । भरयोईहुंकारो
प्रभुकहीमालागरेडारोलायपहरावोकह्यो मेरोबड़ोभ्रातहै ॥ ५२५ ॥
दयोपैनयाहिदयोबड़ोअपमानभयोगयोबूड़ोसागरमेंदुखकोनपारहै ।
बूड़तहीआमेंभूमिपाइचलोभूमिप्रीति सोअनीतिभूलैनाहिं मानोंत
रिवारहै । सोईआयेलेनहरिजनमनचैनझिल्योमिल्योकृष्णजा
इपाइपायोअतिसुखसारहै । बैठेजबभोजनकोदईउभयपातरिलै दू
सरीजूकैसीकहीवहीभाईप्यारहै ॥ ५२६ ॥

आपुही बिहात है ॥ पद ॥ सुपनो सो धन आपनो श्याम ॥ आदि अंत तासों न बिछुरिये परत काल सों काम । तन धन सुत दारा गृह स-र्बसु जाहि भजे ले नाम । देखि देखि फूल जिनि भूलौ जग नटवाको धाम। ज्यों बछरा के धोखे गइया चाटति है वह चाम । ऐसे व्यास आश सब झूंठी सांचो है हरि नाम ॥ ४ ॥ कुंडलिया ॥ गिलति कटोरी वारिको गिली आपही जाइ । गिली आपही जाइ विषै भोगत अज्ञानी ॥ जानी परै न बात आप कित जात बितानी । पुनि जैसे जललैन थके दूरै जल-बेली । ऐसेही सब विषै मिटै गुरु चेला चेली । एक छेद की यह दशा देहहि बने देखाइ । गिलति कटोरी वारिको गिली आपही जाइ । पाछे अलू ॥ सवैया ॥ देश बिदेश के देखे नरेशन रीझिकै कोऊ जो बूझ करैगो । याते तनय तन जात गिरयो गुण सौ गुण अवगुण गांठि परैगो । बांसुरी वारो बड़ो रिझवार है श्यामजु नेक सोढारढरैगो । लाड़िलो छैल छबीलो अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो ॥ नये नये चोज ॥ वि-रक्त को आदर सत्कार मंदिर में भगवान सदा करै हैं सो न कियो वि-षयी को कियो यह नये चोज ॥

सबैविषभयोदुखगयोसोईहुवोनयोदियोपरमोधवाकीबातसुनिलीजिये । तेरोछोटोभाईमेरोभक्तसुखदाईताकी कथालैबलाईजामें आपहीसोंधीजिये । प्रथमजनमांझबड़ोराजपुत्रभयोगयोगृहत्यागिसदामोसोंमतिभीजिये । आयोवनकोऊभूपसंगरागरंगरूपदेखिचाहभईदेहदईभोगकीजिये ॥ ५२७ ॥ तेरेईबियोगअन्नजलसवत्यागिदियोजियोनहींजातवापैवेगिसुधिलीजिये । हाथपैप्रसाददीनोआइघरचीह्निलीनोसुपनोसोगयोबीतिप्रीतिवासों कीजिये । द्वारकाकोसंगसुनिआवतहीआगेचल्यो मिल्योभूमिपरिदृगभरिबहेदीजिये । कहीसबबातश्यामधामतज्योताहीक्षण करचोवनवासदोऊमतिअतिभीजिये ॥ ५२८ ॥ अल्हहीकेबंशमेंप्रशंसयाहिजानिलेहु वड़ोऔरुभाईछोटोनारायणदासहै । दीरघकमाऊलघुउपज्योउड़ाऊभाभीदियोसीरोभोजनलैभयोदुखरासिहै । देवोमोकोतातोकरिवोलीवहक्रोधभरियहूजाहूकरोभरवावैकियोहासहै। गयोगृहत्यागिहरियागकरचो वैसेहीजुभक्तिवशश्यामकह्यो प्रगटप्रकाशहै॥५२९॥

दियो प्रवोध ॥ कुंडलिया ॥ पर्वतको कह देखिये पाइनतरकी देखि । पाइन तरकी देखि बात जनि कहै पराई । आनि जरौ कोऊ वरौ राखि उर जरतौ भाई । सारो राखत सती सुनो नहिं राखत यारो । अपनो पहरे जागि गांठितो सुतो उवारो । अगर असत आलापतजिहरिगुण हिरदेलेखि। पर्वतको कह देखिये पाइन तरकी देखि ॥ २ ॥ गयो गृहत्यागि ॥ कवित्त ॥ दूरैसेमीठी मीठी बातेंसो बनाइ कहै अंतर कपट तासों पलनपतीजिये । वाणी विनपंडित विवेक विन भूपति औ ज्ञानहीन गुरु ताकी दीक्षाहू न लीजिये । कहै हरि भक्त राजाविन कैसोरजपूत विना सनमान ताको दान कहा छीजिये । नदी विन ग्राम हरिसेवा विन काम कैसो जामें नहीं प्रीतिसोई मित्र कहा कीजिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ या अव पारावारके, उलँघि पारको जाइ । तिय छवि छाया ग्राहिनी, बीचहि पकरैआइ ॥ २ ॥ रसन शिशन संयम करै, हरि चरणनतरबास ॥ तब

हीं निश्चय जानिये, राम मिलनकी आस ॥ ३ ॥ तज विलास जोंविषयके, जौन प्रेमसोंजाहिं । भानु उदय तमरहै तो, वहै भानहीं नाहिं ॥

मूल ॥ नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकविराजहुव । सवैया-गीतश्लोकबेलिदोहागुणनवरस । पिंगलकाव्यप्रमाणविविधविधिगायो हरियश । परिदुखविदुखसलाघ्यवचरनचनाजुविचारै । अर्थविचित्र निमोलसबैसागरउद्धारै ॥ रुक्मिणीलतावर्णनअनूपवागीशवदन कल्याणसुव । नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकविराजहुव॥१९०॥

उभयभाषानिपुण ॥ पंडित ह्वैके भाषाको प्रमाण नहींकरै जामें ह-रियश होइजाइ भाषाको बिबेकी हैं ते सव प्रमाण करै हैं ॥ १ ॥ श्लोक ॥ साधुभिर्यस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥ २ ॥ अज्ञानी नहीं प्रमाण करै हैं तापै दृष्टांत वैष्णवको अरु पंडितको ॥ ३ ॥ हरियश ॥ दोहा ॥ हरियश रसनहिं कवित महिं, सुनै कौनफल ताहि । शठ कठपु-तरी संगघुरि, सोयेको फलकाहि ॥ ४ ॥ वचन रचना ॥ सुवरणको चाहत सदा, कवि व्यभिचारी चोर । पांवधरत चिंता करैं, श्रवण सुहात न शोर ॥ ५ ॥

टीकापृथ्वीराजराजाकी ॥ मारवारदेशवीकानेरकोनरेशवड़ोपृ थ्वीराजनामभक्तिराजकविराजहै । सेवाअनुरागअरुविषयवैराग्य ऐसोरानी पहिचानीनाहिंमानोदेखीआजहै । गयोहोविदेशतहां मानसीप्रवेशकियोहियोनहींछुवैकैसेसरैमनकाजहै । वीतेदिनतीनि प्रभुमंदिरनदीठिपरैपाछेहरिदेखिभयोसुखकोसमाजहै ॥ ८३० ॥ लिखिकैपठायोदेशसुंदरसंदेशयह मंदिरनदेखेहरिवीतेदिनतीनि है । लिख्योआयोसांचुवांचिअतिहीप्रसन्नभयेलगेराजवैठेप्रभुवाह रप्रवीनहैं । सुनोऔरएकयोंप्रतिज्ञाकरीहियेधरीमथुराशरीरत्या गकरैरसलीनहैं । पृथ्वीपतिजानिकैमुहीमदईकाविलकीवल अधिकाई नहींकालकेअधीनहैं ॥ ८३१ ॥ जीवनअवधिरहे निपटअलपदिनकलपसमानवीतिपलनविहातहै । आगमजनाइदि

योवाहैंइन्हैंसांचोकियो लियोभक्तिभावजाकेछायोगातगातहै।चल्यो चढ़िसांड़िनीपैलईमधुपुरीआनिकरिकैस्नानप्राणतजेसुनीबातहै । जयजयध्वनिभईव्यापिगईचहूंओरअहोभूपतिचकोरजसचंदादिनरा तिहै ॥ ५३२ ॥ मूल ॥ द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवैकीधीअ टल। असुरअजीजअनीतिअगिनिमेंहरिपुरकीधौं । सांगनसुतनै सादराइरनछौरैदीधों । धराधामधनकाजमरणबीजाहूमांडौ । कम धुजकुटकेंहुवौचौकचतुरभुजनीचाडौ। बाढ़ेलवाढ़िकीविकटकचांद नामचाड़ैसबल । द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवैकीधीअटल ॥

विपय वैराग्य कवित्त ॥ हांसी में बिषाद बसै विद्यामें विवाद बसै भोगमाहिं रोग पुनि सेवामाहिं दीनता। आदर में मानबसै शुचि में गिला- न बसै आवन मे जान बसै रूप माहिंहीनता। योग में अभोग ओ सँयोग में वियोग बसै पुण्य माहिं बंधन औ लोभ में अधीनता। निपट नवीन ये प्रवीननि सुचीनलीन हरिजूसों प्रीति सबहीसों उदासीनता ॥ ६ ॥ सांवखाचि तो राजाने बाहर क्यों न देखे बाहरकी भावना नहीं प्रति- ज्ञा देशकी भक्तनि को उपेक्षा नहीं है ॥ २ ॥

टीका ॥ कावापतिसीवांसुतसांगनकोप्यारोहरिद्वारावतिईशयों पुकारैरक्षाकीजिये । सदाभगवानआयभक्तप्रतिपालकरैंकरौप्रतिपा लमेरोसुनिलतिभीजिये । तुरकअजीजनामधामकोलगाईआगि ल ईवागवोरकीआयेद्रककीजिये। दुष्टसबमारेप्रभुकष्टतेउबारेनिजप्राण वारिडारेयहनयोरसपीजिये ॥ ५३३ ॥

करौ प्रतिपाल मेरो ॥ दोहा ॥ करैनकरावैआपही, नाम न अपनो लेहि। साईहाथ बड़ाइयो, जिहिभावै तिहि देहि ॥ ३ ॥ भक्त भूप बड़े बड़े राजा सबदिशानको जीतैं पै इंद्री न जीतिजाहिं ॥

मूल ॥ पृथ्वीराज नृपकुलवधूभक्तभूपरतनावती। कथाकीर्तन प्रीतिभीरभक्तनिकीभावे। महामहोछौमुदितानित्यनँदलालल‌ड़ावै।

मुकुंदचरणचितवन भक्तमहिमाधुजधारी । पतिपरलोमनकियोटे कअपनीनहिंटारी । भक्तपनसबैविशेषहीआवैरसदनसुनखाजिती । पृथ्वीराजनृपकुलवधूभक्तभूपरतनावती ॥ १४२ ॥ टीका ॥ रतनावतीजीकी ॥ मानसिंहराजाताकोछोटोभाईमाधोसिंहताकीजानोंतियाताकीबातलैबखानिये । ढिगजोखवासिनिसोश्वासनिभरतनामरटति जटित प्रेमरानीउरआनिये । नवलकिशोरकभूंनंदकोकिशोरकभूंवृन्दावनचंदकहिआंखैभरिपानिये । सुनतविकलभईसुनिवेकीचाहभईरीतियहनईकछूप्रीतिपहिंचानिये ॥ ५३४ ॥

भक्ति न होइ इन अवलाने इंद्रीजीति के भक्तिकरी याते भक्तिभूपकह्यो ॥ १ ॥ कथा कीर्त्तन मांझ ॥ आहपावैं न निवाह कसीदा असीतिसी राहल्लां इश्क दिला देना लेना लेमाहिं बूंदीगल्लां । साहजुल्फछल्लों तिसछल्ले असीतिसी महल्ला तरसल्ला। वल्लभ रसिकरुमाललालपर झूमहमें सांझल्लां ॥ १ ॥ चाहभई ॥ कवित्त ॥ जादिनते श्रवण परचो है कान्ह तादिनते लग्योई रहत रसना में आठोयाम है । चोवाचीर पानीपान चंदन चमेली हार मांगतही मुख निकसत घनश्यामहै । शोचिकै सकोचनिरुमोचन सकल दुख सुखको दिनेश जियको सो निजधाम है । प्रीतिरीति तंत्रजग जीतिबेको यंत्र मनमोहनी को मंत्र मनमोहन को नाम है ॥ २ ॥ जाको जासों मनलग्यो, सोई जाको राम । रोमरोम मैं रसरह्यो, नहीं आन सों काम ॥ सुनिवेकी ॥

बारबारकहैकहाकहैडरगहैमेरो वहैदृगनीरहोशरीरसुधिगई है । पूछेमातिबातसुखकरौदिनरातियह सहैनिजगातरागीसाधुकृपाभईहै अतिउतकंठादेखिकहैसोविशेषसबरासिकनरेशनुकिवानीकहिदई है। टहलछुटाईऔसिरानैलैबैठाईवाहिगुरुवुधि आई यहजानों रीतिनई है

बारबार ॥ कवित्त ॥ कबहुं अंग अंगराइ डारत है अलिनपै भैरावै क्यौंहू कलन परति है । उत्तर सहेली लाई तिनके सँदेश सुनि करत प्रसिद्ध कवि ऐसेही अरति है । कैसे कैसे गई कहु कैसी कैसी बातें भई

कहां हैं ललन सुनि धीरनधरति है । एक बेर पूंछि फेरि पूँछि फेरि फेरि पूँछि बेर बेर वेई बातैं पूछिबो करति है ॥ १ ॥ पूछौं मति । हेरत बारहि वार उतै जू बावरी बाल कहाधौं करैगी । जो कबहूं रसखानि लखै फिरि क्यों हुन बीररी धीर धरैगी । मानिहैं काहूकी कानि नहीं जब रूप ठगी हरि रंग ढरैगी । यातै कहूं शिख मानि भटू यह हेरनि तेरेई पैंड़े परैगी ॥ २ ॥ प्रीति की रीति अनीतिहै प्रीति करौ जिनि कोइ । सुख दीपक कैसेबरै विरह नागजहँ होइ ॥ ३ ॥ विद्या आदर लक्ष्मी और ज्ञान गुणगर्व । प्रेमपौरि पगधरतही, गये ततक्षणसर्व ॥ ४ ॥ नेहनेह सब कोउ कहै नेहकरो मतिकोइ । मिलैदुखी बिछुरैदुखी नेहीसुखी न होइ ॥ ५ ॥ नेहस्वर्गते ऊतरयो, भूपर कीनोंगौन । गलीगली ढूंढ़त फिरैं विन शिर को धरकौन ॥ ६ ॥ जरेजरे सो जरिबुझे, बुझर जरे हूनाहिं । अहमद दाझेप्रेम के, बुझि बुझि कै सुलगाहिं ॥ ७ ॥ प्रेम कठिन संसार में नाकीजे जगदीश । जो कीजै तौ दीजिये, तन मन धन अरुशीश ॥ ८ ॥

निशिविन सुन्योकरैदेखिवेकोअरबरैदेखेकैसेजातजलजातदृगभरेहैं । कछुकउपाइकीजैमोहनादिखाइदीजैतबहींतोजीजैवेतोआनिउरअरेहैं । दरशनदुरिराज छोड़ैलोटैधूरिपैनपावैछाविपूरिएकप्रेमवशकरेहैं । करौहरिसेवाभरिभावधरिमेवापकवानरसखानदैबखानमनधरेहैं ॥ ५३६ ॥ इंद्रनीलमणिरूपप्रगटस्वरूप कियोलियोवहेभावयोंसुभावमिलिचलीहै । नानाविधिरागभोगलाड़कोप्रयोगयामेंयामिनीसुपनयोगभईरंगरलीहै । करतांशृंगारछविसागरनपारावाररहतनिहारियाहीमाधुरीसोंपलीहै । कोटिकउपाइकरियोगयज्ञपारपरै ऐपैनहींपावैयहदूरिप्रेमगलीहै ॥ ५३७ ॥

सुपन ॥ दोहा ॥ सोयेढिग वातेंकरै, जगैं उठत गहै बाट ॥ कित ह्वै आवत जातकित, पौरीलगे कपाट ॥ १ ॥ नख शिख रूपभरे खरे, तऊ चहत मुसुकानि । लोचन लोभी रूपके, तजै नलोभीबानि ॥ २ ॥

देख्योईचहततऊकहतउपाइकहा अहाचाहबातकहौकौनकोसु नाइये । कहीजूबनावोढिगमहलकेठौरएकचौकीलैबैठावोचहुँओरस मुझाइये । आवैंहरिप्यारेतिन्हैंआवैबेलिवाइइहांरहैतेधुवाइपाइरुचिउ पजाइये । नानाविधिपाकसामाआगेआनिधरेआप डारिचिकदेख्यो श्यामहगनलखाइये ॥ ५३८ ॥

चाहबात ॥ चौपाई ॥ कुँवरि कहै सखिको बिसवर है । जहँ वह सांवरो प्रीतमरहै ॥ सो दिश हाथसों सखिनि बताई । सो दिश जीवनमूर सिमाई । कमल पत्रलै पक्ष बनावै । उड्योचहै सोक्यों उड़िआवै । मनसों कहै कुटिल तू आइ । इकिलोई उठि पिय पै जाइ । नेक तौ नैन निहूं संग लैरे । मोहन मुखको देखन दैरे ॥ ३ ॥

आवैंहरिप्यारेसाधुसेवाकरिटारे दिनकिहूंपावँधारेजिन्हैंब्रजभूमि प्यारिये । युगलकिशोरगावैंनैनानिबहावैंनीरह्वैगईअधीररूपहगनिनि हारिये । पूछीवाखवासिनिसोंरानीकौनअंगजाकेइतनीअटकसंगभं गसुखभारिये । चलीउठिहाथगयोरह्योनहींजातअहो सहोदुखलाज बड़ीतनकनबिचारिये ॥ ५३९ ॥

आवैं ॥ पद ॥ चलिमन ढूंढन जैये सतगुरुके छौना । शिरके साटैं पाइये ये राम खिलौना॥प्रेमजँजीर जराय के गहि राखो भाई । इन सं-तनि के मोहते मिलि हैं रघुराई । कृष्ण कृष्ण नित पढ़त हैं शुचिते चित लागे । पाइँ टिके नाहिं पाप के दुख सबही भागे । कहि मलूक सबछांड़ि कै गहि लै यह हाला । जोइ जोइ मूरति संतकी सोइ देखि गुपाला ॥ १ ॥

युगल ॥ कवित्त ॥ बृन्दावन बास आश बढ़त हुलास रास बिविध बिलास सदा सुख हरिदास के । भाल पै तिलक श्याम बंदनी औ कंठमाल तुलसी रचत गुंज छापे दै प्रकाश के । युगल किशोर हिये मुखमें झकोर नाम नीर बौर झूमि कै सु सूजक बिलास के । सदा सतसंग बिनय अंग अंग पगे पुनि जगे जग माहिं नीके लागे आस पास के ॥

देख्योमैंबिचारिहारिरूपरससारताकोकीजियेअहारलाजकानि

नीकेटारिये । रोकतउतारिआईजहांसंतसुखदाईआनिलपटाईपाइँ विनतीलैधारिये । संतनजिमाइबेकी निजकरअभिलाषलाखलाख भांतिनसोंकैसेकैउचारिये । आज्ञाजोईदीजैसोईकीजैसुखवाहीमेंजु- प्रीतिअवगाहीकरोलागीअतिप्यारिये ॥ ५४० ॥ प्रेममेंननेमहेमथा रलैउमँगिचलीचलीदृगधारसोपरोसिकैजिवायेहैं । भीजिगयोसाधुने हसागरअगाधदेखि नयननिमेषतजीभयेमनभायेहैं । चंदनलगा इआनिवीरीहूखवाइश्यामचरचाचलाइचषरूपसरसायेहैं । धूमपरी गावँझूमिआयेसवदेखिवेकोदेखिनृपपासलिखिमानसपठायेहैं ॥ ॥ ५४१ ॥ ह्वैकीरनिशंकरानीवंकगतिलईनई दईतजिलाजवैठीमो ड़नकीभीरमें । लिख्योलैदिवाननरआयेलैवखानकियो बांचिसुनि आंचलागीनृपकेशरीरमें । प्रेमसिंहासुतताहीकाल सोरसालआ योभालपैतिलकभालकंठीकंठतीरमें । भूपकोसलामकियोनरनजता इदियो वोल्योआवमोडीकेरेपरचोमनपीरमें ॥ ५४२ ॥

टारिये ॥ मेरी कुल पूजि तूही मानी ठकुरानी करि तूही नित आं- खिनि में हिये में धरतिहौं । तेरेई संतोष देत दक्षिणा रसीले गुन मन मानि आलिनि की सीख निदरत हौं । आनि बन्यो योग अब मेरे बड़ भागि- निर्ते ताहीते अधीनता लै दीनता करतिहौं । देखन दे नेक प्राण पीतम मुखारविंद हाय लाज आजु तेरे पाइँनि परतिहौं ॥ ३ ॥ प्रेम सिंह ॥ कवित्त ॥ सदा साधु सेवा रंग नितही प्रसन्न सुनि भीजि जाइ हियो जान्यो प्रीतिको स्वरूप है। प्रेमसिंह नाम ताको अर्थ अभिराम सुनो सिंह सम भक्ति बल हिये श्याम रूप है । दोऊ मिलि नाम मानो जानो नृसिंहवत राति की बड़ाई याते भयो भक्त भूपहै । हरदेव इष्ट मिष्ट लागी संत सेवा याको सिद्धि गुण वैस लघु कीरति अनूप है ॥ १ ॥ प्रेम मैन मोर मुकुट पै प्रियादास गोविंद संग रहैं वरसाने ते वाइ एक मोहन भोग प्रभात करि लै गई पाटौ दांतुन नहीं करी यह क्यों न खावो लकड़ी भली ॥ २ ॥

कोपभीरराजागयोभीतरतेशोचनयो पाछेपूंछिलियोकह्योनरनि बखानिकैं। तबतोबिचारीअहोमोड़ीहैहमारीजातिभयोसुखगातभ क्तिभावउरआनिकै। लिख्योपत्रमाजीकोतुप्रीतिहियेसाजीजोपै शी शपरबाजीआइराखोतजिप्रानको। सभामध्यभूपकहीमोड़ीकोविरू पभयोरहोअबमोड़ीकेहीभूलोमतिजानिकै॥ ५४३॥ लिख्योदैप ठायोवेगिमानसलैआयेजहां रानीभक्तिसानीहाथदईपातीबांचिये। आयोचढ़िरंगबांचिसुतकोप्रसंगबार भीजेजेफुलेलदूरिकियेप्रेमसां चिये। आगेसेवापाकनिशिमहलबसतजाइलाईवाहीठौरप्रभुनीके गाइनाचिये। अन्ननृपत्यागिदियोलिखिपत्रपुत्रदियो भाईमोडीआ जुतुम्हहितकरियांचिये॥ ५४४॥

तजिप्राणको॥ दोहा॥ धनदै नीके राखितन, तनदैराखो लाज। लाज प्राण तजि दीजिये, एक प्रेम के काज॥ नेह करैंते बावरे, करि तूरैं ते कूर। धुर निरबा हैं जे कोऊ, तेई प्रेमी शूर॥ २॥ प्रेम की चोपरि मढ़ी है, तामें बाजी शीश। कायर ताको जेगहैं, तौ पावै वह खीश॥ ॥ ३॥ दूरि किये॥ जबलगि शिर परशिर हुतो, तब लगि फूलन हार। नाँहि सँभारो जात है, शिर उतरे को भार॥ ४॥ अन्न नृप त्यागि दियो॥ पाद्मे॥ प्रार्थयेद्वैष्णवस्यान्नंप्रयत्नेन विचक्षणः। सर्व पापविशुद्ध्यर्थंतदभावेजलंपिबेत्॥ ५॥ मार्कंडेये॥ अवैष्णवगृहे भुक्त्वा पीत्वावाज्ञानतोयदि॥ शुद्धिश्चांद्रायणे प्रोक्ताऋषिभिस्तत्वदर्शिभिः॥ ॥ ६॥ शुद्धंभागवतस्यान्नं शुद्धंभागीरथीजलम्। शुद्धंविष्णुपरिक्षिप्तं शुद्धमेकादशीव्रतम्॥ ७॥

गयेनरपत्रदियोशीशसोंलगाइलियो बांचिकैमगनहियेरीझबहु दईहै। नौबतिबजाईद्वारबांटतबधाईकाहूनृपतिसुनाई कहीकहारी तिनईहै। पूछैंभूपलोककह्योमिटेसबशोकभयेमोड़ीके जुयोगस्वांग कियोबनगईहै। भूपतिसुनतबातअतिदुखभयोगातलयोवैरभावच

ढ्यो त्यारीइमभईहै ॥ ५४५ ॥ नृपसमुझाइराख्योदेशमेंचवावहै हैं बुधिवंतजनआइसुतसों जनाई है ॥ बोल्योविषैलागिकोटिकोटितन खोये एकभक्तिपरकामआवैयहैमनआईहै । पाइँपरिमांगिलई दई जूप्रसन्नतुमराजानिशिचल्योजाइकरोजियभाईहै । आयोनिजपुरढि गधरिनरसिलेआनि कह्योसोबखानिसबचिंताउपजाईहै ॥ ५४६ ॥ भवनप्रवेशकियोमंत्रीजोबुलाइलियो दियोकहिकटीनाकलोहूनिरवा रिये । मारिवोकलंकहूनआवोयोंसुनाईभूपकाहूबुधवंतनविचारिलै उचारिये। नाहरजूपींजरामेंदीजै छोंड़िलीजैमारिपाछेतेपकरिवहबात दाविडारिये । सबनिसुहाईजाइकरीमनभाई आयोदेखोवाखवासि कहींसिंहजानिहारिये ॥ ५४७ ॥ करैहरिसेवाभरिरंगअनुराग हग सुनीयहबातनेकनयनउघटारेहैं । भावहीसोंजानैउठिअतिसनमानै अहोअजूमेरेभागश्रीनृसिंहजूपधारेहै । भावनासचाईवहीशोभालैदि खाईफूलमालपहराईरचटीकोलगेप्यारेहैं । भौनतेनिकसिधायेमानो खम्भफारिआयेविमुखसमूहततकालमारिडारेहैं ॥ ५४८ ॥

नृसिंह जू पधारे हैं ॥ तब पूछहू लाई क्योंकि सूक्ष्म अलंकार ॥ १ ॥ श्लोक ॥ कांतमायां तमालोक्य गता गुरुजनांतिकम् । करे कलितमं भोजं संकोचयति सुंदरी ॥ २ ॥ कवित्त ॥ बांसुरी के बीच एक भौंर डारि लाई सखी मूँद्यो बहु यत्न बलय बुधि बल भारी सों । भनत पुराण यामें आपही सों ध्वनि होति कान दैके सुनो कह्यो धरि सुकुमारी सों। रीझि रिझिवार अति मनमें मगन भई आप तनचाह मुख ढांक्यो श्याम सारी सों । अंचलमें गांठिदै बिहँसि उठि चली सखी प्यारी हँसि कह्यो आजु बसिये हमारी सों ॥ ३ ॥

भूपकोखबरिभईरानीजूकीसुधिलई सुनीनीकीभांतिआपनम्रह्वै केआयेहैं । भूमिपरिसाष्टांगकरिकैऊहरीमतिभईदयाआपआइवाके वचनसुनायेहैं । करतप्रणामराजाबोलीआजुलालजूको नेकफेरिदे खोएकठौरयेलगायेहैं । वोल्योनृपराजधनसबहीतिहारोधारोपतिपैन

लोभकहीकरौसुखभायेहैं ॥ ५४९ ॥ राजामानसिंहमाधवसिंहउभै भाईचढेनावपरकहूंतहांवूड़िबेकोभई है। वोल्योवड़ोभ्राताअवकी जियेयतनकौन भौनातियाभक्तकहीछोटेसुधिदईहै । नेकुध्यानकि योतवैआनिकैकिनारोलियो हियोहुलसायोजेंठचाहनईलईहै । कह्योआनिदरशनविनयकरिगयोराजाअतिहीअनूपकथाहियेव्यापि गई है ॥ ५५० ॥ मूल ॥ पारीषप्रसिद्धकुलकांश्रद्याजगन्नाथ सीवाधरम । श्रीरामानुजकीरीतिप्रीतिपनाहिरदाहिधारचो । संस्कार समतत्त्वहंसज्योंबुद्धिविचारचो । सदाचारमुनिवृत्तिइंदिरापधितउजा गर । रामदाससुतसंतअनन्यदशधाकोआगर ॥ पुरुषोत्तमपरसादते उभैअंगपहरचोबरम । पारीषप्रसिद्ध कुल० ॥ १४३ ॥

मुनि वृत्ति ॥ राजधानी न लेहिं भारते ॥ एक ब्राह्मण सिलौक- रैहो तासों अज्ञानी ने कही हमारे राजा पैं जाउ तौ वहुत द्रव्य मिलै तव रोइ उठ्यो कृष्ण सों कही तेऊ रोइ उठे युधिष्ठिर सों कही तेऊ रोइ उठे कृष्णसों पूछी याको हेतु कहा तव कही ब्राह्मण याते रोयो ऐसी निषिद्ध धान्य बतायो कलियुग में मांगेहू नमिलैगो उभै अंग कवच पहिरचो प्रगट अंगमें तौ लोहको राजा के प्रोहित याते यह हीरेके अंगमें ज्ञानको वचन- बाण काहू को न लगै ॥ १ ॥

कीरतनकरतकरस्वपनेहूमथुरादासनमांडियो । सदाचारसंतोष सुहृदसुठशीलसुभासै । हस्तकदीपकउदयमेटितमवस्तुप्रकासै । हरिकोहियविश्वासनंदनंदनबलभारी । कृष्णकलससोंनेमजगतजानै शिरधारी । श्रीवर्द्धमानगुरुवचनरतिसोसंग्रहनाहिंछांडियो । की रतनकरतकरसुपनेहूमथुरादासनमांडियो ॥ १४४ ॥ टीका ॥ वासकैतिजारैमांझभक्तिरसराशिकरीकरी एकवाततताकोप्रकटदिखा ईहै । आयोभेषधारीकोऊकरैशालिग्रामसेवाडोलैसिंहासनपैआनिभी रछाईहै । स्वामीकेजुशिष्यभयेतिनहूंकोभावदेखिवाहीकोप्रभावक ह्योआपहीयेभाईहै । नेकुआपचलौवहरीतिकोविलोकियेजू वडे

सर्वज्ञकही दूषैनहिंजाई है ॥ ५५१ ॥ पाइँपरिगयोलैकैजाइढिगठाढ़े भये चाहताफिरायोपैनफिरैशोचपरचोहै । जानिगयेआपकछूयाही कोप्रतापओपैमारोकरिजाययोंविचारमनधरचोहै । मूठिलैचलाईभ क्तितेजआगेपाईनाहिं वाईलपटाईभयोऐसोमानोमरचोहै । ह्वैकरिद यालजाजिवायोसमझायोप्रीतिपंथदरशायोहियभयोशिष्यकरचोहै॥

सुपनेहूं ॥ सुपने में कौन माँगै है भक्तही माँगै है दृष्टांत कलावत को अरु ब्राह्मण को विश्वास मुगल अरु बनिये को दृष्टांत ॥ १ ॥ ह्वै करि दयाल ॥ हरिजन हंस दिशानि यों डोलै । मुक्ता फल बिन चोंच न खोलै। मौन गहै कै हरि यश बोलै । असद अलाप न कबहूं लोलै । मानसरोवर तटके वासी । हरि सेवा रति और उदासी ॥ नीर क्षीरको करै निवेरा। कहै कबीर सोई गुरु मेरा ॥ २ ॥ वाहि यह उपदेश करचो चौरेही में ठाकुर को बैठावनो ऐसी क्रिया न कीजै ॥ ३ ॥

मूल ॥ नृतकनरायणदासकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो। पदलीनोप्रसिद्ध प्रीतिजामेंदृढ़नातो । अक्षरतनमयभयोमदनमोहनरँगरातो । नाच तसबकोउआइकाहिपैवहवनिआवै । चित्रलिखतसोरह्योत्रिभंगीदेशी जुदिखावै । हंड़ियासराइदेखतदुनीहारिपुरपदवीकोचढ़ो । नृतक नरायणदासकोप्रेमपुंजआगेवढ़ो ॥ १४५ ॥ टीका ॥ हरिही केआगेनृत्यकरैहियेधरैयहीढरैंदेशदेशनमेंजहांभक्तभीरहै । हंड़ि यासराइमध्यजाइकैनिवासलियो लियोसुनिनामसोमलेच्छजानिमी रहै । बोलिकैपठायेमहाजनहरिजनसबैआयोहैसदनगुनालावोचाह पीरहै । आनिकैसुनाईभईअतिकठिनाईअबकीजैजोइभावैवहनिपट अधीरहै ॥ ५५२ ॥

दृढ़ नातो पद ॥ सांचो एक प्रीति को नातो । कै जाने राधिका नागरी कै मदन मोहन रँग रातो । यह शृंखला अधिक बलवंती जिन बांध्यो मन गजमातो । मीराप्रभु गिरिधर सँग हिलि मिलि सदा निकुंज बसातो ॥ १ ॥ दोहा ॥ हितचित चाहन चतुरई, बोल न आवत गात । राधा

मोहन प्रेमकी, कहत बनै नहिं बात ॥ २ ॥ आइ कलाइक जगत हित, जानि सुदेश विदेश । पर उपकारी साधु ये, नहिं अधरम को लेश ॥ ३ ॥ त्रिभंग देशी । सूधी जो कुछ उर गडै, सो निकसे दुख होइ । कुँवर त्रिभंगी जहँ गडै, सो दुख जानै सोइ ॥ ४ ॥ पण्डित कविता ढाढ़िया, कहिबे-हीलौं दौर । कहि कान्हा जूझै नहीं, जूझनवारे और ॥ ५ ॥ हँडिया सराइ आगते छह कोश ॥ ६ ॥ हरिहीकेआगे ॥ दोहा ॥ मनमजूस गुण रतन हैं, चुप कढि दै हट तार । पारखि आगे खोलिये, कूंची वचन रसाल ॥ ७ ॥ तापै दृष्टांत अकबर शाहको तानसेनको हरिही के आगे गावै ॥ ८ ॥

बिनाप्रभुआगेनृत्यकरियेननेमयहैसेवावाकेआगेकहौंकैसेविस्तारिये । कियोयोविचारऊंचेसिंहासनमालाधारितुलसीनिहारिहरिगानकर्योभारिये । एकओरबैठोमीरानिरखैननयनकोरमगनाकिशोररूपसुधिलैबिसारिये । चाहैंकछुवारचोपरेऔचकहीप्राणहाथ रीझिसनमानकियोमीचलागीप्यारिये ॥ ५५४ ॥ मूल ॥ गुणगणविशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा।वोहितरामगोपालकुँवरगोविंदमांडिल । क्षीतस्वामिजसवंतगदाधरअनंतानंदभल । हरिनाभामिश्रदीनदासबछपालकन्हरयशगायन । गोसूरामदासनारदश्यामपुनिहरिनारायन । कृष्णजीवनभगवानजनश्यामदासविहारीअमृतदा । गुणगणविशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा ॥ १४६ ॥ निर्वर्त्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसब । उद्धवरामेरणुपरशुरामगंगाभूपेतानिवासी अच्युतकुलकृष्णदासविश्रामशेषसाहीकेवासी । किंकरकुंडाकृष्णदासखेमसोंठागोपानंद । जयदेवराघवविदुरदयालदामोदरमोहनपरमानंद । उद्धवरघुनाथीचतुरोनगनकुंजओकजेबसतअब । निर्वर्त्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसब ॥ १४७ ॥

भूरिदा ॥ दशमे ॥ तवकथामृतंतप्तजीवनंकविभिरीडितं कल्मषापहम् । श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणंतिते भूरिदाजनाः ॥ १ ॥ संत

जन बडे दाता भक्ति संपत्तिके देनहारे जन तो सामान्य मनुष्यनको कहे हैं सो नहीं ॥ श्लोक ॥ सालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत ॥ दीयमानंनगृह्णंतिविनामत्सेवनंजनाः ॥ २ ॥ जे ऐसे जनतौ नहीं चुटकी टूक मांगत डोलैं ॥ दोहा ॥ राम अमल माते फिरै, पीवै प्रेम निशंक। आठ गांठि कोपीन में, कहै इंद्र सों रक ॥ ३ ॥

टीका ॥ झीथडेटिगहीमेंजैतारनविदुरभयोभयोहरिभक्तसाधुसेवामतिपागी है। वरषानभईसबखेतीसूखिगईचिंतानईप्रभुआज्ञादईबड़ोबड़भागीहै । खेतकोकटावोऔगहावोलैउड़ावोपावोदोहजारमनअन्नसुनी प्रीतिजागीहै । करीवहरीतिलोगदेखैनप्रतीतिहोतिगायेहरिमीतराशिलागीअनुरागीहै ॥५५५॥ मूल॥ श्रीस्वामीचतुरोनगनमगनरैनिदिनभजनहित ।सदायुक्तअनुरक्तभक्तिमंडलकपोषत। पुरमथुराब्रजभूमिरमतसबहीकोतोषत । परमधरमदृढ़करनदेवश्रीगुरुआराध्यो । मधुरवैनसुनिठौरठौरहरिजनसुखसाध्यो । संतमहंतअनंतजनयशविस्तारेजासुनित । श्रीस्वामीचतुरीनगनमगरैनिदिनभजनहित ॥ १४८ ॥ आवैंगुरुग्रेहयोंसनेहसोंलैसेवाकैरधैरैहियेसांच भावअतिमतिभीजिये । टहलगाइदईनईरूपवतीतियादियोवासोंकहीस्वामीकहैसोईकीजिये । सेवाकैरिझायेयतेप्रेमउरानितनयोदयोघरघरवधूकृपाकरिलीजिये । धामपधराइसुखपाइकैप्रणामकरिधरींब्रजभूमिउरवसेरसपीजिये ॥ ५५६ ॥

खेती सूखिगई ॥ भेषहरयो भयो बहुत चढिगयो बगवान् भेष वढायो चाहै तौ अकालपरै सो परयो तब विचारी कहूं उठि जाइये ॥ १ ॥ मगन रैनि दिन सतोगुण वृत्तिते रजोगुण तमकी निवृत्ते भक्त मंडल को पोषत द्वारपै रमत ॥ सवैया ॥ डोलत हैं इकतीरथ एकनि बार हजार पुराण बकेहैं । एकलगे जपमें तप में यक सिद्धि समाधिनमें अटके हैं। बूझि जो देखतहौरसखानि जू मूढमहा सिगरे भटकेहैं। सांचें हैं वे जिन

आपन ज्यो इहि सांवरे ग्वालपै वारिछकेहैं ॥ २ ॥ टहल लगाई लाहौर में कान्हा फकीर तुलसी खत्रानी सेवाकरे ॥ ३ ॥

श्रीगुविंदचंदजूकोभोरही दरशकरिकेशवशृङ्गारराजभोगनंद ग्राममें । गोवर्द्धनराजाकुंडह्वैकेआवैवृन्दावनमनमेंहुलासनितकरै चारियाममें । रहैंपुनिपावनपैभूखादिनतीनिबीतेआयेदूधलैप्रवीणये ऊरँगेश्यामनमें । मांग्योनेकुपानीलावौफेरिवहप्रानीकहां दुखमातिसानीनिशिकह्योकियोकाममें ॥ ५५७ ॥

मांग्यो नेकुपानी ॥ दोहा ॥ सबसों बुरो जु मांगिबो, मांगत निकसै जीव ॥ पानिपचाहैं आपनी, तो मांगिन पानीपीव ॥ १ ॥ मांगन जापै जाइये, जाके मुखमें लाज ॥ आगेते जु प्रसन्नह्वै, पूजै मनके काज ॥ २ ॥ आवत देखे साधके, पुलकि उठै सब अंग ॥ तुलसी जाके जाइये, कीजै तासों संग ॥ ३ ॥

पानीसोंनकाजब्रजभूमिमें विराजदूधपियोघरघरआज्ञाप्रभुजूनेदई है । येतौब्रजवासीसदाक्षीरकेउपासीकैसेमोकोलैनदेहैंकहीदेहै सुनीनईहै । डोलैधामश्यामकह्योजोईमानिलियोदियोलैपरचौहूप्रतीतितबभईहै । जहांजाछिपावैपात्रवेगिढूंढिआपलावै अतिसुखपावैकीनीलीलारसमईहै ॥ ५५८ ॥ मूल ॥ मधुकरीमांगिसेवैभगत तिनपरहौंबलिहारकियो । गोमापरमानंदप्रधानद्वारकामथुरासोरा । कालुषसांगानेरभलोभगवानकोजोरा । वीटलटोडेपेमपंडागूनौरेगाजै । श्यामसेनकेवंशवीधरपीपाराविराजै । जैतारनगोपालकोकेवलकूवेमोलालियो । मधुकरीमांगिसेवैभगततिनपरहौंबलिहारकियो ॥ १५१ ॥

क्षीरके उपासी ॥ माता यशोदाने तुमको डारि दूध उफनातो राख्यो ॥ सवैया ॥ जप यज्ञ सुदान सुमौन करैं बहुकूपरु वापी तड़ाग बनावैं । करैं ब्रत नेम सुइंद्रिय निग्रह उग्रह योग समाधि लगावैं ॥ कहै रसखानिहृदय जिनके कबहूं नहिं सों सुपने में न आवें । ताहि

अहीरकी छोहरिया छछिया भरि छांछि को नाच नचावैं ॥ ५ ॥
लक्ष्मी सी जहां मालिनि डोलै बंदनवारे बांधति पूजा पै दृष्टांत रुक्मिणी
जी के बेदा को ॥ ६ ॥

टीका ॥ कहतकुम्हारजगकुलनिस्तारकियो केवलसुनामसाधु सेवाअभिरामहै । आवैबहुसंतप्रीतिकरीलैअनंतजाकोअंतकोनपा वैऐपैसीधोनहींधामहै । बड़ीपैगरजचलेकरजानिकासिबेको बनियान देतकुवाखोदौकीजोकामहै । कियोबोलिकहीतोलिलियोनीकेरोलि करिहितसोंजिमायेजिन्हैंप्यारोएकश्यामहै ॥ ५५९ ॥ गयेकुवाँखो दिबेकोसूवाज्योंउचारेनाम हुवाकामवानेजानीभयोसुखभारीहै । आईरेतभूमिझूमिझूमिमाटीदाबिरहे वामेंकेतकहजारमनहोतकेसेन्या रीहै । शोककरिआयेधामरामनामधुनिकाहूकानपरीबीत्योमासक हीबातप्यारीहै । चलेवाहीठौररसुरसुनिप्रीतिभौरपरेरीतिक छुऔरसु धिबुधिअतिटारीहै ॥ ५६० ॥

करज ॥ एकादशे ॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका वैष्णवोबंधुसत्कथा ॥ १ ॥
सम्बंधी को उधारचो लाइके सब कोई सत्कार करैहै यह धर्म साधु
सेवा धर्म ॥ २ ॥ आदिपुराणे ॥ येमेभक्तजनाःपार्थ ॥ ३ ॥ न्यारी-
है ॥ कूवाजो माटीमें रहैं जैसे तिवारो महारावमैपै एकहाथ ऊंचोजल
प्रसाद पहुँचै माटीक्यों न दूरिकरी सिधाई लगै यातें तो महाराव क्योंन
ऊंचीराखी ॥ कूवां देखि कै यहबात यादिरहै जैसे सिद्ध को गुफामें
बैठारे सिद्धाइको रंगद्वार खानपान पहुँचे ऐसे हरिने करी ॥ ४ ॥

माटीदूरिकरीसबपहुँचेनिटकतब बोलिकैसुनायोहरैबानीलागी प्यारियै।दरशनभयोजाइपाइँलपटाइरहे महरावसीहैकूवहूंनिहारियै। धरचोजलपात्रएकदेखिबडेपात्रजानेआनिनिजग्रेहपूजालागीअतिमा रियै । भईभीरद्वारनरउमडिअपारआये महिमाअपारबहुसंपतिलैवा रियै ॥५६१॥ सुंदरस्वरूपश्यामलायेपधराइबेकोसाधुनिजधामआइ

कुवांजुकेवसेहैं । रूपकोनिहारिमनमेंविचारकियोआपकरैकृपामोपै प्रभुअंचलह्वैवसेहैं। करतउपाइसंतटरतननेकुकहूंकहीजूअनंतहरिरी झस्वामीऐसे हैं । धन्योजानराइनामजानिलईहियेवात अंगमेनमा तसदासेवासुखरसेहैं ॥ ५६२ ॥ चलेद्वारावतिछापलावैयहमतिभ ईआज्ञाप्रभुदईफिरिघरहीकोआये हैं ।करौंसाधुसेवाधरौभावहियेदृढ मांझटारौंजिनिकहूंकीजैजेजेमनभाये हैं । गेहहींमेंशंखचक्रआदि निजदेहभये नयेनयेकौतुकप्रगटजगगायेहैं ।गोमतीसोंसागरकोसंगम होरह्योसुन्योसुमिरनीपठाइके योदोऊलैमिलायेहैं ॥ ५६३ ॥ भये शिष्यशाषाअभिलाषासाधुसेवाहीकी महिमाअगाधजगप्रगटदेखाई है । आयेघरसंततियाकरतिरसोंईकोई आयोवाकोभाईताकोखी रलैवनाई है । कुवाजूनिहारिजानीवाकोहितसादरसोंकीजियेवि चारएकसुमतिउपाईहै ।कहीभरिलावोजलगइडरकलपैनलईतसमई सबभक्तनिजिमाईहै ॥ ५६४ ॥

कूवहूं निहारिये ॥ महीनाभरि भूमि में दवेरहे सो कूवाभयो रघुपति ने रक्षाकियो सो प्रसंग गोमती सों सागर को संगम रह्यो सुमरनीदै पठाई ॥ संगम भयो सो प्रसंग ॥ १ ॥ भयेशिष्य शाखादै प्रकारके फरसाफूकी कानफूंका । २ । ३ । ४ । ५ ॥

वेगिजललाईदेखिआगिसीवराईहिये झांकेमुखभईदुखसागरबुड़ा ईहै । विमुखविचारितियाकुवाजूनिकारिदईगईपतिकियोऔरऐसी मनआईहै।परचोईअकालवेटावेटीसोनपालिसके तकैकोऊठौरमति अतिअकुलाईहै । लियेसंगकरचोजोईपुत्रपतिभूखभोई आइपरी झोंथडामेस्वामीकोसुनाईहै ॥ ५६५ ॥

विमुख ॥ पद ॥ जिनके प्रिय नरामवैदेही ॥ सो त्यागिये कोटि वैरीलौं यद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बंधु भरत महतारी ॥ बलिगुरु ब्रजयुवतिन पतित्याग्यो जगभये मंगलकारी ॥ नातो नेह रामसों सांचो हृदय सुशील जहालौं । अंजनकहा आंखि जो फूटै

बहुतीकहौं कहांलौं ॥ तुलसी सोइ हितु बन्धु न प्रीतम पूजि प्राणते प्यारो ॥ जासँगबाढै नेह राम सों सोइ निज हितू हमारो ॥ १ ॥ दोहा ॥ साधोआया अनमनी भाया आयासूरि ॥ केवल कूवायों कहैं तू निकासि बाहरी पूरि ॥ पहिले तौ मूरख को संगहोई पाछेते सत्संग सो ज्ञानं पाइकै त्यागकरै ॥ भर्तृहरिः ॥ यांचिंतयामिसततंमयिसाविरक्ता साप्यऽ न्यमिच्छतिजनंसजनोन्यसक्तः ॥ अस्मत्कृतेतुपरितुष्यतिकाचिदन्या धिक्तांचतंच मदनंचइमांचमांच ॥

नानाविधिपाकहोतआवै संतजैसेसोतसुखअधिकाईरीतिकेसेजा तिगाईहै। सुनतवचनवाकेदीनदुखलीनमहानिपटप्रवीनमनमांझदया आईहै। देखिपतिमेरोऔरतेरोपतिदेखियाहिकैसेकैनिबाहिसकैपरी कठिनाईहै। रहौद्वारझारोकरोपहुँचैआहारतुम्हें महिमानिहारिदृ गधारलैबहाईहै ॥ ८६६ ॥ कियोप्रतिपालतियापूरीकोअकाल मासभयोजवसमौविदाकीनीउठिगईहै। अतिपछितातिवहबातअब पावैकहां जहांसाधुसंगरंगसभारसमई है। करैजाकोशिष्यसंतसेवाही बतावैकरौ जोअनंतरूपगुणचाहमनभईहै। नाभाजूबखानकियोमो कोइनमोललियोदियोदरशाइअतिलीलानितनईहै ॥ ८६७ ॥

दया आई है ॥ साधवो दीनवत्सलाः ॥ ३ ॥ दोहा ॥ कबीरा ॥ साधु मिलै तो हरिमिलै, अंतररहीनरेप ॥ राम दुहाई सतकहा, साधूआय अलेप ॥ ४ ॥ हरिते अरु हरि जननिते, रंचक अंतरनाहिं। येईतोहिं पावनकरैं चितवतही क्षणमाहिं ॥ ५ ॥

मूल। श्रीअग्रअनुग्रहतेभये शिष्यसबैधर्मकीधुजा। जङ्गीप्रसि द्धप्रयागविनोदीपूरनवनवारी। भलनृसिंहभगवानदिवाकरदृढ़व्रत धारी। कोमलहृदयकिशोरजगतजगनाथसुलूधौ। औरौअनुगउदार खेमखीचीधर्मधीलधुऊधौ ॥ त्रिविधतापमोचनसबै सौरभप्रभुजिन शिरभुजा। श्रीअग्रअनुग्रहतेभयेशिष्यसबैधर्मकीधुजा ॥ १६२ ॥ भरतखंडभूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धति प्रगटाअंगदपरमानंददा

सेयोगीजगजागे । खरतरखेमउदारध्यानकेशवहरिजनअनुरागे स्फुटत्योलाशब्दलोहकरवंशउजागर । हरीदासकविप्रेमसबैनवधा केआगर । अच्युतकुलेसबैसदादासंतनदशधाअवट । भरतखंड भूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धतिप्रगट ॥ १५३ ॥ मधुपुरीमहोछौ मंगलरूपकान्हरकोसोकोकारै । चारिबरणआश्रमरंकराजाअन्न पावैभक्तनिकोबहुमनबिमुखकोऊनहिंजावै । बीरीचंदनवसनकृष्ण कीरंतनवरषै । प्रभुकेभूषणदेइ महामनअतिशयहरषै । वीठ लसुतविमल्योफिरैदासचरणरजशिरधरै । मधुपुरीमहोछौमंगल रूपकान्हर कोसोकोकरै ॥ १५४ ॥ भक्तनिसोंकलियुगभलै, निवाहीनिंबाखेतसी । आवहिंदासअनेकउठिबआदरहरिलीजै । चर णधोइदंडौतसदनमेंडेरादीजै । ठौरठौरकरिकथाहृदैअतिहरिजन भावै । मधुरवचनमहुलाइबिबिध भांतिनिजलडावै । सावधानसे वाकरैनिर्दूषणरतिचेतस भक्तनिसोंकलियुगभलै निवाहींनिंबाखेत सी ॥ १५५ ॥

त्रिविध ॥ तृतीये ॥ शारीरामानुषादिव्यादोषायेयेचमानुषे ॥ भौतिकाश्चकथंलेशाबाधंतेहरिसंश्रयान् ॥ १ ॥ कोऊ कहै दूरि कैसे होइँगे शरीर सों लगे हैं सत्संगतेआत्मज्ञान आतमज्ञान ते मिटे ॥ २ ॥ अच्युतः ॥ दोहा ॥ पिंडसुपीडा परशुराम हितकारी कोउ एक और नगरकी शोभता आवैं जाहिं अनेक ॥ आवैं जाहिं सुकौतुकी पूछै मनकी बात । परसाप्रीतम बाहरी कोपूछैकुशलात ॥ ३ ॥

बसनबढ़ेकुंतीबधूत्योंत्योंवरभगवानके । यहअचरजभयोएक खांड़घृतमैदाबरषै । रजतरुकमकीरेलसृष्टिसवहीमनहरषै । भोजन रासाबिलासकृष्णकीरंतनकीनों । भक्तनिकोबहुमानदानसबहीको दीनों । कीरतिकीनीभीमसुतसुनिभूपमनोरथआनिकै । बसनबढ़ेकुं तीबधूत्योंत्योंवरभगवानके ॥ १५६ ॥ टीका ॥ बीततवरषमासआ वैमधुपुरीनेमप्रेमसोंमहोक्षोराशिहेमहीलुटाइये । संतनिजिमाइनाना

पटपहराइपाछेद्विजनिबुलाइकछूपूजैपैनभाइये । आयोकोऊकालधं नमालजाबिहालभये चाहै पनपारचोआयेअलपकराइये। रहेविप्रदू खसुनिभयोसुखभूखवढ़ी आयोयोसमाजकरौधारीमनआइये५६६॥

बसनवढे ॥ कवित्त॥ ऐसी भीरपरे पर पीरको हरनहार गिरि को धरनहार सोई धीर धरि है। दीननिको बंधव विरद ताको सदा रह्यो दावानल पानकियो सोई पीर हरिहै। पंडुनिकी पत्नी कहत ठाढी पंचनिमें लपटचोहै चीर सोतौ कैसेकै निवरि है। खैंचै क्यों न आनिदुःशासन से दशक और मोरपक्ष धरि है सो मेरी पक्ष करि है ॥ १ ॥ पांडवकी रानी गहिरावर सों आनी शिरोमणि बिलखानी बिललानी पै न चेत हैं। घटत घटाये पटन घटत ऐंचेपट दुशासन बार बार ढेरकैकै लेत हैं। पांचतन छित आंच तनक न लागी तन लखिकै विपति यदुपति कीनो हेत हैं। गोपिनके चोरि चोरि राखे पट कोरि कोरि तेई मानौ जोरि जोरि द्रौपदीको देतहैं॥ २॥ आनि कुल वंशको अकरम उदय होत बाढ्यो छल दुहूँ ओर बंधुन के गृह में ॥ पंडवनको तौ मानखंडन सभा के बीच द्रौपदी पुकारि कह्यो गोविंद सनेह में । अंबरके ह्वैगये अटंबर आकाश लगि खौंचि खैंचि हारी खल पावत न छेह में। भक्तनिके काज ब्रजराज लाज राखनको आपह्वै बजाज बैठे द्रौपदी की देहमें ॥ ३ ॥

होमही ॥ कवित्त॥ जिनजिन करनाई तिन तिन करआई करनही नाई तिनिकरनही आई है । कागज लिखाई जिनकागरैलिखाई पाई धरामें धराई तिन धरा धूरिखाई है॥ दैदै लवराई जिनलई है पराइ अब ताहू पास नैकहून रहति रहाई है । जिनजिन खाई जिनउदर समाती खाई जिन न खवाई तिनखाई बहुताई है ॥ १॥ दोहा॥ बांसचढ़ी नटिनीकहै मंतिकोउ नटनी होइ ॥ ३ ॥ मैं नटकै नटिनी भई नटैसु नटिनी होइ ॥ ॥ २ ॥ दीया जगत अनूपहै, दिया करौ सब कोइ । घरको धरचो न पाइयै जोकरदिया न होइ ॥ ३ ॥ नारदते बरपाइकै प्रथम सुंदरी होइ ॥ पति-

बरते सूरीभई, सुतवरते पुनिसोइ ॥ ४ ॥ तापै नारदजी को अरु ब्राह्मण को दृष्टांत ॥

अतिसनमानकियोलायेजोईसौंपिदियो लियोगांठिबांधितबविनतीसुनाइये । संतनिजिमावोभावैरासलैकरावोभावैजैवौसुखपावोकीजैबातमनभाइये । सीधोलाइकोठैधरचोरोकहीसोथीलीभरचोद्विजनिबुलाइदेतक्योंहूं निघटाइये । जितनोंनिकासैताते सौगुनोबढ़त औरएकएकठौरवीशगुनोदैपठाइये ॥ ५६७ ॥

निघटाइये ॥ दोहा ॥ बुरो विचारैं दुष्ट जन, चाहैं कियो विगार ॥ जिनको काम न बीगरै, रक्षक नंदकुमार ॥ १ ॥ जै माल इनको बड़ो भइया सो बड़ो भक्तहो ॥ सोरठा ॥ बेटा बापत नेहजोपै चील्है चालनी ॥ जननी काहि जनेह, भांडमुख भोंडो तनहिं ॥ २ ॥

मूल ॥ जसवंतभक्तिजैमालकीरूडाराखीराठवड़ । भक्तनसों अतिभावनिरंतरअंतरनाहीं । करजोरैंइकपाइमुदितमनआज्ञामाहीं। श्रीवृन्दावनदृढ़वासकुंजक्रीड़ारुचिभावै । श्रीराधावल्लभलालनित्य प्रतिताहिलड़ावै । परमधरमनवधाप्रधानसदनसांचनिधिप्रेमजड़ । जसवंतभक्तिजैमालकीरूडाराखोराठवड़ ॥ १५७ ॥ हरिदासभक्त नहितधनिजननीएकैजन्यो ॥ अमितमहागुनगोप्यसाराचितसोईजानै ॥ देखतकोतुलाधारदूरिआवैउनमानै । देइदमान्योपैजविदितवृन्दावनपायो । राधावल्लभभजनप्रगटपरतापदिखायो । परम धरमसाधनसुदृढ़कलियुगकामधेनुमेंगन्यो । हरीदासभक्तनिहितधनिजननीएकैजन्यो ॥ १५८ ॥ टीका हरीदासवनिकसोकाशीढिगबासजाको ताकोयहपनतनत्यागोब्रजभूमिहीं । भयोजुरनारीछीवछोड़िगयेवैदतीनिबोल्योयोंप्रवीनबृन्दावनरसझूमिही। बेटीचारिसंतनिकोदईअंगीकारकरौधरौडोलीमांझमोकोध्यानदृढ़झूमिही । चलेसावधानराधावल्लभको गानकरैं करैंअचरजलोगपरोगामधूमिही ॥ ॥५६८॥ आवतहीमगमांझछूटिगयोतनपनसांचोकियोश्यामवनप्रग

टदिखायोहै । आइदर्शनकियोइष्टगुरुप्रेमभरिपरचोभावपूरोजाइची रघाटन्हायोहै ॥ पाछेआयेलोगशोगकरतभरतनैन बैनसबकही कहीतादिनहीआयोहै । भक्तिकोप्रभावयामेंभावऔरआनौंजिनिबि नैंहरिकृपायहकैसेजातपायोहै ॥ ५६९ ॥

श्रीवृन्दावन दृढ़वास ॥ अरिल्ल ॥ चिंतामणिकी राशि बिपिन तजि पाइये। अंत मिलै हरि आपु तऊ नहिं जाइये। श्रीवृन्दावन की धूरिसु धूसर तन रहै। अरिहां यह आसारहै चित्त कहूंको नाचहै ॥ ३ ॥ राठवड़ ॥ दोहा ॥ साधन मेटे भारि भुजा, पद रज धरी न शीश ॥ बड़ी बड़ी करनी करी, सो सबह्वैगइ खीस ॥ ४ ॥ बांधैं सो बांधा मिलै, कबहूं छोड़ै नाहिं ॥ मिलै आनि निर्वर्त्त सो, छुटै जु पलके माहिं ॥ ५ ॥ येमे भक्तजनाः पार्थ नमेभक्तास्तुतेजनाः ॥ ६ ॥

मूल ॥ भक्तभारजूड़ैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित । बावोलीगोपा लगणनिगंभीरगुनारट।दक्षिणदिशविष्णुदासगांवकासीरभजनभट । भक्तनिसोंयहभावभजैगुरुगोविन्दजैसे । तिलकदासआधीनसुवरसं तनिप्रतिजैसे । अच्युतकुलपनएकरसनिवह्योज्योंश्रीमुखगदित । भक्तभारजूड़ैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित ॥ १५९ ॥ टीका ॥ रहै गुरुभाईदोऊभाईसाधुसेवाहियेऐसेसुखदाईनईरीतिलैचलाईहै। जाइ जामहोछमेंबुलायेहुलसायेअंगसंगगाड़ीसामासोभँडारीदैमिलाईहै । याकोतातपर्यसंतघटतीनसहीजातिवातवेनजानैंसुखमानैंमनभाईहै। वड़ेगुरुसिद्धजगमहिमाप्रसिद्धिबोलेविनैंकैउचारीसोईकहिकै सुनाई है ॥ ५७० ॥

जूड़ै युगल ॥ दोहा ॥ हरदी तौ जरदी तजै, चूना तजै सुदेत ॥ प्रीतिजु ऐसी चाहिये, दोउ मिलि एकै हेत ॥ १ ॥ दोऊ एक मन ह्वै भक्तिको बोझ उठावें तौ उठ तौ गुरु गोविन्द वैष्णव सब एक रूप है ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक ॥ २ ॥

चाहतमहोछौकियोहुलसतहियोनितालियोसुनिबोलेकरौवेगिदै

तियारिये। चहूंदिशिडारचोनीरिकसौन्यौंतौंऐसेधीरआवैबहुभीरिसेत ठौरनिसवारिये । आयेहरिप्यारेचारौंखूंटतेंनिहारैनैनजाइपगधारे शीशबिनैलैउचारिये । भोजनकराइदिनपांचलगिछायरह्योपटपह राइसुखदियोअतिभारिये ॥ ५७१ ॥ आज्ञागुरुदईभोरआवौफिरि आसपासमहासुखराशिनामदेवजू निहारिये । उज्ज्वलबसनतनए कलेप्रसन्नमनचलेजातवेगिशीशपाइनिमेंधारिये । वेईदेवताइश्री कबीरअतिधीरसाधु चलेदोऊभाईपरदाक्षिणाबिचारिये । प्रथमनि रखिनामहरषिलपटिपगलगिरहेछोड़तनबोलेसुनौधारिये ॥ ५७२ ॥ साधअपराधजहांहोततहांआवतनहोइसनमानसवसंततहींआइये । देखीसोप्रतीतिहमनिपटप्रसन्नभयेलयेउरलाइजावोश्रीकबीरपाइये । आगेजोनिहारैभक्तराजदृगधारैचलीबोलेहँसिआपकोईमिल्योसुखदा इये । कह्योहांजूमानिदईभईकृपापूरणयों सेवाकोप्रतापकहौकहां लगिगाइये ॥ ५७३ ॥

बिनैलै उचारिये । महाराज संततौ बहुत आये सामा कहां येती ॥ गुरु बोले मन मानौं जितौ देतजावो घटैगी नहीं देनहारो समर्थ है ॥ ॥ १ ॥ आस पास प्रदक्षिणा अश्वमेधी यज्ञको भोगको फेरि जन्मधरे दंडवतसों जन्म कटैगो ॥ २ ॥

मूल ॥ कील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिष्यप्रगट । आ शकरनऋषिराजरूपभगवानभक्तगुरु । चतुरदासजगअभयछा- पछीतरजुचतुरबर । लाषाअद्भुतराइमलषेममनसाक्रमवाचा । र सिकराइमलगौंदुदेवादामोदरहरिरँगराचा । सबैसुमंगलदासदृढ़धर्म धुरंधरभजनभट । कील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिषप्रग ट ॥ १६० ॥ रसुराशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलबैन । आगमनिगमपुराणशास्त्रजुविचारचो । ज्योंपारोदैपुटहिसबहिको सारउधारचो । श्रीरूपसनातनजीवभट्टनारायण भाष्यो । सोस र्वसुउरसांचयतनकरिनीकेराख्यो । फनीबंशगोपालसुवरागाअनुगा

कौऐन। रसराशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलवैन॥ १६१॥

रसराशि उपासिक॥ कबित्त॥ रसराशी श्रृंगार ताके उपासिक नाथभट्ट हैं श्रृंगार रस में चारौ रस हैं शांतमन की लगन निर्वल्य दास स्वामी के आधीन सख्यमित्रता समता विश्वास स्वभाव विपर्ययनहोइ॥ वात्सल्य पुत्रवत लड़ाये॥ श्रृंगार कांतकांता समप्रीति आशक्ति सो असक्ति मैं चारौ रस रहैं जैसे पृथ्वी को गुण सुगन्ध अरु तत्त्व में न मिलै चारौ तत्त्व पृथिवीमें मिलें अप तेज वायु आकाश ऐसेही रस राशि श्रृंगार रस कहावै॥ १॥ भागवते॥ मन्येऽसुरान् भागवतानधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्टचित्तान्॥ येसंयुगे चक्षततार्क्ष्यपुत्रमंसेसुनाभायुधमापतंतम्॥ २॥ फनी वंश गोपाल दास के पुत्रनारायण दास ऊंचे गांववाले के पुत्र॥ ३॥

कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिहिकलंकरही। नश्वरपतिरति त्यागिकृष्णपदसोंरतिजोरी। रावैजगतकीफांसतरकितिनुकाज्योंतोरी। निर्मलकुलकांथडाधन्यपरसाजिहिजाई। विदितवृन्दाबनवास सन्तमुखकरतबड़ाई। संसारस्वादसुखवातकरिफेरिनहींतिनतनचही। कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिहकलंकरही॥ १६२॥

कठिनकाल॥ स्त्रीचून कोदियो है बाहर तौ रहै श्वानखावै॥ भीतर रहै तौ मूसोखावै स्त्री की भलीकथा कथा कहा हो या कठिन कालमें करमैतीही निष्कलंक रही सतयुगमें विषै में ब्रह्मा महादेव तपस्वी ऋषीश्वर इंद्रिचाल होतभये बडे राजा दिशाजीतिपै इंद्री न जीतीजाहिं या अबलानें सबइंद्रीजीति कै मनवश करि वैराग्य कियो॥ १॥

टीका॥ सेखावतनृपकेपुरीहितकीबेटीजानौ बासहौंखड़ेलाकर मैतीसोवखानिये। बस्योउरश्यामअभिरामकोटिकामहूंते भूलैधाम कामसेवामानसीपिछानिये। बीतिजातियामतनवामअनुकूलभयो फूलअंगगतिमानोमतिछविसानिये। आयोपतिगौनोलैनभायोपित मातहियेलियेचितचावपटआभरणआनिये॥ ५७४॥

बस्यौउरश्याम ॥ संग न ध्यान श्याम कैसे बस्यौ ॥ भागवते ॥ तत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा ॥ ज्ञानवैराग्य भक्तिसर्वत्र सब देशमें है सबके हृदयमें है घटिबढि क्यों गिन्यो है सो सुनो श्री भगवानको नाम बासुदेव है शुद्धहृदय में झलकै है दर्पनमो रचाहोइ तौ न झलकै मज्यौहोइ तौ आइझलकै सो हृदय दर्पनविषे बासना मोरचे सो करमैती को हृदय उज्ज्वलहरि आइ झलकेसतसंगविना हृदय कैसे उज्ज्वलभयो कही पूर्वजन्मकी भक्ति अजररही सो उदयभई ॥ ऐसेअंधेरी कोठरीमें वस्तु धरिके विदेशकोगयो॥ आवतही तुरत उठाइ लीनी ऐसे पछिले जन्मकी भक्ति सिद्धकरी जानौ तौ संगकी उपेक्षानहीं ॥ ३ ॥ सानियै ॥ कवित्त ॥ अबहीं गईखरिक गाइके दुहाइबेको बावरीह्वैआई डारि दोहनी औपानकी । कोऊकहै छरीकोऊ भौनपरी डरीकहै कोऊ कहै मरीगति हरीहैअयानिकी ॥सासुव्रतठानै नंदबोलति सयानैं धाइ दौरि दौरि आनै मानौ खोरि देवतानिकी । सखी सबहूँसे मुरझानि पहिचानी कहूँ देखी मुसिकानि वारँगीले रसखानिकी॥ १ ॥

परचोशोचभारीकहाकीजिये विचारीहाड़चामसोंसँवारीदेहरातिनकेनकामकी । तातेदेवोत्यागिमनसोंवैजानिजागिअरेमिटैउरदागएकसांचीप्रीतिश्यामकी । लाजकोनकाजजोपैचाहैव्रजरासुतबड़ाईअकाजजोपैकरैसुधिधामकी । जानीभोरनैनोहोतसानी अनुरागरंगसंगएकवहीचलीभीजोमतिवामकी ॥ ५७८ ॥

हाडचाम सोरतनो मांसग्रंथी देहतो मलीनमन ॥ सवैया ॥ योवनजोर मली ललिता सबदेखि थकी यह अगम अथाहै । बातचलै चहुंओरहुते सुयहै मनमें अतिशोचमहाहै । सेवनहार पुकारकरै आलीमांझ की धार लखी परहाहै । नेहकीनाव कुदावपरी मनमेरे मलाह सलाह कहाहै ॥ ॥ २ ॥जोवनकी सरितागहिरी अरुनैननिनीर नदी उमही है । पीतम को पतिया जु लिख्यो बिनखेवटियाकहुं पारभईहै । मानको राजमहा झकझोरत प्रेम कीडोरि सो लागिरही है । मनमेरे मलाह मिलैतो बचो नाहिं बोरि अथाह सलाह यही है ॥ १ ॥ सोवेजिनि ॥ कुंडलिया ॥ ससा अंधेरी छां-

डिदै हरिभजि लाहोलेइ ॥ हरिभजि लाहोलेहि देह जिनि राचीतेरी ॥ नातरयमकेद्वार मूढ पैठेजुपवेरी। नादुपटैअतिचेतचालैजो भाई ॥ भूले-यंमपुरजाइ समझि ध्रुवलोक वसाई। अगर आलकस जिनिकरो दुर्लभ मानुषदेह। ससा अंधेरी छाडि दै हरिभजि लाहोलेह ॥ २ ॥ जो दिन जाहि अनंदमें, जीवनको फलसोइ। जीवनको फलसोइ नंदनंदन उरधारै ॥ मंत्रीज्ञान विवेक असुर अज्ञान निवारै ॥ पदम पत्रज्योंरहै कालसम विषैपिछानै। जगप्रपंचते दूरि सत्य सीतापति जानै ॥ अगर अजाके स्वादते तृप्तितन देख्योकोइ ॥ जोदिन जाइ अनंद में जीवनको फलसोइ ॥ ३ ॥ पानी को धननी करयो, ऊरनभयो गुवाल ॥ ऊरनभयो गुवाल प्रभुहि मानुष तनु दीयो। भक्ति सुधारस छांड़ि जहर बिपयारसपीयो ॥ श्रवण घ्रान मुख प्रान वरणदृग उमगी आपी। तिनको दीनी पीठि निलज्ज कृतघ्नी पापी ॥ अगर श्याम उपकार निधि भज्यो नहीं गोपाल। पानीको धननी करयो ऊरनभयो गुवाल ॥ ४ ॥

आधीनिशिनिकसीयोंबसीहियेमूरतिसोपूरतसनेहतनसुधिबिसराईहै। भोरभयेशोरपरयोपितामातशोचकरयोकारिकैयतनठौरठौर ढूंढ़िआई है। चारोंओरदौरेनरआयेढिगटारिजानीऊंटकेकरंकमध्य देहजादुराई है। जगदुरगंधकोऊऐसीबुरीलागीजामें बहुदुरगंधसोसुगंधलौसराही है ॥ ५७६ ॥

सुधि बिसराई है ॥ कवित्त ॥ बैदनि बुलाइ लावो स्यानानि अनेक भांति यर्पति यतन रूप लागति है नेरेमैं। योगी यती जोइसी उपासिक देव भैरौंके कामरूपके वासी पच्चिमीडो हाथ हेरेमैं। लोटि लोटि जाइ वीर बोलै न अनाज खाइ पनियांको निकसी आजु अधिक अँधेरे मैं। बावरी अनाहक यह भूतन बधाये फिरे आई ब्रजबालनंदलालजूके फेरेमें ॥ ५ ॥ चारौं ओर बातरस ठौर ठौर ढूंढ़िआयेहैं। कुयोगिनिको आत्मा अप्राप्त तैसे नमिली जगदुर्गंध कोऊ ऐसी बुरी लागी जगत् दुर्गंधहू तैं डरी।

ऊंटको करंक की सुगन्धमानी जगदुर्वासना करंकहूंते बड़ीमानी ॥ १ ॥

बीतेदिनतीनिवाकरंकहीमेंशंकनहीं बंकप्रीतिरीतियहकैसेकारि गाइये। आयोकोऊसंगताहीसंगगंगातीरआईतहांसोअन्हाई हैभूषण बनआइये। ढूंढ़तपरशुरामापितामधुपुरीआये पतेलैबतायेजाइमाथु रमिलाइये। सघनविपिनब्रह्मकुंडपरवरएकचढ़िकरिदेखी भूमिअँशु वाभिजाइये॥ ५७७ ॥ उतरिकैआइरोइपाइँलपटाइगयो कटीमेरी नाकजगमुखनदिखाइये। चलौगृहवेगिसबलोकउपहासेमिटैसासुघर जावोमातिसेवाचितलाइये। कोऊसिंहव्याघ्रअजुबपुकोविनाशकरैत्रा समेरेहोइ फिरिमृतकजिवाइये। बोलीकहीसांचाबिनभक्ततनऐसोजा नौजोपैजियोचाहौकरौप्रीतियशगाइये॥ ५७८ ॥

वैभूषणवनआई है ॥ रजोगिनी को बानो करिकै वृन्दावन कहाजाहि ॥ जैसे बिदुरजी दुर्योधन की पौरिपै धनुष धरिकै निकसे श्रीधरजीने लिख्योहै डरैनहीं। चक्रवर्ती लिख्यो बधिकको बानोतीर्थ यात्रा में कहाकरैं यह श्रीवृन्दावन धामहै वैकुंठहूते सर्वोपरिहै ॥ १ ॥ बरपर चढ़िकरि देखो शरीरमें पिंडोलमाटी लगाये हैं ॥ २ ॥ मृतक जिवाइये तुम सांची कही भक्ति बिना तो प्रानी मृतकही तुल्यजानो ॥ ३ ॥ नाग लोक स्वर्गलोकमेंहूं भक्तिनहीं ॥

कहीतुमकटीनाककटै जोपैहोइकहूं नाकएकभक्तिनाकलोकमें नपाइये। बरषपचासलगिविषैहीमेंवासाकियोतऊनउदासभयेचनेको चबाइये। देखेसबभोगमेंनदेखेएकश्यामतातेकामताजिधामतनसेवा मेंलगाइये। रातितेज्योंप्रातहोतऐसेतमजातभयोदयोलैसरूपप्रभुग योहियेआइये॥ ५७९ ॥

क्योंकि चारिकौड़ी की भांगसों बावरो ह्वै जाइ है ॥ तापैपोस्ती को दृष्टांत अरु भंगी को जहां रागरंग अमृत भोगकैसे न बावरो होइ ताते विद्या धनराज्य पाइकै मत्तहोइ है जैसे चोखो धन को पाइकै बावरो

भयो ॥ आपुको आपही धिरकारहै॥ १ ॥ बरष पचास ॥ सप्तमे ॥ मतिर्न-कृष्णोपरतःस्वतोवा मिथोभिपद्येतहतव्रतानाम् । अदांतगोभिर्विशतातमोंधं पुनःपुनश्चर्वितचर्वणानाम्॥ २॥ कबित्त॥ धनदियो धामदियो भाम सुत नाम दियो दियोजग यश ताके तू चल्यो न रुखमें। नरदेही दीनी सब सुरति सपूरी कीनी कामिनी नवीनीनहीं जान दीनों दुखमें । दामनको रोवै निशि बासर जनमखोवै हरि जो बिसारैगी दी ऐसे तैंने सुखमें। धूरि परी कुल में बड़ाईमें अंगारपरे भारपरो बुद्धिछार परीतेरे मुख में॥ ३॥ पुत्रकलत्र सों चौरासी सों छुटैगो सोनहीं ॥ ४ ॥ कुंडलिया ॥ हाहाकरे न छूटि-है वैरीवश परिजाइ ॥ बैरीवश परिजाइ कालयम के संगहैगो । तात मात सुत वाम धीरकोउ नाहिं धरैगो ॥ दान पुण्य ओषधी तिनहुँते काजन-सरही। होनहारसो वड़ी उलट घटको अनुसरही ॥ अगर उबारै राम पद के संतनि की बाह । हाहाकरै न छूटही बैरीवश परिजाह ॥ ५ ॥ कुंडलिया ॥ बहुतगई थोरीरही थोरीहूमेंचेत ॥ थोरीहूमेंचेत अमल घटथोरै थोरै। मारग विषै विसार शीशदे सियपतिओरै ॥ द्वैघटिकामें अंग भूप गोविंद पदपायो । दुर्मतिताजिकै पिंगला श्यामहठ सेजबसायो ॥ अगर आलकसजिनकरो हरिभजिबेकेहेत । बहुतगई थोरीरही थोरीहू में चेत ॥ १ ॥ द्योलै स्वरूप ॥ पंचम । कर्म करन उपजनिपुनिनाश । सुख दुख शोक मोहनितत्राश ॥ इनके हेत दियोहरिनेतन । ताहि अ-न्यथा करै कौन जन ॥ १ ॥ जासुवेदवानी बड़दाम । दृढ़गलबंधा कर्म गुणनाम ॥ तामेंबँधे हरिहि हम ऐसे । बहतहै बैल धनीको जैसे ॥ २ ॥ गुणकर्मनकरि दुख सुख जो जो । देत हैं हरि हम लेत हैं सोसो ॥ ताही-केवश रहत हैं ऐसे । अंधसआंखिके वश जैसे ॥ ३ ॥ मुक्तहू निजतन धारैतोलौं । गर्वत्यागि प्रारब्धहै जौलौं ॥ और देह पुनि धरै न ऐसे । स्वप्नको तन जाग्यो जन जैसे ॥ ४ ॥ अहिवनहू में भययाते । संगहैं छह इंद्रीरिपुजाते॥आत्माराम जितेंद्रिय महा॥ताबुधको गृहदूषण कहा ॥ ॥ ५ ॥ पहलेछह इंद्री वैरीजे । घर में रहिं ऐसेजीतैंते ॥ ज्योंगढ़ में रहि

रिपुनि जीत जन। फिर तहां रहै जहां मानै मन ॥६॥ श्रीशुकउवाच ॥ त्रिभुवनगुरुकी यह आज्ञा सुनि। अपनीहै हलिकई जदपि पुनि ॥ अतिभागवत तऊप्रियव्रत जो। आदर सों शिरनाथ लईसो ॥ ७ ॥ विधिहूमनु की पूजालै पुनि। लखि सनमान प्रियव्रत नारद सुनि ॥ मनवाणी व्यवहार अगोचर। ताब्रह्महि सुमिरत गमनेश्वर ॥ ८ ॥ पायमनोरथ विधितेमनुजो। नारद को सम्मतलैके सो ॥ सुतहि राजदे अपुत्यागोचर। अतिही विषम बिषै विषकोशर ॥ ९ ॥ यों निर्मल मानद प्रियव्रत जो। हरि इच्छाते पायराज्य सो ॥ जिहि प्रभाव जग बंधन हरे। तिह हरिपद में नित चितधरै ॥ १० ॥

आयेनिशिचरहरिसेवापधरायअतिमनकोलगायवहीटहलसुहाई है। कहूंजातआवतनभावतमिलापकहूं आयनृपपूछेद्विजकहांसुधि आईहै। बोल्योकोऊतनधामश्यामसंगपागेसुनि अतिअनुरागेवेगि खबरमँगाईहै। कहोतुमजायईशइहांईअशीशकरो कहीभूपआयोहि यचाहउपजाईहै ॥ ५८० ॥ देखीनृपप्रीतिरीतिपूछीसबबातकही नैनअश्रुपातवहरंगीश्यामरंगमें। बरजतआयोभूपजायकेलिवायल्याऊं पाऊंजोपैभागमेरेवहीचाहअंगमें। कालिंदीकेतीरठाढ़ीभीरहग भूपलखी रूपकछुऔरैकहाकहैवैउमंगमें। कियोमनेंलाखवेरअयेअभिलाषराजा कीनीकुटीआयेदेशभीजेसोप्रसंगमें ॥ ५८१ ॥

भूपआयो॥ वनवारीदास मुन्शी अरु दारासिकोह शहजादो ताको प्रसंग राजाको आशीर्वाद न कियो तापै फकीर अरु वादशाहको प्रसंगपाँय फइलायदिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ जबलगयोगी जगतगुरु, तबलग आशानिरास। तुलसी आशाकरतही, जगगुरुयोगी दास ॥ १ ॥ कवित्त ॥ दुरित विदारनी सकलजगतारनी यह नाहिं मतिपारिनीहोप्यारी नाहकी। वृन्दावन रसकेलि कारिनीहो हारिनीहो सबनिके नीकी भांति तनमनदाहकी। सूरति सुकवि रबिनंदिनी कृपाकैदीजै लाड़िली औलालकी सुभक्ति उतसाहकी। और

जितीकामनाते सबैभवाहदेहु रहै परवाह एक तेरेभवाहकी ॥ १ ॥ छप्पय ॥ प्राणजाहु तो जाहु जाहु यश सकल बड़ाई। होहुधर्मको नाश भ्रमहि मग-गहो जड़ाई ॥ आधि व्याधिके दुख करें जेतनको जीरन। करो नहीं उपचारको हो नानापीरन ॥ बहु विधि वचन कठोर कहि सबै निरादर करो किन। श्रीवृन्दावनको छांड़िये यह आवो मन भूलिजिन ॥ ३ ॥

मूल ॥ गोविंदचंदगुणग्रथनकोखड्गसेनवाणीविशद ॥ गोपी ग्वालपितुमातुनामनिर्णयकियोभारी। दानकेलिदीपकप्रचुरअति बुद्धिउचारी ॥ सखासखीगोपालकाललीलामेंवितयो। कायथकु लउद्धारभक्तदृढ़अनतनचितयो ॥ गौतमीतंत्रउरध्यानधरतनत्या गोमंडलरसद। श्रीगोविंदचंदगुणग्रथनकोखड्ग ॥ १६३ ॥ टीका ॥ ग्वालियरवाससदारासकोसमाजकरै शरदउज्यारीअतिरंगबढ़्योभा रीहै। भावकीवढ़निदृगरूपकीचढ़नितत्ताथईकीरढ़निजोरी सुंदर निहारीहै। खेलतमेंजायमिलेत्यागितनभावनासों झेलतअपारसुख रीझिदेहवारी है। प्रेमकीसचाईताकीरीतिलै दिखाईभई भावकनि सरसाई वातलागीप्यारीहै ॥ ५८२ ॥

वाणी विशद ॥ पद ॥ द्वै गोपिन विचविच नँदलाला। श्याम मे-घके दुहूं ओर राजत नवादामिनि वाला। करत नृत्य संगीत भेद गति गरजत मोर मराला। फहरत अंचल चंचल कुंडल थहर रहै उरमाला ॥ मध्यमिली मुरली मोहन ध्वनि गान वितान छयो तिहिं काला। चलियेझु-मकि झंकझंकरि वलयमिलि नूपुर किंकिणि जाला॥देवविमाननि कौतुक मोहे लखि भयो मदन विहाला। खड्गसेन प्रभु रैनिशर्दकी बाढ़्यो रंगर-साला ॥ १ ॥ पदपद गावत गावतही प्राण त्यागे देहवारी है। देह छो-ड़िकै ताही भावको प्राप्त भयो। सनेहकी द्वैजाति एक विछुरनि पूरे सनेही तन मिलिहूंमें छोड़ै विछुरनहूंमें ॥ १ ॥ दोहा ॥ चढ़िकै मैन तुरंग परचलिवो पावकमाहिं। प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निवहत नाहिं ॥ २ ॥

मूल ॥ सखाश्याममनभावतोगंगाग्वालगँभीरमत ॥ श्यामाजूकीसखीनामआगमविधपायो । ग्वालगायव्रजगाँवपृथकनीकेकरिगायो ॥ कृष्णकेलिसुखझिलिअवटउरअंतरधरई । तारसमेंनितमगनअसद्आलापनकरई ॥ व्रजवासआशव्रजनाथगुरुभक्तचरणरजअनन्यगाति । सखाश्याममनभावतो० ॥ १६४ ॥ टीका ॥ पृथ्वीपतिआयोवृंदावनमनचाहभई सारंगसुनावैकोऊजोरावरिल्याये हैं वल्लभहूसंगस्वर भरतहीछायोरंग अतिहीरिझायोदृगअँशुवाबहायेहैं । ठाढ़ोकरजोरिविनैकरीपैनधरीहिये जियेव्रजभूमिहीसोंवचनसुनायेहैं । कैदकरिसाथलिये दिल्लीतेछुटायदिये हरीदासतौंवरनेंआयेप्राणपाये हैं ॥ ५८ ॥

व्रजवास आश ॥ कवित्त ॥ निकुंजको चंद अरविन्द रस सिन्धु को लाड़िली कुंवरि मोहिं यहै दीजे । आनन्द को धाम अभिराम या विपिन को जनम पर जनम कोऊ जीव कीजे ॥ रहूं अति धूरि धूसर सदा प्रेम मय सुनत वर वानी कल केलि जीजे । नवल नव कुंज में फिरों अलबेली दिन निरखि वन रूप भरि दृगन पीजे ॥ १ ॥ परे जे पतौवा सूखे भूख में पीयूष जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी तोको जीवका । प्यास ते बढ़ैजू पीर तरनि तनैया तीर अंजलि को भरि धीर छीर नीर पीवका । केलि कल जोहत विमोहत सु ह्वै है कवि वृन्दावन कुंज पंकज अमर अमीनका । आनन्दमें झूमि घूमि बसोंगा विलास भूमि आरती को दूमि जैसे सुख पावै हीवका ॥ २ ॥ व्रजभूमि को लाल जू ने स्वाद अपने मुख सों लियो ब्रह्मांड घाटपै ॥ १ ॥ दृग अँशुवा ॥ दोहा ॥ रूप चोज की बात पुनि, और कटीली तान । रसिक प्रवीननके हृदै, छेदन करै वे बान ॥ १ ॥ बतरस नीर गँभीर अति, कोउ न पावत थाह । मीन लीन रस रसिक जो, सोई पावत ताह ॥ २ ॥

मूल ॥ सोतीइलाचसंतानिसभाद्युतियदिवाकरजानियो ॥ परमभक्तिपरतापधर्मध्वजनेजाधारी । सीतापतिकोसुयशवदनशोभितअ

तिभारी ॥ जानकीजीवनिचरणशरणथातीथिरपाई। नरहरिगुरुप्र सादपूतपूतैंचलिआई ॥ रामउपासकछापदृढऔरनकछुउरआनियो। सोतीश्लाघसंतनिसभादुतियदिवाकरजानियो ॥ १६५ ॥ जीवतय शपुनिपरमपदलालदासदोनोंलही ॥ हृदैहरिगुणखानिसदासतसँग अनुरागी। पद्मपत्रज्योंरह्योलोभकीलहरनलागी ॥ विष्णुरातसम रीतीवघेरैंसोतनत्याज्यों। भक्तवरातीवृंदमध्यदूलहज्योंराज्यों ॥ खरीभक्तिहरिषांपुरैंगुरुप्रतापगाढ़ीगही। जीवतयशपुनिपरमपदला लदासदोनोंलही ॥ १६६ ॥

सुयश वदन शोभित ॥ दोहा ॥ तुलसी रसना जो भली, निशि दिन सुमिरै राम ॥ नहीं तो खैंचि निकारिये, मुखमें भलो न चाम ॥ १ ॥ छापदृढ ॥ सवैया ॥ आगम वेद पुराण बखानत कोटिक निर्गुण जाहि न जाने। जे मुनि ते पुनि आपहि आप को ईश कहावत सिद्ध सयाने। धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग वैराग लै जीव पराने। को करि शोक मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ बिकाने॥ १ ॥ जीवत यश ॥ कुंडलिया ॥ एक द्वैद्वै अरु चौपरी पुनि लाई दुहु हाथ॥ पुनि लाई दुहुँ हाथ कथा हरिजन मिलिगावै। जीवत यश जगमाहिं बहुरि सदगति को पावै ॥ देव पितर विधि अवधि कोऊ बाधा नहिं करई। अनन्य भजन गुरु गदित नित्य गोविंद अनुसरई ॥ अगर उभै ताकी बनै ह्वै संतनिके साथ। इक द्वैद्वै० ॥ १ ॥ कायाकसो कै बन बसो, हँसो रहो गहि मौन। तुलसी मन जीते विना, मिटै नहीं दुख जौन ॥ विष्णुराते वघेरे में पारायन करवाई पूरी भई जब शरीर त्यागि दियो ॥ १ ॥

भक्तनहितभगवानरचीदेहीमाधौग्वालकी ॥ निशिदिनयहैविचा रदासजिहिविधिसुखपावैं। तिलकदाससोंप्रीतिहृदैअतिहरिजन भावैं ॥ परमारथसोंकाजहियेस्वारथनहिंजानैं। दशधामत्तमरालस दालीलागुनगानैं। आरतहरिगुणशीलसमप्रीतिरीतिप्रतिपालकी। भक्तनहित० ॥ १६७ ॥ अगरसुगुरपरतापतेपूरीपरीप्रयागकी॥ मा

नसवीचककायरामचरणनचितदीनों । भक्तनसोंअतिप्रेमभावना करिशिरलीनो ॥ रासमध्यनिजोंनिदेहद्युतिदशादिखाई । आड़ौच लियोअंकमहोछैपूरीपाई ॥ क्यारेकलशऔलीध्वजाविदुपश्चाघाभा गकी। श्रीअगररसुगुर० ॥ १६८ ॥ प्रगटअमितगुणप्रेमनिधिधन्य विप्रजिननामधरचो ॥ सुंदरशीलसुभावमधुरवाणीमंगलकरु । भक्तनकोसुखदैनफल्योवहुधादशधातरु ॥ सदनवसतनिर्वेदसार भुकजगतअसंगी । सदाचारउदारनेमहरिदासप्रसंगी ॥ दयादृष्टिव शआगरैंकथालोकपावनकरचो । प्रकटअमितगुणप्रेमनिधिधन्य विप्र० ॥ १६९ ॥

दयादृष्टिकरिकै जगत्को पार उतारै।याते वृंदावन निकट ताहि छोडिकै आगरे रहै कथातो सबहीकहैं। पै क्रियावान जनकी सुनिकै पारलगैं॥ कवित्त ॥ जैसे शशिनिशिको अकाश में प्रकाश पावै औसिरावै ताप-तनकी । तैसे रसिकाई औ अननताई वात मुख शोभित हैं क्रिया वानजा नकी। जैसे धनधामधाम श्यामजूके लागेकाम होत अभिराम दुख-ग्राम नाशैमनकी। ऐसे हरि गुण कोऊ पुण्य न वखानकरै तौपै कान प्राणहरै गुणगनकी ॥ १ ॥ आगरे वृंदावन के घाटको, जल आवत इहबाट। ताते यह है आगरो, और गांव सबघाट ॥ १ ॥

टीका ॥ प्रेमनिधिनामकरैसेवाअभिरामश्यामआगरोशहरानेशि शेशजलल्याइये। वरपासुऋतुजिततितअतिकीच भई भईचितचिं ताकैसेअपरसआइये । जोपैअंधकारहीमेंचल्योतौविगारहोत चले यों विचारिनीचछुवैनसुहाइये । निकसतद्वारजवदेख्योशुकवारएक हाथमेंमसालयाकेपाछेचलेजाइये ॥ ५८४ ॥ जानीयहैवातपहुँचाये कहूंजातयहअवहींनिलातभलेचैनकोऊधरीहै । यमुनालौंआयो अचरजसोलगायोमन तनअन्हवायोमतिवाहीरूपहरीहै ॥ घटभरि धरचोशीशपटवहआयगयोआयगयोघरनहींदेखकहाकरीहै । लागी चटपटीअटपटीनसमझिपरैपटभटिभईनईनैनहीरझरीहै ॥ ५८५ ॥

सुकुवार ॥ एक मसालमें कूपीते तेल डारिविकी शोभाहो न्यारी ॥ कवित्त ॥ लाल चहु चही पागबांधी अनुरागही सोंतापै झुकि रह्यो तुर्रो अतिही विशालहै। झँगा घेरदार फेंटा बांध्यो अति चातुरी सों गरे गुंज-माल शोभादेत प्रेम जाल है। बाहु ऊंचोकै चढ़ाय चूड़ा चमकाया अति औचकही आये जिस हाथ में मसाल है। आगे आगे चल्यो जाय मनको लगाय लियो सुधि बिसराय चित करत निहाल है ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जामुखसों जो नाम, निकसत सो प्रगटतभयो। बहुरंगी वह श्याम, है सरूप अँखियन लग्यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ पुतरीकारी आंखिकी, रूप श्यामको मानि ॥ वासों सब जगदेखिये, वा बिन अंधोजानि ॥ ३ ॥ कारीदृगकी पूतरी, कारो हरिको अंग ॥ जिनसों सब जगदेखिये, जिन बिनरूप न रंग ॥ ४ ॥ प्रेमकी निधि प्रतिप्रेमनिधि, भरचो प्रेमउरजाल। सोई मूर-तिधारकै, प्रगट भयो तिहिकाल ॥ प्रेमप्यारेमें अंतर नहीं ॥ १ ॥ प्रेम प्रीतिमें अंतर येतो। बीसीतीन साठहै तेतो ॥ २ ॥ कहाकरी है और तौ अंधेरेके चोर याने मसालबरायकै चितचुरायो भजन भूलिगयो मसालहीको ध्यानरहै ॥ ६ ॥

कथाऐसीकहैंजामेंगहैंमनभावभरेकरैंकृपाहष्टिदुहुजनदुखपायो है। जायकैसिखायोबादशाहउरदाहभयोकहीतियाभलीकोसमूहच रह्यायोहै ।आयेचोवदारकहेचलौयहीबारबार झारीधरचोप्रभुआगे चाहैशोरलायोहै । चलेतबसंगगयेपूछैंनृपरंगकहा तियनिप्रसंगक रौकहिकैसुनायोहै ॥ ५८६ ॥ काहूभगवानहीकीबातसोबखानकहौं आनिबैठेनारीनरलागीकथाप्यारीहै । काहूकोविडारैंझिझकारैनै कुटाविषे दृष्टिकैनिहारैताकोलागैदोषभारीहै । कहीतुमभली तेरीगलीहीकेलोगमोको आनिकैजताईवहबातकछून्यारीहै । बो ल्योयाकोराख्योसबकरौनिरधारीकेचलेचोबदारलैकेरौकेप्रभुधारी है ॥ ५८७ ॥ सोयोबादशाहनिशिआयकैसुपनादियोकियोवाको

इष्टभेषकहीप्यासलागीहै । पीवोजलकाआवखानेलेवखानेतव अति हीरिसानेकोपिवावैकोडरागीहै । फिरिमारीलातअरेसुनीनहींवातमें रीआयफुरमावोज्योईप्यावैवड़भागीहै । सोतौतैलैकैदकरचोसुनि अरवरचो डरचोभरचोहियेभावमातिसोवततैंजागीहै ॥ ५८८ ॥ वौ रेनरताहीसमैवेगिदेलिवायल्याये देखलपटायेपायनृपहगभीजेहैं । साहिवातिसायेजायअवहींपिवावोनीरऔरपैनपीवेंएकतुमहींपरीझेहैं। लेवोदेशगावँसदापावँहीसोंलग्योरहौं गहोनहींनेकुधनपायवहुछीजे हैं । संगदैमसालताहीकालमेंपठायेयौ कपाटजालखुलेलालप्यायो जलधीजेहैं ॥ ५८९ ॥

कथाऐसी कहै ॥ दोहा ॥ नातोनेहरस रंगभरि, कहै कथा निर्वेद ॥ जैसे चिठी विदेशकी, वाचनहीमें भेद ॥ १ ॥ गहो नहीं नेकु ॥ दोहा ॥ जबलगि भक्तिसकामता, तवलगि कचीसेव ॥ कहि कवीरवेक्योंमिलै निहकामी निजदेव ॥ २ ॥

मूल ॥ दूवरोजाहिदुनियाकहैसोभक्तभजनमोटोमहंत । सदाचा रगुरुशिष्यत्यागिविधिप्रगटदिखाई । वाहरभीतरविशदलगीनहिंक लियुगकाई ॥ राघवरुचिरसुभावअसदआलापनभावैं । कथाकीरत ननेममिलैसंतनिगुणगावैं ॥ तापनोलिपूरोनपक ज्योंघनअहरनही रोसहंत । दूवलोजाहि० ॥ १७० ॥ दासनिकेदासंतकोचौकसचौ कीयेमंडी ॥ हरिनारायननृपतिपदमवेरछैविराजे । गावँहुशंगावाद अटलऊधोभलछाजे ॥ भैलैतुलसीदासभटख्यावदेवकल्याने । वो हिथविगरामदाससुहेलैपरमसुजाने ॥ औलीपरमानंदकैधुजासवलध र्मकोगंडी । दासनिकेदासं० ॥ १७१ ॥ अवलाशरीरसाधनसवला येवईहरिभजनवल । दमाप्रगटसवदुनीरामवाईवीराहीरामानि । ला लीनारालक्षगगुलपारवतीजगतधनखीचनि ॥ केसिधनागोमतीभक्त उपासिनि । वादररानीविदितगंगायमुनारैदासनि ॥ जेवाहरपाजोप सिनिकुंवररायकीरतिअमल । अवलाशरीरसाधन० ॥ १७२ ॥

कन्हरदाससंतनिकृपाहरिह्दैलावोलह्यो ॥ श्रीगुरुशरनैआयभक्ति मारगसतजान्यो । संसारीधर्महिछांड़िझूठिअरुसांचपिछान्यो ॥ ज्यों शाखाद्रुमचंद्रजगततेइहिविधिन्यारो । सर्वभूतसमदृष्टिगुणगंभीरअतिभारो ॥ भक्तभंलाईवदननितकुवचनकबहूंनाहिंकह्यो । कह्नर० ॥

भजनबल ॥ हरिके भजन सों कलियुग में साधन सबल किये ॥ छप्पय ॥ महाकठिन कलिकाल में कहोलाज कैसेरहै ॥ जनम करम नितनेम प्रेमसों हरिगुण गावै ॥ ताहि कहत पाषंड काहि तू जगभरमावै ॥ लावरलौंड लवार ताहि आदर करिलीजे ॥ शीलवंत गुणवंत साधु पकरि ताहि धक्कादीजे ॥ चतुर दासइक आशहरि सोई व्रतपन नाहिंनगहै ॥ महाकठिन० ॥ १ ॥ सहन शील संतोष मनमें नहिंलावै ॥ निष्प्रेही हरिशरण प्रेमसों हरिगुण गावै ॥ रागद्वेष सों रहत रुचिर सतसंगति कीजे ॥ हरि गुरु साधुप्रसाद सोई हिरदे धरिलीजे ॥ चतुरदास राधारव न निशि बासर इहि बिधि कहै ॥ महाकठिन कलिकालमें० ॥ २ ॥ कवित्त ॥ आजु कलिकाल ऐसो आयो है कराल अति राखै जो गुपाल टेक तौतो बृन्दजीजिये ॥ बोलिये न चालिये जु बैठि पिंड पालिये जु आंखि कान मूंद दोय मौन ब्रत लीजिये ॥ देखी अनदेखी जानि सुनी अनसुनी मानि माला गहि पानि हान लाभ न चित दीजिये ॥ कीजिये नरोष जोपै कहै कोऊ बीस सीष लीजे धरि शीश जगदीश साषि कीजिये ॥ ३ ॥ यह भक्ति को स्वरूप है साँचो लह्यो एक तौ देखत को बड़ो एक गुण में बड़ो जैसे गोरष की डीबीसो इनको हृदय गुण में बड़ो दश अंगुल को तापै दश हजार गारी समाय जाहिं क्षमा सों ॥ १ ॥ सबही ते धरनी बड़ी जापै नव खंड बसैं ताते बड़े सिन्धु तापै टापू दिखरातहै । ताते बड़े कुंभ ताते तीनही चुलू में किये ऐसेहू अकाशे में अलेषै जात हैं ॥ दीरघ गगन अनी पूरन पगन भयो माप्यो ब्रह्मांडगयो बामनको गातहै । होतो तुम बड़े तुमहू ते बड़े संत जाके हृदय में जगन्नाथ जू मसि समातहै ॥ १ ॥ दोहा ॥ सबही घट में हरि

बसे, ज्यों गिरि सुतमें ज्योति ॥ ज्ञान गुरुचकमक बिना, कैसे परगट होति ॥ २ ॥ झूठि अरु सांचिसो संतसों ज्ञान होय जब पिछाने जैसे गुमास्ते के संग सों साहूकार के बेटे ने झूंठो जवाहर पिछान्यो तब फोरिडारयो ॥ ऐसे सतसंग सोंज्ञान है जब संसार झूंठो जानै जब छोडि दे ॥ १ ॥ कुबचन कबहूं ॥ दोहा ॥ संत न निंदा अति बुरी, भूलि करो जिन कोय । किये सुकृत सब जनमके, क्षणमें डारै खोय २ ॥

लव्योलटेराआनिविधिपरमधरमअतिपनितानि । काहिनीरहि नीएकएकप्रभुदअनुरागी । यशवितानजगतन्योसंतसंमतबड़भागी । तैसोईपूतसपूतनूतफलजैसोपरसा । हरिहरिदासनिटहलक वितरचनापुनिसरसा । सुरसुरानंदसंपुटायहढकेशवअधिकउदार मन । लव्योलटेराआनिविधि परमधरमअतिपीनतन ॥ १७४ ॥ केवलरामकलियुगकेपतितजीवपावनकिया । भगतभागवतविमु खजगतगुरुनामनजाने । ऐसेलोगअनेकऐंचिसनमारगआने । निर मलरतिनिष्कामअजातेंसदाउदासी । तत्त्वदरशीतमहरणशील करुणाकीरासी । तिलकदासनवधारतनकृष्णकृपाकरिदृढदिया । केवलरामकलियुगकेपतितजीवपावनकिया ॥ १७५ ॥ टीका ॥ घरघरजायकहैंयहैदानदीजैमोकोकृष्णसेवाकीजै नामलीजैचितला यकै । देखेभेषधारीदशबीसकहुअनाचारी दियेप्रभुसेवनकेरीतिहिं सिखायकै । करुणानिधानकोऊसुनैनहींकानकहूं बैलकेलगायोसां टोलोटेदयाआयकै । उपन्योप्रगटतनमनकीसचाइअहोभयेतदाकार कहोकैसेसमुझायकै ॥ ५९० ॥

लव्यो लटेरा ॥ दोहा ॥ कविरा हरिके भावतो, दूरिहि तेदीखंत ॥ तन छीने मन उन मने, जग रूठडे फिरंत ॥ सोरठा ॥ कहा चीकने गात, रस पूछत खिसले परैं । सरस न आवै बात, राख उडै रूखे हिये ॥ २ ॥ और अनुमान करै जैसे मुजावर औ काजीने लँगरी भेड को अनुमान कियो तत्त्वदरशी तापै दृष्टांत बादशाह अरु सुथरा को घर घर जाय कहै

क्योंकि करुणासिंधुहै ॥ जैसे कोऊ बेरी हथकरी वाले को जायकै छुटावै क्योंकि वह तो आपसकै नहीं ॥ आपनहीं जायके छुटावै।साधवो दीन वत्सलाः। जैसे चंद्रा सुथरा ने घर बैठेही बादशाह को तत्त्व दरशायो रीति दिखायके भोग लगाय के खायो ॥ १ ॥

मूल ॥ श्रीमोहनमिश्रितपदकमलआशकरनयशविस्तरचो । धर्मशीलगुणसींवमहाभागवतराजऋषि । पृथ्वीराजकुलदीपभीम सुतविदितकील्हाशिषि । सदाचारअतिचतुरविमलवाणीरचनापद । शूरधीरउदारविनयभलपनभक्तानिहद । सीतापतिपदराधासुबरभ जननेमकूरमधऱ्यो । श्रीमोहनमिश्रितपदकमल आशकरनयश विस्तऱ्यो ॥ १७६ ॥ टीका ॥ नरवरपुरताकोराजानरवरजानों मोहनजूधरियेसेवानीकोकरी है । घरीदशमंदिरमेंरहैरहैचौकद्वार पावतनजानकोऊऐसीमतिहरीहै । परचोकोऊकामआयअबही लिवायल्यावो कहैपृथ्वीपतिलोगकानमेंनधरीहै । आईफौजभारी सुधिदीजियेहमारीसुनि वहूबातटरीअतिपरीखरवरीहै ॥ ५९१ ॥ कहिकैपठाईकहोकीजियेलराईसुनिरुचिउपजाईचालिपृथ्वीपति आयोहै। पऱ्योशोचभारी तबबातयोंबिचारी कहीआयएकजावोगयो अंचिरजपायोहै । सेवाकरिसिद्धिसाष्टांगह्वैकेभूमिपरेदेखिबडीवेरि पावँखड़गलगायोहै । काहिगईऐड़ीऐंपैटेढीहूनभौहकरीकारिनित नेमरीतिधीरजादिखायोहै ॥ ५९२ ॥ उठिचिकडारितबपाछे सोनिहारिकियोमुजराविचारि बादशाहअतिरीझेहैं । हितकीसचा ईयहैनेकुनकचाईहोतचरचाचलाईभावसुनिसुनिभीजेहैं । बीतेदिन कोऊनृपभक्तसोसमायोपृथ्वीपतिदुखपायोसुनीभोगहरिछीजेहैं ।करै विप्रसेवातिन्हैंगावँलिखिन्यारेदिये वाकेप्राणप्यारेलाड़करीकरौकाहि धीजे हैं ॥ ५९३ ॥

पावत न जान कोऊ षटकेमें मनचट जाय ॥ १ ॥ छिनमें प्रवीन छिन माया में ॥ २ ॥ पै अठालौ मन न रहै मन लगाइये बांशकी गां-

ठिकी नाईं साधन करिये मन वश करिवेको जैसे ठाटी हरीने साधन कियो सो उलीचोही धीरज फकीर शहजादे को दृष्टांत ॥ १ ॥

मूल ॥ निहकंचनभक्तनिभजै हरिप्रतीतिंहरिवंशके ॥ कथा कीर्तनप्रीतिसंतसेवाअनुरागी । खरियाखुरपारीतिताहिज्योंसर्वसु त्यागी । संतोषीशुठिशीलअसदआलापनभावै । कालवृथानहिं जायनिरंतरगोविंदगावै ॥ शिषसपूतश्रीरंगकोउदितपारपदअंशके । निहकंचनभक्तनभजैहरिप्रतीतिहरिवंशके ॥ १७७ ॥

खरिया खुरपा रिति ॥ भारत को इतिहास खरिया खुरपा सर्वसदान दीये । सो बदरिया वाही के शिरपर रही । बड़े बड़े राजननें बड़ो बड़ो दान दियो । पैखरिया खुरपा की बरोबर न भयो सर्वसु दियो ॥

हरिभक्तभलाईगुणगंभीरबांटेपरीकल्यानके ॥ नवलकिशोरदृढ़व्रतअनन्यसारगईयकधारा । मधुरवचनमनहरणसुखदजानतसंसारा ॥ परउपकारविचारिसदाकरुणाकीरासी । मनवचसर्वसुरूपभुक्तपदरैनिउपासी ॥ धर्मदाससुतशीलशुठिमनमान्योकृष्णसुजानके । हरिभक्तभलाईगुनगंभीरबांटेपरीकल्यानके ॥ १७८ ॥ वीठलदासहरिभक्तकोदुहूंहाथलाडूलिया ॥ आदिअंतनिरबाहभक्तपदरजव्रतधारी । रह्योजगतसोंऐंड़तुच्छजानैसंसारी ॥ प्रभुतापतिकीपतिकीपधितप्रकटकुलदीपप्रकासी । महतसभामेंमानजगतजानैरैदासी ॥ पदपढ़तभईपरलोकगतिगुरगोविंदयुगफलदिया ॥ वीठलदासहरिभक्तकोदुहूंहाथलाडूलिया ॥ १७९ ॥

हरि भक्त भलाई ॥ छप्पय ॥ गुरु भक्ता गुणवंत ज्ञान विज्ञान विचारै । पर उपकारी पिंडमान पर द्रोह निवारै । परिधन को परित्याग रहै परनारि उदासा । सर्वात्मा सर्वज्ञ सर्वउरमें नितवासा । तत्त्ववेत्ता तिहुंलोक में ऐसी धरनी जो धरे । ईको तरसै आपने पुरुष पुरातन उद्धरै ॥ १ ॥ तुच्छ जाने ॥ दोहा ॥ चाख्यो चाहै प्रेमरस, राख्यो चाहै मान । इक द्वैद्वै अरु चोपरी, देत सुनौ नहिं कान ॥ २ ॥

भगवन्तरचेभारीभगतभक्तनके सनमानको ॥ क्वाहवश्रीरंगसु मनिसदानंदसर्वसुत्यागी । श्यामदासलघुवअनन्यलाषाअनुरा गी। मारुमुदितकल्याणपरसवंशीनारायन । चेताग्वालगुपाल शं- करलीलापारायन । संतसेयकारजकियातोषतश्यामसुजानको । भगवंतरचेभारीभगत भक्तनकेसनमानको ॥ १८० ॥ ति लकदासपरकामकोहरीदासहरिनिर्मयो । शरणागतकोसिवरदान दधीचिटेकबलि । परमधरमप्रहलादशीशजगदेवदेनकलि । बीकावतबानैतभक्तिपनधर्मधुरंधर । तूबरकुलदीपकसंतसेवानित अनुसर । पारथपीठअचरजकौनसकलजगमेंयशलियो । तिलक दासपरकामकोहरिदासहरिनिर्मयो ॥ १८१ ॥ टीका प्रह्लादआदि भक्तगायेगुणभागवतसर्वइकठौर आयदेखेहरिदासमें । रीझजगदेव सोंयोंकहिकैबखानकियो जानतनकोऊसुनोकरलैप्रकासमें। रहैए कनटीशक्तिरूपगुणजटीगावै लागैचटपटीमोहयाचैमृदुहासमें। राजा रिझवारकरैदेवकोविचारिपैनपावैसारकाटयोशीशराख्योतेरे पासमें ॥ ५९४ ॥ दियोकरदाहनोमेंयासोंनहींयाच्योकाहू सुनि एकराजा भेदभावसोंवुलाई है।नृत्यकरिगाईरीझलेवोकही आयदेऊओटयो वायोंहाथरिसभरिकैसुनाईहै । येतोअपमानपानदक्षिणलैदियोयेहो नृपजगदेवजूकोऐसेकहांपाईहै । तासोंदशगुणीलीजैमोकोसोदिखा इदीजैदईनहींजायकाहूमोहींकोसुहाईहै ॥ ५९५ ॥

तोषत श्याम ॥ श्लोक ॥ भक्ते तुष्टेहरिस्तुष्टो हरौतुष्टेचदेवताः ॥ भवं- ति सिक्ताःशाखाश्चतरोर्मूलनिषेचने । रहै एकनटीसोकाली को अवतार रहे। सो वह नटीरूप गुणगान । राई त्रिदोषता में आयकै कोन मरै सो जगदेव पँवार मोह्यो सो मरयोही है ॥ १ ॥

कितौसमुझावैल्यावोकहै यहैजकलागीगइबड़भागीपासवस्तुमे रीदीजिये । काटिदियोशीशतनरहैईशशक्तिलखोल्याईबकशीशथा

रढांपिदेखिलीजिये । खोलिकैदिखायोनृपमूरछागिरायो तनधनकी नवातअबयाकोकहाकीजिये । मैंजुदीनोहाथजानिआनिग्रीव जोरि दईलईवहीरीझपदतानसुनिलीजिये ॥ ५९६ ॥ सुनीजगदेवरीतिप्री तिनृपराजसुतापितासोंवखानिकहींवाहीकोलैदीजिये । तवतोबुला येसमुझाये बहुभांति खोलिवचनसुनाये अजूवेटीमेरी लीजिये ॥ नल्योसतवारजव कहीडारोमारिवेलैमारिवेकोवोलीवहमरोमतिभी जिये । दृष्टिसोंनदेखेकहील्यावोकाटि मूड़ल्यायेचहैंशीशआंखिनि कोगयोफिररीझिये ॥ ५९७ ॥

रीझपद ॥ कवित्त ॥ नृत्यगान अभिनय रूपरीझि रचिकरि विधिहू को शोच परयौ नेही कैसे बचैंगे । लाख लाख लोगन के घाट घर केस कहूं पांच सात बनिआये तेऊ यामें पचैंगे । करत विचार शोच सागरन वारापार वेई करतार कछु बुद्धिवल रचैंगे । हियेही में आग कही मति पछिताहि तब वाहि वाहि रोयवो वनाय और सचैंगे ॥ सोरठा ॥ नेही अक्षर दोय, यैतौ बिधना ना रचे । को पावैगो और, नेह पंथ नेही विना ॥ १ ॥ प्रीत नृप राजसुताके भई वाके रूप पै रीझि पादशाह की वेटी जाति पांति न बिचारी ॥ दोहा ॥ नृप विद्या अरु वेलि तिय, येन गनैं कुल जाति । जो इनके नियरे बसै, ताहीको लपटाति ॥ ३ ॥ याको कहा कीजिये रीझके पचायवेको वाह वाड़कार है ॥ १ ॥ शाहजहां को दृष्टान्त ॥ ३ ॥

निष्ठारिझवाररीतिकीनीविस्तारियह सुनोसाधुसेवाहरीदासजूने करीहै । परदानसंतसोंहैदेतहैंअनन्तसुखरह्योसुखजानिभक्तसुताचि तधरीहै । दोऊमिलिसोवैंऋतुग्रीपमकीछातपर गातपरिगातमोंये सुधिनहींपरीहै । दातनकेकरवेकोचढोनिशिशेषआप चादरउठा यनीचेआयेध्यानहरीहै ॥ ५९८ ॥ जागिपरेदोऊअरवरदेखिचा दरकोपेखिपहिंचानिसुतापिताहीकीजानीहै । सन्तदृगनयेचलेबै ठेमगपगलयेगयेएकांतमें योंविनतीवखानीहै । नेकुसावधानह्वैकै

कीजियेनिशंककाज दुष्टराजछिईपाय कहैकटुवानीहै । तुमकोजु नावधूरेजरैसुनिहियोमेरोडरै निंदाआपनिहोतसुखदानीहै ॥५९९॥ इतनीजतावनीमेंभक्तिकोकलंकलगेऐपैशंकवहीसाधुघटतीनभाइये। भईलाजभारीविषयवासधोयडारीनीके जीकिदुखराशिचहैकहूंउठि जाइये । निपटमगनकियेनानाविधि सुखदिये पैनजानिमिललाल निलड़ाइये । गोविंदअनुजजाकेवांसुरीको सांचोपनमनमेंनल्या योनृपइहिविधिगाइये ॥ ६०० ॥

वांसुरी को सांचोपन ॥ छप्पय ॥ टेक एक वंशी तनी जनगोविन्द की निर्वही। युगलचंद किरपाल तासुको दास कहावे। पादशाह सों पैज हुकुम नहिं वेनु वजावे । वोकावत वानेत भक्त वंशपांडव अवतारी । कपिज्यों वीरालियो उठाय शीश अंबर के झारी । पीठपरीक्षित सार का सभाशापसंतन कही। टेक एकवंशीतनी जन गोविन्दकी निर्वही ॥ ॥ १ ॥ दोहा ॥ गोविन्दा गाढ़ी गही, हुकुम किया वादशाह । कैमुरली की टेरदै, कै अंबर चुपपेवाह ॥ २ ॥ अंबर चपुपै वाहसी, मुरलीवाजै नाह ॥ मुरलीवाजैनाह देह, एकै साधवके माह ॥ ३ ॥

मूल ॥ नंदकुवँरकृष्णदासको निजपदतेनूपुरदियो ॥ तानमा नसुरतालसुंदरशुठसोहै । सुवाअंगभ्रूभंगगानउपमाकोकोहै। रत्ना करसंगीतरागमालारँगरासी । रीझेराधालालभक्तपदरैनिउपासी । स्वर्णकारखडगसुवनभक्तभजनपनदृढ़लियो नंदकुवँरकृष्णदास कोनिजपदतेनूपुरदियो ॥ १९२ ॥ टीका ॥ कृष्णदासयेसुनाररा धाकृष्णसुखसार लियोसेवाकरिपाछेनृत्यगानविस्तारिये । ह्वैकरि मगनकाहूदिनतनसुधिभूली एकपगनूपुरसोगिरचोनसँभारिये । लालअतिरंगभरेजानियतभंगभईपायँनिजखोलिआपवांध्योसुखभा रिये । फेरसुधिआईदेखिधारालैवहाइनयनकीरातियोंछाईजगभक्ति लागीप्यारिये ॥ ६०१ ॥ मूल ॥ परमधरमप्रतिपोषिकै संन्या

सीयेमुकुटमनि। चित्तसुखटीकाकारभक्तिसर्वोपरिरापी। दामोदरती रथरामअर्चनाविधिभापी ।। चन्द्रोदयहरिभक्तनरसिंहारनकीनी । माधोमधुसूदनसरस्वती परमहंसकीरतिलीनी । प्रबोधनंदरामभद्र जगदानंदकलियुगधनि । परमधरम० ॥ १८३॥ प्रबोधानंदस रस्वतीकीटीका श्रीबोधानंदबड़ेरसिकआनंदकन्दश्रीचैतन्य चंद्रजू केपारषदप्यारेहैं । राधाकृष्णकुंजकेलनिपटिनचेलि कहीझेलरस रूपदोऊकियेदृगतारेहैं। वृन्दावनवासकाहुलासलैप्रकाशकियोदियो सुखसिंधुकर्मधर्मसबटारेहैं । ताहीसुनिसुनिकोटिकोटिजनरँगपायो विपिनसुहायोबसेतनमनवारे हैं ॥ ६०२॥ मूल ॥ अष्टांगयोगत नत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी ॥ सरिताकूकसगांवसलिलमेंध्या नधरयोमन । रामचरणअनुरागसुदृढ़जाकेसांचोपन । सुतकल त्रधनधामताहिसोंसदाउदासी । कठिनमोहकोफंदतरकितोरीकुल फांसी । कीलिहकृपाबलिभजनकैज्ञानखड्गमायाहनी। अष्टांगयोग तनुत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी ॥ १८४॥

राग माला ॥ कवित्त ॥ भैरों बिलावल मिलावत ललित मांझ गूजरी देव गंधार प्रातही बिभासरी। प्रथम मेघ मलार रामकली टोड़ी मलार आसावरी जैतशिरी अमर घनाशिरी । हिंडोल सारंग नट अड़ानो उपावें घंटि कालिंगड़ी खंभायची सोहै चतुर मासरी । शिरी राग सिंध गोरी मालव बसंत टोड़ी सोरठ सदा रहत उदासरी ॥ १ ॥ दीपक सूहो कल्यान केदारो गान बखत बिहागरे को गावत बिलासरी। पंचम चढ़े अपान जंगली काफी सयानो माल गौड़ मालकोस राग को निवासरी। कहत दयाल पै गुपाल के छतीसों राग ऐसी विधि मोहन बजाई बन बांसुरी । सोई तो सुजान हरिके गुण गाय जाने वाकीको बकत ज्यों भुवंग लेत सांसरी ॥ २ ॥ राग ज्ञान ॥ सुखिनिसुखनिवासो दुःखितानां विनोदः श्रवणहृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः। रतिरभसविधाता वल्लभः कामिनी

नां जगति जयति नादः पंचमश्चोपभेदः ॥ १ ॥ भैरवः पंचमोनाद्यो मल्लारोगौड़मालवः । ललितोगुर्जरीदेशीबराड़ीरामकृत्तथा ॥ मतारागार्णवे राग्यः पंचैतेपंचमाश्रिताः ॥ २ ॥ नटनारायणःपूर्वोगंधारः सारंगस्तथा । ततःकेदारकर्णाटौ पंचैतेपंचमाश्रयाः ॥ ३ ॥ मेघोमल्लारकोमालकेशकः प्रतिमंजरी । आसावरी च पंचैते रागामल्लारसंश्रयाः ॥ ४ ॥ हिंडोलस्त्रीगुलाधारी गौरीकोलाहलस्तथा । पंचैतेगौरनामानं रागमाश्रित्यसंस्थिताः ॥ ५ ॥ भोपालोहरिपालश्च कामोदाघोरणीस्तथा । वेलावलीच पंचैतेरागादेशाकसंश्रिताः ॥ ६ ॥ अन्येचबहवोरागा जातादेशविशेषतः । मारूप्रभृतयोलोके पंचभद्रादिकाःस्मृताः ॥ ७ ॥ सस्वरंसरसंचैवसरागं मधुराक्षरम् । सालंकारप्रमाणंचपड्विधंगीतलक्षणम् ॥ ८ ॥ स्वरेणपदसंयुक्तंछंदसाचसुसंयुतम् । समानकं सतालंचसंगीतंतेनभण्यते ॥ ९ ॥ वृंदावन वासको हुलास ॥ कवित्त ॥ परेजे पतौवा सूखे भूखमैं पियूष जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी तोको जीविका । प्यासते बढ़े जु चार तरन तनैया तीर अंको भरि भरि धीर नीर पीविका । केलि कल जोहत स ह्वै हे कवि वृंदावन कुंज पुंज भ्रमर अमर अमीवका । आनंदमें झूमि घूमि बसौंगो विलास भूमि आरतको द्रुम जैसे सुखपावै हीवका ॥ २ ॥ छप्पय ॥ प्राण जाहुतौ जाहु होहि यश सकल बड़ाई । होहु धर्मको नाश भरम मन गहे जड़ाई । आधि व्याधिके दुःखकरै जेतनको जीरन । करौ नहीं उपचार कोटि ह्वो नाना पीरन । भगवान इहि विधि बचन कठोर कहि सबै निरादर करौ किन । श्री वृन्दावनको छाँड़िये यह आवो मन भलि जिन ॥ २ ॥

पूरणप्रगटमहिमा अनंतकरिहैकौनबखान । उदयअस्तपरबतगहरुमध्यसरिताभारी । योगयुगतिविश्वासतहांदृढ़आसनधारी । व्याघ्रसिंहगूजेंखराकछुशंकनमाने । अर्द्धनजातेपवनउलटऊरधको आने । शाखिशब्दानिर्मलकहाकाथियापदानिर्बान । पूरणप्रगटमहिमा अनंतकरिहैकौनबखान ॥ १८९ ॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापभटल

क्ष्मणअनुसरचो । सदाचारमुनिवृत्तिभजनभागवतउजागर । भक्तन सोंअतिप्रीतिभक्तिदशधाकोआगर । संतोषीशुठिशीलहृदयस्वारथ नांहिंलेशी । परमधरमप्रतिपालसंतमारगउपदेशी । श्रीभागवतवखा निकैनीरक्षीरविवरणकरचो । श्रीरामानुजपद्धाति प्रतापभटलक्ष्मण अनुसरचो ॥ १८६ ॥ दधीचिंपाछेदूसरीकरीकृष्णदासकलिजीति । कृष्णदासकलिजीतिन्योतिनाहरपलदीयो । अतिथिधरमप्रतिपाल प्रकटयशजगमेंलीयो ॥ उदासीनताकीअवधिकनककामिननहींरा त्यो । रामचरणमकरंदरहतनिशिदिनमदमात्यो ॥ गलितैगलितअ मितगुणसदाचारशुठिनीति । दधीचिपाछेदूसरीकरी कृष्णदासकलि जीति ॥ १८७ ॥ टीका ॥ वैठेहोगुफामेंदेखेसिंहद्वारआयगयो लयो योंविचारहोअतिथिआजुआयोहै । दईजांघकाटिडारिकीजियेअहार अजूमहिमाअपारधर्मकठिनवतायोहै । दियोदरशनआयसांचमेंरह्यो नंजाय निपटसचाईदुखजान्योनविलायोहै । अन्नजलदेवेहीकोझीख तजगतनरकारिकौनसकै जनमनभरमायोहै ॥ ६०३ ॥

योगयुक्ति विश्वास ॥ कवित्त ॥ एंडीवामेंपांव की लगावे इसीवन के बीच वाही जौन ठौर ताहि नीके कारिजानिये । तैसेही ग्रुगतिकारि विधिसों प्रकार मेट मेंटहूके ऊपर दक्षिण पावँ आनिये । सरलशरीर दृढ इन्द्रिय संयम करी अचल ऊर्ध्वदृश्यभ्रूके मध्य ठानिये । मोक्षके कपाट कोउ घोर त अवश्य मेव सुन्दर कहत सिद्ध आसन बखानिये ॥ १ ॥ छन्द ॥ दक्षिण ऊरू ऊपर प्रथम बामहिंपगआनिये । वायें ऊरू ऊपर तवहिं द-क्षिण पगठानहि । दोऊ कारि पुनि फेर दृष्टि पीछे कर आवय । दृढकै गहै अंगुष्ठ चिबुक बक्षस्थल लावय । इहिभांति दृष्टि उनमेष कारि अग्रनासि-का राखिये । सब व्याधि हरण योगीनकी पद्मासन पहिंचानिये ॥ २ ॥ प्रथम अंग यमकहो दूसरो नेमबताऊं । त्रिविध सुआसनभेद सुतो अव-तोहिं सुनाऊं । चतुर्थ प्राणायाम पंचम प्रत्याहारं । पष्ठंसुना यधीरण्य ध्यान सतंविस्तारं । पुनि अष्टंग समाधिके सो सबतोहिं सुनाइहौं । साव-

थानहै शिष्य सुनि भिन्न भिन्न समुझाइहौं ॥ ३ ॥ प्रथम अहिंसा सत्य जानि पुस्तेयं त्यागे। ब्रह्मचर्य दृढगहै क्षमा धृति सो अनुरागे। दया बड़ो गुण होय ओजव हृदय आनै। प्रत्याहार पुनि करै शौचनीके बिधि जानै। ये दश प्रकार के यम कहे हठ प्रदीपिका ग्रंथ में। जो पहिले इनको गहै सो चलत योगके पंथ में। तप संतोष गहै बुधि आस्तिक सो आनै। दान समझि करि देय मानि पूजा जोजानै। वचन सिद्धांतसु सुनो लाज मति दृढ करि राखै। जायक मुखसों असद आलापनभाखै। पुनि होशकरै इहि विधि जहां जैसी विधि तहां तैसी विधि सतगुरु कहैं। दश प्रकार के यमकहे ज्ञान विन कैसेकहै ॥ १ ॥

मूल ॥ भलीभांतिनिबहीभगतिसदागदाधरदासकी। लालबिहारीजपतरहतानितवासरफूल्यो। सेवासहजसनेहसदाआनँदरसझूल्यो। भक्तनिसोंअतिप्रीतिरीतिसबहीमनभाई। ऐसीअधिकउदाररसमहरिकीरतिगाई। हरिविश्वासहियआनिकै सपनेहूआननआशकी। भलीभांतिनिबहीभगति सदागदाधरदासकी ॥ १८८ ॥

टीका ॥ वुदानपुरढिगवागतामेंवैठेआयकरिअनुराग गृहत्यागपागेश्यामसों। गावँमेंनजातलोगकितेहाहाखातसुखमानालियोगात नहींकामअरुकामसों। परचोअतिमेहदेहवसनभिजायडारेतवहरिप्यारेवोलेस्वरअभिरामसों। रहेएकशाहभक्तकहीजायल्यावोउन्हें मन्दिरकरावोतेरोभरचोघरदामसों ॥ ६०४ ॥ नीठिनीठिल्याये हरिवचनसुनायेजवतव करवायोऊंचोमन्दिरसँवारिकै। प्रभुपधराये नामलालऔविहारीश्याम अतिअभिरामरूपरहतानिहारिकै। करैसाधुसेवाजामें निपटप्रसन्नहोतवासीनरहतअन्नसोवै पात्रझारिकै। करतरसोईसोईराखाहीछिपायसामा आयेघरसंतकहीआयज्यांये प्यारिकै ॥ ६०५ ॥ वोल्योप्रभुभूखेरहैताकोलियेराख्योकछू भाख्योतवआपकाढेभोरऔरआवैगो। करिकैप्रसाददियोलियोसुख पायोतवसेवारीतिदेखिकहीजगयशगावैगो। प्रातभयेभूखेहरिगये

तीनयामटरिरहेक्रोधभरिकहैकबधौंछुटावैगो । आयोकोऊताहीसम यद्वैशतरुपैयाधरे वोलेगुरुशिशलैकैनारोकितोपावैगो ॥ ६०६ ॥

भलीभांति निवही ॥ नवातहै इनको निर्वाह भयो ॥ निष्काम भक्ति स्वरूपकी है सहजक मन की वृत्तिलगै ॥ १ ॥ सौंवेपात्र झारि ॥ दोहा ॥ सबतत्वनिको तत्त्वहै, सोच प्रगट संसार ॥ लगै न अहिंदो चोरको, ज्यों माटीतत्त्व कुम्हार ॥ सबको सार भजन ॥ १ ॥

ङच्योवहशाहमतिमोपैकछुकोपाकियो कियोसमाधानसबबात समुझाईहै । तबतोप्रसन्नभयोअन्नलगैजितोदेयसेवासुखलेतशाह रुचिउपजाईहै । रहेकोऊदिनपुनिप्रभुपुरीवासालियोपियोव्रज रसलीलाअतिसुखदाईहै । लाललैलड़ायेसंतनीकेभुगताये गुणजाने जितेगायेमतिसुंदरलगाईहै ॥ ६०७ ॥ मूल ॥ हरिभजनसींवस्वामी सरसश्रीनारायणदासअति । भक्तियोगयुतसुदृढ़देहनिजबलकरिरा खी । हियेस्वरूपानंदलालयशरसनाभाखी । परचयप्रचुरप्रतापजा नमनरहसिसहायक । श्रीनारायणप्रगटमनोलोगनसुखदायक । नि तसेचबसंतनिसहितदाताउत्तरदेशगति । हरिभजनसींवस्वामीसरस श्रीनारायणदास अति ॥ १९९ ॥ टीका ॥ आयेबद्रीनाथजूतेम थुरानिहारिनयनचैनभयोरहैजहांकेशवजूकोद्वारहै । आवैंदरशनलो गजूतिनकोशोगहियेरूपकोनभोगहोताकियोयोंविचारहै । करैरखवा रीसुखपावतहैंभारीकोऊजानैनप्रभावउरभाव सोअपारहै । आयोए कदुष्टपोटपुष्टसोतोशीशदई लईचलेमगएसोधीरजहीसारहै॥६०८॥

रहेकोऊ दिन ॥ सवैया ॥ कालकराल गयो सुगयो अजहूं सुनि जो छिनही छिनछीजै ॥ श्रीमथुरा यमुनातट वासकै जीवत जीवन को फललीजै ॥ नाथनिरंतर केशव सुन्दर लालको भागवतामृत पीजै ॥ छां- ड़ि सबै नतिया अँखिया भरिकै सबको मुख देखिबो कीजै ॥ १ ॥ जूतिनको शोग ॥ दोहा ॥ हरिके मंदिर जात हैं, हरिदरशन की आ-

श ॥ औंधोहोय पायँनिपरै, चित्तपन्हैयनपास ॥ २ ॥ लै चलै ॥ दोहा ॥ कायाकोठी लोहकी, पिय पारषत हमाह ॥ रजवंतन सुखसों मड़े, कंचन होती नाह ॥ २ ॥

कोऊवड़ोनरदेखिमगपहिंचानिलियोकियोपरनामभूमिपरिभूरिनेहको । जानिकैप्रभावलियेपावमहा दुष्टहूनेकष्टअतिपायोछूटयोअभिमानदेहको। वोलेआपचिंताजिनकरोतेरोकामहोत नैननीरसोतसुखदेखोनहींगेहको । भयोउपदेशभक्तिदेशऊनजान्यो साधशक्तकोविशेपयहीजान्योभावमेहको ॥ ६०९ ॥ मूल ॥ भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरस । भजनभावआरूढ़गूढ़गुणवलितललितयश। श्रोताश्रीभागवतरहस्यज्ञाताअक्षररस । मथुरापुरीनिवासआशपदसंतानिइकचित । श्रीयुतखोजीश्यामधामसुखकरिअनुचरहित अतिगंभीरसुधीरमतिहुलसतमनजाकेदरश । भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरिश ॥ १९० ॥

धीरज को सार है ॥ विचारयो हरिहीने यह पोटि धरी है यह कौनहै ॥ श्रुतेः ॥ सर्वंखल्विदं ब्रह्म। ऐसो ज्ञान आवे तब सुखी होय नहीं तौ दुःखपावै जैसे चल्यो जाय काहू कही वैल मारैगो ॥ कही ब्रह्म सब में है ॥ वैलने मारयो कहने वालोभी तौ ब्रह्म है। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतंकर्म शुभाशुभम् ॥ हरिकी सेवा में कहालाभ है जो कर्मभोगै कर्म क्षीण होय है सेवाते ॥ १ ॥ भावमेह को ॥ पद ॥ मुंडमुंड़ाये की लाज निबहियो ॥ मालातिलक स्वांगधरि हरिको मारि गारि सबही की सहियो ॥ विधि व्यवहार जारसों कलियुग हरिभरतार गाढ़ोकरि गहियो॥ अनन्य व्रत धरि सतजिन छांड़ो विमद संतकी संगति गहियो ॥ अगिन खाहि विषको लै पीवो विषयनिको मुख भूलि न चहियो । व्यास आश करि राधापति की वृन्दावन को वेगि उमहियो ॥ १ ॥

टीका ॥ जानिवेकोपनपृथ्वीपतिमनआई योंदुहाईलैदिवाईमालातिलकनधारिये । मानिआनिप्राणलोभकेतिकानित्यागिदिये छि

पेनहींजातजानिवेगमारिडारिये । भगवानदासउरभक्तिसुखराशि भरयोकरयोलैसुदेशवेप रीतिलागीप्यारिये । रीझ्योनृपदेखि रीझिमथुरानिवासपायोमन्दिरकरायोहरिदेवसोनिहारिये ॥ ६१० ॥

मूल ॥ भक्तपक्षउद्दारतायहनिबहिकल्यानकी । जगन्नाथकोदासनि-घुणअतिप्रभुमनभायो। परमपारपदसमझिजानिप्रियनिकटबुलायो। प्राणपयानोकरतनेहरघुपतिसोंजोरयो । सुतदाराधनधाममोहतिन काज्योंतोरयो । कोधनीध्यानउरमेंवस्योरामनामसुखजानकी । भक्तपक्षउद्दारतायहनिबहीकल्यानकी ॥ १९१ ॥

जानिबे को पति सो भगवान्दास के संगसो रसखान मीर माधव आदिभक्त बहुत होतभये रसखानि के कंठ में द्वैसैका माला रहे तिनसों जहांगीर कही कंठीमाला सब कोऊ पहिरै तुमएती क्यों पहिरी तब रसखान बोले ॥ दोहा ॥ तनपाहन जल अगम को, तनक काठ करैपार ॥ बड़ेकाठ ऊपरतरैं, जबतन पाहिन भार ॥ १ ॥ अरु मीर माधव कृष्णनाम प्रेमसों जुलेय सुनिबेकोसेकै रामलोग फिरयो करैं तिनसों बादशाह कही नाम तो सब कोऊ लैहै तिहारेही पाछे क्यों फिरयो करै है तब मीरमा-धवकही ॥ दोहा ॥ मधुर बचन सुनिसुवा के, काहु न अचरज होय ॥ बोलनिकागाकी मधुर, सुनिधावै सबकोय ॥ १ ॥ तबपन देखिबे को दुहाई फिराई ॥ मालाकंठी न धारै करयो लै सुदेश वेश॥ श्लोक ॥ यदि वातादि दोषेण मद्भक्तो मां च विस्मरेत् ॥ तर्हि स्मराम्यहं भक्तं सयाति परमां गतिं ॥ हरिको काहे को निहोरा कीजिये कंठीमाल पै शरीर छो-ड़िये ॥ १ ॥ दोहा ॥ कंठीमाला सुमिरणी, पहिरत सब संसार ॥ पन-धीरो कोउ एक है, औरविकियो शृंगार ॥ २ ॥

सोदरशोभूरामकेसुनौसंततिनकीकथा । संतदाससदव्रत्तजरात छोड़िकरिडारयो । महिमामहाप्रवीणभक्तिवितधर्मविचारयो । बहु रोमाधवदासभजनबलपरचोदीनो । करियोगिनिसोंवादवसनपा वकप्रतिलीनो । परमधर्मविस्तारिहितप्रकटभयेनाहिंनतथा ।

सोदरशोभूरामकेसुनोसंततिनकीकथा॥ १९२॥ बूड़ियेबिदितक न्हरकृपालआत्मारामआगमदरशि । कृष्णभक्तिकोथंभब्रह्मकुलपर मउजागर । क्षमाशीलगंभीरसबैलक्षणकोआगर । सबैसुहरिजनिज़ानिहृदयअनुरागप्रकाशै । अशनबसनसनमानकरतअतिउज्ज्वल आशै । शोभूरामप्रसादतेकृपादृष्टिसबपरबसी । बूड़ियेबिदितक न्हरकृपालआत्मारामआगमदरशि॥ १९३॥॥

योगीबोले तुमतौ मालाकंठी अंगनमें धरो हम शृंगी मुद्रामाधवदास बोले अचला कोपीनंधरैंगे॥ दोहा॥ कंठी माला सुमिरणी, पहिरत सब संसार। पनधारी कोउएक है, औरन कियो शृँगार। शोभूमाला शोभकी, पनकी माला नाहिं। एँड़ेकोसो तड़गडो, पाल रह्यो गलमाहिं॥ २॥ अचला कोपीन बचगये॥ शृंगी मुद्राजलगये पारथ के क्षमा शील॥ दोहा॥क्षमा बड़ेन को चाहिये, ओछेनको उतपात। कहा विष्णुको घटिगयो, जो भृगु मारी लात॥ १॥ ऐसे क्षमावान् हैं सो नारायणहीं हैं शील गंभीर स्वभाव गंभीर समुद्र सो घटै बढ़ै नहीं सर्ब लक्षणको आगर सो भगवान् दास पारायण उज्ज्वल आशै निष्कपट विषय बासनाकी चाहै सो समान नाहींकरै है यह उज्ज्वल आशै॥ ३॥

भक्तरत्नमालासुधनगोबिंदकंठबिकाशाकिय। रुचिरशीलघननीललीलरुचिसुमतिसरितपति । बिबिधभक्तअनुरक्तव्यक्तबहुचरित चतुरअति। लघुदीरघसुरशुद्धबचनअवरुद्धउचारन। बिश्वाबासाबिश्वासदासपरचैबिस्तारन । जानजगतहितसबगुणनिसूसमनरायण दासादिय। भक्तरत्नमालासुधनगोबिंदकंठबिकाशाकिय॥ १९४॥ भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुंवर।श्रीयुतनृपमणिजगत सिंहदृढभक्तिपरायण। परमप्रीतिकियसुबशशीललक्ष्मीनारायण। जासुसुयशसहजाहिकुटिलकलिकल्पजुधायक। आज्ञाअटलसुप्रगट सुभटकटकनिसुखदायक । अतिहीप्रचंडमारतंडसमतमखंडनदोर्दंडबर। भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुंवर॥ १९५॥ टीका॥ जगताकोपनमनसेवाश्रीनारायणजूभयोऐसोपारायनरहै

डोलासंगही । लखेंकोचलैआगेआगेसदापाछेरहैल्यावैजलझीझई झभर्‍योहियेरंगही । सुनियशवंतजयसिंहकेहुलासभयोदेख्योदिल्ली मांझनीरल्यावतअभंगही । भूमिपरिविनयकरीधरीदेहतुमहीनेजाते पायोनेहभीजिगयोयोंप्रसंगही ॥ ६११ ॥

बिविधभक्त अनुरक्त पंचरसकी भक्ति सबहीमें अनुराग कोऊ दास्या कोऊ शृंगार के उपासिक ॥ १ ॥ धरीदेह ॥ कवित्त ॥ जिन हरि गढि गढि एतक बनायो ताहि तुलसी को दल काहेते चढायो नाहिं । खान प्रधान सब रचें तेरे भावते पै ऐसोमन भावतो जुतेरे मन भायो नाहिं । गाढी करिगह्यो व्रत प्रभुको नमान्योक्त प्रभुने रिझायो औ प्रभुते रिझायो नाहिं । लक्ष जगजीवनिके नेहविन देहधरी जावो जगमाहिं ऐसे मेरे जानि-जायो नाहिं ॥ १ ॥

नृपतिजयसिंहजूसोंबोल्योकहानेहमेरेतेरीजुबाहिनताकीगंधकोन पाऊंमैं । नामदीपकुँवरिसोबडीभक्तिमानजातवहरसखानिऐपैकछुक लडाऊंमैं ॥ सुनिसुखभयोभारीहुतीरिसवासोंटारीलियेगावकाटि फेरिदियेहरिध्याऊंमैं । लिखिकैपठाईवाईकरैसोईकरनदीजे लीजे साधुसेवाकरिनिशिदिनगाऊंमैं ॥ ६१२ ॥ मूल ॥ गिरिधरनग्वा लगोपालकोसखासांचलोसंगको । प्रेमीभक्तप्रसिद्धगानअतिगदगद बानी । अंतरप्रभुसोंप्रीतिप्रगटरहैनाहींछानी । नृत्यकरतआमोद बिपिनतनबसनबिसारै । हाटकपटहितदानरीझिततत्कालउतारै । मा लपुरैमंगलकरनरासरच्योरसरंगको । गिरिधरनग्वालगोपालको सखासांचलोसंगको ॥ १९६ ॥ टीका ॥ गिरिधरनग्वालसाधुसे वाहीसोंख्यालजाकेदेखियोनिहालहोतप्रीतिसांचीपाईहै । संततन छूटहूतेलेतचरणामृत जो औरअबरीतिकहौंकापैजातिगाई है ॥ भयेद्विजपंचइकठौरेसोऊपंचमानोआन्योसभामांझकहैछांडोनसुहाई है । जाकेहोअभावमतिलैवोमेंप्रभावजान्योमृतकयो बुद्धिताकोवा रोसुनिभाई है ॥ ६१३ ॥

गद्गद ॥ एकादशे ॥ वाग्गद्गदाद्रवते यस्यचित्तंहसत्यभीक्ष्णं रुदतिक्वचिच्च ॥ विलज्जउद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति । सखिवत्समतानित्यं सखित्वंभावउच्यते ॥ द्वैमित्रनको दृष्टांत ॥ ऐसे विश्वास होय तौ हरिसदा संगही रहैं ऐसे पांडवनके॥ दोहा ॥ समता शिष्य सुमित्रता हिये सुदृढ विश्वास । पांडव द्रौपदी गज समय प्रगट भये अनियास । सुई हाथिनको दृष्टांत ॥ या वचन सों सत्यव्रत राजा को संदेह भयो बाजीगरको दृष्टांत ॥ ३ ॥

मूल ॥ गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी । प्रगटअंगमें प्रेमनेमसोंमोहनसेवा । कलियुगकलुषनलग्योदासतेकबहुँनछेवा। बाणीशीतलसुखदसहजगोविंदध्वनिलागी । लक्षणकलागंभीरधार संतनअनुरागी । अंतरशुद्धसदारहैरसिकभक्तिनिजउरधरी । गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी ॥ १९० ॥ श्रीरामदास सरसरीतिसोंभलीभांतिसेवतभगत । शीतलपरमसुशीलवचनकोमलमुखनिकसै । भक्तउदितरविदेखिउदौबारिजजिमिबिगसै । अति आनन्दमनउमँगिसंतपरिचर्य्याकरई । चरणधोयदंडवतविविधभोजनविस्तरई । बछवननिवासविश्वासहरियुगलचरणउरजगमगत । श्रीरामदासरसरीतिसोंभलीभांतिसेवतभगत ॥ १९८ ॥ टीका ॥ सुनिएकसाधुआयोभक्तिभावदेखिवेको बैठेरामदासपूंछैरामदास कौनहैं । उठेआपधायेपांवआवेरामदासअवरामदासकहांमेरेचाहि औरगौनहैं । चलौजूप्रसादलीजैदीजैरामदासआनियहीरामदास पगधारोनिजमौनहैं । लपटानोपायँनसोंचायनिसमातनाहिं भाय निसोंभरयोहियोछाईयशजौनहैं ॥ ६१४ ॥

जन पोषको ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्या स्तुतिःप्राह गुणकर्मानुकीर्तनम् ॥ सो भगवान्को यशोदाजीने लड़ायो सा-धनीके लड़ाइबेकी मनमें अभिलाष रहीही गोपाली रूप धरिके पूरणकरी ॥ १ ॥ भली भांति ॥ एकादशे ॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका० ॥ १॥ चाहै अभिमान तो जात हूरहै पैजाति अभिमान न जाय जन्मते मरणताईं रहै

चिता में धरयो तऊ कहै ब्राह्मण हाथ लगावै और न लगावै यह सनौढिया ब्राह्मण साधु इष्ट माने बड़ो आश्चर्य है ॥

बेटीकोबिवाहघरबड़ोउतसाहभयो कियेपकवानसबकोठेमांझधरे हैं । करैंरखवारीसुतनातीदियेतारोरहैंऔरहीलगाइतारीखोल्योनहीं डरेहैं । आयेगृहसंततिन्हैंपोटनिबँधायदईपायोयोंअनंतसुखऐसेभाव भरेहैंसेवाश्रीविहारीलालगाईपाकस्वच्छताईमेरे मनमाईसबसाधुउ रहेरहैं॥११८॥मूल॥विप्रसारसुतघरजनमरामरायहरिरतिकरी । भक्तिज्ञानवैरागयोगअंतर्गतिपाग्यो । कामक्रोधमदमोहलोभमत्सर सबत्याग्यो॥कथाकीरतनमगनसदाआनँदरसझूल्यो।संतनिरखिमन मुदितउदितरविपंकजफूल्यो ॥ वैरभावजिनद्रोहकियतासुपागिगिषि सभैपरी। विप्रसारसुतघरजनमराम० ॥ ११९॥ भगवंतमुदित उद्दारयशरसरसनाअस्वादकिय । कुंजविहारीकेलिसदाअभ्यंतर भाशै। दंपतिसहजसनेहप्रीतिपरमितपरकाशै । अनन्यभजनरस रीतिपुष्टमारगकरदेषी । विधनिषेधबलत्यागिपागिरतिहृदयविशेषी। माधवसुतसम्मतरसिकतिलकदामधरसेवलिय । भगवंतमुदितउद्दारयशरस० ॥ २० ॥

रामराय ॥ भगवान्दासजी के गुरु रहैं ॥ गोकुलस्थ गोसांई जीको अरु भगवान्दासजी को प्रसंग ॥ दोहा॥ सुताहित सुधिता हंस में, ताके अचरज नाहिं ॥ काम्रदेह को हंसकरि, त्यहि देखन सब जाहिं ॥ १ ॥ ऐराकी निजगति चले, ताको अचरज नाहिं ॥ पुनिखर ताकी गति चले, त्यहि देखन सब जाहिं ॥ २ ॥ तब गोसाईं जी सुनिकै बहुत प्रसन्न भये॥ साधुन के ये लक्षण हैं क्यों न आदर होय ॥ १ ॥ वैरभाव ॥ दोहा ॥ कमलहृदै कोमलमिल्यो, नंदन काटत ताहि ॥ काट कठोर हृदैमिल्यो, मधुकर काटत ताहि ॥ २ ॥

टीका ॥ सुजाकेदिवानभगवंतरसवन्तभयेवृन्दावनवासिनकी सेवाऐसी करीहै । विप्रकेगुसाईंसाधुकोऊब्रजवासीजाहुदेतबहुधन

एकप्रीतिमतिहरी है । सुनिगुरुदेवअधिकारीश्रीगोविंददेवनामह रिदासजायदेखेचितधरी है । योगताईसीवाप्रभुदूधभातमांगिलि यो कियोउतसाहतऊपैषेअरवरीहै ॥ ६१६ ॥ सुनीगुरुआवतअमा वतनकिहूंअंगरंगभरितियासोयोकहीकहाकीजिये । बोलीघरबारपट संपतिभँडारसवभेटकरिदीजै एकधोतीधारिलीजिये । रीझेसुनिबा नीसांचीभक्तितेहीजानीमेरे अतिमनमानीकहिआंखेंजलभीजिये । यहीबातपरीकानश्रीगुसाईलईजानआयेफिरिवृन्दावनपनमतिधीजि ये ॥ ६१७ ॥ रह्योउतसाहउरदाहकोनपारावारकियो लैबिचारआ ज्ञामांगिवनआये हैं । रहेसुखलहैनानापदरचिकहैएकरसनिरवहै व्रजवासीजाछुटाये हैं । कीनीघरचेरीतऊनेकुनासामोरीनाहिंवोरीम तिरंगलालप्यारीदृगछायेहैं । वड़ेवड़भागीअनुरागीरतिजागीजगमा धवरसिकवातसुनौपितापाये हैं ॥ ६१८ ॥

नेकुनासा मोरीनाहिं ॥ कवित्त ॥ धनलेहु जनलेहु अरधंगी हरिलेहु सागेतन देहुंजोपै उद्भट गामी है ॥ सुतहू को मारोतन टूकटूक करिडा- रोदूखहू न निवारो बड़ेमति ठामीहैं । ऐसे व्रजवासी ताकी जगकरे उप- हासी मेरेतौ अवासी येतौ सुकृत सुधामी हैं। पुनिहोतौ ज्ञानौ भगवंतइष्ट करिमानौ इनमें जो दोषआनौ बड़ी जियखामीहै ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बां- दर कांटेडीमदुख, व्रजवासी अरु चोर ॥ षटकलेश याकुंज में, पै आशा युगल किशोर ॥ २ ॥

आयोअंतकालजानिवेसुधिपिछानिसव आगरेतैलैकेचलेवृन्दाव नजाइये । आयेआधीदूरिसुधिआईबोलेचूरह्वैकेकहांलियेजातकूरक हीजोईध्याइये । कह्योफेरोतनवनजायवेकोपात्रनहींजरैवासआवै प्रि यापियकोनभाइये । जानहारोहोइसोईजायगोयुगलपास ऐसेभावरा शिचलिताहीठौरआइये ॥ २२ ॥ मूल ॥ दुर्लभमानुषदेहको लाल मतीलाहोलियो । गौरश्यामसोंप्रीतिप्रीतियमुनाकुंजनसों । वंशी वटसोंप्रीतिप्रीतिव्रजरजपुंजनिसों । गोकुलगुरुजनप्रीतिप्रीतिघनबा

रहबनसों। पुरमथुरासोंप्रीतिप्रीतिगिरिगोवर्द्धनसों। वासअटलवृन्दा विपिनदृढ़करिसोनगरीकियो। दुर्लभमानुपदेहकोलालमतीलाहो लियो॥ २०१॥

दुर्लभ॥ दोहा॥ कहूं कटनकट प्रेमकी, सीखोलाल विवेक॥ जैसे नौलख कामरू, पैदरवाजो एक॥ १॥ एकादशे॥ दुर्लभो मानुषोदेहो देहिनां क्षणभंगुरः॥ २॥ गौरश्यामसों॥ तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम्॥ तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम्॥ २॥ स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः॥ एतैर्दोषैर्विलिप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि॥ ३॥ सो लाड़िलीलाल लड़ाये जातेनहीं लाहो लह्यो॥ ४॥ यमुना॥ कवित्त॥ साँवल बरण गात न्हात जाको करै गौर आप जल रूपवाको करै कलिरूप है। आपनो प्रवाह वाहि करै थिर वृन्दावन आप घटै बढ़ै वह एकही स्वरूपहै॥ आपरज राखैवाके खोवै रज तमतीनों कीनों और ठाट यह कौतुक अनूपहै॥ कृष्ण पटरानी ऐसी यमुना वखानी कहिसकत न बानी नीके जानैभक्त भूप है॥ ५॥ वास अटल॥ दोहा॥ छांड़ि स्वाद सुख देहके और जगत की लाज॥ मनहिं न मारत हारिकै वृन्दावनमें गाज॥ ६॥

कविजनकरतविचारवड़ोकोउताहिमनीजे। कोउकहैअवनीवड़ी जगतआधारफनीजे। सोधारीशिरशेषशेपशिवभूपणकीनो। शिवआसनकैलाशभुजनभरिरावणलीनो। रावणजीत्योवालिवालिराघौइकशायकगड़े। अगरकहैत्रैलोक्यमेंहरिउरधारेतेवड़े॥२०२॥ हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश। नेहपरस्परअघटनिवहिचारौयुगआयो। अनुचरकोउत्कर्पश्यामअपनेमुखगायो। ओतप्रोतअनुरागप्रीतिवोहीजगजानै। पुरप्रवेशरघुवीरभृत्यकीरतिजुवखानै। अगरअनुगगुणवरणतेसीतापति तिनहोयवश। हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश॥ २०३॥

विचार करिकही॥ अवनि बड़ी जैसे नारायण भृगु आदिक यज्ञ

करके कहै॥ समर्चनकौनकूंकरै जो बडो होय सो भृगु ने नारायणके परीक्षा करी सो क्षमाकरिकै नारायणही बडे ॥ ऐसे क्षमामें पृथ्वीवडी ॥ ॥१॥हरि उरधारै ॥ कवित्त ॥ सबहीते बडीक्षिति क्षितिहूंतें सिन्धु बडे सिन्धुहूं तें बडे मुनि वारिधि अचैरहे ॥तिनहूंते बडे नभ तामें मुनिसे अनेक जाके वीच तारागण चारो ओर छैरहे । नभहूंते बडे पगवावन बढाये जब तिनकी उँचाईदेख तीनों लोक नैरहे। तिनहूंते बडे संत साहिब अगमगति ऐसे हरि बडे जाके हृदै घर करि रहे॥ १॥भागवते॥निरपेक्षं मुनिंशांतं निर्वैरं समदर्शनम् ॥ २ ॥ जिनके चरणनिकी रजहरिने चाही यातेवही बडे ॥ ३ ॥ हरि सुयश नवमे ॥ साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् ॥ मदन्यं ते न जानंति नाहं तेभ्योमनागपि ॥ मनुष्यपाग पलटै हरिने हृदय पलटै हरि साधनके गुण कहै अरु सुनै जैसे साधु हरिके गुणकहै अरु सुनै पुरप्रवेश करत कहै तो भरतसों हनुमान् आदिकके सुने नारदजी सों पांडवनिके संतहू अनन्यहैं जैसे प्रह्लाद ऐसेही हरि अनन्य हैं ॥ ५ ॥

उत्कर्षसुनतसन्तनकोअचरजकोऊजानिकरौ । दुर्वासाप्रतिज्ञ्या मदासवसताहरिभाखी । ध्रुवगजपुनिप्रहलादरामशबरीफलसाखी। राजसुयशयदुनाथचरणधोयजूंठाउठई । बहुपांडवविपत्तिनिवारिदियोविषविपयापाई। कलिविशेषपरचौप्रगटआस्तीकह्वैकेचितधरौ । उत्कर्षसुनतसंतनकोकोऊअचरजजानिकरौ ॥ २०४ ॥ फलश्रुति सार ॥ दोहा ॥ पादपयेइहिसींचतेपावैंअँगअँगपोष । पूरवजाज्यों वरनतेसवमानियोसँतोष ॥ २०५ ॥ भक्तजितेभूलोकमेंकथेकौनपै जाय । समुदपानश्रद्धाकरै कहाचिरियापेटसमाय ॥ २०६ ॥ श्रीमूरतिसवैष्णवलघुदीरघगुणनअगाध । आगेपाछेवरतैंजिनमानौंअपराध ॥ २०७ ॥ फलकोशोभालाभतरतरुशोभाफलहोय । गुरूशिष्यकीकीर्तिमेंअचरजनाहींकोय ॥ २०८ ॥ चारियुगनमेंजे भगततिनकेपगकीधूरि। सर्वसुशिरधरिराखिहौंमेरीजीवनमूरि२०९

कर्मानंद चारनकी छरी प्रभु लायदई यह हम न मानेंगे दुर्वासा प्रति

हरि ने वस्तुतःकही ॥ नवमे ॥ अहंभक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र इव द्विज ॥ ॥ १ ॥ पृथ्वीराजको प्रभुने द्वारकासों आयकै दरशनदीनो हम न मानेंगे ध्रुवमधोर्वनेदक्षति न्यागतः कौधीप्रेम निधिको प्रभुमसाल लैकेआये यह हम न मानेंगे जैसे गजको प्रतिमाकूं नामदेवने दूधपिवायो वा इनके बोलते हरि आयगये यह हम नमानेंगे जै प्रह्लाद कर्माके खीचरीखाते ते त्रिलोचनकेघरमें चौदह महीना प्रसाद पायो सो हम न मानेंगे जैसे शबरी सेनको स्वरूप धरिकै राजाके तेल लगायो यह हम न मानेंगे राजसूय यज्ञमें कबीरकी जगे जगे रक्षा प्रभुनेकरी सो हम न मानेंगे वहुपांडव विपत्ति निवार अंगदको वहनने विषदियो और प्रभाव न भयो मीराको विष नँनदने दियो सो प्रभाव न भयो सो हम न मानेंगे जैसे चन्द्रहासके अक्षर ऐसे प्रभाव ॥ १ ॥ कलि विशेष तीनियुगनमें तो परचे होयही है पर कलियुगमे विशेष आस्तिकपै दृष्टांत महा पुरुषको अरु ऊंटको ॥ २ ॥

जगकीरतिमंगलउदयतीनोंतापनशाय । हरिजनकोगुणवरनतेहरिहृदअटलवसाय ॥ २१० ॥ हरिजनकोगुणवरणतेजोजनकरैअसूय । इहांउदरबाढेव्यथाअरुपरलोकनशाय ॥ २११ ॥ जोहरिप्राप्तकीआशहैतौहरिकोयशगाय । नातरुसुकृतभुजेवीजज्योंजनमजनमपछिताय ॥ २१२ ॥

जगकी रति ॥ एकादशे ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्या स्तुतिः प्राह गुणकर्मानुकीर्तनम् ॥ १ ॥ मेरो अरु मेरे भक्तको गुण सामान्य है भक्त भगवन्त में भेद नहीं। वैष्णवो मम देहस्तु तस्मात्पूज्यो महामुने ॥ अन्ययत्नं परित्यज्य वैष्णवान् भज शाश्वतम् ॥ ॥ १ ॥ तृतीये मैत्रेयवाक्यम् ॥ शारीरा मानसा दिव्या वैयासेये च मानुषाः ॥ भौतिकाश्च कथं क्लेशाबाधंते हरिसंश्रयम् ॥ २ ॥ हरि जनको मार्कंडेय वाक्यम् ॥ यो हि भागवतां लोके उपहासं द्विजोत्तम ॥ करोति तस्य नश्यंति धर्ममर्थो यशः सुताः ॥ ३ ॥ निंदां कुर्वंति ये मूढा वैष्णवानां महात्मनाम् । पतंति पितृभिस्सार्द्धं महारौरवसंज्ञके ॥ ४ ॥

आदिपुराणे ॥ मम भक्तजनान् दृष्ट्वा निंदां कुर्वंति ये नराः ॥ तेषां सर्वाणि नश्यंति सत्यं सत्यं धनंजय ॥ ५ ॥ दशमे भगवद्वाक्यम् ॥ राजसा घोरसंकल्पाः कामुका अहिमन्यवः । दांभिका मानिनःश्रायो हसंतिभगवत्प्रियान् ॥ ६ ॥ असूया पद ॥ श्रीपति दुखित भक्त अपराधे। संतन द्वेष द्रोहता करि नित आरति सहित मोहिं आराधे । सबै सुनो वैकुंठ के बासी सत्य कहत मानौ जिन खेदै ॥ तिनपर कृपा कैसे कै करिहौं पूजत पावँ कंठको छेदै। संतन द्रोह प्रीति मोहूसों मेरो नाम निरंतर लेहै। अग्रदास भागौत वदत है मोहिं भजत परयमपुर जैहै ॥ ॥ १ ॥ इहां उदर बाढ़ै वृथा जालंधर का रोग होय अथवा अनेक योनिनकी व्यथा होय ॥ १ ॥

भक्तदाससंग्रहकरैकथनश्रवणअनुमोद ।सोप्रभुकोप्यारोपुत्रजो बैठेहरिकेगोद ॥ २१३ ॥ अच्युतकुलजसएकबेरहूजाकीमतिअनु रागी। उनकी भक्तभजनसुकृतकोनिश्चयहोयविभागी ॥ २१४ ॥ भक्तदासजिनकथीतिनकीजूंठनपाय । मोमतिसारुअक्षरद्वै की न्होसिलौवनाय ॥ २१५ ॥ काहूकेबलयोगयज्ञकुलकरनीकीआ स । भक्तनाममालाअगरउरबसौनारायणदास ॥ २१६ ॥

इतिश्रीभक्तमालमूलश्रीनारायणदासजीकृतमूलंसमाप्तम् ॥

टीकाकर्ताकेइष्टगुरुदेववर्णनम् ॥ कवित्त ॥ रसिकाईकविताई जाहिदीनीतिनपाईभईसरसाई हियेनवनवचाहिये । उररंगभवनमें राधिकारमणबसैलसैज्योंमुकुरमध्यप्रतिबिंबभाईहै । रसिकसमाज मेंविराजरसराजाकहैंचहैंमुखसबैफूलेसुखसमुदाईहै । जनमनहरिला लमनोहरनामपायोउनहूंकोमनहरिलीनोयातेराईहै ॥ ६२० ॥

भक्तिदास संग्रह करै ॥ नारदगीतायाम् ॥ तिष्ठते वैष्णवं शास्त्रं लिखितं यस्य मंदिरे । तत्र नारायणो देवः स्वयं वसति नारद ॥ १ ॥ बिभागो ॥ एक बापके चारिपुत्र कोऊ बरषको कोऊ पांचबरषको कोऊ एक बरषको ऊको आजको बांटो बरोबरि पावै ॥ १ ॥ माला श्रीनाभानभ उदित

शशि भक्तमालसों जान ॥ रसिक अनन्य चकोर तुम पान करौ रसखान ॥ ॥ २ ॥ आगम निगम अरु स्मृति सब पुराण मत सार ॥ भक्तमाल में साखधरि संतभये भवपार ॥ २ ॥

इनहींकेदासदासदासप्रियादासजानोतिनलैवखानोमानोंटीकासुखदाईहै । गोवर्द्धननाथजूकेहाथमनपरचोजाकोकरचोवासवृंदावनलीलामिलिगाईहै । मतिअनुसारकह्योलह्यो मुखसंतनकेअंतकोनपावैजोईगावैहियआईहै । घटबाढ़िजानिअपराधमेंरोक्षमाकीजैसाधुगुणग्राहीयहमानिकैसुनाईहै ॥ ६२१ ॥ कीनोभक्तमालसुरसालनाभास्वामीजीनेतरेजीवजालजगजनमनपोहनी । भक्तरसबोधनीसुटीकामतशोधनीहै बाँचतकहतअर्थलागैअतिसोहनी । जोपैप्रेमलक्षनाकीचाहअवगाहियाहि मिटैउरदाहनेकुनयननहूजोहनी । टीकाअरुमूलनामभूलिजायसुनैजवरासिकअनन्यमुखहोतविश्वमोहनी ॥ ६२२ ॥

वृन्दावन ॥ कवित्त ॥ लगी अति प्यारी भूमि जहां प्रिया प्रीतमजू प्रीति सुबिहारकरैं तेईगुणगाइवो । रसिक अनन्यनिके लखिये मुखारबिंद गुणन निहारियेरु जियहुलसाइवो । मधुर रसाल कथा लाल अभिराम नाम यही आठोयाम निज श्रवण सुनाइवो । वृन्दावन रसवस ह्वैके सब छाड़ीमें दगहीं एक ऐंड़ तजि पैंड़हू न जाइवो ॥ १ ॥ विश्व मोहनी ॥ कवित्त ॥ घरहू छुटाये काम पूरेनपरनपाये मन हुलसाये रूपमति अतिलालकी । असन बसन भूले लोचन सरोज फूले मनरसझूले सुनिबाणी सुरसालकी । लोककुलधर्मटारे धीरज बिदारे डारे रग भरिभरि शोभा अध्वर विशालकी । प्रेमसुखजालरही काहूना सँभालरही किधौंभक्तमाल किधौं बांसुरी गोपालकी ॥ १ ॥ राधारमणकी गुसांइन कथा में उतावली चली घरमें ढहवी मूंददई एक स्त्री उतावली चली पाइजेबगिरी एक स्त्रीनेअपने हाथकी चूरी वैष्णवको फोरदीनी ॥ १ ॥

नाभाजूकोअभिलाषपूरणलैकियो मैंतौताकीसाखीप्रथमसुनाई

नीकेगाइकै । भक्तिविश्वासजाकेताहीकोप्रकाशकीजैभीजैरंगगहियोलीजै तनलड़ाइकै । संवतप्रसिद्धदशसातशतउनहत्तरफाल्गुणमासवदी सप्तमीविताइकै । नारायणदाससुखराशिभक्तमाललैकै प्रियादासदासउरवसौरहौछाइकै ॥ ६२३ ॥

भक्ति विश्वासजाके होय ताहीको सुनाइये । अविश्वासीको न सुनावै। क्योंकि नामापराध होयहै ॥ १ ॥ साध कल्पि ॥ २ ॥ नामाश्र २ सतांनिंदांनाम्नः परममपराधनवित नृतेयतः स्यातयातयातंकथ सुमुत्सहतेतद्विगर्हं । शिवस्यश्रीविष्णोइहिगुणः नामादि सकलं धयाभिन्नंपश्येत्स्यखलहरिनामा हितकर । गुरोरवज्ञाश्रुतिशास्त्रनिंदितं यथार्थवादो हरिनाम कल्पनम् नाम्नोर्वलाद्यस्य हि पापबुद्धिर्न्न विद्यतेतस्ययमैर्हिशुद्धिः ॥ ४ ॥ श्रुत्वापि नाममाहात्म्यं यःप्रीतिरहितोनरः ॥अहंममादिपरमोनाम्निसोप्यपराधकृत् ॥ कवित्त ॥ वेदहूकी निंदा और साधुनहूकी निंदाकरै गुरु की अवज्ञा विष्णु शिव भेदमानिये । नामही के आसरे सों करैवहु पाप और अश्रद्धावानहीं सों उपदेशलै बखानिये । एक अर्थबाद अरु बारबार कुतर्ककरै महिमा सुनतहिये श्रद्धानहिं आनिये । नामके समान और धर्म सब समानफलत अपराध दशजानिये ॥ १ ॥ पंचाध्यायी ॥ हीन अश्रद्धा नास्तिक हरिधर्मवहिर्मुख । तिनसों कवहूं न कहै कहै तो नहीं लहै सुख । भक्तजननसों कहै जिनके सदा भागवतधर्मबल । ज्योंयमुनाकी मीन लीनदिनरहत यमुन जल । यद्यपिसततनिधि भेद भेदनी यमुना निगमबखानै । तेतहीं धारिहींधार रमत छवितनहीं जलआवै ॥ १ ॥ गीतायाम् ॥ श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपियो नरः । सोपि मुक्तः शुभाँल्लोकान् प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणा ॥ ९ ॥ श्रद्धावान्श्रोतासुन्योकरै चिंतानहीं ॥ १ ॥

अगिनिजरावोलैकैजलमेंबुड़ावोभावैशूलीपैचढ़ावोघोरिगरलपिवायवी । वीछूकटवावोकोटिसांपलपटावोहाथीआगेडरवावोईतिभीतिउपजायवी । सिंहपैखवावोचाहौभूमिगड़वावो तीषीअनीबिधवा

वोमोहिंदुःखनहींपायवी । ब्रजजनप्राणकान्हवातयहकानकरौ भक्त सोंविमुखताकोमुखनदिखायवी ॥ ६२७ ॥

इतिश्रीभक्तमालटीकाभक्तिरसबोधनीसमाप्तम् ॥

अगिनिजरावो ॥ पद ॥ जो दुःखहोय विमुखघरआये । ज्योंकारो कारीलागै निशि कोटिक बीछूखाये ॥ दुपहरि ज्येष्ठ परत बारू में घाय- निलोनलगाये । कांटनमांझफिरै विन पनहीं मूड़ मेटोलाखाये । टूटत चावुक कोटिपीठिपर तरवर बांधि उठाये । जो दुख होय आगिनिके दाहे सर्वसुधनहिं हेराये॥ज्योबांझहि दुखहोत सौतिके सुंदर बेटाजाये । देखत ही सुखहोत जितोवह बिसरत नहिं बिसराये॥भटकत फिरत निलज बर- जतही कूकर ज्यों झहराये । गारीदेत बिलग नहिं मानत फूलत दमरीपाये। अतिदुख दुष्ट जगत में जेते नेकु न मेरेआये । वाके दरश परश मिलवतही कहत व्यास यों न्याये ॥ दोहा ॥ दागजु लाग्यो नीलकों, सौमन साबुन धोय । कोटिन यतन प्रबोधिये, कौवा हंस न होय ॥ १ ॥ संगति भई तौ कहभयो, हिरदो भयो कठोर । नौनेजे पानीचढो, तऊ नभीजीकोर ॥ ऐसे शठ कथामें क्यों आवैं हैं ॥ श्लोक ॥ देवोजातः क्षमावंतो गंधर्वो मधुरः स्वरः । मानुषं मतिचातुर्य्यं पिशाचो मतिनिर्गुणः । अक्षयंच भयं ना- स्ति राक्षसो उग्रतामसः । खरश्ववाकभृष्टं च मृगश्च मतिकातरः । मर्कटं मति- चांचल्यां सर्वभक्षी च वायसी । एवंजाति मनुष्ये दशप्रकारमुच्यते ॥ १ ॥ तर्ककरवेको आवैंहैं तर्क कहा वक्ताकहै प्रह्लादकी अगिनिते रक्षाकरी विमुख बोल्यो वक्ताहूको डारिदेहु बचैतौ सांचोसांचो नहीं झूंठोवक्ताकहै रामनाम सों पाथरतरै विमुखहै अवतरावोतो सांच नहीं तौ झूंठ वक्ताकहै गंगाजलसों स्नानकरावो विमुख कहै मतिकरावो पादोदकी हैं वक्ताकहैं सूर्य्यको यमुना जलसों जल दानकरै विमुख कहै मतिकरौ पुत्री है पुत्री कोजल कैसे लेगो वक्ताकहै तुलसा चरणामृत प्रसाद लेहु विमुख कहै मति लेहु उदर में बिगरै याते इनसों न कहिये ॥ २॥ ब्रजजनप्राण॥

सवैया ॥ चंदन घोरिये बिंद लगाइके कुंजनते निकस्यो मुसक्यातो। राजतिहै बनमाल गरे अरु मोरपखा शिरपै फहरातो। जबते रसखानि विलोकतही तबते कछु और न मोहिं सुहातो। प्रीतिकी रीति में लाज कहा कछुहै सो बड़ो यह नेहको नातो ॥ २ ॥ एक समय वंशी ध्वनिमें रसखानि लियो कह नाम हमारो। ताक्षणते वहवैरिन सासु कितौ कियो झांकन देति न द्वारो। होत चवाइ वलायसों आलीरी जो भरि अंक उरलीजत प्यारो। बाट चलत तवहीं ठटकी हियरे अटक्यो पियरे पटवारो ॥ २॥ यालकुटी अरु कामरियापर राज्य तिहूं पुरको तजिडारों। आठो सिद्धि नवो निधिको सुखनंद कि गाय चराय बिसारों। कोटि किये कलि धौतके धाम करीरके कुंजन ऊपरवारों। रसखानि कहै इन इन नयनन सों ब्रजके वनबाग तडाग निहारों ॥ ३ ॥ अहोभाग्य ॥ १ ॥ स्कंदपुराणको इतिहास कृष्णके पास एईगईवेनआये ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जिन भक्तनकी माल, पहिराहै निशिदिनसदा ॥ तेई रसिक रसाल, बसौ सो बृन्दा बिपिननित ॥ २॥

इति श्रीभक्तमालसटीकंसंपूर्णम् ॥

पुस्तक मिलेनका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-(बम्बई.)